हरिमन्दिर

विश्व-विख्यात स्वर्ण-मन्दिर की महा-गाथा

ऐतिहासिक उपन्यास

लोकभारती प्रकाशन
१५ ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

हरनाम दास सहराई

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गाधी मार्ग,
इलाहाबाद–१ द्वारा प्रकाशित

●

●

प्रथम सस्करण १९८२

●

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गाधी मार्ग,
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य : ३५.००

दरबार साहिब के निर्माता
गुरू अर्जुनदेव की
पुण्य स्मृति में

हरिमन्दिर

किधो उपद्रव तुर्क बड़ अमृतसर गुरुद्वार ।
हरि मन्दिर में कंचनी रखे तुरकन को सरदार ॥
मंडियाली को रंगड़ो मस्सा ताको नाम ।
करे बेअदबी हरि मन्दिर पापी बड़ो हराम ॥

—प्राचीन पंथ प्रकाश

लक्खी जंगल

घने पेड़ों का एक घेरा और उसकी नाभि में जलाशय। राजस्थान की रेतीली धरती में पानी की छवि कुदरत की सबसे बड़ी नियामत है। पानी का छींटा तक नज़र आता नहीं। पानी के लिए बिलखता रहता है राजस्थान।

बिल्लौर जैसा चमकदार शीतल जल। उसमें झलकती हुई पेड़ों की परछाइयां। सिक्खों का गुप्त स्थान। तराज़ू के एक पलड़े में सिक्ख का नाम रख लो, दूसरे में मौत—पलड़े बराबर भले ही हो जायें, पर प्रसंग फिर भी रह जायेगा। सिक्ख का नाम भारी मौत फिर हल्की। किस मुंह से सिक्ख का नाम लिया जाये! फिर भी सिक्खों का नाम लेने वाले बहुत थे। पंजाब के अपना ही खून थे। बेटे थे, पोते थे, भाई थे, जवाई (दामाद) थे। पंजाब तो गैरों की सौ-सौ खिदमतें करता था, उन्हें आदर भाव देता था, फिर अपनों को क्यों न सीने से लगाता। सामने नहीं तो न सही, चोरी, रात-बेरात, चूरमे कूट-कूट कर, कटोरे भर-भर कर खुद खिलाता पंजाब। हुकूमत का बहुत दबदबा था।

एक पेड़ की छांह में बैठे चार जन बातें कर रहे थे।

लम्बी-लम्बी, खुली, बावरी लटों और कटी मूंछों वाला, दिखने में पक्का सूफी, नाम बिजला सिंह—वह बोला :

'सज्जनो, इसे मुसलमान मक्का कह लें या मदीना, इसे काशी कह लो या प्रयाग, हरिद्वार कहो या अयोध्या, सिंह इसे गोइंदवाल कह कर सिर नवा लें या अमृतसर को हृदय में बसा कर सिर झुका लें, हुकूमत इसे किला कह ले या छावनी, ज्यादातर लोग इसे मौत का घर कहते। हिंदू श्रद्धालु शिवस्थान। कुछ सिंह दमदमा कह कर जी ठंडा कर लेते। लाहौर सूबा इस जगह को लक्खी जंगल के नाम से पुकारता। इन सभी बातों में से कोई भी बात झूठी नहीं है। सबकी सब सोलहों आने सच हैं—कसौटी पर कस कर परखी हुई।

'सरकारी कागज़ों में जब लक्खी जंगल का नाम आता, तो वहां साथ ही यह लिखा होता कि यह जगह लुटेरों, आक्रामकों, हत्यारों, दरिंदों और डाकुओं का डेरा है। लक्खी जंगल हुकूमत की आंखों में कुक्करे की तरह चुभता रहता। सूबे

की मारक फौजें सिहा के गुप्त स्थानो की छाह तक न पा सकती। कोशिश वहुत करती पर हासिल कुछ न होता। सिहा का जलाल है यह !'

'जलाल तो वहुत है, पर वजूद कुछ नही है।' तारा सिंह बोला।

'मदारी का तमाशा नही है कि वजूद नजर आ जाय !' विजला सिंह ने कहा, 'साजिशें अधेरों म ही पलती हैं। खामोशी के झुटपुटे मे उनका जन्म होता है। बधे हुए मुंह और कसे हुए कमर पट्टे उन्ह परवान चढाते हैं। उन्ह जवानी के द्वार तक पहुचाने के लिए वडा सघष करना पडता है। समझ मे आयी मेरी वात ?'

तारा सिंह जोश मे आ गया, सीने पर हाथ मारता हुआ बोला, 'सिंह जी, यह हमारा कीरतपुर है, चमकौर साहिब है ! आनदपुर की गढी का दूसरा रूप है यह लक्खी जगल !'

मनसा सिंह ने यो ही बीच म टाग अडा दी, 'इसे सरहद नही कहा जा सकता ? कत्लगढ से कम है यह ?'

विजला सिंह ने अपना सयम बरकरार रखा, 'सिंह जी, यह न सरहद है, न कत्लगढ', उसने कहा, 'लक्खी जगल म कोई भी आदमी किसी दूसरे के खून मे अपने हाथ नहीं रग सकता। यह पवित्र स्थान है। इसे तब तक पवित्र रखा जाये, जब तक हमारे बीच दरार नही पडती। अगर दरार पड गयी, तो फिर यह गुरदाम नगल वन जाये। सिंह अब ऐसी गलती नहीं करेंगे। एक भूल हो गयी। भूलें वार वार नहीं हुआ करती। एक भूल ने ही घर बार को नष्ट कर डाला है . वरना सिंह किसे पल्ले बाधते थे !'

मनसा सिंह बोल उठा, 'मुझे आज पता चला है कि लक्खी जगल एक होवा है, बाघ है, शेर बब्बर है हुकूमत के लिए ! मैं तो यही समझता था कि सिंहों ने इसे चोरो की तरह छुपने की जगह बना रखा है !'

'हुकूमत के लिए तो वही कुछ है, लेकिन सिंहो के लिए यह एक गढ है, बिना बुर्जो, बिना दीवार और बिना खाई का किला है।' बिजला सिंह ने उत्तर दिया।

मनसा सिंह बोल उठा, 'मुझे तो वडा प्यार हो गया है। मेरी हमदर्दी बढ गयी है। मैंने कभी ऐसा सोचा या सुना नही था। हमारा काम था, जत्थेदार का वचन मानते जाओ, सेवा करते रहो, मेवा मिलेगा !'

'आराम से बैठ जाओ और सुन लो कि लक्खी जगल क्या है,' बिजला सिंह ने अपनी छोटी सी दाढी पर हाथ फिराया और दस्तार को सवारा, 'सिंह इसका इतना सत्कार क्यो करते हैं। सारा पजाब इसके नाम पर सिर क्यो झुकाता है .'

श्रद्धा और प्यार के स्वर मे बिजला सिंह ने लक्खी जगल का वर्णन करना शुरू किया :

'लक्खी जगल सूरमाओ, योद्धाओं और वीरो की बस्ती का नाम है।'

'लक्खी जगल मे वही लोग रह सकते हैं, जो मौत को हस-हस कर गले लगाने में बिलकुल न घबरायें।'

'लक्खी जगल दुस्साहसी सूरमाओं का गढ है।'

'प्रतिज्ञा करने और इस पर पूरा उतरने वालो की जन्मभूमि है लक्खी जगल।'

'लक्खी जगल मे वे लोग बसते हैं, जो गुरु के नाम की माला जपते हैं। गुरु के सहारे जीने वालों का गुरुधाम है यह।'

'लक्खी जगल एक मदिर है, उन पुजारियो का, जिनका गुरु पर विश्वास अटल है।'

'लक्खी जगल के वासी वे लोग हैं, जो अपने मुँह से निकले शब्द पर प्राण दे देते हैं, और उफ तक नही करते, यह गाव उनका है।'

'लक्खी जगल एक दोधारी तलवार है। इसके वासियो का निश्चय है: तब तक धर्म निभाते चले जाओ, जब तक केश और श्वास हैं।'

'लक्खी जगल आस्थावानो का एक पडाव है।'

'बाट कर खाना लक्खी जगल वालो का धर्म है।'

'गुरु की गोलक, गरीब का मुँह है लक्खी जगल। इसे गुरु का सीना भी कहा जा सकता है।'

'लक्खी जगल कृपाण की वह म्यान है, जिसके बच्चे ज़ालिम के लिए तीखी, दोधारी तलवार हैं। मजलूम के लिए उसके हृदय मे प्यार है, आखो मे लाली है, लाज है, शर्म और हया है।'

'लक्खी जगल एक शिक्षालय है, जिसके विद्यार्थी यह पाठ पढते हैं: 'जो तोहे प्रेम खेलन का चावु, सिर धर तली गली मोरि आवु।'

'लक्खी जगल उन खुले-मन लोगों की छावनी है, जो अपनी सारी जिंदगी एक ही भूरे मे काट लेते हैं—चाहे आषाढ हो चाहे पौष!'

'लक्खी जगल उन सूरमाओ का डेरा है, जिनकी जायदाद है एक घोडा और भूरी माला। विरसे में मिली हुई तलवार उनकी बख्शीश है और केश हैं गुरु की मुहर।'

'लक्खी जगल उन महापुरुषों का तीर्थ है, जो हृदय मे वाणी का स्मरण करते रहते हैं।'

'लक्खी जगल के सिंहो की घूँटी है, विश्वास और भावना।'

'लक्खी जगल के वासियो के घर हैं उनके घोडो की काठिया और उनका सबसे बड़ा शस्त्र उस समय था घोडा।'

'लक्खी जगल उन धर्मियो का टोला है, जो जालिमों के लिए मौत बन जाते हैं और पराई औरत को मा, बहन और बेटी समझते हैं।'

'जंगल मे मोर नाचा किसने देखा ? पहाड पर बासुरी बजती किसने सुनी ?' लक्खी जगल ऐसी ही एक छावनी है, जिसके करतब किसी ने नहीं देखे हैं।'

'लक्खी जगल के बारे मे बहुत कुछ मशहूर है। उसमें से बहुत कुछ सच है। सिंह अभी-अभी थे और अभी-अभी हिरनों के सींगों पर सवार हो कर आलोप हो गये। भूतों का डेरा है। पल-भर मे गायब हो जाते। आसमान खा जाता या जमीन निगल जाती—कोई नही जानता।'

'इसीलिए उसे भूतो का डेरा कहा जाता है।'

'लक्खी जगल मे सिंह छावनियां डालकर रहते हैं। उनके बारे मे एक आख्यान बन गया है : 'सिंह मकान छोड़ कर भाग गये।' वे हारे नही। उन्होंने दिल नही छोड़ा, बल्कि वे नये हमले की तैयारी कर रहे हैं। एकाएक जैसे कोई बौछार पड़ती है, वैसे ही अचानक हमला ! खून बरसा, लहू के फौवारे छूटे, दुश्मन की फौजों की नसें निचोड़ी, बोटियां उडा दी...यह नया ढग है युद्ध का। सिंह नेताओ ने नया आविष्कार कर डाला है।'

'लक्खी जगल पर हम न्योछावर ! खायेंगे भुने हुए चने और डकार लेंगे काबुली बादामों का ! खायेंगे बासी रोटियां और स्वाद लेंगे मीठे प्रसाद का ! पीयेंगे कढ़ी और अमृतों कह कर उसे पवित्र कर लेंगे ! होगा एक और सवा लाख कह कर सामने वाले की जान निकाल लेगा !..

'लक्खी जगल उन दुस्साहसी सिंहों का स्थान है, जो सगत, पगत और वाणी पर ईमान रखते हैं।'

'लक्खी जगल उन सिंहो की छावनी है जिनके बारे मे मुगल शाही लोग कहते है कि सिंह महापुरुष हैं, देवता हैं।'

किसी सर्प की तरह अचानक फन उठाते हुए, मनसा सिंह बीच में ही बोल उठा, 'भाई, सो कैसे ?'

बिजला सिंह बोल उठा, 'सिंहो ने हमला किया एक खेमे पर। जब उन्हें पता चला कि यह खेमा बेगमों का है, उन्होंने फौरन अपनी तलवारें म्यान मे रख ली। दोनों हाथ जोड कर उन बीबी-रानियों से क्षमा मागी, जो कुछ अपने पास था, सब उनके सामने रख दिया, जो कुछ लूट कर लाये थे, वह भी उनके सामने डाल दिया। मोहरों का ढेर लग गया। वहीं से लौट आये। बहनों और बेटियों के घर आये थे न भाई !'

'मा के दूध की तरह पवित्र है लक्खी जगल—यह बात, यह कथा, यह वारदात सिर्फ लक्खी जगल ही जानता है। पजाब के बहुत गिने-चुने लोग ही इस बात को जानते हैं। तुमने सुन ली है, पल्ले बाध लो।'

'किसी दिन इन्हे पजाब का मिहमान सभालना है। घोड़े, जोड़े और कलगियां इनके लिए होंगी, उन जालिम मुगलो के लिए नहीं, उनके सिर के लिए तो सात चूल्हों की खाक !'

बिजला सिंह ने कह कर हाथ जोड दिये : 'धन्य, धन्य, धन्य, धन्य, गुरु गरीब-नवाज !'

वलवले

'लाहौर से एक आदमी आया है। उसने बताया है कि सूबा लाहौर ने भरी कचहरी मे यह फैसला किया है कि अब पजाब म सिह नही रह सकते। एक म्यान म दो तलवारें कैसे रखी ज सकती हैं? एक जगल मे दो शेर कैसे समा सकते हैं? शेर एक ही रहेगा जगल मे। एक म्यान मे तलवार भी एक ही रह सकती है। पजाब म या तो मैं राज करूगा या खुदा का कहर। किसी के घर से चोरो-चकारो की तरह पैसा लूट कर ले जाना, यह कहा की बहादुरी है! यह तो शोहदो का काम है! ढोल बजाओ, दूसरो को ललकारो और फिर लूटो। इसे कहते हैं वीरता। शिवाजी ने एक ही बात बतायी है सिहो को, बाकी बातें नही बतायी। शिवाजी का जमाना और था, मेरा जमाना और है। इन दोनो मे जमीन-आसमान का फर्क है। मैं सिहो का बीज नष्ट कर दूंगा। मैं पजाब मे ऐसी कोई औरत ही नहीं छोड़ूंगा, जो ऐसे निडर, बेधड़क, बेखौफ और हथेली पर जान रखकर मरने-मारने को पल भर मे तैयार हो जाने वाले सिह पैदा कर सके। मैं उन सबके गर्भ भग करवा दूंगा। मेरे जीते-जी किसी की कोख नही फलेगी। सुन ली जकरिया खा की दिलेरी?' बिजला सिह ने जोश म आ कर पूछा।

'अगर सिहो ने उसी का ही तुख्म खत्म कर दिया, तो वह किस मा को मौसी कहेगा?' मनसा सिह ने कहा, 'यहाँ कई सिकदर आये। अहमद आया। गजनी भी गरज गया। गौरी आये और हवा के झोंके की तरह उड़ गया। उनका नाम-लेवा दिखता है कोई? भगवान् की लाठी बड़ी बेआवाज है। देर है, अधेर नही है। जरा पाव रखने की जगह मिल जाये सिहो को, बैठने की जगह, देखना, वे कितनी जल्दी बना लेते हैं! यह समय ही अलग है। इस तरह के समय इसी तरह लुका छिपी करके दिनकटी की जाती है।'

बिजला सिह बोला, 'अब्दुल समद खा को जो जोर लगाना था, लगा कर देख चुका, जो अति करनी थी, करके देख चुका। कहा हैं वे हरनाकश और कस? ऐसे दुष्ट कभी फलते-फूलते नही! कृष्ण जेल मे पैदा हो कर भी लोगो के

हृदय म बैठ जाता है। माला उसी के नाम की जपी जाती है। अमृत वेला मे कस या हिरनाकश का नाम कोई नही लेता। अपरिमित मिट्टी के नीचे दब गयी हैं मूरतें। इसकी भी चार दिन की चादनी है। अधेरा अपने झडे गाड कर ही रहेगा। अधेरे मे से लौ उभरती है। वह लौ सारे ससार को रोशनी देती है। सूरज भी अधेरे की गोद से उगता है। सूरज के उजियारे के सामने किसी की आख नही टिक पाती। यह भी अपनी सेना को लगा दे पौदे उखाडने के लिए। कटवा ले पेड! ढाब का पानी लदवा कर लाहौर ले जायें। फिर चाहे सिंह यहा से भाग जायें। एक दरवाजा बद होता है तो सौ दरवाजे खुलते हैं। काने काछो का जगल। राजस्थान के रेत के टीले। य सब इसके बाप की जागीर हैं। सिंह वहा जा कर अपना ठिकाना बना लेंगे। क्यो, मैं कुछ झूठ कह रहा हू?'

'सिंह कभी झूठ नहीं बोलते। यह बात गुरुओ ने इन्हे बतायी ही नही है!' दारा सिंह बोल उठा, 'अगर सिंह इसी की अलख मिटा दें! पाच-सात आदमी ही शहीद होंगे ना! न रहेगा बास, न बजेगी बासुरी!'

'यह काम इतना आसान नही है, दारा सिंह, जितना तुम सोचते हो,' बिजला सिंह ने कहा, 'य लोहे के चने है। चबाना आसान नही है। पाप का घडा भरने दो, अपने आप फूट जाएगा। सिंह शोधेंगे तो जरूर, लेकिन वक्त-वेला देख कर। जकरिया खा किस्मत का सिकदर है और जवाई है दिल्ली के वजीर का। दोहरी चीज है—एक करेला, दूसरा नीम चढा। अभी इसने कादिर शाह का नाम ही सुना है। जियारत करने दो उसे, अगर छठी का दूध याद न आ जाये, तो कहना। ये बिल्लिया उन बाघो को चाट जायेंगी। पजाब हमारा है। हम पजाब के वारिस हैं। ये तो मेहमान हैं—कब तक खाटें तोडते रहेंगे! घर तो घरवाली का है!'

अब मनसा सिंह की बारी थी। 'लो भाई, तुम भी दिल का गुबार निकाल लो। तुम्हारा अफरा हुआ पेट भी हल्का हो जाय! बोलो!'

'दर्रा खैबर पर अभी नादिरशाह ने एक ही भभकी दी है। मलतान के सूबे के चावल सफेद हो गये। सूबा लाहौर की सलवार म पेशाब निकल गया। सरहद के सूबे को दौरा पड गया है। दिल्ली म सफे मातम बिछ गयी है। नादिर का मुकाबला कोई नही करेगा। वह सारे पजाब को घोडो के पैरो के नीचे कुचल डालेगा। दिल्ली का कचूमर निकाल देगा। नीबू की तरह निचोड देगा वह दिल्ली के अमीरो-वजीरो को। इनकी तो वैसे ही डर के मारे हवा सरक रही है। नादिर कोई हौआ है? दो हाथ है, दो आखे, दो कान, एक ही घोडे पर सवार है ना? दो घोडो पर तो सवार नही है ना? चार हाथ तो किसी ने नही देखे हैं? आने दो। उसकी तलवारें भी देख लेंगे और उसकी भभकिया भी। अगर अकेले सिंह

जायेंगे। कोई सुनने तक का कष्ट भी नही उठायेगा। इन मुगलो की तलवारो को जग लग गया है। ये नादिर का कुछ नहीं बिगाड सकेंगे। शराब ने इनकी तलवारो को तडागी पहना दी है। यह काम सिहो के पल्ले ही पडा हुआ है। भला कोई पूछे, भई, हम क्या लेना है परायी आग मे जल कर? हमारे खून के प्यासे तो ये भी हैं, वे भी। दोनो को लडकर हल्के हो लेने दो। वह जरा दिल्ली को लूट ले। दो-एक डोने निकाल ले। दबी हुई दौलत उखाड ली जाये। इनकी नाक से तो टप-टप बिच्छू गिरते हैं। जरा नाक साफ हो जाये, फिर सिह सोचेंगे। इस बार पजाब नादिर से नही भिडेगा। हम तो नादिर की कमर तक नही देखेंगे, जब वह जा रहा होगा। जब वह दौलत से भरी गाडियो, अशरफियो से लदे ऊट और घोडे, गहनो की गठरियाँ लिये पजाब से गुजरेगा तो हम उसके साझीदार बनेंगे। मीठा झूठ के बहाने खाया जाता है। हम तो भार ही हल्का कर सकते हैं। हमे जरूरत ही क्या है जग के सामान की? घोडे, तोपें, दौलत—नादिर उन सबका करेगा भी क्या? बेकार का भार! सफर मे कम भार ही बेहतर रहता है। उनका सफर तो बेहद लम्बा होगा। हमारा मेहमान है। सेवा करना हमारा फर्ज है। यह गुरमत लक्खी जगल मे स्वीकार किया जाना है। लक्खी जगल के सूरमा ही शोधेंगे नादिरशाह को। इन सधुरे लुटेरो ने पजाब को जरनैली सडक बना रखा है। जब तक इनकी नाक मे नुकेल नही पडती, तब तक ये मानने वाले नही हैं। और अभी तो नादिर सिर्फ खाला ही है। भभकी सुनने दो जकरिया खा को—मा की गोद मे जा छिपेगा! लाहौर पर उसकी कौन-सी ईंट लगी हुई है! ससुराल चला जायेगा। पर सिह कहा चले जायें? यह हमारी जन्मभूमि है। मा-बाप का घर छोड कर हमे कहा जाना है?'

बिजला सिह ने टोका, 'गगा जल की तरह पवित्र है लक्खी जगल। खाने-पीने के लिए बाघ-बिलाव और काम के लिए रीछ! इस तरह की बातें परदे के पीछे की जाती हैं। विद्वान् कहते हैं कि दीवारो के भी कान होते हैं।'

'सिहो मे कोई चुगलखोर नही पैदा हो सकता। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि सारे पजाब मे चुगली खाने वाला एक भी आदमी नही है। सारे पजाब को इनसे हमदर्दी है। सारा पजाब दुखी है। उन्होंने सारे पजाब की इज्जत को सूप मे डाल कर छाट डाला है। पजाब के सारे लोग सिक्ख हैं—चाहे कोई हिंदू हो या मुसलमान...' पारा सिह एक क्षण को रुक गया। फिर बोला, 'खानगा एकदम तैयार है। सिहो को कौन-से घोडे तैयार करने हैं! भूरे को कधे पर डाला और तैयार।...'

मनसा सिह ने अपनी दाढी पर हाथ फिराया। 'जरा ठहरो, जल्दबाजी की जरूरत नही है। जकरिया खा को सी मद्धिम पडने दो। उसका दिमाग टिकाने आ जाय। टटिहरी की तरह आसमान को सिर पर उठाये फिरता है। सिह तो इसे चीटियो की तरह लगते हैं। अमृतसर खाली करवाना है!—तुम करवा के

देख लो। थोड़ा-बहुत रौब जो बना हुआ है, अगर धूल मे न मिल गया तो हमारा नाम बदल देना। देख लेना, हम खान को गली के तिनको से भी हल्का कर देंगे। सारे पजाब से ईंट उखाडने से हमारा डेरा निकलता है। हमारी धर्मशालाए, हमारे रैनबसेरे—यही हमारी छावनिया हैं और यही हमारे दुर्ग। पजाब के एक-एक घर मे एक-एक किला है। ये पुजारी, ये साधु योद्धा भी हैं। ये माला को छोड कर कृपाण उठाना भी जानते हैं। इन सभी सत-सिपाहियो को गुरु ने सजाया है और उन्होने ही इन्हे भेजा है। बारिश पडने दो, चौमासा लगने दो, फिर देखना ये कैसे खुंबियो की तरह फूटते हैं! ये सिंह, बाघ जगल मे ही अच्छे लगते है। मुगलो की सेना भेड-बकरियो का बाडा है, एक बाघ उनके बीच जा घुसा तो सभी बकरियो को चीर कर रख देगा। सिंह वक्त की तलाश मे हैं। ये समझते हैं कि हमसे डर गये। हमे डराने वाला अभी पैदा ही नही हुआ है। हम सिर्फ अकाल पुरुष से डरते हैं। समय आ रहा है. राज करेगा खालसा आकी रहे न...'

'बोले सो निहाल—सत्श्री अकाल!' सब सिंहो ने मिलकर जयकारा बोल दिया।

●●

गुल्लू बाई

मोते जागते, खाते-पीते, शराव और अय्याशी के अखाडों मे, यहा तक
कि गाव के चौराहो म भी एक वात चक्कर लगा रही थी . 'नादिर आया'।
'नादिर आ गया, नादिर ! नादिर पजाव की धरती को लहू-लुहान कर
देगा, पजाव की इच्छाओ को पी जायेगा, ईरानी गरदन तोड कर खून पीने के
आदी हैं वेगमो और हरमो के बीच नादिर की कहानिया नादिर ने लहू
मुखा दिया है पजाव के शासको का। एक दिन सूवा लाहौर का जकरिया खा
गुल्लू बाई मिरासिन के चौवारे म बैठा शराव उडा रहा था। रखैल थी ना !
लेकिन गुल्लू बाई अपनी जूतो पर नही रखती ऐसे सूवेदारो को। उसकी महफिलें
बडे जाडा म थी। जकरिया खा उसन अगूठे के नीचे रखा हुआ था । जब
वह नश म वेमुध हो गया तो गुल्लू बाई ने धीरे मे कहा, 'नादिर।'
'कहा है नादिर ?' जकरिया खा चौंक कर बोल उठा।
'दर्रा खैवर म मेरी वगल म नही है। मुना है, चलने वाला है। आया
कि आया ।' गुल्लू बाई ने कहा।
'अभी बहुत दूर है, कोस-भर चली नहीं कि बाबा प्यासी ! नादिर घोडे
पर ही आयेगा, उडनखटोले पर नही। अभी आषाढ जायेगा, सर्दी आयेगी, तब
कही नादिर यहा पहुचेगा। अगर रास्ते म ही किसी ने थोबडा तोड दिया तो
खैवर पार करना भी मुश्किल हो जायेगा। तूने तो मेरा नशा ही उतार दिया !
अरी कमजात ! नादिर कोई मौत का फरिश्ता है ? हमने चूडिया पहन रखी हैं ?
तेरी तरह महदी नही लगा रखी है, जो उतर जायगी। दिल्ली की फौज आ
रही है नादिर के परखचे उडाने के लिए। अगर हमने उसका थोबडा न सेंक
दिया तो हमारा नाम जकरिया खा नही ! मैं गम गलत करने आया था, पर
तूने काव कांव मचा दी !'
'आ गयी फौज दिल्ली की ! यह मुंह और मसूर की दाल ! वह तो शराव
के प्याले बदल बदल कर पी रही है। इधर झाकने की उसे फुरसत ही कहा ?'
गुल्लू बाई ने व्यग्य किया।

'जवान को लगाम दे, कुलच्छिनी! मुंह खराब हो तो बात तो अच्छी करो। मान लिया, दिल्ली के हाकिमो से तेरा समधियाना है। पर वे आयेंगे जरूर—पत्थर की लकीर है।'

'आ चुकी फौज! नादिर शाह मुलतान और लाहौर के सूबो के लिए जजीरें घडवा कर ला रहा है। सुन्दर लोहे की नही, सोने की, हीरे-जडी जजीरें, जो कमर म पडी सुन्दर लगें।'

'तुझे कैसे मालूम?'

'बताने वाले मुझे भी बता गये हैं। मेरे चौबारे पर हर किस्म का आदमी आता है।'

'बडी कमजात हो!'

'ये चौबारे जागीरदारो, नवाबो, सूबेदारो के लिए खुले हुए हैं। उन्हें कोई नही रोक सकता—सूरज चाहे उगे, चाहे डूबे! मैं रोकूँ, तो खाऊ कहा से? नादिर की नजरें तख्ते-ताऊस पर हैं। लाहौर वह गाजरें खाने नही आ रहा है! तूँबे उसे दिल्ली में ही मिलेंगे। तुम्हारे लिए शाही खिल्लत तैयार है। उसने कफन को सदूक म डाल रखा है। तुम नादिर से गठजोड कर लो। मजा करो। टाग पर टाग रख कर ऐश करो। नादिर पगडडी पर चल दिया, तो फिर मैं-तुम होंगे, तीसरा कोई नही होगा। क्यों, बात पसद आयी?' गुल्लू बाई ने पूछा।

'कगन बनवा कर हमने दिये हैं और बाजे तू दूसरो के बजा रही है!'

'कगनों को खाऊ? मोहरों के बगैर पेट की आग नही बुझती। तुम्हारा मन किया तो तुम आ गये। चार जुम्मे की बार नमाज तुम्हारा इतजार किया। रोजे नही रखे जाते हैं।'

'नादिर! नादिर!' कमरे में आवाजें आयी, 'क्या बात है?'

'मेरी बादी सोते में डर गयी है। नादिर उसे डरा रहा है!' गुल्लू बाई कमरे मे गयी और लौट कर बोली।

'इसका मतलब है कि नादिर का हौआ सारे पजाब म फैल गया है। नादिर क्या उतना ही जालिम है, जितना तुम बता रही हो? बडा डर है उसका! बडी दहशत है। बडा डरपोक है पजाब!' जकरिया खा बोला।

'नादिर शाह का नाम ही इतना डरावना है कि आदमी चैन से नही सो सकता।'

'मैं अभी जा कर किले की बुर्जियो पर तोपें लगवा देता हू।' जकरिया ने कहा।

'अभी बहुत दूर है नादिर! कहा दर्रा खैबर और कहा लाहौर! मैं तो तुम्हारा दिल टटोल रही थी। उस लुटेरे की क्या मजाल कि लाहौर की तरफ आख उठा कर देख भी ले! डरने की जरूरत नही है। आज रात मेरे पास रहो।

मौसम बहुत खूबसूरत है। कल सोचना...' गुल्लू बाई ने जकरिया खा का हाथ पकड लिया।

'कमजात! यह चौवारा नही, नादिरशाह के जासूसो का अड्डा है। इसका मतलब है, नादिर के आदमी सारे पजाब मे फैल चुके हैं...नादिर... नादिर...' जकरिया बौखलाया-सा बोल उठा, 'यह जरूर कोई गुल खिलायेगा .' हार देते-देते जकरिया खा चौवारे से निकल गया। अधेरी रात से तनिक भी नही डरा वह। गुल्लू बाई हस-हंस कर दुहरी हो गयी।

जन्नत का द्वार

अजीब मुसीबत आ पडी थी—इधर नादिर शाह और उधर दिल्ली सरकार। दोनो के शिकजे म फसा जकरिया खा। नीद उड गयी, मुहब्बत भरे सपने वीरान हो गये। मखमली बिस्तरो पर नीद न आती। बदन छिल जाता। तीन साल का इकट्ठा खेराज कौन देगा? हजम होना भी मुश्किल है। नीद भले ही हराम हो चुकी थी, लेकिन जकरिया खा भी कम दावबाज नही था। वह छत्तीस घाट का पानी पी चुका था। उसने एक एलान जारी किया जिसने सिंहो को बहुत भडका दिया

१ जो आदमी किसी सिह की सूचना देगा, उसे दस रुपये इनाम।

२ जो आदमी किसी सिंह को पकडवायेगा, उसे पच्चीस रुपये इनाम।

३ जो आदमी किसी जिदा सिंह को पेश करेगा, उसे पचास रुपये इनाम।

४ जो किसी सिंह का सिर पेश करेगा, उसे सौ रुपये इनाम।

५ जो किसी का घोडा छीन ले, घोडा उसका।

६ अगर कोई सिंह किसी के हाथो कत्ल हो जाये, तो कानून उसे माफ कर देगा।

७ जो आदमी इससे भी बढ कर कुछ कर दिखाये उसे जागीर मिल सकती है।

सिंह भले ही भडक उठे थे, पर इससे यह नुकसान हुआ था कि अहलकारो ने अपना सारा ध्यान सिंहो की ओर मोड दिया और गावो को अल्लाह के नाम पर छोड दिया। गावो के चौधरी और इलाका के सरपच, सभी सिंहो के शिकार म निकल पड। किसी के साथ पाच आदमी थे कोई पचास लेकर चला कुछ ढाणियाँ म सौ भी थे। जिधर जिसका मुह उठा वह उधर ही चल दिया। हालत यह हो गयी कि सिंह आगे आगे और 'शिकारियो' के टोले पीछे पीछे। कही आगे सिंह और पीछे फौज, और कही आगे फौज और पीछे सिंह। घोडो पर सवार चौधरियो का ताव सही नही जाती थी, लेकिन सिंह उन्हे अपनी जूती पर भी नही धरते थे। आगे आगे सिंह लूटते गये और पीछे पीछे शाही फौज उजाडती गयी। सारा देश उजड गया। न चारा न फसल न घर, न बाडी,

न कुआ न खेत—शाही फौज ने तो कुओं की ईंटें तक उखाड़ ली ! जमींदारों का खाता खराब कर गयी फौज। न फसल हुई, न अनाज घड़ा में पड़ा। मामला किसके पल्ले से निकले ? सरकार कैसे चले ? खजाने को तो खाली होना ही था। भेड़, बकरियां, गायें, बछड़े-बछड़ियां, सबको जिबह करके हजम कर गयी फौज। भूखे-नंगे अपनी बोटियां काट कर तो सरकार को दे नहीं सकते थे। जकरिया खां ने दिलेरी तो दिखाई थी, लेकिन वह दिलेरी उसके सामने प्रश्न-चिह्न बन कर खड़ी हो गयी। सिंहों के साथ वैर बहुत महंगा पड़ा।

खिराज वसूल करने के लिए जब दिल्ली की फौज चढ़ आयी तो जकरिया खां का दिल डूबने-उतरने लगा। फौज के साथ सलावत खां हैवत खां और दो हजार रुहेले लाहौर पर आ चढ़े। बचा-खुचा उन्होंने उजाड़ दिया। उन्हीं दिनों पांच पांच कोस पर दीया जला। पंजाब वाले भूख के दुख से देश को तिलांजलि दे गये। जाते हुए लोगों ने सात बार सलाम किया पंजाब को। लोटा-चटाई उठायी और आगे जाकर डेरा डाल दिया। सारा पंजाब दहल उठा—हिल उठा।

दिल्ली वालों ने जकरिया खां की गरदन दबोच ली। खजाना तो खाली पेट बजा रहा था। दस-बीस हजार से खिराज पूरा कहां होता ! यहां तो मोटी रकम चाहिए थी।

'सूबेदार साहब, हमें तो खिराज की रकम चाहिए' हम आपका मुंह देखने नहीं आये हैं। खूबसूरत सूरतें हमने दिल्ली में बहुत देख रखी हैं !'

'खिराज तो आपको देना ही होगा—मुझे रोज का खर्च भी चाहिए—पांच हजार।' सलावत खां बोला, 'खराज बाद में देना, पहले हमारा पेट भरिये !'

'खर्च तो लीजिए, खिराज की रकम का इंतजाम मैं कर रहा हूं। ईरानी शराब के ढोल पड़े हुए हैं। सूखी शराब की माजून घोलिए और पीजिए। खिराज देकर आपको विदा करूंगा। लाहौर आये हैं आप लोग। चार दिन मौज-मेला कीजिए। इस जिंदगी का क्या भरोसा है !' जकरिया खां ने दोनों खान बादशाहों को बहला लिया।

इलाके के चौधरियों की जब मुरम्मत हुई तो खजाना खुदबखुद भरना शुरू हो गया। कुछ ही दिनों में लाखों जमा हो गये। फौजी शराब पी-पी कर अंधे हुए घूम रहे थे।

'शराब ज्यादा पीयो, खाओ कम। यह शराब दिल्ली में नहीं मिल पायेगी। यह तो मेहमानों के लिए खासतौर पर रखी गयी है। बगलें गर्माओ और ऐश करो।'

'जन्नत यहां है, यह आज पता चला है। लाहौर जन्नत का दरवाजा है।' फौजी कह रहे थे।

मेरा मुंह, तुम्हारी चपत

'खा साहब ! आप यमुना का पानी पीते रहे हैं, वह तो बड़ा मीठा और हल्का है। मैं रावी का पानी पीता हूं!' जकरिया खा कह रहा था। 'यह कसैला और ताकतवर है। इसे ताकत वाले ही हजम कर सकते हैं। पानी-पानी की तासीर है। जाने लगे या न लगे, इसीलिए मैंने ईरान की सूखी माजून शराब के ढोल पेश किये हैं। मैंने अपने लिए मंगवायी थी। घर आये मेहमानों की सेवा करना पंजाबियों का फर्ज है। किसी बात की तकलीफ नहीं मानते। मैं हाथ बंधा गुलाम हूं।'

'आपकी खिदमत का बहुत-बहुत शुक्रिया! बहुत दिनों के बाद रोटी खाने का मजा आया!' सलाबत खा ने कहा।

'आपकी मेहमान-नवाजी कभी नहीं भुलायी जा सकती!' हैबत खा ने कहा।

दोनों धूर्त थे—अधे शराबी। रही-सही कमी गुल्लू बाई के डेरे से आयी सूरतों ने पूरी कर दी। उनकी झांझरें नशा खिला गयीं। फौजी बिल्लौरी जोबन में अपने चेहरे देखते रहे।

उनमें एक रुहेला सरदार था। जकरिया खा ने उस पर डोरे डाले। उसे अपने शीशे में उतारा। अलग शराब, मोहल्ले की सब से सुन्दर लड़की, अलग महल, और अपना निजी दस्तरखवान उसके हवाले कर दिया। सारी रात सोने की जंजीर खनकती रही। दिन चढ़े तक भी झांझर ने अपनी जबान बन्द नहीं की। बहुत खुश हुआ रुहेला सरदार।

'यह लो दस हजार मुहरें। इनका कोई हिसाब-किताब नहीं है। यह नजराना है। इसे झोली में छुपाओ। किसी को कानों कान खबर न हो। मैं जानूं या खजाने वाले। आपको बोलना कम है। मेरे इशारे पर हां में हां मिलाते जाना है!' जकरिया खा ने कहा।

'यह तो सिर्फ मुंह दिखाई है! आप ने फिर कब आना है पंजाब! हम गरीब लोग हैं, आपकी कोई सेवा नहीं कर सकते।' लाहौर का सूबेदार मक्खन लगा रहा था।

'गोली किसकी और गहने किसके ! जब नौकर ही सरकार के हो गए, तो फिर अकड़ काहे की ! सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का ! तुम अपना अलगोजा बजाओ, हमें अपनी बांसुरी बजाने दो !' म्हेला सरदार नशे में धुत था।

जकरिया खां पर जादू सिर चढ़ कर बोला।

जब सूबे ने अपने मारे मुहरे पक्के कर लिये, तो फिर उसने सिंहों के साथ रिश्तेदारी जमाने की सोची। हमदर्द ढूंढो। सिंहों पर भी जादू की छड़ी घुमायी जाये। डमरू बजाने वाला आदमी इकट्ठे कर लेता है। उसने झोली में से चोर निकाले। दीवान कौड़ा मल के खानदान वाले शाही नौकरी में थे। जकरिया खां ने उन्हें महल में बुलवा भेजा।

'आइए दीवान जी ! आपका मामला अभी तक सरकारी खजाने में जमा नहीं हुआ है। क्या बात है ? कहीं दिल्ली रास्ता तो नहीं काट गयी ?'

'सरकार ! सारा पंजाब उजड़ा पड़ा है। साग हो रहा है। अन्न दाने का कहीं नाम तक नहीं है। लोग रूं-रूं करते घूम रहे हैं। जिनको पेट की पड़ी हो, वे लगान कहां से दें ?' कौड़ामल के आदमी ने जवाब दिया।

'क्या सीपी-सा मुंह बना रहे हो ! माफी चाहते हो ? तुम्हारे जैसे लोग अगर मामला नहीं चुकायेंगे, तो दिल्ली से पीछा कैसे छूटेगा ?' जकरिया खां ने कहा। 'खजांची को बुलाओ !'

खजांची आया, तो जकरिया खां ने उससे कहा, 'हिसाब चुकते की रसीद दे दो दीवान को।' रसीद दे दी गयी, तो वह फिर बोला, 'लो भाई, अब मामला तो साफ हो गया। अब तो खुश हो ना ! क्यों ?' उसकी जुबान में मिठास घुली हुई थी।

'खां साहब ! हम तो हुजूर के नौकर हैं। नौकरी की तो नखरा कैसा !'

'वक्त कम है। काम मुश्किल है, मगर आपके बगैर यह काम हो नहीं पायेगा। जल्दी करो। रसीद पर शाही मुहर लगवा लो और जो काम मैं बताने जा रहा हूं, हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाओ।'

'आप बत्तीस दांतों के बीच से जो बात कहेंगे, उस पर फूल चढ़ाये जायेंगे।'

'तो जाइए, सिंहों के डेरे पर जा कर उन्हें मुबारक दे आइए। कहिए, परसों सूरज की टिकिया निकलने से पहले शाही खजाना दिल्ली जा रहा है लूट लो। मेरी फौज पास खड़ी रहेगी, मुंह देखती। तुम अपना काम करो और हिरन हो जाओ ! तुम्हारा लूटा हुआ माल तुम्हारी अमानत माना जायेगा। लाहौर की सरकार उसकी कोई पूछ-पड़ताल नहीं करेगी। माल मिल रहा है, ले जाओ। यह मौका कुदरत ने दिया है, फायदा उठाओ। क्यों, है ना मुबारक देने की बात ?' जकरिया खां ने दीवान की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

'अगर सिंहों ने मेरी बात न मानी तो ?'

'बात मनवानी पडेगी । इसम उन्हे क्या नुकसान है ? चार दिन गुलछर्रे उडा लेंगे । माले मुफ्त दिले बेहरम ।'

'अगर उनकी आदत बिगड गई तो ?'

'खुदा मालिक है । फिर कोई बहाना मिल जायेगा । जल्दी करो । वक्त कम है । जा कर बात करो और आ कर मुझे बताओ ।'

'तनख्वाह लगवानी पडेगी तो बात तभी छेडी जायेगी । तनख्वाह की रकम खजाना अदा करेगा । अच्छा, मैं सिंहो के डेरे पर जाता हू । भली करेंगे राम ।'

फैसला हो गया । सिंहो न तसल्ली देकर चलता किया दीवान को और चलते-चलते बात भी उसके पल्ले बाध दी कि अगर इसम धोखा हुआ, तो हमसे बुरा कोई न होगा । तुम्हारी फौज चुप रहे, बाकी दिल्ली के बनियो को तो हम देख लेंगे ।

सुन कर नवाब लाल हो उठा । उसके पाव जमीन पर नही पड रहे थे ।

'दौलत और घोडे अगर मिल जायें, तो बुराई ही क्या है ? पजाब की दौलत पजाब म ही रह जायेगी ! हमारे काम आयेगी, सिंहा के एक जत्थेदार क विचार थ ।

'रखवाला जैसे खाली बागो म तोते उडाता है, उसी तरह तुम्हे शोर मचाना है । मेरी फौज सिंहो को उगली तक न लगाय । वे शोर मचायें, धाड मारें, तुम्हे कान तक नही धरना है । तुम लोग अपना काम करो और पत्रा बाच जाओ ! आजकल जकरिया खा मेहरबान है । लालची अपना दाव लगा रहा है, और तुम भी अपनी गाठ पक्की करो ।'

'कल शाही खजाना लाहौर से दिल्ली जा रहा है । खजाने की रकम लूट लो और नौ दो ग्यारह हो जाओ । पुण्य भी और फलिया भी । देवी दशन भी और व्यापार भी । लूट का माल सब अपना है, इसम किसी की हिस्सेदारी नही है । यह बात मैं नवाब से तय करके आया हू ।' यह बात दीवान ने जत्थेदार से की थी और जत्थेदार न सब को बता दी थी ।

अदर खाने सारी बात तय हो गयी । निर्णय कर लिया गया । सिंहो ने अपने रास्ते की जाच भी कर ली । भागने के रास्ते भी तय कर लिय । हल्ल का पैंतरा भी बना लिया । खालसा पूरी तरह तैयार हो गये ।

चुपडी और दो दो ! सिंहा को और क्या चाहिए था ? वे लाहौर के दरवाजो को सभाल कर बैठ गये । रूप पठानो का-सा । जकरिया खा मोम की तरह नर्म था और सिंह फौलाद की तरह सख्त जान ।

चोरों को मोर

खां साहब ने साठ गाडियां भर दीं। उन गाडियों में तीन करोड़ अशरफियां, सोने चांदी के बरतन, अनाज और अन्य बहुमूल्य सौगातें थीं। पाई-पाई गिन कर दे दी। खजाना भाय-भाय कर रहा था।

'खजाना सम्भालिए। यह खिराज की पूरी रकम है। वसूली की सरकारी रसीद लिख कर मुझे दीजिए, मैं भी सुख की सांस लूं। शहंशाह से कह दें, वे फौज जल्दी ही भिजवा दें। नादिर शाह आया कि आया। कहीं ऐसा न हो कि फौज वक्त पर न पहुंचे और नादिर मुझे जंजीरों में जकड कर ईरान ले जाये। लाहौर के सूबे में भी हाथ धोने पड़ें और मेरी सारी उम्र भी जेल में कटे। अगर ऐसी कोई बात हो गयी, तो लाहौर का सूबा ईरान के मातहत हो जायेगा। यह बात सोच-विचार ली जाये। अब यह जिम्मेदारी आपकी है। सदेश दे दीजिए और उस पर अमल करवाइए।' जकरिया खां ने सारी बात समझा दी। फिर एक बार दुबारा अपनी बात सामने रखी 'रकम आपने सारी गिन ली है। अब हमारे जिम्मे कुछ भी बकाया नहीं है। ये लफ्ज भी रसीद में लिख दीजिए। खुदा ने मेरी और आपकी, दोनों की इज्जत रख ली है। अच्छा, खुदा हाफिज।'

'दस आदमी रकम पर लगाये गये थे। उन्होंने पाई-पाई गिन ली है। लाहौर के लोग मिलनसार हैं। ईमानदारी सिर्फ इनके हिस्से में आयी है।' रहेला सरदार बोल उठा।

मुट्ठी गर्म हो चुकी है इसकी तो वही बात है नीचे-नीचे खाये जा, ऊपर शोर मचाये जा। चांदी के जूते में बड़ी बरकत होती है।

सुवेग सिंह यही सोच रहा था।

तोहफे, नजराने, खिल्लतें—जकरिया खां ने सलावत खां और हैबत खां को दे-दिला कर विदा किया।

वे लाहौर से चले, तो खुश थे। खजाने का रखवाला रहेला सरदार था। उसका घोड़ा काफिले के बीचोंबीच था। खान बड़े खुश थे। राह चलते भी मुजरे

हो रहे थे। शराब उड रही थी। पालकियो मे लाहौर से तोहफे मे मिली बेगमे थी। काफिला क्या था, शाही बारात जा रही थी।

सुबेग सिंह ने कान लपेटे और हवा हो गया। सिंहो के पास पहुंच कर उसने बात उनके कानो मे डाल दी।

शाही खजाना दिल्ली की ओर जा रहा था। नादिर शाह के लिए दौलत इकट्ठी हो रही थी। ब्यास के किनारे सिंहो के शिविर लगे हुए थे। कडाह प्रसाद (हलवे) की देगचिया तैयार थी। सिंहो ने प्रसाद लिया और अरदास की। उन्होंने पहले से ही दावतें शुरू कर दी थी...वैसे, दावत क्या थी, मुट्ठी भर चने हर सिंह को ज्यादा मिल गये थे।

शाम हो रही थी। अंधेरा अपने पाव पसार रहा था। रात ने अपनी ढोलक बजानी शुरू कर दी थी।

फौज का पडाव ब्यास के किनारे ही मुकर्रर हुआ। काफिला उतर रहा था। फौज सुस्त पड रही थी।

सिंहो ने अपने जत्थे को दो हिस्सो मे बाट लिया। एक हिस्सा ब्यास के किनारे खडा था। उसे हल्ला बोल कर लाहौर की ओर भागना था, और लाहौर की तरफ से जिस जत्थे को हमला करना था, उसे नदी के किनारे-किनारे चलते हुए राजस्थान पहुंच जाना था। सिंहो ने खज़ाना उतरने नही दिया। अभी फौज ने घुटना भी नही मोडा था, कि ऐसा ज़ोरदार हमला किया कि उन्होंने खजाने से लदी हुई गाडिया हाक ली। जब तक फौज को होश आया, तब तक सिंह खज़ाने को ठिकाने लगा चुके थे। आधी फ़ौज अभी पीछे ही थी और शराब की चुस्किया ले रही थीं। खाली गाडिया ब्यास के किनारे खडी रात की आखिरी नमाज अदा कर रही थीं। रुहेला सरदार माथे पर हाथ धरे दहाड मार कर रो रहा था।

'कोई मर गया है क्या! दहाड मार कर रो रहे हो?' सलावत खा बोला।

'खज़ाना लुट गया! लुटेरे लूट कर ले गये! ये लुटेरे सिंह ही हो सकते हैं।'

'चलो, नादिरशाह बोझ से बच गया।' हैबत खा बोल उठा।

'दिल्ली जा कर क्या जवाब देंगे?'

'सिंहो ने खजाना लूट लिया और हवा हो गये। सिंहो का कोई ठिकाना हो तो उनके पीछे जायें! बिना बात सिर मे धूल कौन डलवाता फिरे?' सलावत खा ने कहा।

'देने वालो ने खेराज दे दिया। लेने वाले ले गये। यह बात अलग है कि आधी रकम लाहौर मे जकरिया खा ही खा गया। गिनने म आधी रकम तभी नही थी। जो उसने दी सिंहो ने लूट ली। शहंशाह को तो खेराज मिल गया।'

'ये काम हुकूमतो के हैं। हमने तो अपने सौ आदमी मरवा लिये। हुकूमत ढूँढे सिहो को और दे मजा, जो देनी हो। हमारी कलगिया कौन उतार सकता है? अगर ज्यादा जोर मारेंगे, तो हम नादिरशाह से मिल जायेंगे।' सलावत खा के विचार थे।

बदर के गले म रस्सी थी, वह टूट गयी। आगन खुला हुआ था। सिहो का दाव लग गया। चलो, चार दिन कडाह-प्रसाद छक लेंगे सिह। बडे दिनो से कडकी चल रही थी। लगर मस्ताना और सिह कामी।

●●

हवाई किले

शहशाह के लिए भी सच्चा और सिहा के साथ भी हमदर्दी ! चतुर लोगो से खुदा बचाये । रुहेला सरदार, सलावत खा और हैबत खा जैसे भेड के खून के कारण फासी के फदे तक जा पहुचे । सैयद भाइयो ने उन तीनो को ही जेल मे बद कर दिया। लाहौर से आयी बेगमो मे से कुछ को तो सैयद ले गये और कुछ दरबारियो मे बट गयी।

ज़करिया खा ने शहशाह को चिट्ठी लिखी कि तीन करोड अशरफिया और साज-सामान गिन कर आपकी फौज को चलता किया था, पर मुझे बडा अफसोस है कि फौज की गफलत के कारण सिह लूट कर ले गये और घडी-पल मे गायब भी हो गये। मेरी सारी मालगुजारी मे सिह खास तक नही सकते। अगर लुटेरो को रोका न गया तो ये जरूर हुकूमत पर हाथ डाल देंगे।

नजावत खा, सफदर खा और जाफर खा की कमान मे बीस हजार की सेना लाहौर की तरफ रवाना हुई—सिहो का बीज नष्ट करने के लिए। सिहो मे से कुछ तो पहाडो मे जा छुपे, कुछ बीकानेर जा पहुचे। मेला कुछ दिन काहनूवाल के पत्तन पर भी लगा। लक्खी जगल मे भी रौनक लगी हुई थी। बदकिस्मत पजाब को शाही फौज ने एक बार फिर लूट लिया । मारे गये साऊ मुसलमान, बुजदिल हिंदू और अधकचरे नामधारी सिख। मुसलमानो का भी खासा नुकसान हुआ। सेना लाहौर मे जमी बैठी थी। आखिरकार गश्ती सेना ने माझे के गाव छान मारे—न कोई सिह मिला, न उनका पता। ज़करिया खा घबराया हुआ था। गश्ती सेना ने अति कर दी थी। सिह तो मिले नही, कुत्तो को मार-मार कर उन्होने ढेर लगा दिये। इन कुत्तो ने उनकी शलवारें फाड दी थी। गश्ती सेना का सारा गुस्सा उन्ही पर निकला।

खाली बैठी, मक्खिया मारे ! उन्होने मुसलमानो के घरो के किवाड खोले, वही मुर्गिया भूनी और पख नोचे। वही शराब उडी। सतियो का सतीत्व लूटा। न हाकिम बोला, न लाहौर का सूबेदार।

फौज ने बेशर्मी की हद को हाथ लगा दिया। आखिरकार लाहौर-वासियों ने चदा इकट्ठा किया और गश्तो सेना की झोलिया भर दी और अपने गले से हत्या उतारी। गश्ती सेना के कुछ दस्ते फिर भी रह गये। जकरिया खा को अपने भीतर का जाडा मारता था कि कहीं भरी दुपहर मे वह नगा न हो जाये। नादिरशाह सिर पर चढता आ रहा था। उसे मालूम था, पहला वार उसी पर होगा। पहला मुकाबला उसी के साथ होगा। इसीलिए वह पजाब वासियो के साथ कोई बदमलूकी नही करना चाहता था। वह सिहो को क्यो छेडे ? फनियर बिल मे घुसे हुए हैं, बिल मे हाथ डाल कर दश क्यो ले ? शेरो को छेडने की जरूरत नहीं है। यह बला टल जाये, तो बाद मे देखेंगे। सिह तो घडे की मछलिया हैं, जब चाहा पकड लेंगे। इन्हे हल्का कर नादिर के गले डाल दिया जाये, बाद मे मैं हल्ला बोल दूं—नादिरशाह दुम दबा कर भाग जायेगा और मेरी सूबेदारी बनी रह जायेगी। बसना तो मुझे ही है पजाब मे। दिल्ली वाले यहा बैठे नही रहेगे..।

जकरिया खा यही सब सोच रहा था।

बिल्ली की-सी आखो वाला जकरिया खा यहा भी दाव लगाना चाहता था। अदरखाने सिहो के साथ गठजोड करना चाहता था, लेकिन बिचौलिये नहीं मान रहे थे।

अपने-अपने चरखे

'मुगलो के शीशमहल को लोगो ने ईंटें मार-मार कर तोड दिया और उसकी किरचें हैदराबाद, लखनऊ, बुंदेलखड, पूना और पजाब मे जा गिरी।' बिजला सिंह बोला।

'वह कैसे ?' मनसा सिंह ने पूछा।

'पहले पजाब की बात कर लें, यही बात चल रही थी ना, सो जल्दी समझ मे आ जायेगी। बाकी बातें तो परदेस की हैं। बात वह, जो समझ मे आने वाली हो। जकरिया खा दोगला आदमी था। एक तरफ दिल्ली दरबार से उसके कौर साझे थे, दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ गठबधन की ब्योंत वह बना रहा था। शगुन देना चाहता था या शगुन लेना। समधियाई बनने वाली थी। दो किश्तियों मे पाव रखने वाला इन्सान हमेशा डूबता है। उसने एक तरफ तो दिल्ली अर्जी भेजी कि सेना तुरत भेजो। नादिरशाह को लाहौर मे ही रोक दिया जाये—और दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ सुर मिलाने के लिए सरकार लाहौर आयें! मैं आते ही शगुन दूंगा। लाहौर का तख्त आपका इतजार कर रहा है। तीसरी छछूंदर और भी छेड ली! सिंहो के साथ भले ही वैर था, पर वक्त पडने पर तो आदमी गधे को भी बाप बना लेता है! एक बार तो जकरिया खा ने सिंहो को खासे सब्ज बाग दिखाये। मिन्नत भी की, दात भी निपोरे, हाथ जोड कर गुजारिश भी की—आओ, सिंह जी, एक बार मिल कर नादिर से मुलाकात कर लें। हिस्से करना या बाट तो अपने घर की बात है! हम भाई-भाई है। चार ढेरिया तुमने ज्यादा ले ली, या मैंने ले ली—हम लोगो म कोई फर्क नही है। मीठी-मीठी बातें करके उसने सिंहो को घेरे में ले लिया। सिंहो ने कुछ हामी भर दी। गगा-जल और आबे-जमजम एक लोटे में जमा हो गये। सिंहो ने कहा कि हम नादिर की आतो को जरूर फाड डालेंगे, पर तुम्हारे साथ मिल कर नही, अकेले! तुम्हारी-हमारी पटरी नही बैठती। तुम बेपेंदे के लोटे हो, और रहट के डिब्बे जैसे बरतन हो। क्या पता, कब फिसल जाओ। सिर्फ पजाबी होने के नाते हम तुम्हारी मदद करते हैं। अगर हमे कही भी शक हो गया या तुमने हमारे

साथ कोई चालाकी की, तो याद रखना, मा का दूध मुह मे ठूंस कर ही हम दम लेंगे। जाओ, तुम्हारे साथ वचन हुआ। सिंह वचन से कभी नहीं टलते। देखा, तारा सिंह! जकरिया खा गिरगिट की तरह रग बदलता है!' विजला सिंह रुक गया।

'सिंह इतनी जल्दी मोम कैसे हो गये?' तारा सिंह ने पूछा।

'नादिरशाह का हमला, पजाब की मौत। अगर कोई धरती कुचली जायेगी, तो वह पजाब है। दिल्ली वाले तो सलाम कर देंगे। ज्यादा बात होगी, तो अपनी औरतें दे देंगे। पर पजाब ऐसा कभी नहीं कर पायेगा। इसलिए पजाब की खाल जरूर उतरेगी। हमारे सिंहों ने तय कर लिया है—वक्त आने पर बतायेंगे।' विजला सिंह मीठी-मीठी बातें कर रहा था।

तारा सिंह बोल उठा, 'तुम हजूर साहब के पास हैदराबाद की बात बताने वाले थे।'

'हा, मुगल हकूमत का एक स्तम हैदराबाद भी था। निजामुलमुल्क तजुर्बेकार, शक्तिशाली और तेज मिजाज आदमी था। दिल्ली वाले उसके बगैर छींकते तक नहीं थे। बादशाह को उस पर पूरा विश्वास था, पर दिल्ली सरकार ने जो चौपड बिछा रखी थी, उसके खिलाडी सैयद बधु थे। वे मुंह जोर थे, अक्खड थे। उनका हुकूमत पर इतना कब्जा था कि यह बात सिर्फ वही कह सकते थे—लाओ, अधा, काना, लूला-लगडा, कोई शहजादा हो या बादी का पूत या किसी बेगम का कोई पिछलग्गू ..हम जिसके सिर को जूता छुआ देंगे, वही बादशाह बन जायेगा। बादशाह बनाने वाले हम हैं! सैयद बधु हर किसी को घूंसा दिखाते रहते। निजामुलमुल्क की इज्जत उन्होंने धो कर रख दी। भरे दरबार म उसकी दाढी नोच डाली। बूढा मुर्गा भीतर ही भीतर पी गया। उन्होंने कई पापड बेल रखे थे। छत्तीस घाट का पानी पी चुके थे। उन्होंने सकट का हल यह निकाला कि इनकी ताकत को तोडा जाये। निजामुलमुल्क ने नादिरशाह से गाठ-साठ कर ली। दोनो के बीच तोहफे आने-जाने लगे। अपना चाहे कुछ न बचे, इन सैयद भाइयो का घर जलाकर ही सास लेनी है! बादशाह भी सैयद बधुओ से आजिज आ चुका था, पर वह उनके हाथो की कठपुतली बना हुआ था। नचा लो पुतलिया, पुतलीगरो! बाजीगर आ रहा है। वह सब की गरदन मरोड कर रख देगा! हमने कौडियां फेंकी हैं। वे बेकार नहीं जायेंगी। निजामुलमुल्क बदरो को नचाना जानता था!' विजला सिंह के बोलो म बडा असर था।

मनसा सिंह ने एक और सवाल किया, 'अवध भगवान राम की जन्म भूमि है। क्या मदारी वहां भी अपना डमरू बजा रहा था?'

'हां, बिल्कुल! अवध के सूबेदार सआदत खा को भी बुलाया गया मूजी मारने के लिए। आया तो वह बडे जोहर-जलाल के साथ, लेकिन जो शतरज

अपने-अपने चरखे

'मुगलो के शीशमहल को लोगो ने ईंटें मार-मार कर तोड दिया और उसकी किरचें हैदराबाद, लखनऊ, बुंदेलखड, पूना और पजाब मे जा गिरी।' बिजला सिह बोला।

'वह कैसे ?' मनसा सिह ने पूछा।

'पहले पजाब की बात कर लें, यही बात चल रही थी ना, सो जल्दी समझ मे आ जायेगी। बाकी बातें तो परदेस की हैं। बात वह, जो समझ म आने वाली हो। जकरिया खा दोगला आदमी था। एक तरफ दिल्ली दरबार से उसके कौर साझे थे, दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ गठबधन की ब्योत वह बना रहा था। शगुन देना चाहता था या शगुन लेना। समधियाई बनने वाली थी। दो किश्तियो म पाव रखने वाला इन्सान हमेशा डूबता है। उसने एक तरफ तो दिल्ली अर्जी भेजी कि सेना तुरत भेजो। नादिरशाह को लाहौर मे ही रोक दिया जाये—और दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ सुर मिलाने के लिए सरकार लाहौर आयें! मैं आते ही शगुन दूंगा। लाहौर का तख्त आपका इतजार कर रहा है। तीसरी छछुंदर और भी छेड ली! सिहो के साथ भले ही वैर था, पर वक्त पडने पर तो आदमी गधे को भी बाप बना लेता है! एक बार तो जकरिया खा ने सिहो को खासे सब्ज बाग दिखाये। मिन्नत भी की, दात भी निपोरे, हाथ जोड कर गुजारिश भी की—आओ, सिह जी, एक बार मिल कर नादिर स मुलाकात कर लें। हिस्से करना या बाट तो अपने घर की बात है! हम भाई-भाई है। चार ढेरिया तुमने ज्यादा ले ली, या मैंने ले ली—हम लोगो म कोई फर्क नही है। मीठी-मीठी बातें करके उसने सिहो को घेरे मे ले लिया। सिहो ने कुछ हामी भर दी। गगा-जल और आबे-जमजम एक लोटे म जमा हो गये। सिहो ने कहा कि हम नादिर की आतो को जरूर फाड डालेंगे, पर तुम्हारे साथ मिल कर नही, अकेले! तुम्हारी-हमारी पटरी नही बैठती। तुम बेपेंदे के लोटे हो, और रहट के डिब्बे जैसे बरतन हो। क्या पता, कब फिसल जाओ। सिर्फ पजाबी होने के नाते हम तुम्हारी मदद करते हैं। अगर हमे कही भी शक हो गया या तुमने हमारे

साथ कोई चालाकी की, तो याद रखना, मा का दूध मुह मे ठूंस कर ही हम दम लेंगे। जाओ, तुम्हारे साथ वचन हुआ। सिह वचन से कभी नही टलते। देखा, तारा सिह ! जकरिया खा गिरगिट की तरह रग बदलता है !' विजला सिह रुक गया।

'सिह इतनी जल्दी मोम कैसे हो गये ?' तारा सिह ने पूछा।

'नादिरशाह का हमला, पजाब की मौत। अगर कोई धरती कुचली जायेगी, तो वह पजाब है। दिल्ली वाले तो सलाम कर देंगे। ज्यादा बात होगी, तो अपनी औरतें दे देंगे। पर पजाब ऐसा कभी नही कर पायेगा। इसलिए पजाब की खाल जरूर उतरेगी। हमारे सिंहों ने तय कर लिया है—वक्त आने पर बतायेंगे।' विजला सिह मीठी-मीठी बातें कर रहा था।

तारा सिह बोल उठा, 'तुम हजूर साहब के पास हैदराबाद की बात बताने वाले थे।'

'हा, मुगल हकूमत का एक स्तम्भ हैदराबाद भी था। निजामुलमुल्क तजुर्बेकार, शक्तिशाली और तेज मिजाज आदमी था। दिल्ली वाले उसके बगैर छींकते तक नही थे। बादशाह को उस पर पूरा विश्वास था, पर दिल्ली सरकार ने जो चौपड़ बिछा रखी थी, उसके खिलाडी सैयद बधु थे। वे मुंह जोर थे, अक्खड थे। उनका हुकूमत पर इतना कब्जा था कि यह बात सिर्फ वही कह सकते थे—लाओ, अधा, काना, लूला-लगडा, कोई शहजादा हो या बादी का पूत या किसी बेगम का कोई पिछलग्गू ..हम जिसके सिर को जूता छुआ देंगे, वही बादशाह बन जायेगा। बादशाह बनाने वाले हम हैं ! सैयद बधु हर किसी को घूंसा दिखाते रहते। निजामुलमुल्क की इज्जत उन्होंने धो कर रख दी। भरे दरबार म उसकी दाढी नोच डाली। बूढा मुर्गा भीतर ही भीतर पी गया। उन्होंने कई पापड बेल रखे थे। छत्तीस घाट का पानी पी चुके थे। उन्होंने सकट का हल यह निकाला कि इनकी ताकत को तोडा जाये। निजामुलमुल्क ने नादिरशाह से गाठ-साठ कर ली। दोनो के बीच तोहफे आने-जाने लगे। अपना चाहे कुछ न बचे, इन सैयद भाइयो का घर जलाकर ही साम लेनी है ! बादशाह भी सैयद बधुओं से आजिज आ चुका था, पर वह उनके हाथों की कठपुतली बना हुआ था। नचा लो पुतलियां, पुतलीगरो ! बाजीगर आ रहा है। वह सब की गरदन मरोड कर रख देगा ! हमने चौडिया फेंकी हैं। ये बेकार नहीं जायेंगी। निजामुलमुल्क बदरो को नचाना जानता था।' विजला सिह के बोलो म बडा असर था।

मनसा सिह ने एक और सवाल किया, 'अवध भगवान राम की जन्म भूमि है। क्या मदारी वहां भी अपना डमरू बजा रहा था ?'

'हा, बिलकुल ! अवध के सूबेदार सआदत खां को भी बुलाया गया मुंजी मारने के लिए। आया तो वह बडे जोहर-जलाल के साथ, लेकिन जो शतरज

दिल्ली मे खेली जा रही थी, उसके किसी भी मुहरे पर हाथ न पड सका। लाल मुँहे सैयदो के चेहरे ने यो घुडकी दी कि सूबेदार बिल्ली ही बन गया! सैयदो ने उसकी दाढी के बाल भी नोचने शुरु कर दिये। दाढी कोई भी आदमी मुचवा सकता है, लेकिन सामने बैठ कर नोचने से कौन बाल चुनवाये? फिर वह आदमी, जिसने किले फतह किये हों, जिसने तलवारें चलायी हो...वह छोकरो को कैसे पलने बाध सकता है? सैयद बधुओ ने उसकी मेहदी-रगी दाढी को भी मिट्टी म रौंद डाला! बडा परेशान हुआ। बदरो के जब पाव जलने लगते है, तो वे अपने ही बच्चो को पैरो के नीचे कर लेते हैं। सआदत खा ने भी अदर ही अदर नादिर शाह के साथ गठबधन कर लिया।'

'यह सारा टोला ही गद्दारो का था। चोर को आवाजें देकर, अपने घर म पलग बिछा कर दे रहे हैं!' तारा सिह ने कहा।

'मुगल हुकूमत की आखो मे मराठो ने भी सुरमा डाल रखा था। दिल्ली मे उनकी भी तूती बोलती थी। बुंदेलखड के पिडारे भी दिल्ली मे अपने खूंटे गाड कर बैठे हुए थे—हालाकि नुकेल सब की सैयद भाइयो के ही हाथ मे थी, नुकेलो का रग चाहे जो भी रहा हो! कमजोर की बीवी को हर आदमी भाभी कह लेता है। हर आदमी हुकूमत की बोटिया काट-काट कर अपने कटोरे मे डाल रहा था। नादिर शाह फिर क्यो न लूटता! दरवाजे खुले हो तो चोर को माल लूटने मे क्या लगता है।' बिजला सिह थोडी देर के लिए खामोश हो गया।

'नादिरशाह सब के सिर म जूते लगायेगा। सब की इज्जत गलियो मे रुलेगी। गलियो मे नही, चौराहे मे खडी करके नगी की जायेगी पाटेखानो की इज्जत!'

'जिस हुकूमत के इस तरह के सज्जन मित्र हों, उसे दुश्मनो की क्या जरूरत है? लो भाई, अब नादिर ने पजाब को घोडो के पावो के नीचे रौंद डाला। मुलतान ने हार मान ली। लाहौर ने नजराने पेश कर दिये। नादिर का दिल दिलेर हो गया। घमड से फूल गया। ईरानी पहले थप्पड मारता है, फिर नाम पूछता है। ईरानियो के झडे पजाब भर मे झूल रहे थे। उसने दिल्ली दरबार को पैगाम भेजा: मैं आगे नही बढना चाहता, तुम लोग मेरे बागी मुझे वापस कर दो। अगर मुगल सरकार हर्जाना देने को तैयार हो तो मैं लौट जाऊगा। इतनी गर्मी मे बदन जलाकर मुझे क्या लेना है? मुहम्मद शाह ने उसके रुक्के को शराब के प्याले मे डुबो दिया। चिदी-चिदी हो गया फरमान। सीसा ढाल कर उसके एलचियो के गले मे डाल दिया। जब यह खबर नादिर शाह के पास पहुची, तो वह बोल उठा: आग के गोले को आखिर फटना तो था ही!

'रणभूमि बना करनाल। दोनो दलो मे मकाबला ठन गया। कौरवो-पाडवो का युद्ध छिड गया।

'इस्लाम ने इस्लाम के गले पर छुरी रख दी।

'भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया। कटोरे लहू से भरे जाने लगे।

'नादिर तो जर, जोरू, जमीन का भूखा था। हुकूमत की चाबियां नादिर के पास आ गयी थीं। उसने उन्हें कमर में बांध लिया था।

'तीन सूबे नादिर की गोद में जा बैठे थे। बाकी टक्कर सैयद भाइयों से थी। खूब लड़े जवां मर्द। हक अदा किया हुकूमत का। शहीद हो गये, लेकिन नादिर से हाथ नहीं मिलाया।

'कुदरत ने हिंदुस्तान की किस्मत की स्लेट पर लिखा। नाम ईरानियों का था—अक्षर उभर कर नादिरशाह के आये।

'बहादुर सूरमाओं ने गुलामी की जंजीरें हंसते-हंसते पहन लीं।

'जंजीरें क्या थीं, सोने-चांदी के गहने थे!

'मुहम्मद शाह रंगीले ने दिल्ली की चाबियां सुनहरी टोकरी में सजा कर नादिरशाह को पेश कर दीं।

'ईरानियों ने दिल्ली के दरवाजे में कदम बाद में रखा, दिल्ली की कुंआरियों को बुरके में पहले लपेट लिया। गोरी, अल्हड़ लड़कियों को इन वहशियों ने एक रात में ही औरतें बना दिया।

'सिंदूर भरी मांग पोंछ डाली गयी। मोतियों से जड़ी हुई मांग साफ कर दी गयी। किस्मत को अभी उनकी मांगों में दूसरे मोती जड़ने थे। जुल्फों को कैंची से काट डाला गया। जो अति नहीं हो सकती थी, ईरानियों ने वह भी कर डाली। मुंडे हुए सिर वाली दिल्ली किसे अपना खसम माने?'

बिजला सिंह की आंखों में आंसू भर आये थे।

फकीरों की टोली

करनाल के मैदान में मुगल शहशाह की तकदीर में लिखा हुआ सिंहासन स्लेट से पोंछ दिया गया। सजे-सवरे घोड़े पर सवार होकर खान दौड़ता हुआ आया था और जनाज़ा उठा कर ले गये। एक जाबाज शहीद भी करवाया और साथ ही जग भी हारी। सैयद मुँह जोर जरूर थे, लेकिन दिल के सच्चे थे। उन्हें मुगल हुकूमत से प्यार था। देशद्रोही वे नहीं थे। वतन से उन्हें मुहब्बत थी। अगर बाहर से उजले थे, तो भीतर से काले भी नहीं थे . .पर सच्चे को कौन पूछता है?

बगुला भगत बादशाह को बहुत प्यारे थे—वे खुशामदी, जिनकी जुबान में मिश्री घुली हुई थी। शहद उनके होंठो से टपकता। सैयद मीठी बातें नहीं जानते थे। उन्होंने बादशाह को कभी सब्ज बाग नहीं दिखाये थे। सावन के अंधे को चारो ओर हरा ही हरा दीखता है! निज़ामुलमुल्क और सआदत खा, दोनों ही जी-हजूरिये थे। यही अगुवा थे और यही पिछलग्गू। इधर लगाई, उधर बुझाई! ये दोनो नादिरशाह की लल्लो-चप्पो कर रहे थे। नादिरशाह को ऐसे चमचो की ही कमी थी। हिंदुस्तान उसके लिए नया देश था। वह यहा की खसलत से वाकिफ नहीं था। एक रात नादिर ने दोनो को एक साथ बुलाया। शिविर करनाल में लगा हुआ था। पहले निज़ामुलमुल्क भीतर गया, फिर सआदत खा। जब दोनो ने एक-दूसरे को देखा, तो दोनो के हाथो के तोते उड गये। पर ढीठ थे—शर्म पचा गये। युद्ध में हार तो हो ही चुकी थी। अब सिर्फ सौदेबाजी हो रही थी। नादिर ने पहले निज़ामुलमुल्क को खिलत दी। दूसरी बारी सआदत खा की थी। किसी बात पर नादिर से तकरार हो गई। बात तूल पकड गई। नादिर गुस्से में लाल-पीला हो गया। उस वहशी ने सआदत खा की दाढ़ी पर थूक दिया और धक्के मार कर तंबू से निकाल दिया। मेहरबानी सिर्फ इतनी की कि जान बख्श दी। बाकी और कोई कसर न रखी। अनख वाले नवाब से यह हत्तक बर्दाश्त नहीं हुई। उसी रात उसने जहर का प्याला पी लिया और अल्लाह को प्यारा हो गया। लोग कहते हैं कि करनाल में सिर्फ दो जनाज़े उठे—एक खानदौरा का और दूसरा सआदत खा का। सारी फौज ने शोक

मनाया। कथा निजामुल्मुल्क ने भी दिया। नादिरशाह बडा पछताया, ये जनाजे देख कर। जकरिया खा दोशाला और कलगी पहले ही ले चुका था।

तीन धर्मपुत्र थे। वतनफरोशी तो यो ही घडी भर की चीज थी। कान तो काले हो नही जाते! धब्बा तो नही लगा पोशाक पर। उनकी पोशाकें दूध धुली थी। भीतर ही भीतर अपने वतन के टके ही कमाये थे। अपनी मा को नया खसम करवा दिया था। लेकिन नादिरशाह बडा लुच्चा था। उसने तीनो की बात मीठे चावल खिला कर सुन ली, लेकिन साथ ही तीनो के गले मे रीछ वाली रस्सी भी डाल ली। दादा-परदादा का जमा किया हुआ सब कुछ निकलवा लिया। गले म पल्ले डाल कर, लार चाट कर ढीठो ने अपने जुर्माने माफ करवाये। मारे हुए से भगाया हुआ बेहतर!

बादशाह जब बादशाह से मिला, तो गलबहिया डाली गयी, खैर-खैरियत पूछी गई। दिल्ली के बादशाह ने निवेदन किया, 'शाहे-ईरान थक गये होगे। कुछ दिन मेरे गरीबखाने पर मेहमान रहिए, थकान उतर जायेगी।'

शाहे-ईरान बोला, 'खानदौरा होता, तो दिल्ली जाने का मजा मिलता। मरद मरदो के घर मे ही मेहमान हो कर अच्छे लगते हैं। शहशाह, आपके लश्कर म एक ही मरद था। बाकी सब तो पसली बटेर थे। बहादुर बहादुर की कद्र करता है। नादिर खानदौरा का जिंदगी मे कभी नही भूल सकता। अगर एक और आदमी होता, तो मैं जग हार जाता। आपकी हुकूमत का एक दोस्त और भी था, लेकिन मजबूरियो ने उसे गलत राह पर डाल दिया था। वह था सआदत खा। बाकी सब दुश्मन हैं—मतलबी। य हरामखोर हुकूमत को चलने नही देंगे। मैं कुछ ही दिनो का मेहमान हू। वरना मैं इन सब को कान मे डालने लायक बना जाता। आपकी दिल्ली जरूर देखेंगे। बहुत दिनो से ख्वाहिश थी, अल्लाह ने पूरी कर दी है। शहशाह, मुझे हर्जाना बहुत कम मिला है। मुझे धोखे म रखा गया है। सात पीढियो की इकट्ठी की हुई दौलत कोई कब्र मे नही ले जा सकता। बाट कर खाना चाहिए। मेरा बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है। मैं बहुत दूर से चल कर आया हू। शहशाह, मेरा ख्याल रखना। कोई काफिर होता, तो उससे बात करता। आप तो मेरे भाई हैं!' नादिर शाह ने इतनी बातें एक साथ ही कह डाली।

'अब तो आप दिल्ली के बादशाह हैं। तोशाखाना म जो चीज आपको अच्छी लगे, ले जाइए। जब मुगलिया सल्तनत का जलाल ही न रहा, तो साजो-सामान का क्या! इन लोगो न मुझे गुमराह किया। शाहे-ईरान! अब फैसला आप पर ही है। एक बेबस बादशाह किसी का क्या इस्तकबाल कर सकता है? घर के चोर की रखवाली कैसी!' दिल्ली के शहशाह ने बेबसी के स्वर म कहा।

मिल-जुल कर अमीरो-वजीरो ने नादिरशाह को साथ ले लिया। चार कहारो ने पालकी उठायी। दूसरे दिन नादिर ने दिल्ली की धरती पर पाव धरे। *लाल किले ने भी झुक कर सलाम किया। बारह तोपें किले की बुर्जियो पर से* दागी गयी। तख्ते-ताऊस ने कदमबोसी की। जलवा अफरोज हुआ। शहशाह-ईरान को नज़राने पेश किये गये। दिल्ली के बादशाह ने झुक कर सिजदा किया। अगले रोज जुम्मा था। जामा मस्जिद मे नादिर शाह के नाम का खुतबा पढा गया। मुगल हुकूमत की तख्ती पुछ गयी। कुछ दिन खूब जश्न हुए। मुहम्मद शाह रगीले की बेटी नादिर के बेटे से ब्याह दी गयी। हरम की बेगमो म से कुछ नादिर को पसद आ गयी, कुछ जरनैलो ने ले ली। सियाह फाम हसीन औरतो का इन्तखाब इसलिए किया गया क्योकि नादिर जलेबिया खा-खा कर उकता गया था। चटनी चाट कर मजा लेना चाहता था।

दिल्ली के बीचोबीच एक चडूखाने म बैठे कुछ नशई नशे म झूम रहे थे। एक बेगम जो जबरदस्ती नादिर शाह के हाथो मसली जा चुकी थी, और बाद मे उसके जरनैलो ने भी उसकी खासी हालत की थी, उसने बदला लेने के लिए अगले दिन एक साजिश रची। वह चडूखाने म जा पहुची। चेहरे पर नकाब नही था। उसने अपने हुस्न की जरा-सी झलक दिखायी। बोली, 'आखिर रगीले बादशाह का दाव लग ही गया ना!' बादशाह उसे अगुलि पकड कर अपने हरम मे ले गया। उसने, पता नही, बेगमे दिखायी या दासिया। नादिर शाह को उसने अपने शीशे म उतार लिया। मुर्गे की तरह गरदन मरोड कर फेंक दी। सिर उतार कर यमुना म फेंक दिया। नादिरखानी पल्ले मे बधवा दी।'

नशइयो ने बात सुनी। वह छबीली वहा से खिसक गयी।

घडी भर मे यह खबर सारी दिल्ली मे फैल गयी। दिल्ली वालो ने चडूखाने के तमाशबीनो के साथ मिल कर नादिरशाह के कुछ सिपाहियो को कत्ल कर दिया। नादिरशाह हरम मे बैठा इश्क के चरखे चला रहा था। खबर सुनी तो लोहा लाल हो गया। कत्ले आम का हुक्म दे दिया। कहते है कि एक दिन म एक लाख नर-नारी, बच्चे-बूढे कत्ल हो गये। चार घटो मे जब चिडिया का बच्चा भी बाकी न रहा, तो निज़ामुल्मुल्क और बादशाह गले मे पल्ला डाल कर नादिर के हुजूर मे हाजिर हो गये। 'दिल्ली म तो अब कोई पर मारने वाला भी न रहा। अब तो तलवार को म्यान म डाल लीजिए।' नादिर ने अर्ज मान ली और कत्ले आम बद हो गया।

नादिर को दिल्ली का मिजाज रास न आया। एक हज़ार हाथी, सात हज़ार घोडे, एक लाख ऊट, एक सौ तीस खुशनवीस, दो सौ लुहार, तीन सौ राज, दो सौ सगतराश, एक सौ हिजडे, बाइस सौ खूबसूरत औरतें, कोहेनूर और तख्ते-ताऊस साथ लेकर वह दिल्ली से लौट चला। ज़करिया खा को पहले ही सदेश भिजवा दिया कि मैं बहुत जल्दी लाहौर पहुच रहा हू। एक करोड

अशरफिया तैयार रखो । गफलत हुई, तो सजा दी जायेगी । वह मजा क्या हो
सकती है, अपने दिल से पूछ लो । जकरिया खा को दौरे पडने लगे । बगम न
तसल्ली दी । हर्जाना इकट्ठा किया गया, हजारो लोगो का रूह को बदज बरक ।

नादिर को एक गुमान हो गया था कि हिंदुस्तान हिजडो का मुल्क है ।
बुजदिलो के बेटे-पोते भारत मे बसते हैं । एक दिन वह बोला, जो आदमी मेरी
फौज की तरफ आख उठा कर देखेगा, मैं उसकी आखें निकलवा दूगा । कोई
आदमी मेरी फौज की परछाई तक को नही लाघ सकता ।' बडा अहकार था
नादिरशाह को । मस्ती मे जा रहा था । मुजरे हो रहे थे । शराब उड रही थी ।
फौज क्या जा रही थी, जैसे बारात जा रही थी । जकरिया खा के घर महदी से
सिगारी हुई बेगमे पालकी मे बैठी हो नादिर का मनोरजन कर रही थी । सिहो
ने उसकी ललकार को कबूल किया । भारत हिजडो की नही, बहादुरो की धरती
है । तुम्हारा वास्ता हो नही पडा आदमियो से ।' नादिरशाह सरहद स आगे
निकल चुका था । सिहो ने इतनी तेजी से तूफानी हल्ले किये कि दौलत भी लूट
ली, घोडे भी खोल लिये, ऊट भी भगा लिये और नादिर के साथ औरतो का
जो दल जा रहा था, उसे भी छुडवा लिया । मार हल्का कर दिया । तीन-
चौथाई काफिला सिहो ने लूट लिया । बमुश्किल एक-चौथाई लाहौर पहुचा ।

नादिरशाह को पता चला, तो उसके पैरो के नीचे से धरती खिसक गयी ।

नादिरशाह ने जकरिया खा से पूछा, 'ये कौन हैं, जिन्होंने मेरी फौज
को लूटा है, मेरे खजाने पर हाथ डाला है ? इनके घरा को आग लगा दो ।
गावों को जला कर राख कर दो । जकरिया खा, इनका नाश कर दो ।'
र गुस्से से तडप रहा था ।

'किबला आपका हुक्म सिर-माथे पर । पर इन फकीरो की टोली को
न ढूढे और कहा ढूढे । घर न घाट । इनके घर घोडो की काठिया हैं । हुजूर
। बतायें, इन खूखार बघेलो को कोई कहा से पाये ।' जकरिया खा न जवाब
दिया ।

नादिरशाह ने पेशीनगोई की । 'ये फकीरो की टोली एक दिन पजाब की
वारिस बनेगी । इनकी किस्मत मे बादशाहत लिखी है । बू आती है इनसे
बादशाहत की ।'

जकरिया खा ने दांतों तले जुबान लेने की कोशिश की, लेकिन वह पहले
ही तालू से जा लगी थी ।

रात के गुलाम, दिन के बादशाह !

सिंह हिरन हो गये। हिरनो के सीगो पर सवार भी कभी कोई मिलता है ?

रातो-रात सिंह लक्खी जगल म जा घुसे। नादिर ने एक बार हथेलिया मसली और ठडी आह भर कर बोला, 'अब तो मैं जल्दी म हू। अगले साल मैं फिर आऊगा। मैं ही निपटूगा इन सिंहो से। मेरे चाटे पेड कभी हरे नही होते''

एक करोड का हर्जाना उसने पल्ले बाधा और राह चल दिया। परन्तु विचारो ने उसका पीछा न छोडा—कमाल हो गयी ! हाथ को हाथ लग गये ! फकीरो की टोली ही नादिरशाह को लूट कर ले गयी ! मेरे कुल्हाडे का पानी उर गया है। इज्जत उतार कर रख दी है इन फकीरो ने। इन काफिरो की गरदन ताडनी ही पडेगी। फौज कूच कर चुकी थी। नादिरशाह घाडे पर सवार था। जकरिया खा ने विदा की सलामी दी। नादिर सोच रहा था। मैंने जिंदगी म कभी हार का मुह नही देखा था, जीत हमेशा मेरे कदम चूमती रही। या खुदा ! या परवरदिगार ! यह तुमने क्या किया ? दूसरो के टुकडो पर पलने वाल फकीरो से मुझे मात दिला दी ! . .यह मेरी जिंदगी की पहली हार है !

नादिर का बेटा डोली लेकर जा रहा था। वे लोग अभी अटक के इधर ही थे कि शाह ने उसे हुक्म दिया, 'कजाक हद न पार कर जायें।' कजाक वे लोग थे, जिन्होने नादिर के खिलाफ साजिश की थी और उसे ठठरी मे पानी पिलाया था, लेकिन विधाता ने उनकी किस्मत म हार लिखी हुई थी। वे भाग उठे और हिंदुस्तान पहुच कर दम लिया। पर वे शाह के हाथ न आ सके। जब नादिर ने हिंदुस्तान को जीत लिया और विजय के नगाडे बजाता वापस जा रहा था, तो कजाक उसके आगे आगे थे, और वह उनके पीछे पीछे।

'जल्दी जाओ बेटा और उनकी गरदन नाप लो।' बेटे का नाम निसार खा था। बहादुर जवान ने अपनी सेना को ऐसी दुडकी लगवायी कि कजाक काबू म आ गये। उन्होने नाक रगडी, मिन्नतें की। नादिर का [illegible] था कि सब की गरदन उडा दी जाये। निसार न न जाने किस्मत ले ली या [illegible] गया, या उस दिल म रहम आ गया, उसन [illegible] को [illegible] आधे ल

को भगा दिया। आधे सिर लेकर जब बेटा नादिर से मिला, तो नादिर ने पूछा 'बस, इतने ही थे?'

'नही। आधे भाग गये। बडा हल्ला किया, पर हाथ से निकल गये। काबू मे नही आये।'

'तुमने माजून खा रखी थी? नादिर का वली अहद इतना नालायक नही होना चाहिए। आधे लोगो को तुमने भगा दिया है। बच्चे, अगर तुम उन कज़ाको के हाथ आ जाते, तो फिर तुम रहम की दरख्वास्त करके देखते—पता चल जाता वे तुम्हारे साथ क्या सलूक करते! दुश्मन पर रहम करना नालायकी है। साप देखो, तो सिर कुचल दो। पूछ पर हाथ रखा नही कि वह डक मारने से बाज नही आयेगा!' नादिर की आखो मे खून उतर आया। 'इस हरामज़ादे की आखो मे गरम-गरम सलाखें फिरा दो। इसने हुकूमत के साथ दगा किया है!' नादिरशाह ने हुक्म दिया।

नादिर का हुक्म इलाही हुक्म था। न कोई दाद थी, न फरियाद।

घडी भर मे आखे चू गयी। उत्तराधिकारी यो ही अधा हो कर बैठ गया। मा खबर लेने आयी। देखते ही उसने अपनी छाती पीट ली। 'हाय! मैं मर गई! यह अधेरगर्दी! इतनी बडा सजा! जुल्म की भी कोई हद होती है! मेरा खाना खराब हो गया। मेरा कुल नष्ट हो गया। मेरी कोख फूटी जैसे न फूटी!' मा दहाड मार कर रोने लगी। 'यह बाप है, नही, बाप नही, कसाई है! अच्छा बेटे, सब्र करो। खुदा रहम करे। इस बाप को बाप कहने को मैं तैयार नही हू! शाह की आदत से तो तुम वाकिफ हो। हाकिम की अगाडी और घोडे की पिछाडी से हमेशा बचो।'

'इससे बडी सजा और क्या दी जा सकती है? मौत! वह तो बहुत खूबसूरत चीज है। यह सजा बडी डरावनी, बडी भयानक डायन है, मा। डायन भी चार घर छोड लेती है!' निसार ने कहा।

रात जरा गहरी हुई। अधकार अपनी गुजलक मारने लगा। मा-बेटे और जरनैलो ने मिलकर सलाह की। बात तय हो गयी। जरनैल जान की बाजी लगा कर एक नई बाजी खेलना चाहते थे।

शाही तबू के चारो ओर कडा पहरा था और पहरे वाले जाग रहे थे। फिर भी दो जरनैल नादिर की अपनी फौज के तबू मे जा घुसे। उन्होंने शाह को जगाया और ललकारा। बोले, 'शाह! होशियार हो जाओ! निकालो अपनी कुल्हाडी। बाद मे यह न कहना कि कुल्हाडी निकालने का मौका नही मिला। हम वार करने वाले हैं। जो ज़ोर लगता हो, लगा लो। हमारे दम से ही नादिर-शाह का नाम रोशन था। हम अब दीया गुल करने लगे हैं। हमारे हाथ को अब कोई नही रोक सकता। खबरदार! वार सभालो!'

अहमद खा की तलवार नादिरशाह के खून मे नहा उठी। दायी बाहू पर भरपूर वार पडा था।

नादिरशाह कत्ल हो गया। यह खबर दावानल की तरह सेना मे फैल गयी।

नादिर शाह का गुलाम-सेवक अहमदशाह अफगान तबू के भीतर गया। पहले उसने अपने मालिक को सिजदा किया और फिर वक्त की नजाकत को देखा। उसकी पीठ पर अफगानो की टोली खडी हुई थी।

तलवार उसने हाथ मे सूत ली। आखो मे लहू उतर आया। वह बाहर आया। कातिल भाग चुके थे। फौज के बाकी जरनैलो ने कोहेनूर हीरा, नादिर की कुल्हाडी, तलवार, ताज नजराने के तौर पर अहमद शाह अफगान को पेश कर दिया।

सारी सेना ने बुलद आवाज म नारा लगाया—अहमद शाह अब्दाली, शहशाहे ईरान—जिदाबाद, पाइदाबाद!

अहमद शाह अब्दाली रात को गुलाम था। सूरज की टिकिया के निकलते निकलते बादशाह हो गया। सुलतानी उसकी किस्मत म लिखी हुई थी।

●●

सोनपांखी लौट आये

'मैंने सुना है, तुमने लाहौर मे दीवाली मनाई है—नादिरशाह के क़त्ल की खुशी मे। क्या यह ठीक है ? यह नमकहरामी है। बादशाह के साथ गद्दारी है यह। मैं बहुत जल्द लाहौर आ रहा हू। मेराज तैयार रखना। अब मैं बादशाह हू। एक बात और भी सुन लो, कान खोल कर। मैं शाह के साथ आया था और मैं हिन्दुस्तान का पत्ता पत्ता जानता हू। वहा के लोग भी देखे हैं। उनका स्वभाव भी मेरा जाना हुआ है। मुझे कोई दिलेर या गैरतमद, खुद्दार लोग मिले हैं तो वे सिक्ख हैं। उनकी धुरी, उनकी ताकत, उनका उद्यम नूर का चश्मा अमृतसर है, और उनके बीच जो एक नूरानी मस्जिद है, और जिसे हरिमन्दिर कहते हैं, उसे गिरा दिया जाए। उसे मलियामेट कर दिया जाए। तालाब भर दिया जाए ताकि ये लोग स्नान न कर सकें। कोई दीदार के लिए न आए। जो आये, जिंदा वापस न जावे। इतना काम अगर तुमने कर लिया, तो लाहौर का सूबा बचा रहेगा, वरन् सारा पजाब सिहों का समझना। मैं जल्दी ही पजाब आ रहा हू।'

अहमदशाह अब्दाली के कासिद ने यह फरमान भरे दरबार मे पढ कर सुनाया।

दिन बीते। महीने निकल गये। ऋत आई, ऋत चली गई। एक बार सोनपाखी आये और आते ही पहाडो की ओर लौट गये। न अहमदशाह आया और न उसके घोडो की टाप किसी के कान मे पडी। वह अपने घर के झगडो मे उलझ गया।

जकरिया खा ने गिरगिट की तरह अपना रग बदला। पहले दिल्ली गया और बादशाह के कान म कुछ फूक आया। पजाब की हालत बताई। बताया कि अहमद शाह अब्दाली चढता आ रहा है, क्या करना होगा।

'सिहों ने पजाब मे अब फिर से हल चला दिया है। उनके घोडे फिर दुलकी चाल से दौडने लगे हैं। उनकी लगाम को हाथ डालने वाला कोई नहीं है।

शहशाह, सिंहो के सामने थोडा-सा टकडा डाल दीजिए। रोटी का टुक्डा इनकी थाली म आ गया, तो वे आपस मे ही लड मरेंगे।'

'क्या मतलब ?' शाह ने पूछा।

'जागीर वख्शी जाये। एक महीने मे ही ऐशारामतलव हो जाएगे। ऐयाशी जब इनके डेरो मे आएगी, तो फिर इनकी गरदन नापना आसान हो जाएगा। फिर मैं इन्हे हमेशा के लिए उठने लायक नही रहने दूंगा,' ज़करिया खा का ख्याल था।

'बात मे तो दम है! इसका फैसला हम पहले ही कर लेना चाहिए था। यह हमारी वाह भी बन सकते हैं। अब भी कुछ नही बिगडा है।'

शाही फरमान जारी हुआ। एक लाख रुपयो की जागीर, एक खिल्लत और साथ म पट्टा। कडाह प्रसाद के लिए देंगे अलग से। सब कुछ लेकर ज़करिया खा लाहौर लौट गया।

अब सिंहो के साथ बात कैसे की जाये—विचार यह था।

कौन जाये सिंहो के साथ बात करने ? और कैसे पहुचें ? कई आदमी ख्याल मे आये और उनके साथ विचार-विमर्श भी हुआ। कोई भी ऐसा न निकला, जो इस गठरी को सिर पर लकर जाये। किसी की जुर्रत ही नही हुई।

जागीर और पट्टा आदि, हर चीज़ ज़करिया खा के पास अमानत पडी रह गई।

अहमदशाह अब्दाली का हरकारा हर नये सूरज के साथ नई सलाह लेकर आता। चुप रहो और वक्त निकालते जाओ वाली नीति के अनुसार ज़करिया खा ने कानो म तेल डाल लिया, और सो रहा। हरकारे आते रहे, जाते रहे।

सिंहो ने सिर उठाया। अपनी खोहो मे से सर्प निकल आये। माद म से शेर निकल आये। उन्होंने सारे पजाब म हलचल मचा दी। चौधरियो को कान से पकड-पकड कर आगे कर लिया, न कोई नवाबी रहने दी और न कोई सूबेदारी, सब को खूंटी पर टाग दिया। पजाब म जैसे जलजला आ गया।

सिंह घर लौट कर आये। सोनपाखी अपने देश को लौट आये। ढोल-सिपाही आये, आगन म रौनक लौट आई। बहनो को मिल भाई, कात मिले सुहागिनो को, हीरो को राझे मिल गये। बसन्त द्वार पर आ गया।

ज़करिया खा के सीने पर साप लोट गए, लेकिन उसके कानो मे काबुली मुर्गे बाग दे रहे थे। मुश्कें बन्धी हुई थी ज़करिया खा की—इधर दिल्ली और उधर खुरासान। साप के मुंह म छिपकली, खाये तो कोढी, छोड दे तो अन्धा!

अमृत-वेला

'सुनाओ भाई, सिह, परिवार जनो का क्या हाल है ?'

'आप अब की बात पूछ रहे हैं, या पहले की ? आजकल भी सुख नही है और पहले भी नहीं था । पजाब का कोई घर नही था, जिसके आगन मे दुहत्थड मार कर स्यापा न होता हो । हर घर में कोई न कोई जीव परलोक सिधार गया था । मुसलमानों के घरो मे भी यही हाल था । सरकारी हुक्म चढ आये, तो यह कौन देखता है कि हाकिम किस आदमी को पकड रहा है ! यह सिहो का घर है या हिन्दुओ का या मुसलमानो का ? उन्हें तो अपनी कारगुजारी दिखानी थी । उन्हे क्या, जो आदमी टेंट चढ जाता, उसी का सिर धड से जुदा कर दिया जाता । जब हाकिम यह बात पूछता कि सिह नही, तो वे झट से अपनी बोली बदल लेते और कहते कि यह काफी बडा बदजबान था । हमने इसके केश मूंड दिये हैं और इसकी दाढी-मूंछें मुहम्मदी बना दी हैं । हमने तो इसके जिंदा रहते ही यह काम कर डाला था । अगर सिह हुकूमत के विरोधी हैं, तो मुसलमान पजाबी भी उतने ही दुश्मन हैं । ये साले सिक्खों का ही पक्ष लेते हैं । पता नही, सिह इन्हें क्या पका कर खिलाते हैं ! लेकिन सिह धर्म के बडे पक्के थे । केशो और दाढी को हाथ न लगाने देते । सिर दे देते, लेकिन 'सी' तक न करते । हुजूर, हमने सारे इलाके मे कोई सिह रहने नही दिया है । सारी मालगुजारी मे कोई सिह खासता तक नही है । हाकिम खुश हो जाता । इनाम लेकर आता टुकडखोर फौज का आदमी !' धारा सिह कह रहा था ।

पास बैठा मनसा सिह बोल उठा, 'धारा सिह, यार, तुम्हे तो मुहम्मदी जुबान भी आ गई है !'

'जैसा देस, वैसा भेस ! मुसलमानो मे रहने के लिए उनकी जुबान सीखनी ही पडेगी । मुझे तो कुरान की आयतें भी पढनी आती हैं । कभी मेरी कव्वालिया सुनी हैं ? कोई आदमी कह नही सकता कि मुझे अल्लाह रसूल मे ईमान नहीं है । जब मैं वजद मे आकर धमाल डालता हू और मेरे बोल उभरते हैं, तो सारे मजमे को नशा आ जाता है—'मदीने बुला ले मुझे...' मुझ मे और उन मे फर्क ही क्या

है ? मुसलमान बन कर इनकी भावनाए पीनी हैं। इनके थोबड़े सेंकने हैं। चुल्लू भर-भर कर इनका लहू न पीया, तो मेरा नाम भी बिजला सिंह नहीं।'

धारा सिंह ने उसे बीच में ही टोक दिया : 'बिधि चन्द ने अगर मुसलमानी लिबास पहन लिया, तो क्या उसके कान काले हो गये थे ? हुकूमत वाले उसे लाख मुसलमान कह लें, सैयद का रतबा दे दें, लेकिन अपने भाइयों ने तो उसे रसोई से बाहर नहीं धकेला ना ! मैं तो समझता हू कि अगर उनके साथ एक कुवाली में बैठ कर खा भी लिया जाये, तो कोई हर्ज नहीं है। महात्मा चाणक्य ने कहा है कि तुर्कों से युद्ध भी करना पड़े, तो भी ईमान नहीं जाता। धर्म बचाने के लिए जो कसब करना पड़े, करो, लेकिन अपने धर्म-भाइयों को बचा लो।'

'क्या बिधि चन्द भी खा लिया करता था मुसलमानों के साथ ?'

गुरु के नाम पर अगर चोरी कर ली या खाना भी पड गया, तो कोई पाप नहीं है। हरिमन्दिर साहब जाकर स्नान कर लो, शरीर भी पवित्र हो जाएगा और आत्मा भी पवित्र हो जाएगी। 'रामदास सरोवरि न्हाते...' मनसा सिंह का कहना था।

'बलिहारी बिधि चन्द की, जो गये हुए घोड़े ले आया, चाहे चोरी करके लाया, या भगा कर। गुरु की आसीसें ले ली। बिधि चन्द के बारे में लोग कहा करते थे—बिधि चन्द छीना गुरु का सीना हमने जो बीड़ा उठाया है, गुरु फतेह ही करेंगे। एक तो हमारे गुरु की गुल्लक भरी रहे और दूसरे लगर का सदाव्रत चलता रहे, और तीसरे पजाब के लोग हमारे पीछे हुकारा भरते रहें— बस, फिर हम हुकूमत की मुश्कें बाध लेंगे। फिर देखेंगे कौन खोलता है ! सिंह जानते हैं दुश्मन का सिर कैसे कुचला जाता है। हरिमन्दिर साहब में ज्योति जलती रहे और हम उससे रोशनी लेते रहें ,' बिजला सिंह का विश्वास था।

'नवाब जो जागीर दिल्ली से लेकर आया है, क्या सिक्ख उसे कबूल कर लेंगे ?' धारा सिंह ने पूछा।

'खलअत भी पहनी जाएगी और जागीर भी कबूल कर ली जायेगी। पर दोस्त, यह ज्यादा दिन नहीं चल पाएगी। इनका कोई विश्वास नहीं है। लोटे का क्या है, क्या पता कब लुढक जाये ! और फिर ये तो बिन पेंदे के लोटे हैं। चलो, जागीर अगर एक साल तक ही चल जाये, तो घोड़े, काठियां, बारूद, गोला, जमूरे ही खरीद लेंगे। तोपें नहीं, तो न सही। तोपें छीनी जा सकती हैं। एक-दो गाड़िया भी हमारे काबू आ गईं, तो काम बन जाएगा। अनाज के जखीरे भी, गुरु ने चाहा, तो हाथ लगेंगे—और फिर समझ लो, हमारे पाव मज़बूत हो गये। पजाब के पैर हमारे, धरती हमारी, लोग हमारे, घर-द्वार हमारे, एक हुकूमत ही गैर की है ना। हुकूमत बदली जा सकती है। जनता हुकूमत बदल लेती है। लोग ही हुकूमत बनाते है, और लोग ही उसे फाड जाते हैं। फिर हमें तो गुरुओं ने हुकूमत बख्शी है !' बिजला सिंह ने सब के मन पक्के कर दिये।

घारा सिंह ने कहा, 'अमृतसर का सरोवर हमारी काशी, हमारा हरिद्वार है। हमारा यह सरोवर पवित्र रहे, सिंहों का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। सिंहों का विश्वास अटल है। सिंहों के इरादे पत्थर के हैं। सिंह पहाड़ हैं। जो भी इनसे टकराया, वह चूर-चूर हो गया। पलीता लग गया उसे।'

'हुकूमत की अमर बेल फैल गई है। एक दिन यह सारी धरती को ढक लेगी। हम गुलामी का जूआ उतार फेंकेंगे। यह अमर बेल रहने नहीं देनी है—चाहे सिर देने पड़ें, चाहे शहादत।' धारा सिंह ने अपनी बात पर पूर्ण विराम लगा दिया।

●●

सांप आखिर सांप है !

'जागीर ले कर आया लाहौर का शावाज सिंह जावर। वह सीधा अमृतसर ही पहुचा। वैसाखी मनाने के लिए सिंह अकाल तख्त पर जमा थे,' बिजला सिंह बोला।

'सिंहों का काफी जमघट होगा। सिंह छावनिया डाल कर बैठे होगे। तभी वैसाखी का मेला भरता है।' धारा सिंह ने कहा।

'गुरु की सगतें तो हुमहुमा के आई थी, लेकिन मुखिया सिंह जुडे बैठे थे। दरबारा सिंह, कपूर सिंह, हरिसिंह हजूरी, दिलीप सिंह शहीद, जस्सा सिंह रामगढिया, करम सिंह, बुड्ढा सिंह शुकर चकिया, गरजा सिंह...बस करू कि और गिनाऊ ?' बिजला सिंह ने कहा। 'खिलअत और जागीर का पट्टा लेकर हाजिर हुआ।' शावाज सिंह बोला—'मैं पथ की अनुमति के बगैर जागीर का पटटा सिर पर उठा कर ले आया हू। पथ जो तनखाह लगाये, मुझे हाथ बाध कर मजूर है। मुझे निवेदन करना है। पथ उस पर विचार कर ले।'

'कही काफिरो का आदमी कह कर उसे दुत्कारा तो नही गया ?' धारा सिंह ने कहा।

'सिंहो म शावाज सिंह का बडा आदर था। क्या हुआ अगर सरकारी अहलकार था ! आखिर खून तो अपना ही था। अपने आदमी सरकारे-दरबार मे हो, तो खबरें मिलती रहती है। खजाना कब चलता है और किधर को जाता है, कब चलने वाला है और रात कहा गुजारेगा—सिंह को जरा-सी भनक लग गई, हल्ला किया और मस्ताना लगर अमीर हो गया।' बिजला सिंह ने कहा।

'फिर क्या कहा शावाज सिंह ने ?' धारा सिंह ने पूछा।

'यह माया देश क लिए पथ की भेंट है। सरकार ने सुलह की दरख्वास्त की है, खिताब भेजा है और साथ ही जागीर का पट्टा। पथ कृपा करके परवान कर ले। वक्त से फायदा उठाना चाहिए।'

दरबारा सिंह ने पथ से सलाह पूछी, सब ने मन भर का सिर हिला दिया। किसी ने हामी नही भरी। फिर शावाज सिंह बोला—नीति यह कहती है कि घर आई चीज लौटाई न जाये, सुलह के लिए हमने थोडे ही मिन्नतें की थी—बल्कि

हकूमत ही वासते दे रही है। हकूमत पथ मे डर गई है। शरण आये की लाज रखना हमारा धर्म है।

न हा मे बदल गई, मगत ने जागीर परवान कर ली, पर उसे झेलने के लिए कोई तैयार न हुआ। आखिर दरबारा सिंह ने सारे दीवान पर अपनी नजर घुमाई। कपूर सिंह पखा हिला रहा था। सेवा म मग्न था। गर्मी की रुत थी। पसीना सिर से चूता और पैरो तक पहुचता। सेवा की मस्ती म कपूर सिंह वाणी भी पढ रहा था और आनन्द भी ले रहा था।

आवाज आई—कपूर सिंह, आगे बढो और खिलअत कबूल करो।

कपूर सिंह इतना भोला नही था, बोल उठा—यह उस्तरो की माला मेरे गले में क्यो डाली जा रही है? मरा हुआ साप जिंदा साप से भी बुरा होता है।

दरबारा सिंह ने कहा—यह पथ का हुक्म है।

कपूर सिंह ने कहा—सिर-माथे पर। लेकिन मेरी एक शर्त है।

—क्या?

—यह खिलअत पाच प्यारो के जोडो (जूतियो) म रखी जाये, और उनके चरणों को छुआ कर मुझे दी जाये। मैं जिंदा फनियर साप गले मे डाल लेता हू।

मजूर! मजूर!—आवाजें आई। वही हुआ, जो कपूर सिंह ने कहा था। नवाबी का खिताब और जागीर का पटटा झोली खोल कर ले लिया कपूर सिंह ने। उसी दिन से सिंह उसे नवाब कपूर सिंह कहने लगे।

'जागीर तो मिल गई, पर चली कितने दिन?' मनसा सिंह ने पूछा।

'जितन दिन तक डर था, खौफ था, दहशत थी अहमद शाह अब्दाली की। जरा-सा डर कम हुआ, तो जकरिया खा ने अपनी आखो को माथे पर धर लिया। जागीर जब्त कर ली। अमृतसर का सरोवर भर दिया और उसम कपास बो दी। इतने वक्त मे ही सिहो मे पात्र पक्के हो गये। जागीर वापस तो हो गई, लेकिन नवाबी का दुमछल्ला कपूर सिंह अपने नाम से हटा न सका। सारा जत्था आज भी उसे नवाब कपूर सिंह कह कर पुकारता है,' बिजला सिंह ने कहा।

पजाब में फिर बुरछा-गर्दी शुरू हो गई। रीछ फिर नाच उठा। मदारी के झोले में से फिर सांप निकले। सापो ने सिर उठाया। बीन की जरूरत फिर आ खडी हुई।

साप आखिर साप है—चाहे उसे जितना भी दूध पिला लिया जाये

मण्डी लगी शहीदों की

'फिर शहीदो का मेला लगा। शहादत देने वालो की बैसाखी आई। बाजरे के पौदे कमर तक हो आये। शहादतो की रुत आ गई। कतारें लग गई शहीदो की। एक-एक मनके के बदले मे कई-कई सिर दिये तो कही एक मनका हाथ आया। गिनती करना मुश्किल हो गया। एक-एक मनका खरीदा, तब यह माला बनी।' बिजला सिंह बोला।

'इन शहादतो का कोई अन्त भी है! किसी हद पर जा कर यह बात खत्म भी होगी या नही?' धारा सिंह बोल उठा।

'जब तक हुकूमत की तलवारें कुद नही हो जाती। जब तक राज हमारे हाथ में नही आ जाता, तब तक भोग नही पड सकता!' बिजला सिंह ने कहा।

'अभी कितनी देर लगेगी?'

'जब तक हम सारे पजाब वाले बलवान् नही बनते। मन बलवान् है। शरीर हृष्ट-पुष्ट है। कमज़ोरी है, तो हथियारो की।'

'और अगर हम हमलावर अहमदशाह अब्दाली से गठजोड कर लें, तो क्या हमारे कान काले हो जाएगे?'

'साप के बच्चे कभी मित्र नही होते, मूर्ख! साप आखिर सांप है!'

'मुह मे राम बगल में छुरी।'

'बात यही खत्म नही होती। शक्ल मोमिन की, काम काफिर के।'

'हम मे और इनमे फर्क सिर्फ यही है कि हम कभी झूठ नही बोलेंगे और इन्होने सच न बोलने की कसम खा रखी है।'

'फिर क्या हुआ? लोहे को लोहा काटता है।'

'नही। गुलाब की पत्ती से भी हीरे का जिगर काटा जा सकता है।'

'रेत की दीवार कब तक खडी रह सकेगी? एक ज़ोरदार तूफान आया कि ढह कर ढेरी हो जाएगी।'

'लोहा गरम है। अभी पीट लो मुड जाएगा, चपटा हो जायेगा—अपनी

मर्जी से उसे गोल कर लो। मेरे ख्याल मे तो अब्दाली के साथ आधे-आधे का भाईचारा कर लिया जाये।'

'सिंहो ने दुश्मन के साथ कभी चावल नही खाये।'

'जब लगर म बैठ गये, तो फिर दुश्मनी कैसी?'

'दुश्मन की रगो म अगूठे दो। जब आखें बाहर आ जाएगी, तो अपने आप भाई वह उठेगा। ईंट का जवाब पत्थर। सुना नही, जोरावर का सात बीमी सौ! दुनिया ताकत के आगे झुकती है। अहमदशाह अब्दाली आ रहा है। खबर ने उसकी ललकारें सुनी हैं। वह बाघ य सारी भेडें फाड खाएगा। सिंहो की पाचो उगलिया घी मे। अब्दाली लूटेगा और लुटते माल म सिंह आधा हिस्सा बाट लेंगे। ये आपस मे लड लड कर कमजोर हो जाए, तो सिंह बकर-मुर गाते इनके गले पड जाए, फिर देखो रग! हीग लगे न फिटकरी, रग चोखा आये!'

'गश्ती फौज ने फिर से सिंहो को पकडना शुरू कर दिया है। बाजार फिर गर्म हुआ कत्लेआम का। लहू की कीमत फिर लगने लगी। लहू अब महगे भाव मे बिकेगा। तलवारो को फिर सान पर चढाया जा रहा है। धारा फिर तेज हो रही है।'

'यह आखिरी वार है। जकरिया खा दिन की तमन्ना निकाल ले। दिल ठण्डा कर ले। चढा ले गश्ती फौज। यह अघड कई बार चढा है और कई बार दबाया गया है। हम चुन-चुन कर मारेंगे इस गश्ती फौज और इसके आगुओ को!'

बिजला सिंह ने आखिर कह ही दिया, 'पहली शहादत और वह भी भाई मणि सिंह जी की। उनका कसूर क्या था?' फिर खुद ही जवाब दिया, 'उनका कसूर यह था कि उन्होंने अमृतसर म दीपमाला की इजाजत हुकूमत से मागी थी। और कोई खेत नही माग लिया था उसने। इजाजत मिल गई। ठेका चुकाया गया पाच हजार दमडे (रुपये)। सगतो ने हुमहुमा कर आने के लिए मुडासे बाध लिये। इससे ठेका भी पूरा हो जाएगा और हरिमन्दिर साहिब की सेवा भी हो जाएगी। पुण्य भी कमाई भी! यह ठेका काजी अब्दुल रज्जाक की सलाह से तय हुआ। उन दिनो लाहौर का दीवान लखपत राय था। उसे बीच मे रखा गया। बिचौलिये की जिम्मेदारी उसके सिर पर रखी गई, पर बेईमानी की भी कोई हद है! झट से चिकने घडे पर से फिसल गय। ईमान को चुल्लू म डुबो लिया। उठा कर चाट गये। इधर ऐलान हुआ और उधर सिंहो ने अमृतसर आने के लिए तैयारिया कर ली और इधर बेईमानो ने फौज चढा दी। खुद चढ आया अब्दुल रज्जाक। उसने अमृतसर के नाके बन्द कर दिये। दीपमाला न हो सकी। सगतें वापस मुड गई। न मेला भरा और न ही ठेका पूरा हुआ। स्वप्न देखा था—बीच मे ही आख खुल गई। दिलो के अरमान दिलो की तह मे ही दबे रह

गये। वलवले लेकर आई थी सगतें, वलवले राह मे ही ठण्डे हो गये। न स्नान ही कर सके, न दर्शन ही पाया हरिमन्दिर का। भाई मणि सिंह की माला हाथ में ही पकडी रह गई। दिल मसला गया। बूंदें बरसी, कुछ ठण्डक-सी पहुची। चाह-भरे दिल मसले गये। अब्दुल रज्जाक ने अमृतसर में आग बरपा कर दी। घुडदौड होने लगी। हौवा बन गया अब्दुल रज्जाक। निराश सगतें वापस लौटने लगी। लाहौर के काज़ी ने हुक्म जारी किया। मेले को एक महीना होने को आया अभी तक सिंहो ने ठेका नही चुकाया है। क्या बात है ? अगर ठेका एक-दो दिनो मे ही खजाने में जमा न हुआ, तो जजीरो से जकड कर लाहौर की अदालत मे पेश किया जाये।

खुदा का हुक्म तो मुड सकता था, पर काजी का हुक्म खुदाई हुक्म से भी ऊपर था।

अब्दुल रज्जाक भाई साहिब के सामने आ खडा हुआ—हमे हुक्म मिला है, इसलिए हम अर्ज़ करने आये हैं।

—क्या हुक्म है ?

—या तो ठेका चुकाइए या हमारे साथ चलिए, अदालत में अपनी चारा-जोई करने के लिए।

—कैसा ठेका ? हमारा ठेका था कि मेला लगे, सगतें आएं, दीवमाला हो, तो हम ठेका चुकाएगे। पर तुम लोगो ने तो फौज की हलचलें शुरू कर दी। अमृतसर मे तो घोडे दौड रहे थे, मेले में कौन आता ? जब मेला ही नही हुआ, तो ठेका किस बात का ? भाई जी ने कहा।

—इसका फैसला सिर्फ लाहौर-दरबार ही कर सकता है। हम तो नौकर हैं। गोली किसकी और गहने किसके ! हम तो हुक्म के बधे हुए है।

कोरा जवाब लेकर गये लाहौर के अहलकार। दूसरा हुक्म गिरफ्तारी का था। बस, फौज ने किसी की कोई बात नहीं सुनी। न कोई दाद थी, न कोई फरियाद। मणि सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। हरिमन्दिर भाय-भाय कर रहा था। सवाल-जवाब शुरू हुए लाहौर मे। सूबेदार बोला—जामिन के कहने पर हमने ठेका मजूर किया था। तुमने मेला भी करवा लिया। उगाही भी इकट्ठी कर ली, उसे डकार गये और हमे अगूठा दिखा दिया !

—मेला तो हुआ ही नही ! मेला तो आपकी फौज का था। हमारा कोई आदमी तो डर के मारे अमृतसर आया ही नही।

—मैं इस बात का जिम्मेदार नहीं हू। मुझे सिर्फ ठेका चाहिए। कागजो का पेट भरना है मुझे। मैं भी किसी का नौकर हू।

—ठेका हम दे नही सकते। हमारे पास फूटी कौडी भी नही है !

—जुबान देकर बेईमान हो गये हो !

—सिंह जुबान देकर नहीं मुकरता। आप झूठ बोलते हैं।

—मैं ज्यादा बकवास सुनने का आदी नहीं हूं। मैं सिर्फ एक बात चाहता हूं ठेका। ठेका नहीं तो क़ाज़ी का फतवा सुनो। क़ाज़ी का कहना है अपना मजहब छोड़ दो। सूबेदार ने अपनी बात कह दी।

—किसी सिंह ने आज तक अपना मजहब छोड़ा है? फिर आप मुझ से ऐसी उम्मीद रखते हैं? मणि सिंह ने कहा।

—एक शर्त है मुसलमान हो जाओ। देख लो कितनी आसान और हमदर्दी वाली बात है। और अगर तुमने 'न' ही पढ़ा है, तो कत्ल के लिए तैयार हो जाओ। तीसरा और कोई रास्ता नहीं है। और अगर तुमने अब भी हील हुज्जत की तो मैं बंद बंद कटवा देने का हुक्म सादर करूंगा। तुम काफिरों ने हमारी जान शिकंजे में फंसा दी है। हमारा जीना मुश्किल कर रखा है।

यह खबर लाहौर में फैल गई। लाहौर के सहजधारी हिन्दुओं और उन बन्दों को बड़ा दुख हुआ, जो सरकारी अहलकार थे। उन्होंने चोरी चोरी ठेके की रकम एकत्र की और सूबेदार के सामने रख दी।

—यह क्या?

—भाई जी का ठेका हमने लाहौर से इकट्ठा किया है। सरकार रकम जमा कर लें।

—उल्टा चोर कोतवाल को डांटे! हमारी बिल्ली और हम से ही म्याऊं! हमारे दरबार से रकम इकट्ठा की और हमको ही दे रहे हो! खुले दिन में ही हमारी आंखों में धूल झोंक रहे हो!

भाई जी ने साफ इन्कार कर दिया—हम ठेका नहीं चुकाएंगे। यह असूल की बात है।

—गुस्ताखी हद से बढ़ रही है। यह काफिर मानने वाला नहीं है। फतवा आयद किया जाये।

सिंह तैयार है।

लाहौर का एक सम्मानित नागरिक बोल उठा—सरकार को तो रकम चाहिए चाहे कोई भी दे। आपके खजाने में रकम जमा हो गई। सरकार दरबार में आपके नाम के झण्डे गड़ गए। यह रकम हुजूर को कबूल कर लेनी चाहिए।

पर भाई मणि सिंह बोल उठे—बात रकम चुकाने की नहीं है। बात असूल की है। जुर्माना चुकाना गुरु घर का नियम ही नहीं है। कोई गुनाह किया हो, तो कोई जुर्माना भी कबूल। हमारा गुनाह क्या है? यही कि हम मेला कर रहे हैं। अपने गुरुओं के चरणों में सिर नवाने के लिए। यह जुर्म है? क्या हुकूमत पांच बार नमाज नहीं पढ़ती है? खुदा का शुकराना य अदा नहीं करते? खुदा ने इन्सान को पैदा किया, उस अल्लाह ने मुसलमान बनाया। इन्सान इतना ही बेगैरत है कि अपने मालिक के सामने सिर न झुकाये?

—यह दण्ड है अमृतसर पर। तुमने वादाखिलाफी की है! हुकूमत के लिए यह सीधी बगावत है। इसलिए जुर्माना चुकाना ही पड़ेगा! हाकिम ने कहा।

—हरिमन्दिर पर कोई कर, कोई जुर्माना, कोई दण्ड कबूल नहीं किया जा सकता। यह हमारे उसूल के खिलाफ है। हम यह बात नहीं मान सकते। भाइयो, तुम अपनी रकम घर ले जाओ। इनसे मैं खुद ही निपट लूंगा। गुरु आपका भला करें! पंथ की इज्जत को दाग नहीं लगने देंगे पंजाबी।

—अन्धेर साईं का! इतना बड़ा धोखा और ऊपर से सीनाजोरी! यही बात तो हम खत्म करनी है। रकम चुकाना कोई इतनी बड़ी बात नहीं है! इज्जत मिट जाये—यह हमारे सारे लाहौर की बदनामी है। उठा ले जाओ अपनी रकम। लाहौर वाले ठेका नहीं चुका सकते। यह हुकूमत का मुजरिम है। बागी है। पहले इसका बंद-बंद कटवाओ, और फिर इसे तड़पा कर कत्ल किया जाये। इन काफिरों ने मौत को भी खेल समझ रखा है! इन कम्बख्तों की खाल में रत्ती भर भी भय नहीं है! हाकिम ने हुक्म लिखा और कलम तोड़ दी।

जल्लाद आ गये। सरे-बाजार जल्लादों ने बांह से पकड़ कर खींच लिया भाई मणि सिंह को।

एक जल्लाद बोला—बांह आगे करो।

—क्यों, क्या बात है?

—हम बांह काटनी है।

—नहीं दोस्त! ऐसे नहीं, तुम्हें बंद-बंद काटने का हुक्म मिला है। पहले अंगुली काटो, फिर कलाई, और फिर बांह। हुक्म-उदूली नहीं करते। हुक्म मानने का तरीका सीखो।

—या अल्लाह! रहम कर! ये बंदे हैं या फरिश्ते! जल्लाद कानों को हाथ लगा रहे थे।

पहले अंगुलि काटी गई, फिर कलाई, फिर कोहनी और फिर बांह की बारी आई। इसी तरह पैरों के अंगूठे, अंगुलियां और फिर टखने, घुटने और जांघें। धड़ को भी अब अलग किया जाना था। बीच में गरदन काटी जानी थी। पर धन्य गुरु के सिंह! कहीं 'सी' तक नहीं की। न ही आंसू बहे। हंसते-हंसते मौत को गले लगा लिया। सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

इस शहादत के बारे में सुन कर सारे पंजाब का दिल धड़क उठा। आंखों में लहू उतरा। जोश में उबाल आया। सारे पंजाब का खून खौल उठा। अंधड़ चढ़ रहे थे। कुछ होने वाला था। तूफान जन्म ले रहा था, शहीदों के लहू से। तिनकों के नीचे आग रखी जा रही थी।

समझौता

'शहादतें भी सिक्खों के हिस्से आयी थी......इस कुंभ में कोई हिंदू आगे नहीं आता था ?' मनसा सिंह ने सवाल किया।

बिजला सिंह ने जवाब दिया, 'आते क्यों नहीं थे! उनका नाम सरकारी कागज़ों पर चढ़ता नहीं था। हिंदू तो घड़े की मछली थे। घर की मुर्गी दाल बराबर, जब जी किया, जब दिल में आया, ज़िबह कर लिया। हुकूमत हिंदू के कत्ल को कोई सम्मान नहीं देती थी। मूजी मार लिया, या हिंदू मार लिया, एक ही बात थी। हिंदुओं को हुकूमत बुज़दिल समझती थी। हिंदू भी खैरख्वाह थे हुकूमत के, भले ही भीतर ही भीतर उनकी हमदर्दी सिक्खों के साथ थी। जाहिरा तौर पर वे हुकूमत का ही दम भरते। सिहों और हिंदुओं का आपस में समझौता था, तभी तो सिंह पलते-फूलते थे। यों ही कड़वी बेल की तरह वे नहीं बढ़ रहे थे! हिंदू ही तो उन्हें गले लगाते थे। अपने घर में छुपा कर रखते थे। अन्न का भंडार हिंदुओं के घर से ही पूरा होता। रात-बिरात वही काम आते थे। सिंह तो बदनाम थे। जो नेतृत्व करे, वही हुकूमत का बागी। न घर, न ठौर, न ठिकाना, घर-गृहस्थी वाली तो कोई बात ही नहीं थी। हिंदू हुकूमत की आंखों में काजल डाल देते, और हुकूमत आंखों को मटकाती रहती। हुकूमत ने ज़रा-सी ढील की, कि हिंदुओं ने सिक्खों को प्रोत्साहित किया और सिंहों का दाव लग गया। सिंहों की पीठ पर हिंदुओं का ही हाथ था। और किस मां की मौसी पुकार सकते थे? हिंदू सिंह का असर कबूल कर लेते, वे सहजधारी कहे जाते। सहजधारी भी हुकूमत की आंखों में चुभता, लेकिन हुकूमत इतनी अक्लमंद ज़रूर थी कि वह अपने चारों ओर वैरी ही वैरी इकट्ठे नहीं करना चाहती थी। चौधरी, अगुवा, दादा मुसलमान, जो गलती से या रंजिश से किसी हिंदू को कत्ल कर देता, तो सूबे की तरफ से उसे इनाम न मिलता, बल्कि सिहनियों की गठरी बांध कर ही वह घर लौटता और सारे इलाके में बदनाम भी हो जाता। वैसे मुसलमानों और हिंदुओं का खाना मासा था, क्योंकि असल में दोनों ही दुखी थे। जुल्म दोनों पर एक-सा होता। लड़कियां

अगर हिंदुओं की उठायी जाती थी, तो मुसलमानो की भी कोई बेटी कोरी कुआरी नही ब्याही जाती थी। आम जनता हुकूमत से परेशान थी। कोई विरला ही हुकूमत का गुणगान करता था। गुलछर्रे सिर्फ उनके घर में ही उडते। वाकी तो मुसलमानो के घर भाग ही भुनती। सिंहो के भुलावे में हिंदू भी सूली पर चढ जाता और मुसलमान भी कत्ल हो जाता। अगा शराबी अहलकार यह नहीं देखता था कि ये सिंह हैं या मुसलमान फकीर। उसे तो सिर चाहिए था। सिर देखने वाले कहा एक-एक करके देखते हैं! कितने सिर हैं? पाच! यह लो रसीद और खजाने से इनाम की रकम ले जाओ।'

'तब तो बकरियो से ज्यादा सिंह शहीद होते होंगे!' धारासिंह ने कहा।

'जकरिया खा ने एक बार सिर इक्ट्ठे करके ढेर बना दिया। वह ढेर इतना ऊचा हो गया कि एक मीनार बन गयी और हाकिमो ने सूबे को दिखाया। सूबे के हाथो के तोते उड गये, कि यह गुनाह है! यह खुदा का कहर है! जकरिया खा, देखना, ये सिंह एक दिन तुझे कच्चा ही खा जायेंगे। ये सारे सिर सिंहो के हैं! न, हो नही सकते। यह सब झूठ है। एक-एक सिर दस-दस बार दिखाया जाता, और दस-दस बार खजाने से रकम वसूल की जाती। गजब खुदा का! इतने सिर इकट्ठे हो और सिक्ख फिर भी पजाब मे कुलबुला रहे हो......—आप एक सिर काटते हैं, ये दूने-सवाये होते जाते हैं! इनकी जिन्स ही कुछ अलग है! सूबा मुलतान ने कहा।

'इसका मतलब है, हाकिम सारी बात समझते थे, पर फिर भी आख से अंधे और कान से बहरे थे। कार्रवाई दिखानी थी, इसलिए अधे को बहरा घसीटे जा रहा था,' मनसा सिंह बोला।

बिजला सिंह ने कहा, 'हुकूमत के काम ऐसे ही चला करते हैं, दोस्त! सच को झूठ और झूठ को सच करके दिखाना, इसी का नाम अहलकारी है। हाकिम खुश तो खुदा खुश!'

'अपनी बात तो फिर बीच मे ही रह गई।'

'बात तो हिंदू की हो रही थी ना! पजाब का हर घर, पजाब की हर चौगाठ अपने बडे बेटे को सिख बनाती और वही लडका जत्थे मे मिल कर सिंह बन जाता। हुकूमत उन्हे लुटेरे कहती और चोरो के नाम के साथ उनका नाम जोडती। क्या ये सिंह हिन्दू नही? यह सारा प्रताप ही हिन्दुओ का है। इनके सिर पर ही ऊचा बोल लेते हैं जत्थे। आदमी किल्ले पर ही शेर होता है। हर काम को पूरा करना, हर काम को आखिरी मजिल तक पहुचाना, हर तरह की मदद करना, यह हिन्दुओं का हिस्सा है। जो सामने आ गया, वही हुकूमत का वैरी, बाकी सब तो सील-मुर्ग थे। घर की चारदीवारी के अदर सिंह और

बाहर हिन्दू-तिलकधारी। एक शहादत का मैं जिक्र कर रहा हू। पर इसके अलावा भी कई शहादतें हैं, जिनका हम पता नही है,' बिजला सिह न कहा।

'इतनी बड़ी शहादत कौन-सी थी?' मनसा सिह बोल उठा।

'हिन्दुओ और सिहो का साझा रक्त पजाब की पाचों नदियो म बह रहा था। यही साझा रक्त एक दिन रग लायेगा—यह पुकार गूज रही थी। भले दिन कभी तो आयेंगे। पजाब इतजार कर रहा था उस दिन का जब तुम्हारे शहीदो की नदिया तुम्हारा ही गीत गायेंगी। कोई पेड नहीं रहेगा, कोई वटवृक्ष नही रहेगा .....नहीं रहेगी, यह जालिम सरकार नही रहगी।'

हकीकत राय

दूध के दांत अभी नही टूटे थे। ब्याह रचा दिया मा-बाप ने हकीकत का। मेरा बेटा बडा हो कर दीवान बनेगा, मा हर वक्त इन्ही सपनो मे डूबी रहती। कभी-कभी पिता भी उसकी हा मे अपनी हा जोड देते। हकीकत अभी बच्चा ही था। घर मे बहू आ गयी। उसने अभी हाथ से गुडिया-खिलौने भी नही छोडे थे। हकीकत अभी गिल्ली-डडा खेलता था। मा बहू वाली बन गयी और बेटा गृहस्थ। *पानी वार के पीया मा ने।* बहू के चारो तरफ वह डोलती फिरती। पर इधर हकीकत सिहो के रास्ते पर चल पडा था। मेरा मतलब जत्थे से नही है। स्यालकोट मे लोग सिहो से हमदर्दी तो रखते ही थे। सिहो की बातें तो छिडती ही रहती थी। हर चौक मे, हर महफिल मे, हर दुकान पर, चौसर की हर बाजी पर न और कोई कथा थी, न कहानी—या तो सिक्ख थे, या पजाब। तीसरी बात कोई छेडता ही नही था। हकीकत बुजुर्गों की बातें सुन-सुन कर पक्का होता गया। चेहरे-मुहरे से वह हिन्दू था, पर भीतर से वह धीरे-धीरे पक्का सिक्ख बनता जा रहा था। उसके इरादे सिहो से मेल खाने लगे, लेकिन मा-बाप तो कुछ और आस लगाये बैठे थे हकीकत राय से। मेरा बेटा दीवान बनेगा, नाम कमायेगा सरकारे दरबार मे। पूत तो पैदा होते ही जवान होते हैं। मा दलीलो की मिट्टी गूंधती, महल बनाती, महल ढह जाते!' बिजला सिह ने रुक कर सास ली।

'लोग जान-बूझ कर गुलामी की तख्ती गले मे डालने को क्यो तैयार हो जाते थे?' धारा सिह ने पूछा।

'खत्री का बेटा या तराजू तोले या नौकरी करे......और कौन-मुगदर उठायेगा वह! खेती-बाडी को वे दूर से ही सात बार सलाम कर देते। इसलिए हिन्दू नौकरी को ही उत्तम काम समझता है। मागने पर चाहे कोई भीख भी न दे, पर करेगा नौकरी ही। हकीकत राय का बाप भागमल भी नौकर था—सरकारी। बारिश हो, अंधड चल रहा हो, बादल गरज रहा हो, तूफान आ जाये, तनख्वाह तो घर म आ ही जायेगी। सिह लूट ले, या नादिर लूट कर ले

जाये, उन्हें तनख्वाह तो ले ही लेनी है। लागियों का क्या है, उन्हें तो लाग चाहिए, चाहे घर जाते ही विधवा हो जाय। इसीलिए नौकरी को उत्तम समझा जाता। हम क्या। हमें कौन-सा राज ले लेना है, हमें तो नौकरी करनी है! चाहे कोई मुगल आये या पठान। हमारी तरफ से चाहे ईरानी आ जायें चाहे तूरानी। बैल का तो कोल्हू में ही जुतना है। कोल्हू का बैल इससे आगे सोच भी क्या सकता है! हिन्दुओं और सिक्खों में सिर्फ नजरिये का ही फर्क था। हिन्दू गुलामी कबूल कर लेते और सिक्ख कबूल न करते। एक कौम जबर सहना जानती थी और दूसरी टक्कर लेने के लिए सिर की बाजी लगाने के लिए तैयार बैठी थी।' बिजला सिंह ने कहा।

'हकीकत राय भी सिंहों की बोली बोलता होगा!' धारा सिंह ने कहा।

'अभी तो वह बच्चा ही था बोली तो समझता ही नहीं था। सिंहों की बोली हर आदमी तो समझ नहीं सकता। दिनो-दिन मन कड़ा होता गया। हकीकत सिंहों की ओर झुकता गया। उसके इरादे मजबूत होते गये। हर नये सूरज के साथ दीवार ऊंची उठती गयी।'

'हकीकत भी दीवान बनना चाहता था?' बहुत समय के पश्चात् धारा सिंह बोला।

'दीवान बनने को किसका जी नहीं चाहता? लेकिन दीवान बनना इतना आसान काम तो है नहीं! पानी का कटोरा थोड़े ही है कि घड़े से भरा और पी लिया। सब मां-बाप चाहते हैं कि हमारा बेटा दरबार सरकार में सम्मान पाये। हर आदमी सपना देखता है, लेकिन सभी सपने पूरे थोड़े ही होते हैं! मां-बाप ने हकीकत को स्कूल में भर्ती करा दिया। मौलवी ने पहले दिन ही बिस्मिल्ला कहकर तख्ती पर पूरना डाला। कुरान शरीफ के सुपारे हकीकत राय ने कुछ महीनों में ही याद कर लिये। बटेर की तरह बोलता घूमता हकीकत राय सारी मस्जिद में। हाकिमों के बेटे ईर्ष्या करने लगे। पढ़ने-लिखने के मामले में फिसड्डी थे......पर मौलवी बहुत खुश था। एक साल में ही हकीकत ने अरबी भी सीख ली। मस्जिद में जब भी मौलवी किसी बच्चे की बात करता, तो यही कहता कि दो सालों में हकीकत हाफिज बन जायेगा। जवानी चढ़ने तक यह आलम बन जायेगा। दीवान से नीचे इसे नौकरी नहीं मिलेगी। जब लड़के ये बातें सुनते, तो उनके सीने पर कटार चल जाती। उनके दिल में गांठ बंध गयी। यह लड़का जरूर किसी दिन हमारा सिर मूंडेगा। हकीकत को किसी तरह मौलवी की नजरों से गिराया जाये—यही तरीके सोच रहे थे। किताबी कीड़ा बन गया है। हकीकत रात-दिन कुरान पढ़ता, कुरान की बातें करता, कुरान के दृष्टांत देता। कुरान क्या है? अगर लोग कुरान को समझ लें तो दुनिया जन्नत बन जाये। स्यालकोट में चर्चे शुरू हो गये हकीकत के। कई मुसलमान हकीकत को अपना बेटा बनाना चाहते थे। पर मां तो उसे दीवान

बनने के ख्वाब देख रही थी। लेकिन होनी को कौन रोके ! जब होनी होती है, तो वर्तन उलटे हो जाते हैं !' बिजला सिंह ने अपने साथियो की ओर देखा। धारा सिंह कबूतरो की तरह आखें मीच रहा था।

बिजला सिंह कहने लगा, 'धारा सिंह की तरह एक दिन मौलवी ने दिन मे ही भाग पी ली। कबूतर की तरह कभी वह आखें बद करता, कभी खोल लेता। लडको की लगाम खुल गयी। लडको ने बस्ते वही छोडे और खुद पीपल पर जा चढे। वही खेलने लगे। हकीकत भी उनके साथ था। किसी बात पर झगडा हो गया। झगडा तकरार मे बदल गया। लडके कह रहे थे, पिदाई की बारी हकीकत की है। वह कह रहा था, उसकी पिदाई हो चुकी है। लडके कह रहे थे—हकीकत झूठा है। वह अपनी बात पर अडा रहा और लडकों ने शोर मचा दिया। असल म हकीकत सच्चा था। उसने उन्हे यकीन दिलाने के लिए देवी मा की सौंगध खायी, लेकिन शैतान बच्चो ने उसका बडा मजाक उडाया और उसकी भवानी की सौगध को फूक मार कर उडा दिया। हकीकत को इस बात का बडा दुःख हुआ। हकीकत अकेला था और वे बीस थे।

—पत्थर की मूरत और वह भी औरत की ! कसम खाते हुए शर्म नही आयी ! कसम खानी ही थी, तो किसी मरद की खाते ! । एक लडके ने कहा।

—इनके मजहब मे औरतें ही प्रधान हैं। कोई मरद हो तो कसम खाये भी ! दूसरे लडके ने कहा।

—किसी के मजहब मे दखल नही दिया करते, मेरे हमसाये, मा-बाप-जाये ! मैं तुम्हारा सहपाठी हू। तुम्हारा भाई हू ! हकीकत ने कहा।

—बात तो ठीक है, हम साये, मा-बाप-जाये ! लेकिन हमसाये अगर मुसलमान हो तो ? अगर काफिर की दीवार साझी हो तो फिर कैसा साझा ! उसका धर्म झूठा और हमारा ईमान इलाही। फर्क नही है जमीन-आसमान जैसा ? एक चालाक लडके ने पूछा।

—धर्म धर्म है। हर धर्म इलाही है। खुदाई आवाज है। हिन्दू और मुसलमान सभी यही की पैदावार हैं। खुदा की इन्सान की एक मखलूक है। उसके लिए हिन्दू-मुसलमान दायी-बायी आख हैं। इन्सान पैदा होता है, तो न वह हिन्दू होता है, न मुसलमान। ये सारे ठप्पे समाज लगाता है। इसीलिए सभी को अपना-अपना धर्म प्यारा है। हम पढने आये हैं, किसी के धर्म को लकर लडने नही आये हैं ! हकीकत राय ने अपने साथियो को समझाया।

—काफिर का पूत कुफ्र तोलता है। लिये घूमता है बडी देवी ! ले जा मा के पास। कही कोई हाकिम हरम मे न डाल ले ! *हिन्दू औरतें बडी मुलायम* होती हैं। एक दम मलाई। अरे काफिर ! पढता है कुरान और कसम खाता है गश्ती देवी की !......चौधरी का लडका बोल उठा।

—जबान को लगाम दो, चौधरी ! मेरी देवी को गश्ती कह रहे हो ! तुम्हारी फातिमा क्या कम गश्ती थी ?......

हकीकत अभी अपनी बात भी पूरी नही कर पाया था, कि सभी लडकों ने मिल कर उसे ज़मीन पर लिटा लिया, और मार-मार कर शरीर सुजा दिया। इतने मे मौलवी का नशा उखड गया। सारे मदरसे म भूत नाच रहे थे। लडके हकीकत को बिज्जू बनाये, घसीटे ला रहे थे।

एक लडका बोला—इस काफिर की औलाद ने हमारी फातिमा को गश्ती कहा है। इसकी जुबान खीच लो। यह साप है। काफिर है।

कहने वाला चौधरी का लडका था।

—बात क्या हुई ? मौलवी ने पूछा।

—इसने इस्लाम की तौहीन की। हज़रत बीबी फातिमा को गश्ती कहा है। इसे काजी के हवाले कर दो ! चौधरी का लडका लाल-पीला हो रहा था। उसकी आखें चिंगारियां उगल रही थी।

—मौलवी साहिब, गाली पहले इन्होंने दी मेरी दुर्गा भवानी को। मैंने तो कुछ कहा ही नही। मैंने तो सिर्फ यही कहा था कि ये दोनो बहनें हैं। अगर यह गश्ती है, तो वह भी गश्ती है। आप ही बताइए, मेरा क्या कसूर है ? हकीकत राय ने जवाब दिया।

—हरामजादो ! घर से पढने आये हो या लडने ? उल्लू के पट्ठो, चलो बैठो और पढो ! मौलवी ने झाड पिलायी।

—पहले फैसला, फिर सबक। हम जा रहे हैं काजी के पास। चौधरी का लडका उछल-उछल कर कह रहा था।

झगडा बच्चो के बीच का है। बडो के कान मे बात मत डालो। सिर फट जायेंगे। मैं अभी इसके कान खीचता हू। दुबारा कभी गाली नहीं देगा।. .... मौलवी समझा रहा था।

छोकरे तो शैतान को आगे लगा लेते हैं, मौलवी को क्या गिनते थे ? उन्होंने शोर मचा दिया और अपने बस्ते तख्तियां उठा कर घर की तरफ दौड गये। रात होने से पहले बात सारे शहर में फैल गयी। ज़रा-सी आग थी, पर जंगल की आग म तब्दील हो गयी। बात काजी तक जा पहुची। बुज़ुर्गों ने विचार किया ताकि बात ठण्डी पड जाये, लेकिन शैतान की जड नहके बैठ रहते। उन्होंने सारे स्यालकोट को सिर पर उठा लिया।

हकीकत के पिता भागमल और मां गुद हाथ जोड कर पहुचे। माफी माफी। मिन्नतें की, लडकों-लडकों का झगडा है..... बच्चे हैं, बडे होंगे तो अपने आप समझ जायेंगे। कल ये फिर एक हो जायेंगे। आप मुझे गालियां दीजिए। ने ग़ोली फैला रखी है, सबकी सब इसम डाल दूगी। मां कह जा रही थी।

भूत एक घर से निकले दूसरे मे जा घुसे। एक घर मे आग लगी, दूसरे मे मच उठी। काज़ी परेशान हो गया।

अगले दिन कचहरी बैठी। बयान हुए। भागमल ने बडी सेवा की थी, काजी, चौधरी और शहर के अन्य बडे लोगो की। बुजुर्ग यह चाहते थे कि यह बात यो ही टल जाये। भागमल का वे बडा अहतराम करते थे, लेकिन भीड के मुह पर हाथ कौन रखे ?

काज़ी ने ताडना देकर बात को रफा-दफा कर दिया। मा ने घर आकर ठण्डे पानी का कटोरा पीया।

लेकिन आग को फिर कुरेद डाला गया। शिकायत अमीर बेग के पास पहुची, जो उस समय स्यालकोट का हाकिम था। उसने भी बात पर धूल डालने की कोशिश की। हमारी दीवारें साझी हैं। हमारा जद्दी-पुश्तैनी लिहाज-प्यार अभी बचा हुआ है। भागमल जैसा ईमानदार और शरीफ आदमी सारे इलाके मे नही मिल सकता। उसका इकलौता बेटा है। अगर गलती कर ही बैठा है, तो कान खीच दो, चार थप्पड लगाओ और समझा दो। लेकिन छोकरो ने तो गिलहरी की तरह आसमान सिर पर उठा रखा था। खबरें हकीकत के ससुराल म भी जा पहुची। बटाले वाले भी आ गये। उन्होने भी माफी मागी। हाथ-पाव जोडे। हकीकत की सास तो लकीरें निकाल रही थी। मुकद्दमा फिर मुफ्ती के सामने पेश हुआ। वह तो पहले ही लोहे का थन था। लोहा लाल हो गया। इस्लाम की तौहीन, शफा का मज़ाक ! एक काफिर की इतनी जुर्रत ! इसका फैसला भरी कचहरी मे कल किया जाएगा। हकीकत राय बदीखाने म कैद था। कोमल-कोमल हड्डिया जजीरो मे जकडा वह कचहरी मे पेश हुआ, चढते सूरज के साथ।

—क्यो बालक तुमने बीबी फातिमा को गाली दी ? मुफ्ती ने पूछा।

--पहले इन लडको ने दुर्गा भवानी को गालिया दी थी।

—मैं सिर्फ यह पूछना चाहता हू कि तुमने गाली दी या नही—पहले हो या बाद म ?

—बाद मे मैंने वैसा ही कहा, जैसा इन लडको ने भरी भवानी के बारे मे कहा था।

—जुर्म इकबाल है। इसकी सिर्फ एक ही सज़ा है—कबूल-इस्लाम। अगर मुजरिम इन्कार करे, तो गर्दन उडा दी जाये।'

हाहाकार मच गया मारे स्यालकोट मे।

माता कौरा भरी कचहरी मे आचल फैलाये कह रही थी—मेरी सारी दौलत, मेरा मकान, मेरी सारी जायदाद जुर्माने मे ले लो, पर मेरी आखो के नूर, मरे लडके को बक्श दो। अगर यह कसूरवार है, तो मैं माफी मागती हू। मेरा एक ही बेटा है। मुझे आख से अन्धा मत बनाओ। मुफ्ती साहब, आप भी बाल-बच्चो वाले हैं !

लेकिन नक्कारखाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है ?

—क्यो छोकरे, तुझे इस्लाम कबूल है ?

—मजहब नही बदला जाता, यह कहना कुरान का है। बंदा एक मजहब पर ईमान रखे। जब आदमी दूसरा मजहब अख्तियार करता है, तो वह काफिर हो जाता है। मैंने इस्लाम की तालीम ली है, इसलिए मैं मजहब बदलने के लिए तैयार नही हू। हकीकत ने अपना फैसला सुना दिया।

—इसकी जुबान से साजिश की बू आती है। यह हुकूमत के लिए कभी भी खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए इसकी सजा बहाल रखी जाये। ले जाओ इसे कैदखाने मे और बन्द कर दो।

भागमल और उसके साथियो ने मुफ्ती के पास कई सिफारिशें पहुचवाईं। कई सम्मानित लोगो ने उसके आगे हाथ जोडे, पर उसने तो एक ही 'न' पकड ली थी।

अगले दिन कत्लगाह मे हकीकत से पूछा गया :

—खूबसूरत बेगम की लडकी, चार गाव जागीर, एक बढिया पद ये सब सरकार की तरफ से। पाच हजार मुहरें मैं अपने घर से दूगा। तुम, बरखुरदार, इस्लाम कबूल कर लो। मैं अपने घर से भी डोली दे सकता हू। तुम्हारी मां का दु:ख मुझसे देखा नही जाता। मान जाओ, बेटा, मान जाओ! मुफ्ती कह रहा था।

—इस्लाम कबूल करने से क्या मौत नहीं आएगी ? मौत को तो आना ही है। अब तो घोडी लेकर आई है। बारात चढने दो। इससे सुन्दर बेला फिर नही आएगी, मा ! तुम समझ लेना, मेरा एक ही बेटा था, उसे भी धर्म की वेदी पर कुर्बान कर दिया। हकीकत धर्म नही छोड सकता, जान दे सकता है।

जो तोहे प्रेम खेलन का चाव,
सिर धर तली गली मोरी आव।

मायें तो सिर पर सेहरा बाध कर विदा करती आई हैं। खत्रानिया तो 'गाना' बाध कर विदा करती थीं। मा, तुम्हारी आखों में आसू हैं, पोछ डालो ये आसू ! मेरा रास्ता मत रोको। मजिल बडी खूबसूरत है। मुझे आज हिलोरें ले लेने दो। यह घडी फिर लौट कर नही आएगी। मा, मेरी एक भाभी ही होती। मेंहदी भरे हाथो से मुझे सुरमा डालती। मेरी कोई बहन नही है। किसी पडोसिन को बुला लो। मेरी घोडी की बागें ही गूथ दे। बापू से कहो, मुहरें लुटाये, बेटा घोडी पर सवार हुआ है। जिंदगी मे इससे ज्यादा खूबसूरत दिन फिर कभी नही आएगा। मा, अपनी बहू को कहना, तेरा-मेरा इतना ही रिश्ता था। फिर मिलेंगे। मैं फिर आऊगा—किसी मा का पेट नौ महीने गन्दा करके। फिर नही। परसो बसन्त पचमी है। फूल खिले हुए हैं। रुत का देवता मुस्करा रहा है। मा, तुम अपने आंगन में फूल लगा लो, सारी उम्र महक देंगे। मा,

सौदागर आ गया। अरबी घोडो की एक जोडी उसने अपने यार के लिए खरीद ली। लोगो ने पूछा, तो हस कर बोली—यार के लिए कोई सौगात तो ले जानी ही पडेगी न ! अवध मे मुजरा हुआ, तो मोहरो की वर्षा हुई। लौटते हुए उसने एक कण्ठी खरीद ली—पसन्द जो आ गई थी। हैदराबाद, दक्कन के नवाब के बेटे का ब्याह था। बुलावा आया था। कई मुजरे एक साथ हुए हैदराबाद मे, सारा हिन्दुस्तान वहा इक्ट्ठा था, लेकिन हीरो की लड सिर्फ गुल्लूबाई को नसीब हुई।

चारमीनार, गोलकुण्डा की हवा खाने के बाद जब सलाम करने गई गुल्लूबाई, तो बीस हजार की अगूठी, शहजादे को नजराना दे आई। भोपाल वालो ने बुलाया। जितने दिन मुजरा चला, वह शाही मेहमान बनी रही। तबीयत आ गई कुछ दिन और ठहरने को। मकान किराये पर चाहिए था। एक हवेली वाले से किराया पूछा, तो वह बोला—यहा मकान किराये पर देने का रिवाज नही है। हवेली खरीद कर रहिए।

कीमत पूछी। दस हजार थी। आठ पर सौदा हो गया। लेकिन जब रकम झोली मे डाली गई, तो वह दस हजार थी। दस दिन उज्जैन और माडू देखने म निकल गये। सिर्फ एक दिन ही हवेली म सोई। एक दिन सोई और कीमत दी दस हजार ! जब बिस्तर गोल किया, तो जाती बार मकान मालिक को बुलवाया और चाबिया उसके हवाल कर दी। मालिक हैरान था, बोला—माफ कीजिए, मुझसे चौकीदारी नही हो सकेगी। कोई और आदमी ढूढ लीजिए। गुल्लूबाई ने फरमाया—यह हवेली तुम्हारी है। हम सिर पर उठा कर नही ले जाएगे। यह तुम्हारी नजर है।

—मैं रकम नही लौटा सकू गा।

—नजर है, फिर रकम का क्या स्वाल ! तुमने मुझे अमानत दी थी। वही अमानत तुम्ह लौटा रही हू।

—मैंने तो पैसे ले लिये थे। मेरी मिल्कियत खत्म हो गई।

—मिल्कियत कैसी ! जमीन खुदा की, आदमी मेहमान। एक रात रहा, दिन निकला, तो अपनी राह चल दिया। तुम जमीन के मालिक हो। हम तो परदेसी हैं। अच्छा, खुदा हाफिज !

यह थी गुल्लूबाई। एक गजल थी। एक राग थी। एक पिटारी थी हुस्न की। उसकी रागिनी मे सोज था। उसकी झाझरो मे सोज था। उसकी कमर हिचकोले खाती, तो जमीन भी डोलती और आसमान भी डोलता। हातिमताइ को उसने अपने पल्लू म बाध रखा था। एक फितना था, जो लाहौर मे पटोलो मे लिपटा हुआ था। एक फुलझडी थी, जो आतिशबाज के हाथ मे थी।

शाही किला, लाहौर मे मुजरा था, दूल्हा था खान बहादुर जकरिया खान और महफिल की शमा थी गुल्लूबाई। पहले बीस नर्तकिया आग के बगूले

की तरह लपटें लपकाती थी, लेकिन जो गजब हुस्न गुल्लूबाई पर था, बस खुदा ही खैर करे! लपटों से भरे मुखड़े महफिल की शमा की लौ को ठण्डा न कर सके। शमा जल रही थी, परवानों के झुरमुट में। शरमाते-सकुचाते घुंघरू भी बोल उठे। सारंगी का गज रूह खींच कर ले गया लोगों की। मेहमान चाहे गिनती के ही थे, फिर भी ठाठ बंधा हुआ था। कसूर के चौधरी, मुलतान से आया मेहमान और मंडियाले से नया आया परदेसी, भले गांव में नम्बरदार ही था, जवान मस्सा रंघड़ भी महफिल का सिंगार था।

नाचती हुई गुल्लूबाई के बोल उभरे—

'लाखों के बोल सहे सांवरिया तेरे लिए...'

गुल्लूबाई ने महफिल को लूट कर अपनी झोली भर ली। गूंगे घुंघरू भी बोल उठे। महफिल झूम रही थी। नशे में आ गई थी। और गुल्लूबाई नाच-नाच कर सब के दिल को नचाये जा रही थी।

—सिंह आ गये! एक आवाज आई।

—कहां? जकरिया खां ने कहा।

—लाहौर, यक्की दरवाजे पर। उन्होंने दुकानें लूट ली हैं और चुंगी वाली लोहे की अलमारी उठा ले गये हैं, जिसमें दस हजार मुहरें थीं। मामला इकट्ठा हो रहा था। किसी ने मुकाबला नहीं किया। डर के मारे हम भाग उठे. अहलकार बता रहा था।

—अब कहां हैं?

—हिरन हो गये।

—हाय मेरा मकान! मेरा भाई, मेरी भाभी! गुल्लूबाई की आवाज थी।

—तुम्हारे मकान को क्या हुआ? तुम कौन-से भाई-भौजाई ले आईं? सारा मजा किरकिरा कर दिया। बेस्वादी पैदा हो गई। मुजरा बरखास्त! जकरिया खां ने हुक्म दिया।

सारे मेहमान उठ खड़े हुए। साजिंदों ने साज सम्भाले। जकरिया खां हरम में चला गया। गुल्लूबाई जाते-जाते सलाम करने गई हरम में।

—बैठो! अभी तो पांव भी मैले नहीं हुए। अभी जा रही हो! अभी तो रात भी गहरी नहीं हुई! जरा भीगने दो रात को। उठाओ शराब की सुराही, जरा गम गलत किया जाये। इन सिंहों ने जान अजाब में डाल दी है। अब ये लाहौर तक आ पहुंचे। कल किले का दरवाजा तोड़ने लगेंगे। ईरानी सूबेदार को ये क्या समझते हैं? अब ईरान से इजाजत लेनी पड़ती है कि इन सिंहों का क्या किया जाये। पहले दिल्ली वालों की मिन्नतें करनी पड़ती थीं और अब ईरान के सामने एड़ियां रगड़नी पड़ती हैं! ईरानी सूबेदार तो मिट्टी का माधो है। अन्धा घोड़ा। औरत, शराब—दूसरी कोई बात ही नहीं। वहशी है, एकदम वहशी!

और ये सिंह ! खून ही पी लिया है इन्होंने मेरा। जकरिया खां ने एक ही घूंट में पूरा गिलास खाली कर दिया।

—आपने भी तो कम गुलछर्रे नहीं उड़ाये हैं। उनका वक्त आया है, उन्हें भी अपना मुंह नमकीन कर लेने दीजिए। कभी दादा की, और कभी पोते की। जुबान का स्वाद बदले, फिर लुत्फ आता है जिन्दगी का ! गुल्लूबाई ने कहा।

यह पानी का तालाब, यह आबेहयात का चश्मा, यह गुरुओं की मस्जिद, यह अमृतसर —जब तक ये हैं, सिंह कभी कमजोर नहीं हो सकते। ये बिज्जू जब आबेहयात के तालाब में से नहा कर निकलते हैं, तो अली बन जाते हैं। अली अली का क्या मुकाबला ? अली का कोई मुकाबला नहीं है।...जकरिया खां सोच रहा था।

—दाना डालिए, बटेर इकट्ठे हों, पकड़ लीजिए। गुल्लूबाई ने कहा।

—ये शिकारियों के जाल तोड़, साथ ले, भाग जाते हैं। इनके पीछे एक बहुत बड़ा जज्बा काम कर रहा है। हमारे सारे जज्बे मद्धम पड़ गये और नष्ट हो गये। हमने सब कुछ शराब के प्याले में घोल कर पी लिया। इन्होंने अभी तक छू कर भी नहीं देखी है—ये खुदा हैं। हम तो बंदे भी नहीं रहे। खुदा और बंदे का क्या मुकाबला ! जकरिया खां उदास था।

—शराब के दो प्याले भर कर पीयो, मीत जी, सब गम भूल जायेंगे। सिंहों के साथ दोस्ती की जरूरत है। अब हुकूमत भी परायी है। लाहौर का सूबा अब दिल्ली के अधीन नहीं है, ईरान की छत्रछाया के नीचे है। ये ईरानी मुग़लों से भी ज्यादा कमीने हैं, भूखे, लीचड़ और दुष्ट हैं। इनकी भूख निकलेगी, तभी ये बादशाह बनेंगे। ये तो हैवान हैं। एक दिन में ही मेरी आंख लग गयी। भरी दुपहर में दो ईरानी मेरे घर में आ घुसे। मेरी दो नाचियों की हड्डियां कड़का गये। पंख तो उखाड़ते ही, पर हड्डियां तोड़ने की क्या बात ! वहशी ! बड़े भूखे हैं औरत के। औरत नजर आ जाये, बस लसूड़ी की तरह चिपक जाते हैं !... गुल्लूबाई ने कहा।

—शराब लाओ, शराब ! कमजात ! तुम तो अपनी कहानी ले बैठी। हुस्न की बात करो। जोबन की बात करो। शराब का नशा खिले। नींद आ जाये। इन हरामजादे सिंहों ने मेरी नींद हराम कर दी है। सोने नहीं देता इनका डर। अमृतसर पर कड़ा पहरा। तालाब की सख्ती से हिफाजत...आदमी कहां हैं इस काम के लिए ?...शराब के नशे में जकरिया खां बड़बड़ा रहा था।

गुल्लूबाई जल्दी में थी। मस्सा रंघड़ के साथ बात करके आयी थी। कड़ियल जवान, शेर जैसा तगड़ा...शीशम जैसा शरीर—खूबसूरत, आकर्षक... रात, मस्सा और मैं...रात कितनी सुहानी हो जायेगी...ऊपर से थोड़ी-सी शराब...जवानी हिचकोला खा जायेगी। आज तो झूला झूल लेने दे कमबख्त ! तेरी मनुहार तो कभी खत्म होगी नहीं ! हमारी रात को क्यों आग लगाये जा

रहा है ! सिंह ! सिंह ! इनका वक्त आया है, इन्हें भी चार दिन मौज मना लेने दे !... गुल्लू बाई ने एक प्याला और भर कर दिया ।

एक ही सांस मे चढा गया पट्ठा !

—इधर आ कमजात ! आधी रात को कहा जा रही है ?

—मैं आप के तलुवे रगडती हू । रात बहुत ठण्डी है । मैं आपके पास हूं । फिर कैसी ठण्डक !...गुल्लबाई तलुवे रगडने लगी ।

—अमृतसर का चौधरी किसे बनाया जाये ?

—अभी तक चुनाव ही नहीं हुआ ? चौधरी बनाना है...आप ईरान का बादशाह तो बना नहीं रहे !

सब बुजदिल हैं...निकम्मे !...सिंहो के डर के मारे इनकी हवा सरकती है । सिंह बडे दिलेर हैं । फौलादी जिस्म ..वजर शरीर...पहाड जैसे हौसले... जकरिया खा कह रहा था ।

—मेरी सुरमे वाली आख ने महफिल मे ही चुनाव कर लिया था... गुल्लूबाई ने कहा ।

—मैं भी तो सुनू तुम्हारी पसन्द...शायद राय मिल जाये । तुमने घाट-घाट का पानी पीया है । बोल, मेरी छमक छल्लो !

मेरी नजर मस्सा रंघड पर है । यह आदमी सिंहो को कील सकता है...गुल्लूबाई ने छाती के जोर से कहा ।

—कही याराना तो नहीं है मस्सा रंघड से ! रोज नये छोकरे तलाशती फिरती हो !

—पहली बार देखा है ।

—नजर तो पहली ही बुरी होती है ।

—नहीं, सरकार । मुझे शक की नजर से मत देखिए । मेरा तो उस बेचारे से कोई रिश्ता नहीं है !...अच्छा, सलाम अर्ज करती है बादी ।

नशे की जद मे आया जकरिया खा बेसुध हो गया ।

वह ख्वाब देख रहा था : सिंह जनाजा उठाये लिये जा रहे थे, जिंदा जकरिया खा का । बेचारा डर के मारे बोल भी नहीं रहा था ।

—सिंह आ गये ! जकरिया खा चौंक कर उठ बैठा ।

पहली अजान हो रही थी । दिन चढ रहा था ।

●●

चौधरी

चौधरी की पगडी मस्सा रघड के सिर पर बाधी गयी।

जकरिया खा ने अपनी कमर से तलवार खोलकर उसकी कमर म बाध दी। खिल्लत और एक अरबी घोडा भी दिया। छोकरा घर से लाहौर को देखने आया था, और लाहौर की बारादरियो से चौधरी के घोडे पर सवार होकर वह निकला। उसकी झाली मुबारको से भरी हुई थी। पगडी का तुर्रा हवा म मोर की तरह नाच रहा था।

भरी कचहरी मे जकरिया खा ने कहा—ले रे बच्चू! आज से तू अमृतसर का चौधरी! सरकारी कागजो म तेरा नाम चढ गया। स्याह सफेद का तू मालिक। अपनी चौधराहट की लाज रखना। यह चुनाव चाहे सुरम वाली आख का है, लेकिन मैंने कल कचहरी से उठते ही फैसला कर लिया था। शाही तलवार ललकार ललकार कर यह कह रही है कि तुम्हारे सिर पर फर्जों की गठरी रख दी गयी है। मजिल तक पहुचाना तुम्हारा काम है। लाहौर की सारी फौज, लाहौर का सारा खजाना, सब तुम्हारी मदद के लिए हैं। तुम्हे दस खून माफ। जैसे भी हो सके, जोर-जुल्म, सख्ती-तलवार, तोप-बारूद का भय दिखा कर एक बार अपनी दहशत पैदा कर दो। थर-थर कापे अमृतसर। प्यार करो, दिलासे दो, घी के चूरमे खिलाओ, दूध पिलाओ, मलाई खिलानी पडे या खीर, जो जी म आये, करो, बस सिह तुमसे डरें डर के मारे कोई सिंह अमृतसर की तरफ रुख न करे। तालाब भरवा दो। वह मस्जिद—सुनहरी बुर्जो वाली, गुंबदो वाली, चार दरवाजो वाला वह हिन्दुओ का मन्दिर। पानी म खडी उस मस्जिदे हिंद के दरवाजे बद कर दो। कोई सिह न सलाम कर सके, न दुआ। बस, तुम्हारा इतना ही काम है। जाओ, अमृतसर मे डेरा डाल दो। आप खाओ और दूसरो को गुलछर्रे उडाने दो। अगर तुम इस काम म कामयाब हो गये, तो पचहजारी बनवाना मेरा काम। अब ताजा रक्त की जरूरत है। पगडी का लाज रखनी है तुम्हे। जकरिया खा ने उसकी पीठ पर थपकी दी।

—खान बहादुर, मस्से की खाल म रत्ती भर भय नही है और न ही मैं सिहो से डरता हू। खौफ खाना मैंने सीखा ही नही है। मेरे जीते जी कोई

भी सिंह अमृतसर की हद मे पाव नही रख सकेगा। मैं पैर काट दूंगा। मैं इनके मूत न निकाल दूं, तो मुझे मस्सा रघड मत कहिए, ऐरा-गैरा जो जी म आये वह लीजिए। मैं रघडो को लाज नही लगने दूंगा! मस्सा रघड ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

—अच्छा भाई खुदा हाफिज!

मस्सा रघड़ ने सूबे को सात बार सलाम किया और बहादुरी से घोडे को एड लगायी। हवा से बातें करता घोडा यह गया, वह गया! लाहौर की चौबुर्जिया पीछे छूट गयीं। पीछे एक घोडा आ रहा था—सरपट दौडता। मस्से ने पीछे घूम कर देखा। लगा कोई दोस्त है। घोडे की चाल धीमी कर दी मस्से ने।

—अस्सलाम अलैकुम! हुजूर, आप लाहौर से परदेसियो की तरह निकल आये। जैसे आपका कोई जान-पहचान वाला वहा हो ही नही। गुल्लूबाई आपके इंतजार मे हवेली के दरवाजे मे सारी रात खडे-खडे अकड गयी। आपको आना था। दस्तरखान उसी तरह बिछा पडा है। ईमान से, गुल्लूबाई ने रो-रो कर आखें सुजा ली हैं। जब उसे पता चला कि आप लाहौर से चल पडे हैं, तो वह गश खाकर धम्म से जमीन पर गिर पडी। बोली, आपको आना नही था, तो इकरार की क्या जरूरत थी? अच्छा, खुदा हाफिज!

घुड़सवार ने अपनी बात कह दी।

—माफ करना, वक्त नही मिला। फिर आयेंगे। अभी तो जवानी चढे हैं! बहुत जिंदगी पडी है। मिलेंगे, जरूर मिलेंगे। उससे नही मिलेंगे, तो और कौन-सी नथ वाली है, जिससे बात करेंगे? मेरी वजह से उसे और उसके परिवार को जो कष्ट उठाना पडा है, उसके लिए मुझे दुःख है...मेरी तरफ से माफी माग लेना। पर देखा जाये...'पछी और परदेसी नही किसी के मीत'...।

चढी हुई घटाए कभी रुकी हैं! गये हुए बादल कभी लौटे हैं? पछी लौटते हैं हर साल। मौसम आया, तो फिर लाहौर आयेंगे। फिर महफिलें सजेंगी। दीवानखानो म फिर रौनक होगी। फानूस जगेंगे, झाझर खनकेगी, दिल डोलेगा, बहार नाचेगी बाई के आगन मे। मैं भी झूमूंगा और लाहौर भी झूमेगा! मस्से ने कहा।

—ठीक कहते हैं, हुजूर! आदमजादिया कब किसी की सुनती हैं! हवा की बेटी ने जब हथेली पर मेहदी लगा ली, तो जरा-सी खुशबू निखरी, बिखरी, फैली और जुलेखा बन गयी। यूसुफ चक्कर नही लगायेगा तो और क्या करेगा? किबला, गुल्लूबाई ने तोहफा दिया है। नजराना तुच्छ सा है, कबूल फरमाइए.. घुड सवार ने कहा।

—जाहे-किस्मत! क्या है?

—ईरानी इत्र।

—अच्छा! शुक्रिया...

दोनो अपनी-अपनी राह चल दिये। एक तरफ मस्सा रंघड का घोडा हवा से बाज़ी लगा रहा था, दूसरी तरफ गुल्लूबाई का नौकर धूल उडाये जा रहा था। घडी भर म ही बहुत बडा फासला दोनो के बीच पैदा हो गया।

अमृतसर म खबर पहले ही पहुच गयी थी। लोगो की ढाणियो की ढाणिया खडी थी। सरकारी कर्मचारी भी फूलो के हार लिये खडे थे।

लोगो ने मस्से की गरदन को फूलो के हारो से भर दिया। ज़मीन से बलिश्त भर ऊचे थे मस्से के पाव।

मस्सा रघड की मा ने पानी वार कर पीया। भाभियो ने सिरवारने किये, सदके किये बहनो ने। मुबारकें देने वालो ने मस्से की मा की झोली इतनी भर दी कि उछल-उछल पड रही थी मुबारकें।

सम्मान देने आये ये चौधरी—चौधरी रामा, रधावा, कन्हैये वाला करमा छीने गाव का, पाना नौशहरे का धरमदास जोधनगरिया। साहिब सिधू, दिलबाग राय, हैबत खा नेशटे वाला। मजीठे वाला शेर गुल जाट, बटाले के भडारी खत्री, जडियाले के निरजनिये साधू। इन्होने इतनी बधाइया दी कि मस्सा रघड अपने आपको भूल गया। बडा नशा होता है चौधराहट का।

अमृतसर की कोरी स्लेट पर कुदरत ने मस्सा रघड का नाम लिख दिया। उसने मस्से के पैरो के नीचे हुकूमत के गलीचे बिछा दिये।

अब अमृतसर मे सिर्फ मस्सा रघड ही रहेगा। शेर अकेला ही गरजेगा जगल म। भेडो के झुंड अब अमृतसर म नही घुमेंगे।

मस्सा रघड अमृतसर का खुदा बनकर बैठ गया। गुरुओ की माला तस्बीहों मे बदल दी जायेगी। धर्म ईमान का चोला पहनकर घूमेगा। राम-राम, वाहे गुरु कहने वाले अल्लाहू अकबर बोलेंगे—तभी मस्से का नाम लाहौर की बारादरियो मे गूजेगा।

●●

चुपड़ी और दो-दो

लक्खी जगल का हाल सुनाने लगा बिजला सिंह।

'मैं लक्खी जंगल देखना चाहता था। बस नाम ही मन रखा था। मेरे शरीक-भाई लक्खी जगल मे घूमते थे, कभी बरस-छमाही मे फतेह बुलाने का मौका मिल जाता, वह भी रात-बिरात। रात अंधेरी होती, तो कभी कोई गांव मे आ जाता चोरो-चकारो की तरह। मेरा जी बहुत करता लक्खी जगल जाने को। कोई साथ नही बना। एक दिन अपने चाचा के बेटे के साथ तैयार हो गया। छलाग लगा कर सवार हो गया घोड़े की पीठ पर। भाई का घोड़ा था। बस, फिर सिंह ने सारी रात सास नही छोड़ी। लौ लगी, तो घोड़े ने भी दम मारा और मेरे भाई ने भी। बड़ी सख्त जान है। मेरी तो पसलिया हिल गयी, हड्डिया ढीली हो गयी, लेकिन मैंने भी दम रखा। नगे घोड़े पर बैठे रहने से काफी छिल गयी टागें, पर मैंने परवाह नही की। चाव जो था! दिन-रात उसी तरह सफर, मजिलों पर मजिलें तय करता घोड़ा, हवा से बातें करता, दौड़ता, जैसे भगवान् को हाथ लगा रहा था। फिर दूसरा दिन चढ आया। फिर सांस ली, प्रसाद-पानी चखा, घुटना नवाया, आराम किया। यह एक हिंदू का घर था। तीसरी रात हम फिर मारा-मारी करते लक्खी जगल के नजदीक जा पहुचे। कहा माझा और कहा लक्खी जगल! सात समदर पार, सबको से परे उजाड़, रेत ही रेत! यह रात हमने एक मुसलमान राजपूत के घर मे काटी। खूब सेवा की उस राजपूत ने। मेरे भाई के ठिकाने पर बड़े विश्वसनीय और ईमानदार और शरीफ लोग थे। बलिहारी जाऊ मैं उस घोड़े के, उसने जरा भी थकान नही जानी। मेरा तो अग-अग चूर-चूर हो गया। पर मेरे भाई को जूती तक याद नही थी। भोर का तारा निकला। हमने फिर घोड़े को कस लिया। रब दे, तो बदा सहे। मेरी टागें भले ही अकड़ गई थी, लेकिन लक्खी जंगल देखने का चाव था, दम साध कर पीछे बैठा रहा। गुरुओ की वेला हुई, हमने जाकर फतेह बुलाई। यह जगल था। घने पेड़ों का घेरा, न राह न रास्ता, झाड़िया, पेड, कीकर, करीर, फलाही, धरेक, बेरिया, जड, जगली दरख्त—यही था सिंहो का लक्खी जगल।

मेरा ख्याल था कि खूब गुलछर्रे उडेंगे । पर वहा तो मेला लगा हुआ था । जब मैं जगल के बीचो बीच पहुचा, तो भगवान कसम, अमावस का मेला लगा हुआ था—अमृतसर के घोडे, ऊट, बैलगाडिया. क्या था जो सिहो के पास नही था !

तिनको-फूस की झोपडी, जिसे शीश महल कह कर वे आनद मनाते । कधे पर लोई लिए या कोई भूरे की ही लपेट कर बैठा हो कहते दुशाला तो बहुत खूबसूरत है ! दातुन कीकर की हो तो हरा गुलाब ! फलाही की हो तो इलायची कह कर खुश रहते । लगडा मिल गया तो सुचाला, अधे के दर्शन हुए तो कह दिया सूरमा मिल गया । बहरा मिल गया तो चौबारे चढा हुआ । एक आख वाला—सुनेत्र । टुंडा—लाख बाहो वाला । कुत्ता भौंका तो—दस कर रे दुरकुतबुलदीना । जरा-सी सास ली तो जैसे छावनी बना ली । रुपए को छिलका या ठीकरा । मुहरों के मिल जाने पर—डायनें आ गई ! सोना घास के फर्श पर स्वप्न लेना मखमली बिछौनो का । लक्खी जगल को कई लोग राम राज कहकर सबोधित करते । पराठा मिल जाये तो तहतोड कहकर उसका सत्कार । दीया देखना तो उसे उजागर कहना । रजाई नज़र आ जाये तो अफलातूननी कहकर उसकी गर्मी लेना । अगर किसी ने डडा पकड रखा हो, तो कहना, अक्लदान लिये फिरता है । पानी के दो घूट पीना और इद्र सिंह कहना । बेरियो के बेरों का आनद सेब कहकर लेना । सिहो के बोल आजादी का दम भरते और आदमी का दिल बलवान बनाते ।

मस्जिद नजर आ जाती, तो वे दूर से ही मस्तगढ के बोल उच्चारते । उगाही करते तो कहते मामला उगाह रहे हैं । शब्द निकलते तो सामने वाला चारो कन्नियां झाड देता । आटा खत्म हो जाये, कोई सिंह चक्की पीस रहा हो तो कहना फिरनी की सवारी हो रही है । खोदना घास पर कहना बाज़ का शिकार कर रहा हू । नगे पाव वाले को जती मिल जाये तो बोले घोडी मिल गई है । चबाना दाने मक्की के और कहना—सुना बसत कौर आ गई ! रोटी को प्रसाद और अगर चप्पा भर रोटी हो तो फक्कड प्रसाद कहना । माश पके हो तो सुरमई दाल का नाम देना । एक छींटा दूध मिल जाये—सिंह समदर म गोते लगा रहा है । बैंगन नज़र आ जाये तो राम-बटेर पकड लाये हो ! प्याज को मुक्का मार कर तोडना—रूपा प्रसाद का स्वाद ही निराला है ! कीकर के तुकले पकते हुए देखे तो कहना अगूर पकने वाले हैं । बेलो के पत्ते पूरियो का स्वाद । कढी पीना और अमृती कह कर स्वस्थ होना । भुने हुए छोलिये को इलायचीदाना कहना । जड की फलिया—जलेबिया । सिर मे तेल लगाना—छठा रतन घिस रहे हो ? घी को पाचवा रतन बोलना । खाना नमक तो सातवें रस का मज़ा ! शक्कर हो तो श्री खंड । गुड की रेवडी—सूबेदार को काट रहे हो ?

चंडाल चौकड़ी

मस्सा रघड के चारो ओर चडाल चौकडी ने झुरमुट वना लिया, जैसे गिद्धे की रानी लडकियो की ढाणी म नाचती है। चाद के चारो ओर जैसे तारे। हिरन के पीछे हिरनिया। साकी की आख पर जैसे शरावी। दूल्हा बना हुआ था वरातियो के झुंड म मस्सा रघड।

उसने लाहौर के सूबेदार जकरिया खा द्वारा दी गई तलवार की मूठ पर हाथ रखा और मू छ का ताव दिया। शमले वाली पगडी उसकी चौधराहट का ढिढोरा पीट रही थी।

खुशामदी टट्टू उसकी लार तक चाट जाने को तैयार वैठे थे। आखो म सुरमा। होठो पर पान की सुरखी अपनी धाक जमाय वैठी थी। भाति-भाति की वोलिया वोलने वाले बटेर टु टु कर आने लगे। गप्पें हाकने वाले जमीन-असमान के कुलावे मिलाने लगे। गपौडियो को कैसी शर्म! घू घट के ओट से नही वोलते थे वे वल्कि समधियो की टोली म मु ह को नगा करके, बाहें उछाल-उछाल कर टु टु आते थे। तिलियरो की डारें आ वैठी हरिमदिर के गुंवद पर। वद वुलवुलो की खिडकिया खुल गई। उन्होने गीत छेडे प्यार, मुहब्बत और इश्क के। कव्वालिया गाने वालो ने अपनी तानें छेडी। गले की गरारी कुए के डिब्बो की तरह बजने लगी। कई रागिनिया अपने आप पैदा हो गई। सारगी के रेशमी तारो पर खुरदरा गज घूमा—कलेजा छिल गया मुलायम तारो का। मशाल जल रही थी। मशालची जब तेल डालता, तो महफिल चमक उठती, गपौडिये मावा छककर इस तरह महफिल की पलकें सवारते—

—मेरे वावा के पास एक ढागा था—वडा लवा, वडा ऊचा! एक गपौडिये ने सीना तानकर कहा।

—कितना लवा?

—कोई वीस गज होगा।

—जा वे! तुझे क्या पता कि ढीढा कहा वजता है? तू भेडो म ऊन ही पहचानता है!

—बीस गज नही तो चालीस गज होगा।

—नही रे नही, एक मील लबा।

—तब तो कमाल है! हद हो गई। बडा लबा ढागा था तुम्हारे बाबा के पास!

दूसरे आदमी को बडी खीज हुई। उसने एक बार खामा, गला साफ किया, सीधा होकर बैठा और मशालची ने मशाल आगे बढाकर सारी महफिल को उसका चेहरा दिखा दिया।

—यार! हमारे बाबा की भी भली पूछी। बडे लोगो की बडी बातें। सरकारे-दरबार मे भी पूछ-प्रतीत हो, उनकी बातें ही निराली हैं। मेरे बाबा ने भी एक हवेली बनवाई थी। मेरा समधी कहता है कि उसम बीस गाव बसते थे। बीस अलमबरदार। जब कभी इकट्ठे बैठते, कसम अल्ला ताला की, एक बार लाहौर की कचहरी का नक्शा आ जाता।

पहला शर्मिंदा हो गया। उसके दिमाग म एक बात जरूर आई, लेकिन खामोश बैठा रहा।

बीच म एक और आदमी बोल उठा—तुम्हारा बाबा ढागे को क्या करता था?

—बकरिया हाकता होगा।

—जा रे, जा! मेरा बाबा कोई गडरिया था! वह तो जमीदार था। बीस गावो का मालिक। लाहौर दरबार भी उसस खम खाता था। जब कभी सूखा पड जाता और वर्षा की एक बूद न पडती, सारी दुनिया हाय-हाय कर उठती, तो मेरा बाबा अफीम का मावा चखता और अल्ला ताला का नाम लेकर ढागा निकालता। ढागे को एक बार बाहों म ताला, कलमा पढा और जब 'या अली!' कह कर उसने ढागे को हिलाया, तो तीतर के पखो जैसी बदलिया हिल उठी। छमाछम बारिश होने लगी, खेतो म घुटने-घुटन पानी भर गया। बाबा तख्तपोश पर बैठ जाता। गरीबो के कलेजो पर साप लोटवाने के लिए जैसे कोई खूबसूरत औरत चिक तान ल—आशिको के दिल जलाने के ख्याल म—मेरा बाबा भी उसी तरह परदा कर लेता। सारे गाव के मुंह दुखने लगते, जम्हाइया लेते लेते, पर पानी का एक छीटा तक न गिरता।

—सारा गाव उसे वली मानता होगा। तब तो तुम्हारे बाबा की बहुत बडी खानगाह बनी होगी! अल्लाह का लोक होगा तुम्हारा बाबा। उस पर फकीरो की मेहर जो थी!

पहले को जमीन घमती हुई लगी। झट से बोला—यार, ढागा रखता कहा होगा तुम्हारा बाबा?

पास बैठे एक आदमी न कहा—बेचारा कहा रखेगा। खेता म ही रखता होगा।

—सिंह नहीं देखते थे ? चोर उठा के नहीं ले जाते थे ? सिंहों को तो ऐसे करमाती धागे की जरूरत थी।

—मेरा बाबा इतना कच्चा-मुलायम नहीं था।

—फिर तो वह उसे कोठरी मे रखता होगा या मुर्गियो के दड़बे मे।

—नही रे, नही...यारो के यार दोस्त. मेरा बाबा तुम्हारे बाबा का यार था न। तुम्हारे बाबा की हवेली खाली पडी थी, वही रखता था।

दूसरे आदमी का खाना खराब।

ऐसे गप्पबाजो की टोली जुटी हुई थी मस्सा रघड के चौगिर्द। मस्सा रघड का दिल बिल्ली के बच्चे जैसा था—दिनो मे ही शेर का कलेजा बन गया।

पुजारियो-श्रद्धालुओं का हरिमंदिर, सिदकियो का स्थान, गुरु के प्यारो की काशी, पापी-एय्याशो का अखाडा बन गया।

मस्सा रघड ने बडी अति कर रखी थी। वह हरिमंदिर मे हर तरह का कुकर्म कर रहा था। उसने आबादी को छेड़ा तक नही। अमृतसर के लोगो का कान तक गरम न हुआ। लेकिन बिगडे हुए लोग कब बाज आते हैं।

एक दिन जब सूरज थका-टूटा अपनी हुकूमत मे गया, और रात को अपने हरम में घुसने लगा, तो अमृतसर की आबादी के एक घर मे हाहाकार मच गया।

—क्या हुआ ? क्या हुआ ? लोगो की आवाजें उठी।

—जीतो को कोई उठा कर ले गया। पत्ता-पत्ता छान मारा। घर-घर ढूढ लिया, गली-राहो से पूछा। तिनको से भी हल्के हो गये दोनो भाई। बलाका सिंह बेचारा पहले ही सीधा-भोला था, साधु-स्वभाव, सन्यासी, गुरमुख, न किसी से लेना न किसी से देना। माला पकडी और सारा दिन लीन रहे। न काहू से दोस्ती न काहू से वैर।

दूसरा भाई जोगा—वह अमृतधारी तो नही था, सहजधारी था। अपने भाई को हर रोज कथा-कहानियां सुनाता रहता। उसका मन सिक्ख बन गया था। बलवान हो गई थी उसकी आत्मा। उसकी सवेदना सिंहों से जा जुडी। उसकी हर सास सिंहो का हुकारा भरती। सिर्फ इतना दोष था उनका। जवान-जहान बहन होना भी एक पाप है। मा-बाप मर चुके थे। इसी कारण बहन के हाथ पीले न हो सके। एक चडाल की नजर में चढ़ गई। पानी भरने जाती थी कुएं पर। उसी ने मस्सा रघड के कान में बात डाल दी। बस, फिर क्या था, उसी रात मस्से के आदमियो ने, जिन पर मरण मिट्टी चढी हुई थी, उसे घर दबोचा। काली तितली को बाज पकड ले गये। एक ही रात म उन्होने उसे लहू-लुहान कर दिया। कच्ची कुआरी टहनी मसल डाली गई और फिर मरी हुई जीतो को वे हरिमंदिर के दरवाजे पर फैंक गये। दिन मे शोर मच गया। सम्माननीय लोग इकट्ठे हुए—हिंदू, मुसलमान—पर कुछ न कर सके। उठाकर ले गये रोते हुए। दाह-सस्कार किया। अमृतसर वालो के कलेजे मे आग धधक उठी, लेकिन मस्सा रघड

के डर ने उन पर मश्कों का इतना पानी फेंक दिया कि वे ठंडे-ठार हो गय। पर जिनके घर में आग लगी हुई थी, उन्हें किसी ने नहीं पूछा था। भीतर ही भीतर कुढ़-कुढ़ कर मरते रहे। न जान निकले और न खलासी हो। दिन चढ़ा, ढल गया, रात हुई, निकल गई। दूसरी रात लोग अभी सोये नहीं थे। दोनों भाइयों ने विचार-विमर्श किया। तिनके वगैरह एकत्र किये। हताश का जीना बड़ा कठिन। घर को आग लगा दी। घर फूंक तमाशा देखा। सारा घर जलकर कोयला बन गया। दूसरे दिन सारे अमृतसर ने इन भाइयों को तलाशा, लेकिन वे दोनों मुंह काला करके निकल गये थे। कई महीनों तक उनकी कोई खबर न मिली। गम का गोला पेट में लिये फिरते थे।

एक आवाज आ रही थी अमृतसर की गलियों से—

'गलियां होवण सुंञियां विच मिर्जा यार फिरे।'

आवाज किसी फकीर की थी।

कंचनी

जोगा कुछ दिन तरनतारन मे रहा। फिर जी कर आया अमृतसर देखने को। अमृतसर का जलवा सारे पजाब म फैला हुआ था। यह बात अलग थी कि हर आदमी उभर कर सामने न आता। लेकिन भीतर ही भीतर सब कुढते रहते। जो सिक्ख छुपते-छुपाते बाहर आता, वह या तो पकडा जाता, या कत्ल हो जाता। पकडकर कैद मे फँसने का तो सवाल ही पैदा नही होता था। सिहो के लिए मुकद्दमे की कोई जरूरत नही समझी जाती थी। मस्सा रघड भी जकरिया खां के पद-चिह्नो पर चल रहा था। अगर यह कहा जाये कि वह उससे दो कदम आगे ही था, तो कोई झूठ बात नही होगी। गुरु गुड चेला शक्कर। सारे इलाके की बत्तीसी मस्से का ही नाम लेने लगी।

हरिमदिर साहिब के पवित्र स्थान को कचनी के गोरे-गोरे पैरो ने गदा कर दिया। कचनी दोहरी हो-हो कर नाच रही थी। मस्सा रघड को सलाम करती और मुहरो से झोली भरती। शराब के मटके खुलते और बाद मे पाव की ठोकर से लुढका दिये जाते। खाली मटके भाय-भाय करते। निवारी पलग बिछा हुआ था, हरिमदिर की नाभि म। जूतो सहित पलग पर आ बैठा चौधरी। अहलकार ने हुक्का भरकर सामने ला रखा। मस्से के जी मे जो आया, उसने किया।

—बोलो, अब भी कोई सिंह अमृतसर आने की जुर्रत करेगा? मैंने इनकी मस्जिद को नापाक कर दिया है। गाय के खून से इसके फर्श को कई बार धो डाला। बोला मस्सा रघड।

—हुजूर का इकबाल बुलद। आपकी कलगी को फूल लगेंगे लाहौर की भरी कचहरी म। अहलकार ने कहा।

—अब तो सिहो की रूह भी यहा नही आ सकती। आपने सब भूत निकाल दिये हैं। दूसरे अहलकार ने कहा।

कचनियो का एक मुहल्ला आबाद हो गया अमृतसर मे। गुल्लू बाई के डेरे ने पहले ही छावनी डाल रखी थी। खूब हाथ रगे डेरेदारनियो ने। मुहरें गिनते-गिनते कइयो के हाथो की रेखाए मिट गई थी। सब के मन के चाव पूरे

हुए, लेकिन बेचारी गुल्लू बाई के मन की मुराद पूरी न हुई। वह चाहती थी कि मस्सा रघड उसकी सेज का सिंगार बने। उसने कई बार जुम्मेरात के और जुम्मेरात के मकबरे पर न्याज चढाई, फकीर की खानगाह मे मनौती मनाई, लेकिन मस्सा तो रोज नई-नई कबूतरियो के पर नोचता था—वह उस बुढिया का क्या करता। उसने उसकी तरफ देखा भी नही। अगर किसी ने कभी सलाह दी, या गुल्लू बाई का जिक्र किया, तो उसने थूक दिया, खगार मार कर दीवार लिथाड दी।

गुल्लू बाई बडी उदास थी। उसकी नचनियो के हाथो मे मस्सा रघड खेलता। मेहदी और सुरमे का भाव चढ गया। आग लग गई ददासे को। सोने के भाव बिकती चूडिया। मडी लगी हुई थी गोरी गोरी सुंदरियों की। अमृतसर मे शैतानो का टोला उतरा हुआ था।

हरि मदिर की पवित्रता भग हो गई। चडाल चौकडी के लोग वहा चागरे मारते। शहर का मुँह न दिन म बद होता, न रात म।

उसने माझे म सिहो का बीज नष्ट कर डाला। जोगा ने जब देखा, उसकी अतडिया मुट्ठी म आ गई हैं, तो उसकी आखें खून के आमू रो दी। 'चोर-उचक्का चौधरी, गुंडी रन्न परधान।' जोगा सोच रहा था, मुझे अपने घर के फुँकने का कोई अफसोस नही है, लेकिन हरिमदिर की पवित्रता भग नही होनी चाहिए थी।

चौराहे पर खडा जोगा सोचे जा रहा था।

राही

—चम्पा, ओ चम्पा ! शैतान छोकरी, सो गई ! अरी, दरवाजे की आवाज का भी ख्याल रखना चाहिए।

दरवाजा बन्द था।

—चम्पा ओ चम्पा।

—बापू हैं। अभी मेरे सग बातें कर रही थी। सो गई होगी। जगाती हू। बापू, जरा धीरज रखो। . पडोस मे आवाज आई।

—चम्पा, री चम्पा। बापू आये हैं। उसने कुडी बजाई।

—कौन है, भूरी ? तुम्हें सौ बार मना किया है कि मैं सोई होऊ, तो मुझे मत जगाया करो। अभी तो मेरी आख लगी ही थी कि तुमने आवाजें देना शुरू कर दिया। जाओ, अपने घर, मुझे नीद आ रही है। बापू का पता नहीं, कब आएगे। आवाज चम्पा की थी।

—दरवाजा खोल री, बापू आये हैं।

—बापू। चम्पा चौंक कर उठ बैठी।

—हा, बापू।

उसने दरवाजा खोला।

—बापू, यह क्या ? चम्पा ने पूछा।

—कुछ नही, बेटी, खाट बिछा दो। एक परदेसी है। धूप ने इसकी सूरत बिगाड दी है। बेहोश हो गया है।

चम्पा ने खाट पर चादर बिछाई और परदेसी को लिटा दिया। बापू उसके तलुवे रगड रहा था।

—बेटी, पानी लाओ और ऊट को बाध दो। मैं खुला ही छोड आया हू।

—मैंने बाध दिया है, बापू। भूरी बोली।

बापू ने कपडा गीला किया और परदेसी का मुह पोंछा। मुह और आंखो से रेत साफ की। कपडा फेर कर धोया, फिर पोछा और मुह खोल कर पानी

का घूट डाला। पहले पानी अन्दर न गया। फिर कोशिश की, पानी अन्दर उतर गया। दो-एक घूट और दिये। बापू ने उसके चेहरे पर पानी के छीटे मारे। चम्पा एक और कपडा भिगो कर ले आई।

—बापू, यह इसके सिर पर रख दो। कहीं गरमी सिर को न चढ जाये।

—बडी सयानी है मेरी बिटिया रानी।

भीगे हुए कपडे ने परदेसी के सिर की सारी गरमी चूस ली। एक घूट पानी और दिया। उसने जरा-सी आख खोली।

—बापू, यह है कौन ? चम्पा बोली।

—परदेसी। राह भूला हुआ राही। न राह से वाकिफ न मञ्जिल से। न रेत की तासीर मे परिचित न उसकी तपिश से। लगता है, बहुत दूर मे आया है। कष्टो का मारा रास्ता भटक गया है। बापू न कहा। —वह डायनो वाला टीला है न, वही मेरे आगे-आगे चला जा रहा था, पखे की तरह डोलता, गिन-गिन कर कदम उठाता, कभी गिरता फिर उठता, फिर मुह के बल गिर पडा। यह तमाशा मैंने दूर से देखा। पहले तो मैं डर गया, पर जब देखा, यह तो कोई राही है तो कमर बाध कर, जी को कडा करके टीले पर चला गया। यह मुह के बल गिरा पडा था, बेसुध, बेहोश और दीन-दुनिया से बेखबर।

—डायनें चिपट गई हैं। मैं जाऊ ? बुआ बासती को बुला कर लाऊ। वह डायनो को उतारना जानती है। चम्पा बोली।

—मैं जाती हू। भूरी ने कहा।

चम्पा ने उसके माथे का कपडा फिर बदला और चम्मच भर दूध उसके मुह मे डाला।

—मैं कहा हू ? आप कौन हैं ? . .पानी ..

ठडे पानी का कटोरा चम्पा ने उसके होठो से लगा दिया। पानी का आधा कटोरा वह पी गया, आधा बिस्तर पर ही गिर गया।

उसने जरा सी गरदन उठाई। —आप कौन हैं ? मैं कहा हू ? वह बोला।

—हम राजपूत हैं—हिन्दू।

—हिन्दू ? हिन्दू ?

—हा। हिन्दू किसान। गरीब। रेत के दरिया के वासी।

—पानी रोटी पानी।

चम्पा रोटी का टुकडा ले आई। शक्कर और घी मे कूट कर चूरमा बनाया और उसे दिया।

—खाओ बेटा थोडी-सी रोटी अन्दर जाने दो। बापू ने कहा।

दूध का आधा कटोरा चम्पा ने बापू को दिया।

—पी लो, मेरे जवान बेटे। घबराने की जरूरत नही है। अब तुम अपने घर मे ही हो। उस आफत से तुम निकल आए हो। डायनो-भूतो से बच गए हो।

वासती ने कुछ मन्त्र पढे—मुह म कुछ बुदबुदाती—फिर फूक मारी और बोली—अब सब खैरियत है। जो डायन चिपटी थी, मेरा डडा देख कर भाग गई।

फिर उसने फूका हुआ धागा दिया और कहा—इसके गले मे बाध दो। अब कोई डायन नही आएगी। अगर आई, तो मैं उसकी चुटिया उखाड लूगी।

परदेसी उठकर बैठ गया। वासती का जादू सिर चढ कर बोला। यह रेत का समदर, यह अधडा-तूफानो की धरती, यह रेतीली बाढ, गुरु बचाए इससे। कोई वैरी भी इसकी राह पर न पडे। परदेसी बोला—कहीं इधर आपने सिंह तो नही देखे हैं।

—सिंह कौन ? तुम कौन हो ?

मैं ? मैं जोगराज हू। मुझे जोगा कहते हैं। मैं बहुत दूर—अमृतसर—से आया हू। मुझे सिंहो की तलाश है।

—कौन सिंह ? कहा रहते हैं ? बापू ने पूछा।

—आप सिंहो को नही जानते ? सिंहा को तो सारी दुनिया जानती है।

—हम तो पहली बार तुम्ही से सुन रहे हैं।

—घोडो पर सवार जवान, भूरे के कपडे, सिरो पर पगडिया और ऊपर लोहे के चक्र, हाथो मे लोहे के कडे, तलवारो ढालो वाले जवान पुरुष धाड धाड करते आते हैं और धाड-धाड करते निकल जाते हैं। जोगा ने सिंहो की पहचान बताते हुए कहा।

—हा, बापू, यह उन घोडो वालो की बात कर रहे हैं, जो परसो हमारे गाव के पास से गुजरे थे। वही, जो राखी मागते हैं। वही शेरो-बाघो जैसे इन्सान। उनके घोडे हवा से बातें करते हैं। तलवारें, बापू, बहुत बडी बडी। सिर से चार-चार हाथ ऊचे नेजे। मैं जानती हू।

—किस तरफ गये हैं ?

—पहाड की तरफ से आए थे और दक्खिन की तरफ गए हैं। उनका क्या ठिकाना। जहा देखी तवा-परात, वही बिताई सारी रात।

—बापू, मेरा भाई ज्वार की बोरी भरकर देने गया था। चने, गुड मैंने खुद ऊट पर रखे थे—भूरी बोल उठी।

—तब तो तुम्हे मालूम होगा कि वे जत्थे कहा रहते हैं ?

—जानती तो हू। मेरे भाई ने कहा था किसी को बताना मत। वे हुकूमत के बागी हैं। जो बताएगा, उसे राजा पकड कर ले जाएगा और काल कोठरी मे

बन्द कर देगा। वहा न अन्न, न पानी, न हवा, न रोशनी। वहा दम घुट जाता है आदमी का। भूरी ने अपना डर व्यक्त कर दिया।

—पगली कही की। अरी सौदाइन, मेरे रहते कौन पैदा हुआ है पकडने वाला? बापू ने अपनी मूछ को ताव दिया।

—बता दू? डर तो नही है न कोई?

—बता दो।

—लक्खी जगल।

—हा-हा, लक्खी जगल। वे वही रहते हैं। मैंने भी यही सुना है। जोगा ने कहा।

—तुम सिह-मिह बोले जाते हो, हम क्या जानें। सीधे यह क्यो नही कहते—भूरो वाले सरदार, जिनका न घर है, न द्वार। बापू ने कहा।

—हा, बापू, मुझे उन्ही से मिलना है और उन्ही को सन्देश देना है। मैंने प्रण किया है। बापू, मेरा वचन न चला जाए। सिर भले ही चला जाए। बहुत जरूरी काम है। धर्म का काम है। धर्म के सामने सिर की क्या कीमत है? मुझे मिलवा दो, बापू, गुरु मेहर करेंगे। गुरु नेमतो से तुम्हारा घर भर देंगे। जोगा धीरे-धीरे कह रहा था।

जरा-सा दम मारो, तगडे होओ, मैं खुद ले चलूगा। आराम करो, बेटे। दिन चढने दो। मैं तुम्हे वचन देता हू, भूरो वाले सरदारो के दर्शन मैं तुम्हे जरूर करवा दूगा। बापू ने जोगा को धीरज दिया।

रेत ठंडी हो चुकी थी। हवा चल रही थी। जोगा नीद की गोद मे चला गया। निंदिया रानी झूला झुला रही थी।

घटियां

—चम्पा, बेटे, रोटी पका रखो। यह परदेसी सास लेने वाला नही है। मैं चाहता हू कि परदेसी के पैरो के छाले जरा नर्म पड जाए, जलन कम हो जाए, एक दिन थकावट और उतर जाए, लेकिन यह इतना उतावला है कि यह धीरज रखने वाला नही है। यह हमारी बात सुनने वाला नही है। अगर यह अकेला चला गया, तो यह चार कोस भी नही चल पाएगा। यह खुद मौत को आवाजें दे रहा है। मौत इसके सिर पर कूक रही है। मैं क्यो गुनहगार बनू ? मेरे घर मेहमान आया है, अगर मैं इसकी कोई मदद नही कर सकता, तो इसकी जान लेने का बहाना भी क्यो बनू ? इसने सिक्ख धर्म कबूल किया है या नही, मालूम नहीं, लेकिन सिंहो वाला जोश, उनका जज्बा इसकी हड्डियो म जरूर ठाठें मार रहा है। यह मरुस्थल, ये रक्त भरे दरिया, यह रेत का महा-सागर, जाने यह कितनो की जानें ले चुका है और कितनो की अभी लेकर रहेगा। एक निर्दोष यो ही क्यो बेकार मे मारा जाए। परदेसी मेहमान भगवान् की तरह होता है। भगवान ने इसे भेजा है, बेटे, ज्वार की चार रोटिया उतार दो, डेहलो का अचार और गुड साथ बाध दो। हम तडके ही निकलना है। तारो की छाह म रास्ता पूरा होगा और सूरज निकलने तक हम अपने ठिकाने जा पहुचेंगे। क्यो, ठीक है न, बेटे ? बापू बोला।

—बापू, मैं सोने से पहल ही रोटिया पका लेनी हू। तुम लोगो को सुबह जाना है। मैं अकेली रहूगी ? चम्पा ने कहा।

—पडोसी, चाची, ताई, भूरी, भाई और फिर भी तुम अकेली। अरी, तुझे अकेलापन कैसा। ऊट को चारा डाल दिया ? देखना, ऊट भूखा न रह जाए। रास्ता बहुत लम्बा है। बापू ने कहा।

—हमारा ऊट थकने वाला नही है। यह रेगिस्तान का जहाज, यह रेत का बादशाह बिना पानी, बिना पत्तो, बिना घास के चार दिन भूखा रह सकता है। भगवान् ने बहुत बडा जिगर दिया है इसे। बापू, जब आख खुले, मुझ जगा

देना । मैं सब कुछ तैयार करके सोऊगी । तुम्हे सब कुछ तैयार मिलेगा । चम्पा ने कहा ।

—बड़ी सयानी बिटिया है मेरी । इन मुगलो ने हमारा सब कुछ लूट लिया है । धन, दौलत, इज्जत, गैरत मान । हमारे पल्ले तो कुछ भी नही रह गया है । सिंहो ने अगर जुर्रत की है, तो हम इनकी मदद करनी चाहिए । अगर अपना राज बन जाएगा, तो फिर पौ बारा ही पौ बारा हैं । इन मलेच्छो ने हमारी बुद्धि ही मलिन कर दी है ।

बापू सो गया और चम्पा ने चूल्हा जला दिया, आटा गूथा । वह रोटिया उतार ही रही थी कि परदेसी जाग गया ।

—अभी कितनी रात बाकी है ?

—अभी काफी बाकी है । ध्रुव तारे ने अभी दर्शन नही दिए हैं । आप सो जाए । मैंने रोटिया पका दी हैं । बापू ने कहा था कि पुच्छल तारा चढ़ते ही उठकर चल देना है । आप सो जाइए । दूध का गिलास रखा है । पीएगे ? चम्पा उठी और दूध का गिलास ले आई । —दूध पीजिए । इससे सारी गरमी दूर हो एगी ।

जोगा ने चम्पा के हाथ से दूध का गिलास लिया और चढ़ा गया । फिर वह ाट पर लेट गया—नीद आई कि न आई । चम्पा भी सो गई थी । रात अपना ास्ता तय कर रही थी । बापू जाग उठा ।

—उठो भई जवान, पचस्नान करो । चलो फिर राह पकडें । बापू की आवाज थी ।

जोगा पहले ही जाग रहा था । बोला—मैं तैयार हूं, बापू ।

—तुम लोग लौटोगे कब ? चम्पा बोली ।

—जब इसे सिंह मिल जाएगे ।

—अगर न मिले, तो ?

—जब तक सिंहो का जत्था नहीं मिलता, हम लोग घर नहीं आएगे ।

—अच्छा, बापू, तुम्हारी मर्जी । जाओ बापू फिक्र करने की जरूरत नहीं है । शेर की बच्ची अकेली घर मे रहेगी । आएगे तो फिर इधर ही न ? चम्पा ने कहा ।

—और दूसरा कौन-सा रास्ता है, बेटी ? आगे भगवान् मालिक । गुरु जाने कौन-सी राह डालेंगे ।

—इसी रास्ते आना, बापू । हमने मेहमान की कोई सेवा नही की है । इस तरह घर का नाम निकल जाता है । अच्छा बापू, जय माता की ।

—जय माता की ।

वे ऊट पर सवार हुए—दोनो। ऊट की घटिया सारे जगल की जान थी। उनकी आवाज दूर तक सुनाई देती। वे दूसरे गाव के पास से गुजरे।

—किसका ऊट है, भाई? एक गाव वाले की आवाज थी।

—गगासिंह है सूरतगढ वाला।

—लगता है, कोई जरूरी काम है।

—मेहमान आया था। उसी के साथ जा रहा हू।

—अच्छा, जय माता की।

घटियो की आवाज लोरिया देती जा रही थी ऊट को।

OO

तारों की छांव में

अभी किसी ने मन्दिर का दरवाजा भी नही खोला था, किसी पुजारी ने
शख भी नही फूका था। सारा गाव सो रहा था। रास्ते खामोश थे। पगडडिया
नींद की गोद मे खर्राटे ले रही थी। रेत का जगल आने वाले मेहमान का
इन्तज़ार कर रहा था। जब किसी ऊट की घटी बजी, टुनकार सारे जगल मे
गूज उठी फिर जगल भी जाग उठे। पगडडी ने भी आखें खोली। रास्ते अपने
आप जाग उठे। दिन निकलने का घडियाल बजा, लेकिन उससे पहले ऊट की
घटिया खनक उठी। यह खनक भी किसी तोप की गरज से कम नही थी। तोप
भी तो किसी राजघराने म छूटती है। जगल म तो लोग तारो को देख कर रात
की घडिया गिन लेते हैं। तारे देखने वाले धोखा नही खाते।

तारो की छाव मे एक ऊट चल रहा था। खामोश रेत के समदर मे। दूर
के मुसाफिर, शायद आधी रात को ही जाग गये थे। ठडी-ठडी हवा चल रही
और रेत का कलेजा भी ठडा-ठार था। दिन चढने से पहले रेत सुहानी रत मे
रहती है, जब सूरज की किरण फूटती है, तो रेत क कलेजे म गर्मी की
चिगारी जन्म लेती है। जैसे-जैसे दिन चढता जाता है, वैसे-वैसे रत का वदन
गर्म होता जाता है। सूरज सिर पर आया नही कि रेत तप कर ज्वाला बनी
नही। आदमी को यो ही भून कर रख देती है। दिन म तपिश, जैसे आग की
बरसात, और रात ठडी ठार। जैसा देस वैसा भेस। लोगो के स्वभाव भी
रेत की तासीर की तरह वदल जाते हैं। वे सारे काम काज या तो सूरज के
जलाल से पहले करते हैं, या उसका तेज मद्धम पड जाने के वाद। दोपहर को
वे टाग पर टाग धर कर सो रहते हैं।

उनके सर्द खाने शाही मेहमान खानो का मुकावला करते थे। हवा चाहे
गर्म चले, चाहे आग के समदर मे से गुजर कर आये, राजस्थान वालो ने इस
तरह के झरोखे वना रखे थे कि हवा का मिजाज ठडा हो जाता। हवा गर्मी के
गुस्से को थूक देती। ऊट रेगिस्तान का जहाज है—ऊट को लोग देवता मानते हैं।
राजस्थान की सबसे बडी जायदाद ऊट या कुआ। आदमी अडियल, लडाके,

झगडालू और तेज तबियत। न किसी की सुनेंगे, न किसी को सुनाएंगे। करेंगे पहले, सोचेंगे बाद में।

—चल भई चल, शेर के बच्चे, मंज़िलें मारता चल। ठिकाने लगा दे, बेटा। परदेसी की आस पूरी हो जाए। चौधरी की आवाज थी।

—घोडा तो इतना नही चल पाता होगा, बापू? जोगा बोला।

—घोडा शाही सवारी है। घोडा रेत म दम तोड जाता है। ऊंट पर परमात्मा की मेहर है। सवार का दम भल ही डोल जाए, पर ईश्वर का यह जीव कभी नही थकता।

जोगा ने पूछा—बापू, तुम्हारा यह जवान 'बेटा' कितना सफर पार कर आया होगा?

—सूरज देवता के दर्शन होन से पहले हम दस कोस निकल जाएंगे।

—कितनी दूर है अभी लक्खी जगल?

—हम सीध रख कर जा रहे हैं। भूरी ने कहा था कि सिंह इधर का गए हैं। इधर ही ऊंट का मुह कर दिया। लिये जा रहा है बेचारा नाक की सीध म। दिन चढे, तो पूछेंगे, हमारा ऊंट कहा है? रोटी-टुक्कड भी सूरज की टिकिया पिघलने पर लेंगे। जितना लाभ उठाया जा सके, उठा लेना चाहिए। बीकानेर म धूप मौत का दूसरा नाम है। अभी तक तो कोई गाव भी नही आया। एक ही गाव आया था। दस कोस पर गाव होता है वह गाव लगता है।

मुझे तो पेड लगते हैं, आगे भवानी जाने। वहा पहुच कर दस कोस पूरे हो जाएंगे। वह लो जग रही है, वाह रे शेर। ले चल यार के पास। सस्सी चलते-चलते मरुस्थल म मछली की तरह भुन गई, लेकिन पुन्नू नही मिला। हम मरुस्थल पार करने हैं, चाहे मुद्राएं पहननी पड जाएं, चाहे जोग लेना पडे। हवेलियो म जाकर अलख जगानी है। बच्चू, तुम्हारा साथ किया है, ठिकाने पहुचाएंगे। राजपूत रास्ते मे नही छोडते। राजपूत तलवार का धनी है, तो बात का भी पक्का है। तुम तो परमात्मा का रूप हो, कि हमारे घर आए हो। तुम्हारे साथ ही स्वर्ग चलेंगे, और तुम्हारे साथ ही दोजख म जलेंगे। इन लुटेरो की गुलामी का तौक उतार कर ही दम लेना है। यह जुआ किसी दिन उतार कर फेंक दिया जाएगा। फिक्र क्यों करते हो, बेटे। राजपूताने वाल तुम्हारे साथ हैं। अन्दर से बहुत दुखी हैं। उन्होने इनकी कोई जवान लडकी ऐसी नही छोडी, जिसे दिल्ली न ले गए हो। अब डोलिया दी नही जाएंगी, अब डोलिया लेनी हैं। अब वक्त आ रहा है कि दिल्ली वाले खुद डोलिया देंगे। भगवान सिंह की एक गलती ने हमारी पीढिया बिगाड दी। तगडे हो जाओ, बेटे, इनसे मिल कर ही दम लेंगे। चौधरी भावुक हो उठा था।

—गुरु आपका भला करें। गुरु आपकी मुरादें पूरी करें। जोगा कह रहा था।

—यह हमारा फर्ज है। यह हमारा धर्म है। सारे देश वाले अगर एक बार ऐसा सोच लें, तो भवानी की सौगन्ध, यदि हम मिलकर एक बार फक मार दें, तो ये हवा म उडते हुए गज़नी पहुच जाए। मन निर्बल, कायर और भारी हो गया था। जब से सिंहों का बल और तेज देखा है, मन बलवान् होता जा रहा है। इन्हें कोई घी के चूरमे खाने हैं? बेचारे, हमारे लिए कष्ट झेल रहे हैं। जब पुलाव बनेगा, तो सभी खाएंगे। चौधरी अपनी रौ मे बोले जा रहा था।

—मुझे लगता है, बापू, तुम भी सिंह हो। जोधा ने कहा।

सारा देश ही सिंह है अपने भीतर, लेकिन बाहर डर के मारे कोई नही कहता। भय का भूत गाव-गाव मे नाच रहा है। डर की डायन घाघरा घुमाती रही है गली-मुहल्लों मे। बीकानेर वाले, दिल्ली सरकार के गुमाश्ते, जोधपुर वाले सम्बन्धी, जयपुर की प्रत्येक लडकी की ससुराल दिल्ली म या आगरा म। मुसलमान अपने हरम मे एक हिन्दू बेगम जरूर रखते हैं।

—सो क्यों?

—बस, स्वाद बदलने के लिए। मुसलमान कहते हैं कि मुसलमान औरत गोश्त का स्वाद देती है और हिन्दू कन्या मलाई का। खुरचन का मजा सिर्फ इन काफिरों के पास ही है।

—क्या यह बात ठीक है?

—झूठ, बिल्कुल झूठ। यह एय्याशी है, सिर्फ मक्कारी, हुकूमत की हेकड है आग लगाने के लिए। हिन्दू जल-भुन कर कोयला हो गए। मेरे भतीजे ने अजमेर के एक हाकिम की लडकी निकाल ली और डाकुओं के गिरोह म शामिल हो गया। वह जब कभी नशे मे होता, तो कहता कि यह काबुली कूजे की मिश्री है, अगूर है कोटे का, अनार है कधार का। चटखारे ले लेकर बातें करता और जीभ फेरता। स्वाद ले-लेकर चटखारे लेता। भुने हुए कबाब की महक लेनी हो, तो किसी मुसलमान मुहल्ले से गुजर जाओ या किसी बेगम के बुर्के की खुशबू सूघ लो। जब अनख जागने लगती है, तो कौम मे हम जैसे लडके पैदा होते हैं—सिर देने वाले, यानी, सिर-धड की बाजी लगाने वाले। फिर कौम करवट लेती है। गर्व जागता है। आदमी अपने आपको पहचानता है। तलवार उतनी देर हीं, बुर्जदिल रहती है, जितनी देर म्यान मे रह। एक बार बाहर निकल आए, तो शेर की तरह गरजती है। देश तभी आजाद होते हैं। जागृत कौमो को कोई नहीं दबा सकता। ये भले ही आटे मे नमक बराबर हैं, पर धरती जाग उठी, धरती के बेटे जाग उठे, तो फिर न कोई मुगल नजर आएगा, न कोई ईरानी। अहमदशाह आ रहा है। लोग बलवान् हो गए हैं। अहमदशाह के दात तोडेंगे जवान पजाब के। पसलियां सेकेंगे वीर राजस्थान के। चौधरी अब भी जोश मे कहे जा रहा था।

—गुरु की सौगन्ध, बापू, तुम तो पूर्ण सिंह हो। मैं समझता था कि पंजाब से बाहर कोई सिंह नहीं है। जोगा ने हैरानी से कहा।

—मेरे ऊंट ने भी सिंहो के पेड़ो के पत्ते खा रखे हैं। यह एक भावना है, प्यार है, लगन है। सूरज की टिकिया पिघल रही है। लो वह आ गया गांव भी।

चौधरी के चेहरे पर मुस्कराहट थी।

—हां, बापू।

—उस कुए पर जाकर ठहर जाओ, मेरे जवान बच्चे।

कुए पर पहुंच कर ऊंट के पांव रुक गए। सूरज सुनहरी रंग की कूची फेर रहा था मुंडेरो पर। सूरज अभी निकला ही था, पर धूप अभी से चुभने लगी थी।

—किसका ऊंट है, भाई? कुए की मुंडेर पर बैठे एक बुजुर्ग राजपूत ने पूछा।

—सूरतगढ़ वाला गगा सिंह हूं।

—जय भवानी।

—जय भवानी।

ऊंट को पेड़ से बांध कर दोनो व्यक्ति कुए की मुंडेर पर बैठ गए। जोगा का सारा शरीर दुःख रहा था।

—आराम कर लो, बेटे।

—आप लोग हाथ-मुंह धोए, मेरी छोरी ऊंट को पीपल के पत्ते खिला कर पानी पिला देती है। बुजुर्ग राजपूत ने कहा। फिर उसने आवाज दी—ओ छोरी...ओ छोरी। जल्दी आ, मेहमान आये हैं।

—आई बापू। जरा-सा धीरज धरो, बापू।

छोकरी जब आई, तो उसके सिर पर मटका और हाथ में लोटा था। रोटियों की गठरी भी वह साथ ले आई थी।

—बस-बस, बेटे। तुम तो रोटियां भी ले आई। रोटी तो हमारे पल्ले भी बंधी हुई है। तूने क्यों तकलीफ की?

—नहीं बापू, इसे बंधा रहने दो। मेरा कुआ है, तो रोटियां भी मेरी होंगी। नाश्ता-पानी करो, मैं खाट बिछा देती हूं। रोटी खाकर आराम करो। जाना हो, तो रात यहीं आराम करना, दिन में जाना। मेहमान तो भगवान् का रूप है। धन्य भाग्य हमारे, नारायण खुद चल कर हमारे घर आए हैं। लड़की ने कहा।

—धन्य है राजस्थान। धन्य हैं यहां के लोग। बड़ा शक्तिशाली और पवित्र स्थान है। जिन्हें ऐसा साथ मिल जाए, मस्सा रंघड़ अब नहीं रह सकता। अमावस, अब तेरे दिन पूरे हो गए। मेरे हरिमन्दिर की पवित्रता अब

भग नहीं हो सकती। जोगा मन ही मन म सोचे जा रहा था। जब हवा चलती है तो चूहे के बिल तक पहुचती है। सिहो की आवाज मारे राजस्थान म पहुच गई है। तभी तो सिहा के ठिकाने यहा हैं। धन्य गुरु, तेरे खेल निराले।

धूप का फूल खिला। कुए की मुडेर पर जरा-सी ठडक थी और बाहर धूप के फूल पूरे जोबन पर थे।

मैना बोली

—परदेसी बडा मोहक लगता है। खूबसूरत, आकर्षक, जवान, भरा-भरा शरीर, वज्र देह। भूरी बोल उठी।

—पसन्द है? आवाज चम्पा की थी।

—पसन्द है, तभी तो सलाह पूछ रही हू। भूरी ने कहा।

—तो बात पक्की कर दू? जोडी ठीक रहेगी। बाकी बातो का तो जवाब नही, सिर्फ केश हैं मुसलमानो जैसे। चम्पा बोले जा रही थी।

—जमाना कैसा जा रहा है। विदेशी राज और सीधी टक्कर। दुश्मन होकर जीना। भेस न बदलें, तो क्या करें? सारे राजस्थान मे चिराग लेकर ढूढें, तब भी नही मिलेगा ऐसा जवान। आख लडा लो। बापू फेरे कर देगा। अगर सिहो को राज मिल गया, तो ऐश करेगी। इन मलेच्छो से तो अच्छी ही रहेगी। गाय भी खा जायें और घोडे भी। यहा पटरानी न भी बनी, तो रकानन तो लोग कहेंगे ही। भूरी मीठी-मीठी बातें कर रही थी।

—किसके लिए चुना जा रहा है दूल्हा? चम्पा ने पूछा।

—अपनी छमक-छल्लो के लिए, उन्नावी गुडिया के लिए। भूरी ने मुस्करा कर कहा।

—आख तुम्हारी है और नाम मेरा ले रही हो? चम्पा जरा तेज आवाज मे बोली।

—खूबसूरत, जवान लडकी, पर जरा सावली-सी। एक तो तेरा रग मुश्की, दूसरे बैठ गई गली मे चर्खा डालकर। पराठे यो ही नही पकते। दूध के कटोरे हीर ही बेले तक लेकर जा सकती है। झूठ बोलती हो? अरी झूठी। ला, मैं तेरा धडकता दिल देखू। परदेसी वैसे ही खूबसूरत होते हैं। पजाब, जहा दूध की नदिया बहती हैं, सोना उगलती है धरती, मटकी भर दही और मक्खन के पेडे, मक्की की रोटी और सरसो का साग। रग निखर आयेगा दिनो मे ही। मैं भी आया करूगी तुम्हारे पास। भूरी रग बाधती जा रही थी।

चम्पा शरमा गई। उसकी आखें नीची थी।

—अरी ! भाई की याद आ रही है । रोती मिश्री को, भाइयों का नाम लेकर । अरी सरसों की डाली । जरा चोटी बना तो, ऊपर डाल के मोर-फाख्ता । उन्ह आ ही जाना है , तुम जरा दाते तीखे करो । जरा हवा दो मद्धिम पडती अगीठी को । परदेसी फिर कहा जायेगा ? तुम्हारे आगन म तो तिलियर भी गश खाकर गिर पडते हैं । परदेसी कोई सात समदर से आया है । कुरूप हो तो कोई निन्दा भी करे । तुम्हारी जैसी कली तो सारा बाग छान मारने पर भी नही मिलती । परदेसी को और क्या लेना है ? जिसे गूलर जैसी औरत मिल जाये, उसे और क्या मत्त लेने हैं ! शीशे म मुँह देखो । चूमने को तो मेरा ही जी करता है, क्या वह न पिघलेगा ? घी आग के पास रहे, तो पिघले बिना नही रह सकता ।

भूरी ने चम्पा को सचमुच शीशे म उतार लिया ।

—तुम्हे सचमुच पसन्द है ? चम्पा बोली ।

—मेरे तो दिल की तह तक बस गया है परदेसी । तभी तो जीजा बनाने की सोच रही हू ।

—ढोला-मारू वाली बात तो नही होगी ?

—ये सिह हैं । जबान के पक्के, कौल-करार के धनी । अगर बाह पकड लो, तो फिर मौत से पहले कोई छुडा नही सकता ।

भूरी ने चम्पा को भरमा लिया ।

पड़ाव

कुए की मुंडेर पर बैठे-बैठे दोपहर हो गई। सूरज ने अपना चमत्कार दिखाया। छाव होने के कारण दोनो गहरी नीद मो रहे थे, जैसे घोडे बेचकर व्यापारी मोया हो। गाव के सम्मानित लोग वातो मे लीन थे। कुछ घुडसवारो ने घोडो की लगाम खीची। घोडे रुक गये।

—ये मुसीबतें कहा से आ गई ?

—अन्धे कुत्ते हिरनो के शिकारी। जहा रोटी-टुक्कड मिलने की उम्मीद हुई, उधर ही मुंह उठा लिया। आजकल ये भी लाहौर दरबार के दामाद हैं। रोटी लाहौर के सूबे ने डाल दी है, उन्ही के गीत गाते फिर रहे हैं। ये भी शिकार ढूढते फिरते हैं। साले रानी खा के। दूसरे आदमी ने अपनी बात कही।

—ये कौन हैं ? कहा रहते हैं ? यह क्या करते हैं ? एक घुडसवार ने इशारा करते हुए पूछा।

—सूरतगढ से आये हैं। हमारे मेहमान है। थके हुए आदमी को नीद आ ही जाती है। पहले आदमी ने जवाब दिया।

—यह कौन है ? दूसरे सिपाही की आवाज़ गूजी।

—होगा कोई पुछल्ला। रिश्तेदारी से आये हैं, कोई गोला-गुमाश्ता तो साथ होगा ही।

—मुझे तो सिक्ख लगता है।

—सिक्ख यहा खाक फाकने आयेंगे। सिंह तो पहाड पर चढ गये होंगे। यहा वे रेत फाकने आयेंगे। पहले ने कहा।

—सरकारी हरकारो के कहने से सिंहो ने घोडो के मुंह राजस्थान की ओर कर दिये हैं।

—तब तो तुम्हारी चादी ही चादी है। दूसरे आदमी ने कहा।

—शेर को मारना आसान है, लेकिन सिंह को पकडना मुश्किल। कीमत तो जिंदा सिंह की मिलती है। अगर सिंह मिल जाये, तो पकडना मुश्किल। अगर पकड लिया जाये, तो फिर सम्भालना एक आफत। आजकल सिक्खो की कीमत बढ गई है। पाच सौ मोहरें गिन कर झोली मे डलवा लो।

—और अगर सिंह न मिले तो ?

—तो किसी पठान की दाढी आधी मूंड डालो, सिर काटो, ढाई सौ मोहरें गिनवाओ और अपने रास्ते लगो। आधी उन्हें दे आओ। सवा सौ का पडता है पठान का सिर। सिपाही कह रहा था।

—बीकानेर के राजा ने कसाइयों का काम कब से शुरू कर लिया है ? पहला आदमी बोला।

—दिल्ली दरबार मे राजा जी हां कर आये, तभी फाभी हमारे गले मे पड गई है। घर से चालीस आदमी चले थे हम लोग। बीस सिपाही सिंहों ने झटका दिये। हमारे हाथ आया एक सिंह और वह भी रात को निकल गया। खानापूरी करना मुश्किल हो गया है। सिंहों ने तो हमारी ऐसी हालत कर दी है कि अब तो कुत्ते भी हमसे नही डरते। गश्ती टोली का सरदार कह रहा था।

जोगा दम साध कर पडा हुआ था। सिपाही ने डण्डे से उसे ठोका और बोला—उठ रे। कौन है तू ?

मैं सरकार, मैं आपके जूते झाडने वाला, अल्लाह रखवाला, बुजुर्गों की कसम, सेहरों वाला जीता रहे, पूत की खैर और हम गीत गाते रहे, मीरजादा मागता-कमाता अपने जजमानों के साथ आ गया है। कुछ बेल हो जाये सुंदर सरदारों की तरफ से। हमारा क्या है, जिधर मुंह उठाया, उधर ही रोटियों के भण्डार। एक से बढ कर एक दाता। मीरजादे को क्या कमी। जीते रह सरकार। हाथी झूलते रहें हवेलियों के आगे। जोगा कानों पर हाथ रखे कहे जा रहा था।

—ये भाड, ये मिरासी, ये मीरजादे जमीन में से खुंबियों की तरह अपने आप ही फूट पडते हैं। इन्हें पैदा होते किसी ने नही देखा। ये खुद घोडी नही चढते, दूसरो को घोडी चढाते हैं। गश्ती फौज के एक सिपाही ने कहा।

—पैदा होना तो बडे लोगों का। हमारा क्या पैदा होना। वर्षा हुई, चौमासा लगा, तो कुकुरमुत्तों की तरह पैदा हो गए। धूप लगी, तो कुम्हला गए। सर्दी पडी, तो मर गए। मौला की रहमतें, दुआ फकीरों की, अल्ला हुजूर, हमारी भी हाजिरी लग जाए। या मुश्किल कुशा, हजरत अली ने जब आवाज लगाई, तो हम सबसे पहले हाजिर हुए, हमने सारी दुआएं इकट्ठी करके झोलिया भर ली और अब गांव-गांव बांटते घूम रहे हैं मुट्ठियां भर-भर कर। जजमानों के इकबाल बुलन्द, खजाने भरे रहें कलगियों वालों के। मीरजादे की भी सुनी जाए। बेल, दाता की बेल। जोगा बेलें इकट्ठी करने में जुट गया।

गश्ती फौज जेबें खाली करवाकर अपनी राह चली गई। चौधरी ने सारा नाटक आधी आंखें मीच कर देखा।

—देखा बापू, कुत्तों से कैसे पीछा छुडवाया ? सिंहों का शिकार ये और कितने दिन करेंगे ?

—हिरन भी कभी काबू मे आये हैं अंधे कुत्तों के ? चौकड़िया भरते सिंह एक गाव से दूसरे गाव मे पहुच रहे हैं।

—मदारी के डमरू पर वारी जावें, भई उनके दिन हैं। अगर अहमदशाह अब्दाली चढ आया, तो इनके टुकडे यो ही अपने आप हो जायेंगे। अति से भगवान् भी शत्रु बन जाता है। चलो, वक्त टल गया।

हा चौधरी, इन्होने हमारे कई गाव उजाड दिए हैं। हमे सिंहो से हमदर्दी तो है। हमसे कहते हैं, तुमने सिंहो को छुपाकर रखा हुआ है। हमे सिंहो मे मोहरें लेनी हैं? सिंह बेचारे तो मिन्नतें करने पर भी किसी के घर मे नही रहते। मिला तो खा लिया, नही तो माला फेरते रहे। सिंह बडे भले लोग हैं। कुए की मुंडेर पर बैठे एक बुजुर्ग ने कहा।

गश्ती फौज की टुकडी दूसरा गाव पार कर चुकी थी।

—मुझे तो वह मदारी सिक्ख लगता है। चकमा दे गया हमे। शक्ल-सूरत से तो सूफी लगता है, मगर उसे गिल्ली-डण्डा चढाया जाता, तो सिंहो का पता जरूर बता देता। सिपाही गुलाम महम्मद बोला।

—सावन के अन्धे को हर तरफ हरा ही हरा दीखता है। दूसरा अफसर बोला। —भले आदमी, फकीरो की बददुआएं नही लिया करते। चलो, आज सिंह नही मिले, तो न सही, कल मिल जायेंगे। चार मुसलमान ही कत्ल कर दो आज। हाजिरी तो पूरी करनी ही पडेगी। हाकिम की आखो मे अगर धूल न झोंकी गई तो वह हमारी गर्दन पर सवार हो जाएगा।

—तो चलो पिछले गाव और कर लो अपनी कारगुजारी।

मुसलमानो के दस घरो मे से पाच आदमी निकाले गए और जिबह कर दिए गए। रोते बच्चो की चीखो पर किसी ने कान न धरे। राजपूत इस तरह चिढाकर मुसलमान सिपाहियो से सिंहो के दुश्मन खत्म करवा रहे थे। रास्ता साफ होता जा रहा था।

खुदा भी पनाह माग गया इन हाकिमो के जुल्म से।

सिंह कडवी बेल की तरह बढ रहे थे। सिंहो से किसी की दिली दुश्मनी नही थी। चौधरी और जोगा को गाव वालो ने रात के वक्त जबरदस्ती रोक लिया। गाव वालो ने उन्हे घी के कुल्ले करवाए। शक्कर-घी और ज्वारी की रोटी दी। दिन मे रोटी देकर विदा किया मुसाफिरो को।

जोगा कह रहा था—धन्य है राजस्थान। मेरा गुरु कभी तो पहुचा ही देगा लक्खी जगल।

—कल हम लक्खी जगल मे प्रसाद पायेंगे। सुख मागो गुरुओं से। मेरे ऊट ने अब तहैया कर लिया है कि लक्खी जगल पहुचकर ही सास लेनी है। लक्खी जगल अब दूर नही है। बस अब पहुचे ही समझो।

●●·

पेड़ भी रखवाले होते हैं

आधी रात के समय दोनों उठ बैठे ऊंट को निकाला। उसे थपकी दी। उसकी फूलों वाली मुहार जोगे की आंखों के सामने नाच उठी।

डाची जैसी जवान जहान मुटियार ने ज्वारी की रोटियां बांध कर दी थी। क्या मजा है। कितने अच्छे लोग हैं। डेलो का अचार। बिल्कुल किसी अल्हड़ हिरनी की आंख के कोयों जैसा। रोटी पर पड़े मेरी ओर घूर-घूर कर देख रहे थे। जोगा सोच रहा था।

—किन विचारों में खोया है गुरु का सिंह? चौधरी बोला।

—क्या हम आज लक्खी जंगल पहुंच जायेंगे? क्या मैं गुरु का भार उतार लूंगा? मेरा गुरु मेरे कंधे पर हाथ रखे। वही लाज रखता आया है। लक्खी जंगल अभी कितनी दूर है? जोगा ने पूछा।

यह तो मैं भी नहीं बता सकता, लेकिन यहां से नजदीक ही लगता है। सूरज की टिकिया पिघलने से पहले ही हम लक्खी जंगल पहुंच जायेंगे। चौधरी ने बताया।

—गुरु आपका भला करे। गुरु तुम्हारे मन की मुराद पूरी करे। गुरु सबका रखवाला है। ठण्डी चांदनी, ठण्डक भरी रेत और छन-छन करता ऊंट, फिर रास्ता क्या कहता है? रास्ता कटते कौन-सी देर लगती है? तारों की छांव में सफ़र की कमर तोड़ डालेंगे।

एक गांव आया। दिन चढ़ने की आस हुई। ऊंट की रफ्तार तेज हो गई। ऊंट जानता था। कुदरत ने उसके पैरों में फुर्ती भर दी थी। वह अपनी मस्ती में चला जा रहा था। जोगा गुरुवाणी पढ़ रहा था और चौधरी मौज में था।

—कितना सुरूर है वाणी में। कितनी मिठास है। यह वाणी तो पूरी तरह मेरी समझ में आ रही है। रब का नाम आत्मा की शुद्धि, खुराक रूह की, गुरुओं ने पंजाब को वाणी के सरोवर में गोते लगवा दिए हैं। इसलिए बलवान हैं, योद्धा हैं, इरादे के पक्के, इतनी बड़ी हुकूमत से टक्कर ले रहे हैं। अपने सिर देकर भी पीछे नहीं हटे। तुम ले के रहोगे अपना हक। तुम्हारे साथ हमारी

भी सुनी जाएगी। रेगिस्तान की कोख से जब गर्मी निकल गई तो मुगलो ने उसकी आग बुझा दी। आग ही तो आदमी का जीवन है। आग ही सब कुछ है। सिक्खो के भीतर आग ही तो काम कर रही है। आग के मदके छत्र झूलेंगे, हाथी झूमगे, घोडे, जोडे, नौकर-चाकर, हवेलिया, बारादरिया—ये सब सिंहो के लिए ही हैं। मुगलो ने जितना आनन्द लेना था, ले लिया। 'सदा न बाग मे बुलबुल बोले, सदा न बाग बहारें' धन्य हो रे तुम गुरु के सिंहो। तुम्हारी काली रात को कोई दूसरा पैदा नही हुआ।

चौधरी बोले जा रहा था और ऊट अपनी मस्ती मे चले जा रहा था।

दिन चढ आया। सूरज उगा। दोनो मस्त थे वाणी मे।

—वे झुंड हैं या कोई गाव है या पेड़ हैं। जोगे ने कहा।

—वह लक्खी जगल है।

दोनो लक्खी जगल के इस तरफ ही उतर पडे।

—नगे पाव चलेंगे लक्खी जगल के अन्दर। जोगे ने कहा। गुरु के द्वारे आये हैं, सत्कार के साथ चलें।

—जैसी तुम्हारी इच्छा।

नगे पाव चलने लगे। ऊट की मुहार हाथ म थी। जोगा ने सीस नवाया और बोला—गुरु की काशी, तुझे नमस्कार। सिक्खो का गुरुधाम लक्खी जगल। यही कौम का रखवाला है। यही बाड है कौम की। इसी से सूरमा उठेंगे और अपने गुरुधामो की पवित्रता कायम रखेंगे।

●●

नाथों की धूनी

ये पेड, जंगल, वृक्षों का जखीरा, दरख्तों की छावनी, बेरियां, कीकरों, मलियों, करीरों के झुंड, न पगडंडी, न रास्ता, न कोई बाड़, न मुंडेर, नाक की सीध में चलते जाओ और अपने ठिकाने जा पहुंचो। यह काम सिक्ख ही कर सकते हैं। अजनबी आदमी, परदेसी इन्सान या शाही फौज लक्खी जंगल में गलती से भी आ घुसे, या जान-बूझ कर अन्दर आ फंसे, मार्ग ढूंढ ले—एकदम नामुमकिन। यहां तो सूरज भी सिक्खों की मर्जी के बगैर नहीं उगता। कोई रास्ता हो, तो कोई पहुंच भी जाए और इन सिक्खों की नाक में नकेल डाल दे। यह बात अनहोनी है। सिक्ख तो पेड़ों की आड़ में छिपकर आने वाले की गत बना देते हैं। अजनबी आदमी रास्ता देख रहा होता और सिक्ख गर्दन उतार कर ज़मीन पर फेंक देते। इसीलिए कोई शाही दस्ता इधर को तरह मुंह न उठाता। ये कटीले पेड़ ही सिंहों की रक्षा करते हैं। जिसका कोई वसीला न हो, उसका भगवान् मालिक। हुकूमत जिसकी दुश्मन, उसके हमदर्दी लोग। सिंह सिर्फ गुरु के नाम के साथ ही जी रहे थे। सारा जमाना वैरी, पर किसी ने उन्हें अपने सीने में लगा रखा था, तो वह था लक्खी जंगल। बहादुर योद्धाओं का घोंसला था यह, झुग्गी थी फकीरों की, सराय गुरु के प्यारों की। शीश महल मिसलों के, राठ सरदारों के—भले ही तिनकों की छलनी ही क्यों न हो। इसे लोग लक्खी जंगल के नाम से पुकारते।

जोगा और चौधरी जब पेड़ों के पास पहुंचे, तो चौधरी के हाथ में ऊंट की मुहार थी।

—इस जंगल में पहुंचना ऐरे-गैरों का काम नहीं है। यह चक्रव्यूह है द्रोणाचार्य द्वारा रचा हुआ। द्रोणाचार्य ही राह बतायें, तो आदमी शायद आ पहुंचे। अगर कोई अभिमन्यु दिल का जोर मारकर चक्रव्यूह को तोड़ना चाहे, तो वह तोड़ तो लेगा, लेकिन बच के निकल आये, यह सम्भव नहीं है। उसकी लाश को भले ही सिक्ख लक्खी जंगल से बाहर रख आयें। वैसे लाश भी कोई नहीं ला सकता। चौधरी ने कहा।

—बापू, वह देखो धूनी। मुझे नाथों का डेरा लगता है। जोगा बोल उठा।

—बस द्रोणाचार्य का स्थान वही है। वह चक्रव्यूह के मुख्य द्वार पर बैठा हुआ है। उधर ही चलो, वही हमारा कल्याण करेगा।

दोनों ने उधर का ही रुख किया। चौधरी ने नारा लगाया—अलख निरंजन। जय गुरु गोरखनाथ।

—अलख निरंजन। आओ भक्तजन, किधर से रास्ता भूल गये? धूनी पर बैठे नाथ ने कहा।

—राह भूले नही, जानबूझ कर इधर आये हैं। जो आदमी मकड़ी के जाल मे फसना जानता है, उसी को जीवन का राज़ मिलता है। हम काम है सिंहो के जत्थे से। चौधरी बोला।

—धन्य भाग्य। हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं?

—लक्खी जगल यही है न? हम कही गलत जगह तो नही आ गए?

—आपका निशाना ठीक रहा है। ठीक जगह पहुचे हैं। जत्थे म शामिल होने का ख्याल है?

—अभी तो यह ख्याल नही है, लेकिन वक्त आने पर जरूर शामिल हो जायेंगे। अभी तो कुछ बिनती करने आए हैं। गुरु का भार है, उतर जाए, तो हमारा जीवन भी स्वर्ग बन जाए। कचन काया चन्दन बनाने आया हू, बाबा। जोगा ने कहा।

—कहा से चले हैं भक्त? नाथ ने पूछा।

—श्री अमृतसर से। लुकते-छिपते, डरते-डराते, सहमे-डरे, चोरो की तरह गुरु की कृपा से मजिल पर पहुचे हैं। अब दर्शन हो जाए सिंहो के दस्ते के, तो निहाल हो जाए। टागें जवाब दे गई हैं। पैरो में छाले हैं। थकान ने शरीर को तोड डाला है। टागो मे छल्लिया पड गई हैं। अब ठिकाने पहुचे हैं। जरा सी खुली सास मिले। चलो, गुरु कभी यह आस भी पूरी करेंगे। जोगा ने अर्ज किया।

—नाथ तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे।

—जय गुरु गोरखनाथ! जोगे ने कहा।

—बैठ जाओ। घुटना टेको। जरा सास लो, जल-पान करो, फिर तुम्हारी तृष्णा पूरी की जाएगी। नाथ ने कहा।

—सिंहो का तो जमाना वैरी है, तुम्हारी हमदर्दी सिंहो के साथ है या हुकूमत के साथ?

—कोढ पडे, कुल नष्ट हो, जो हुकूमत का हुकारा भी भरे! हम तो दुःखी हैं, फरियादी हैं, गुरु का नाम लेकर जीने वाले सिक्ख हैं। नाथ जी, हमारी नीयत

पर शक मत कीजिए। गुरु के उपासक तो दूर से ही पहचान में आ जाते हैं।
जोगे ने बड़ी नम्रता से कहा।

—क्या काम है?

—हमारा अपना कोई काम नही है। हम गुरु-घर के काम से आए हैं।
परन्तु बताएंगे हम सिर्फ सिंहो के जत्थेदार को ही।

—कोई दूसरा पूछे तो?

—बिल्कुल सफेद और कोरा जवाब। सिर कटवा देंगे, मगर मुंह से एक
शब्द भी नही निकलेगा।

—फिर हम तुम्हारी मदद नही कर सकते। नाथ ने थोड़ी-सी तुर्शी के
साथ कहा।

—चलो, गुरु हमारी बाह आप पकड़ेंगे। जो प्रह्लाद को गर्म खम्बे से बचा
सकता है, जो ध्रुव को सीने से लगा सकता है, हम भी तारेगा। पत्थर की लकीर
मिट सकती है, पर हमारा विश्वास नही डोल सकता।

भक्त जन, हम तुम्हारी सहायता नही कर सकते। इसके लिए हम शर्मिन्दा
हैं। सिंहो की छावनी में कौन जाए। कौन सोए शेरों को जगाए, सांप की बावी
में कौन हाथ डाले। कौन है जो अपनी मौत को खुद आवाज लगाए? नाथ ने
कहा।

गुरु मालिक! अच्छा, नाथ जी, अलख निरंजन। जय गुरु गोरखनाथ।
जोगी चलते भले। जंगल गए हुए फकीर लौट कर नही आते। आपकी धूनी की
चुटकी हमारी राह आसान बना देगी।

दोनों व्यक्ति उठ बैठे। चलने लगे, तो नाथ ने बाह पकड़ ली—बैठ
जाओ, गुरु के प्यारो। गुरु की नगरी से खाली हाथ कोई नहीं जाता। प्रसाद तो
लेते जाओ। गुरु का घर सबके लिए खुला है। तुम नाराज मत होवो, हम
तुम्हारा मेल करवाएंगे। जय गुरु। अलख निरंजन।

नाथ ने दोनों को फिर धूनी के पास बैठा लिया।

तुम खालसा के मेहमान हो। गुस्सा थूक दो, बच्चा। ताव खाने का अभी
वक्त नहीं है। चुपचाप वक्त की चाल को देखते जाओ। भले दिन जरूर आएंगे।

●●

मरद रोतें नहीं

आगे आगे नाथ चला, पीछे पीछे जोगा और चौधरी। ऊंट की मुहार चौधरी के हाथ म थी।

—भक्त जी, ऊंट डेरे तक नही पहुच सकगा।

—जहा तक जा सक, वही तक ना चलते हैं। फिर किसी पेड के साथ बाध देंगे। ऊंट को मैदान म बाध कर जाना मौत का आवाज देन क बराबर है।

—ऊंट को यही रहने दो।

—मेरा मन नही मानता। मैं तो इस पेडो के झुण्ड म ही बाधूगा। चौधरी न कहा।

दूर स घोडो क हिनहिनाने की आवाज आई।

—घोडा ?

—बस, वही सिंह होंगे। बख्तावर के घर का पता ड्योढी से ही मिल जाता है। चौधरी ने कहा।

—बस, अब हम कोई खतरा नही है। ऊंट तो क्या, अब हमारी जान भी हाजिर है। सिंह यही हैं। हम गुरु की सराय म आ पहुचे है। अब हम कोई डर नही है। अब हम किसी से नही डरते। लो नाथ जी, ऊंट। जोगे ने नाथ क पाव छू लिए।

—तसल्ली हो गई ? नाथ ने पूछा।

—तसल्ली तो पहले ही हो गई थी, पर परदेसी हू, फूक फूक कर पाव धरना चाहिए। दूध का जला छाछ भी फूक फूक कर पीता है। जोगा ने कहा।

—हमने तुम्हारी नस नस परख ली है। तुम्हारी परीक्षा ले चुके थे, तभी उगली से लगाया है। यहां हर आदमी की परीक्षा ली जाती है, तभी उस आगे बढन दिया जाता है। हम भी जत्थे के सिंह हैं, रूप बदल कर बैठे हुए। हमारा काम है जासूसी करना। हम विधिचन्दिये हैं। हम कभी सूफी, कभी खोजी, कभी घनियारे तो कभी नाथ। हमारी कसौटी पर घिसा हुआ सोना कभी पीतल साबित नही हो सकता। नाथ ने कहा।

—धन्य गुरु और धन्य उसके सिंह। दशमेश पिता ने खालसा सजा कर कुन्दन बना दिया खालसा को। उसका झूठ, उसका गर्व, उसका अहंकार, उसका अहं, उसका तकब्बर, उसका सब कुछ भट्ठी में भस्म कर दिया। सिंह कमल के फूल ज्याई है। तालाब में रहते हुए भी तालाब में न्यारा-न्यारा है। पासे के सोने में कोई कितनी खोट मिला सकता है? नाथ जी, आपने हमारा जीवन कितना सफल बना दिया। गुरु की मेहर, गुरु की बरकतें, गुरु की आसीसें, गुरु की बख्शिशें आपने सब अपनी झोली में डलवा ली हैं और हम प्रसाद देकर निहाल कर दिया है। जोगा मग्न था।

—गुरु तुम्हारी यात्रा को सफल बनाए। नाथ ने आशीर्वाद दिया।

—'घोले जिनके रत्तडे, कत तिन्हां दे पास', आवाज जोगे की थी।

—गुरु और सिंहों का निशान सिर्फ घोड़े हैं।

—घोड़े तो मुसलमानों के पास भी है?

—उनके घोड़ों और हमारे घोड़ों में फ़र्क है। उनमें अरबी नस्ल के घोड़े बेशुमार हैं, और हमारे घोड़ों में देसी नस्ल आम है। इसलिए पहचान मुश्किल नहीं होती। हम घासी भी हैं और खोजी भी।

हम घोड़े भगाने भी आते हैं।

नाथ बोला—कहीं तुम भी विधिचंदिया तो नहीं हो?

—विधिचंदिया ही हूं, तभी तो मेल हो सका है।

झाड़ियां, लम्बी-लम्बी घास, बेलों से ढके रास्ते—जोगा देखकर हैरान रह गया। नाथ ने हाथ से बेल को एक तरफ हटाया, तो सामने रास्ता बन गया।

—यह पगडंडी सीधी डेरे को जाती है। चाहे इसमें कितियों बल-खम पड़ें, जब तक डेरा नहीं आता, यह पगडंडी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी। लक्खी जंगल की बाड़ बेलों से ही बनी है। सिंहों ने राह में कई चक्कर डाल रखे हैं। कई भूल-भुलैया हैं। अनाड़ी पगडंडी को भूला नहीं कि धड़ाम से खड्डे में गिरेगा या कंटीली झाड़ियों में। यह खालसे का चक्रव्यूह है। यह सिंहों का गढ़ है। इसे तोपें सर नहीं कर सकतीं। गोले इसे जला नहीं सकते। नाथ बता रहा था।

—सिंहों को लक्खी जंगल के अलावा सम्भाल ही कौन सकता है?

—तुम ठीक कहते हो।

सुरइए पढ़ने की किसी की आवाज आई। नजर से ओझल, पर झाड़ियां हिल रही थीं। आवाज में जोश भी था और जलाल भी :

'बाजत डंक अतंक समैं
रण रंग तुरंग नचावहगे
कसि बान कमान गदा बरछी
कचि सूल त्रिसूल भ्रमावहगे

गण देव अदेव पिशाच परी
रण देख सबै रहमावहगे
भल भाग भया इह सभलके
हरि जु हरिमन्दिर आवहुगे।'

—बस-बस। मैं गुरुधाम पहुंच गया। गुरु रामदास ने मेरा बेड़ा किनारे लगा दिया। जोगा खुशी से बावला होता जा रहा था। —चौधरी जी हमारी उम्मीद अवश्य पूरी होगी।

—खेत के बहाने मेड़ को भी पानी मिल गया। चौधरी ने कहा।

—लकड़ी के साथ लोहा भी तर गया। जोगे ने कहा।

दोहा पढ़ा सिंह ने :

'कोई किसी को राज न देहै।
जो लेहै निज बल से लेहै।'

पिछली तुक दो बार पढ़ी। सीस नवाया। अकाल पुरुष को नमस्कार किया। उठकर अरदास-वन्दना करने के बाद सत श्री अकाल का जयकारा लगाया। उस जयकारे में जोगे ने भी अपनी आवाज मिला दी। चौधरी ने भी आवाज मिलाने की कोशिश की। सारा जंगल गूंज उठा। नाथ के नाम का इतना प्रताप था।

सिंह ने नेत्र खोले। लाली भरे, दीवाने-मस्ताने नेत्र। नेत्रों की ज्योति में सूरज की ज्योति जलती थी। पेड़ की टहनी परे हटाई, तो सिंह भी नज़र आए।

—प्रेमियो, आप कौन हैं? कहां से आए हैं? क्या सेवा की जाए आपकी? सिंह साहिब ने पूछा।

नाथ बीच में ही बोल उठा—एक पुरुष राजस्थान का है और दूसरा प्रेमी श्री अमृतसर से आया है। मैंने काम पूछा था, इन्होंने बताने से इन्कार कर दिया। मैंने सत्य वचन कह कर सीस नवा दिया। ये बोले, इन्हें जत्थेदार से मिलना है। मैं साथ ले आया हूं। बाकी आप जानें और आपका काम।

जोगे की आवाज गले में ही अटक गई। खुशी में वह इतना दीवाना हो गया कि बात ही नहीं कर सका। आंखों में आंसू आ गए चने के दानों के बराबर। ये आंसू खुशी के भी थे और दुःख के भी।

—नाथ जी, आपने परख लिया है—वैरी हैं या मित्र?

—जोगा तो विधिचंदिया है, मैंने इसकी सारी जन्म-पत्री देख डाली है। यह चौधरी हमदर्द है। जोगे को यहां पहुंचाने के लिए आया है।

—चौधरी बोला—मैं भी मित्र हूं, सेवक हूं, श्रद्धालु हूं, गरीब हूं, दस नाखूनों की कमाई खाता हूं और अपना और अपने बच्चों का पेट पालता हूं। यह परदेसी अमृतसर से आया है।

सिंह ने जरा तेजी से पूछा—श्री अमृतसर से?

—जी हा, सतगुरुओ की नगरी से। पर कहने के साथ ही जोगा रो दिया। आसुओ की झडी लग गई। वह वैसे ही रो रहा था, जैसे बेटे के मर जाने पर कोई रोता है।

—मैं बलिहारी जाऊ, तुम्हारे चरणो की धूल माथे से लगाऊ। तुम मेरे सतगुरुओ की नगरी से आए हो। पर तुम रोते क्यो हो? किसी मुगल न आख गहरी की है? किसी ने अति को छुआ है?

—अति से बढकर पाप ही नहीं किया है, पाप के बादल बरसाये हैं। इतना अत्याचार, उसने भगवान् की भी परवाह नही की। मैं बर्दाश्त न कर का, सह भी न सका, मुह से रोका भी नही गया। मैं क्या बताऊ? मेरी ज़बान कोढी हो जाए।

इतने मे ही एक और सिंह आ गया।

—बस, बताया नही जा सकता। जोगा सिर पर बाह रख कर रो रहा था।

—मर्द रोते नही। मर्द मुकाबला करते हैं। सीने पर पत्थर रख कर सीस दें। जो गुजरती है, उसे सहे। बताओ, अब सिंह इन्तज़ार नहीं कर सकते।

—बताऊगा। मैं ज़रूर बताऊगा। बताने के लिए तो आया हू। पर जत्थेदार के सामने।

सिंह ख़ामोश हो गए।

यार की गली

'चोले जिनके रत्तडे कत तिन्हा के पास,
धूड तिन्हा की जे मिले, नानक की अरदास ।'

दोहा पढ कर सिंह ने फतेह बुलाई, और फिर वही जमीन पर बैठ गया—रेतीली जमीन पर। साथ ही बडी नम्रता से बोला—ये मेहमान कहा से आए है ?

—एक श्री अमृतसर से और दूसरा राजस्थानी महमान है।

—कुशल-मगल पूछी गुरु-नगरी की।

—अभी तो इनके पाव भी मैले नही हुए हैं। अभी तो बात नही हुई। आप आ गए हैं, गुरु की बरकतें-बख्शिशें आप ही झोली में डलवाइए। आपका ही हक बनता है।

गुरु-प्यारे, गुरु की नगरी का क्या हाल है ? बसता है हमारा खेडा ?

बस इतनी सी बात ही की थी सिंह ने, कि जोगा फिर जोर जोर से रोने लगा। सास म सास नही जुड रही थी। जबान तालू से जा लगी थी। एक भी बोल न बोल सका।

—मित्र, कुछ तो बोलो। हम तुम्हारे मुखारविंद से वचन सुनने को उतावले हैं।

रोती हुई आवाज और हिचकियो के बीच जोगा बोला—मस्सा...रडी...शराब...हुक्का झाझरें तबला. सारगी. हरिमन्दिर

इसके बाद उसकी आवाज फिर हिचकियो म डूब गई।

—यह पहेली मेरी समझ मे नही आई।

—मेरी समझ मे आ रही है। यह डरता है कही इसकी जबान को कोढ न हो जाए। कही कोई उसकी जबान खीच न ले। इसका डर सच्चा है। यह हमे ठीक तरह से नही बताएगा। इसे जत्थेदार के पास ले चलें। हरिमन्दिर साहिब की बेअदबी की बात कर रहा है। इसकी बातो मे चाहे उलझनें हैं, पर इसकी डोर का गोला बात को समझा रहा है।

पचायत चल पडी। पहला सिह था सुक्खा सिह माही कबोके वाला, और दूसरा मेहताब सिह मीराकोटिया। दोनों अमृतसर के वासी। माझे के लहू म उबाल आया। सिहो ने अपने खडे खीच कर म्यान से आधे बाहर निकाल लिए थे। आखो मे लहू टपकने लगा था।

नाथ बोला—अमृतसर मे कोई बडा उत्पात हुआ लगता है। किसी ने अपनी मौत को खुद ही आवाज दी है। थोडे दिनो का मेहमान है कोई।

—इस तरह के अधड पजाब पर रोज़ ही चढते रहते हैं। लाल बूझक्कड तूफान भी कई बार चढे। मेघ गरजे, बरसे, बस ठड पड गई। जब बादल गरजते है, बिजली चमकती है, तो सिहो के खडे म्यान से बाहर आ जाते हैं। य अब जरूर किसी की बलि लेंगे। सुक्खा सिह ने कहा।

—हरिमन्दिर साहब मे कोई कुकृत्य ही हुआ लगता है। जरूर मुगलो ने ही किया होगा। मेहताब सिह बोला।

—रडी, शराब, हुक्का...हरिमन्दिर मे चारो ओर मुगलो के चिह्न हैं। सुक्खा सिह के विचार थे।

—आप तो गुरु की नगरी को भगवान् के आसरे छोड कर खुद पत्ता चाट आए। आपने तो लक्खी जगल म आकर डेरे डाल लिए। कोई मरे या जीये, आपको उससे क्या? आपने कब खबर ली है उसकी। मुगलो के चौधरी ने अमृतसर मे घुडदौड शुरू कर दी है। शैतान ने आकर डमरू बजा दिया। गुरु की नगरी मे भगडा हुआ, रडी घाघरा पहन कर नगे मुह बेशरमी से नाची. गैरत ने घूघट लिया। परिक्रमा. .बस. बस...जोगा चुप हो गया। —मुझ मे हिम्मत नही है कि मैं कुछ बता सकू...मेरा कलेजा मुह को आता है। मुझ से मत पूछिए, मुझे डर लगता है।

बेलो, लताओ, झाडियो, कीकरो-करीरो आदि को लाघ कर वे उस जगह पर पहुच गए, जहा जत्थेदार बैठे हुए थे, पालथी मारे। माला हाथ म थी। दगदग करते चेहरे. आखो मे सुरूर, मस्ती, जलाल, मस्तक मे तेज, तप और गौरव। दरबारा सिह, बुड्ढा सिह, कपूर सिह एक पक्ति मे बैठे हुए थे। सब ने पहुचते ही फतेह बुलाई।

जब जोगे ने जत्थेदारो को देखा, तो उसका सिर अपने आप झुक गया। उसकी जबान का ताला टूट गया था। गीदड शेर बन गया था।

—आओ भाई, सुक्खा सिह...किधर से आई हैं सगतें? दरबारा सिह ने कहा।

—मेहमान आए हैं श्री अमृतसर से।

—धन्य भाग्य। मेरे गुरु की नगरी मे कोई तो आया। जल-पानी दो। आसन दिया कपूर सिह ने, जो अभी फूटती दाढी वाला लडका ही था।

सब लोग बैठ गए।

—जत्थेदार जी, मुझे मामला काफी गम्भीर लगता है। मेहमान की नसें फडक रही हैं। होनी कही हो गई है। बुड्ढा सिंह ने कहा।

—गुरु नगरी का क्या हाल है, गुरु सिंह जी ?

जोगा फिर रोने लगा।

—धीरज रखो। तगडे बनो। मर्द बनो। मुसीबत के समय मर्द सीना तान कर मुकाबला करते हैं। हमें तो घूटी ही यही मिली है। घबराओ नही, तुम ठीक स्थान पर पहुच गए हो। जत्थेदार ने जोगा के कन्धे पर थपकी दी।

बिल्ली का बच्चा शेर बन गया उस हल्की-सी थपकी से। जोगे की हिचकी बन्द हुई। उसने आखें पोछी और बोला—मैं अमृतसर का वासी हू और वही से आया हू। इस चौधरी की कृपा मुझे आप तक ले आई है। यह भी गुरु का उपासक है। श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा अब परिक्रमा नही रह गई है, घोडो का तबेला बन गई है।

—यह कुकर्म किस हत्यारे ने किया है ?

—मस्सा रघड ने।

—वह कौन है ?

—मडियाले का रगड। लाहौर के सूबेदार जकरिया खा ने उसे चौधरी बना कर अमृतसर भेज दिया है। अब उसके हुक्म के बगैर मक्खी पर नही मार सकती। उसने हवा, पानी, दूध को भी थाम रखा है।

—इतना बडा जाबर है वह ?

—हा। शैतान का साढू है।

—खानू की मौसी का पूत लगता होगा।

—घघरी का रिश्ता है।

—तब तो सच है। वह हवा मे तलवारे फेर सकता है। और ?

—मेरी जबान म कही कोड तो नही हो जाएगा। गुरु घर से बाहर तो नही कर दिया जाऊगा मैं ?

—गुरु भाई, खोल के बताओ, सीना खोल के। जब नाचने ही लगी, तो घूघट कैसा ? गुरु तुम्हें भाग्यवान बनाएगे ?

—सीने पर पत्थर रख लीजिए। श्री हरिमन्दिर साहिब अखाडा बन गया है लुच्चो-लफगो का। दिन-रात मुजरा, परमात्मा के घर म रडी के घुघरू खनकते हैं। तबला बोलता है, सारगी सवाई होकर चीखती है। हुक्का गुडगुड करता है, शराब के मटको के मटके खुलते है। जहा गुरु ग्रन्थ साहिब का पाठ होता था, वहा खटिया डालकर बैठा है मस्सा रघड। जहा अखड ज्योति जलती थी, वहा अब मुजरा होता है। सारा दिन और सारी रात धडम्म-चौदस मची रहती है। रोज़ गऊ के खून से धोया जाता है पवित्र पुल वाला रास्ता। हड्डियो, गोश्त के लहू से भर गया है सारा सरोवर। परिक्रमा म या तो घोडा की लीद है

या पशुओं की हड्डियां। हमे तो अब कोई अन्धा कुआ भी नही मिलता, जिसमे डूब मरें। मैं कुछ नही कर सका। चिड़िया-सी जान कर भी क्या सकती है? जान बचा कर भाग आया हू, सिर्फ इसलिए कि बात खालसा के कान तक पहुच जाए। मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

भले ही जत्थेदारो के खड्ग भी म्यान से निकल आए थे, लेकिन सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने खड्ग खीच कर बाहर निकाल लिए। कपूर सिंह का खड्ग अभी आधा ही नगा हुआ था। जोश ने ज्वाला का प्रचड रूप धारण कर लिया।

—अगर कोई भूला-भटका स्नान करने आ जाए, तो बस आ गई शामत। या तो वह कत्ल हो गया, या हाड घुटने तोड कर उसे फेंक दिया गया, कोच-कोच मारा गया। कई सिंह इस तरह कौवो-कुत्तो को डाल दिए गए हैं। जोगा बनाए जा रहा था।

बस-बस.. अब और बर्दाश्त नही किया जा सकता। अब हम सुन नही सकते। भगवान् के लिए, गुरु के नाम पर, अब अपनी जबान बन्द रख।

नेत्रो से अगार फूटे, लहू उबाल खाने लगा, भुजाए फड़की, तलवारो ने करवटें ली म्यानो मे।

—हम तुम्हारे धन्यवादी हैं, सत्गुरु तुम्हे निहाल करें। खालसा मस्सा रघड़ को ठीक करेगा उसकी महफिलें उजाड़ेगा। सत्गुरु के पवित्र दरबार का अपमान करने वाला अब खालसा के हाथ से बच नहीं सकता।

दरबारा सिंह ने अपने खड्ग पर हाथ रखा और कहा—कौन है सूरमा? सारे लक्खी जगल में शोर मच गया था।

सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह सबसे पहले खड़े हुए। कपूर सिंह और अन्य जत्थेदार भी खड़े थे कतार मे।

—मस्से को ठीक करने के लिए जत्था जाएगा। हुक्म था जत्थेदार का।

—यह बेइन्साफी है। हमारा अधिकार छीना जा रहा है। सबसे पहले यह सन्देश हमने सुना है, हमारे कानों ने यह करुणामयी आवाज सुनी है, ज्वाला हमारे भीतर भड़क रही है। हम मस्सा रघड़ का सिर लाकर हाजिर करेंगे। अगर न ला सके, तो अपना काला मुह नहीं दिखाएगे। अगर हम बेशरम बन कर आ भी गए, तो अपना सिर भेंट करेंगे सारी सगत के सामने।

—यह मुहिम बहुत कठिन है। यह काम किसी अकेले का नहीं है। शूलो की बाड़ है। मौत से आख मिलाना और मौत का मजाक उड़ाना। मौत के साथ खेलना। सिर हथेली पर रखकर खेलने वाली बात है। मैं इजाजत नही दे सकता।

—क्यो? हमने आप से यह बात नही सीखी है? क्या हम गुरु से विमुख हो जाएगे? क्या आपको हम पर विश्वास नहीं है?

—विश्वास है, पर यह काम वडे जोखिम का है। इतना लम्बा रास्ता, सारा जग खालसे का वैरी, गलियों के तिनके तक खालसे के दुश्मन। पहले तो अमृतसर तक पहुचना मुश्किल, फिर हरिमन्दिर साहिब तक पहुचना और भी कठिन। सिर काटने की बात तो बाद की है। पहले अमृतसर मे अपनी ताकत बनानी पडेगी। अपनी जगह कायम करनी पडेगी। जोश तुम्हारी बहादुरी है। तुम्हारी दृढता, तुम्हारी जिद किसी और दिन काम मे आ सकती है। दरबारा सिंह ने अपने विचार सबके सामने रख दिए।

—जत्थेदार के विचार समझने और विचार करने योग्य हैं।

—सिर-माथे पर क्बूल। लेकिन हमे हमारे काज से क्यो रोका जा रहा है ?

—कौम का विरसा यो ही नहो लुटाया जा सकता।

—अगर कौम की पगडी गलियो म धूल फाक रही हो और कोई उसकी इज्जत बचाने के लिए चले, क्या उसकी बाह पकड ली जाती है ? सुक्खा सिंह ने पूछा।

—रोकते नही। पर बन्दोबस्त पूरा करके भेजेंगे। सेहरे तुम लोग ही बाध कर जाना, लेकिन साथ म बाजे वालों का होना भी जरूरी है। बारात ले जानी है, तो बारातो तो इकट्ठे कर लो। दरबारा सिंह ने कहा।

अब जोगा बोल उठा—बाजो वाले हम हैं। हम अमृतसर का इन्तजाम खुद ही कर लेंगे। सारा अमृतसर इनके पावो के नीचे पलकें बिछा देगा। हम समधियो की हवेली म जाना है। सज-धज कर जाएगे। जत्थेदार जी, खालसे का कोई दुश्मन नही है, मुगलो के अलावा। लोग तो सास के साथ सास लेते हैं। लोरिया दे-देकर लोगों ने खालसे को पाला है। हाथ गिन-गिन कर जवान बनाया है। दूध-घी भले ही खालसे की किस्मत मे नही है, रूखी सूखी रोटिया ही हैं, मगर इसके साथ सारे पजाब की आशीषें हैं। पजाब के मुसलमान सिंहो के घोडो की लीद उठाते है, हिन्दुओ के बेटे-पोते हैं, खालसा हिन्दुओ का लहू-मास है। पजाब की नदिया कभी वैरी हो सकती है खालसा की ? सिर्फ हुकूमत के अहलकार ही रक्त के प्यासे हैं। बाकी पजाब तो चूरमे बना-बना कर खालसे को खिलाता है।

—दूल्हा तो एक को ही बनना है। रही बात बारात इकट्ठी करने की, सो हम करेंगे, नाथ ने कहा।

—हा, अब बात कुछ समझ मे आई है।

—थपकी दीजिए फिर शेरो को। बुड्ढा सिंह ने कहा।

—क्या यह अमृत मुझे नही चखने दिया जाएगा ? कपूर सिंह ने कहा।

—बाट कर खाना सिंहो का नियम है, लेकिन कटोरे दोनों सिंहो के हाथ मे आ गए हैं। अब छीने नही जा सकते।

—बस, एक ही बात। मस्से का सिर। अगर मस्से का सिर न ला सके, तो खालसे को मुंह न दिखाना। यह पंथ का फैसला है। दरबारा सिंह ने फरमान जारी किया।

खड़े चूमे गए और जयकारा गुंजाया गया—बोले सो निहाल। सत् श्री अकाल।

सारा लक्खी जंगल गूंज उठा।

—पहले हम जाते हैं, आप बाद में आए। आपका रास्ता और, और हम अपना रास्ता आप चुनेंगे। अच्छा, गुरु रक्षक।

नेजे हाथों में पकड़ लिए। घोड़ों को एड़ लगाई—और फिर यह जा, वह जा।

⊕⊕

रेत का दरिया

चौधरी को घर जाने की उतावली थी, लेकिन खालसा का यह कौतुक देख राजपूती रक्त ने जोश मारा। वह घर भी भूल गया और घर के प्राणियों को भी। बोला—खालसे ने महाकुम्भ रचाया है। मैं भी स्नान करूंगा। कुम्भ तो बारह बरसों में आता है। मैं भी आखिरी कुम्भ नहा लूं। कुम्भ बार-बार तो आता नहीं। आदमी जीवन में कितने कुम्भ नहा सकता है? यह जन्म फिर नहीं मिलेगा। जोगी, तुमने मेरी चौरासी काट दी। भूल जाओ घर को। घर वाले किसी न किसी तरह वक्त निकाल ही लेंगे। मैं भी आप लोगों के साथ चलूंगा।

नाथों ने ऊंट निकाल लिए। चौधरी ने भी अपने ऊंट को थपकी दी।

ऊंट तीन और जवान छह। लक्खी जंगल को नमस्कार करके चले गुरु के लाड़ने। रेत का दरिया ठाठें मार रहा था—पार करना था मरुस्थल।

चौधरी कहने लगा—राजस्थान का इलाका मेरी मर्जी से पार करो। मैं यहां के जर्रे-जर्रे से परिचित हूं। यह मेरी जन्मभूमि है। यहां के लोगों की राशि मुझसे मिलती है। यह दरिया तो मैं पार करवा दूंगा। फिर आप लोगों की मालगुजारी आ जाएगी। फिर आपकी मर्जी।

—राह बदली जाए?

—नहीं, जोगे ने कहा। जिस रास्ते से मैं आया था, उसी रास्ते से चलेंगे। सारे निशान मिलते जाएंगे। कड़ियां एक-दूसरे से जुड़ती जाएंगी। एक जंजीर बन जाएगी। खबरें अपने आप अमृतसर के डेरे तक पहुंचती जाएंगी। जोगियों की धूनियां, सूफी फकीरों के दायरे, चिश्ती खुदा के बन्दों के तकिये, डोम-मीरासियों के टोले, कव्वाली गाने-बजाने वालों के अखाड़े—सब हमारी एक टंकार में जागेंगे, टंकार से सोयेंगे। तार से तार जुड़ता जाएगा। मेले होंगे, रूह और कलबूत के। मैं खूंटे गाड़ता आया हूं। यह अलग बात है कि मैं कोई ताकतवर इन्सान नहीं हूं। मेरे गुरु के प्यारे चप्पे चप्पे पर बैठे हैं। सारे पंजाब में उनका जाल बिछा हुआ है—भले वे केशधारी हैं, भले ही सहजधारी या सूफी फकीर। ये सब खालसा की ही बिरादरी हैं। इन दोनों सूरमाओं का हम से

अलग जाना ही अच्छा है। लेकिन हमारे तार इनसे जुड़े रहेंगे, हमारा घेरा इनके चारो ओर साथ-साथ चलता जाएगा। क्यो नाथ जी, मेरे विचारो से आपके विचार मिलते है ?

—विधिचंदिये इस बात मे उस्ताद हैं। यह इनके गुरु की देन है। किसी को छकाना, किसी को गलत रास्ते पर डालना और फिर मुडकर अपनी पकड मे ले आना विधिचंदिये के बाए हाथ का काम है। नाथ ने कहा।

रेत गर्म थी, पर जोश के उबाल, हिम्मत, जवा-मर्दी, वलवले, जुनून, खिदमते-कौम के आगे रेत का दरिया क्या कह सकता है ?

तपती धरती भी ठडे पानी का स्रोत लगती है। सूरमे जा रहे थे अपनी मंज़िल की तरफ। दो दिनो का सफर उन्होने एक दिन मे पूरा किया—ऊटों की शक्ति से।

जोश सूरज के जलाल की तरह बढता जा रहा था।

मानी योद्धा

सिर की बाजी लगाने वाले, जिद्दी, सिरो को हथेली पर रखकर निकले योद्धा मौत से मजाक करते हैं। जब कोई आदमी निश्चय कर लेता है, तो विजय उसके पाव चूमती है। सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह घोडो को थपकिया दे रहे थे और घोडे भी नाचते-कूदते रेत का समदर पार किये जा रहे थे।

—शेर बन जाओ, बेटो। हमने तुम्हारे आसरे ही यह बीडा उठाया है। हमे पार लगाना तुम्हारा ही काम है। तुम्हारा-हमारा साथ बहुत पुराना है। यह साथ अजल से चलता आ रहा है। हमारी लाज तुम्हारे हाथ है। सुक्खा सिंह ने कहा।

घोडो के कान खडे हो गए। वे फुंकारे मारने लगे।

—देखा, सुक्खा सिंह, घोडे भी तुम्हारी भाषा समझते हैं। वे बेजुबान भी आजाद हवा म रहना चाहते हैं। ये जानते हैं कि हमारी धरती गुलाम है। हमारी आत्मा जजीरो म जकडी हुई है। हमारी आत्मा दूसरो के हाथो बिकती है। यह जमीन हमारी है, मकान हमारे हैं, तख्त हमारा है, अनाज हमारा, हवा हमारी, तो फिर हुकूमत क्यो दूसरो की हो? देश हमारा और हुक्म गैरो का। हमे हकूमत की कमर तोडनी है और अपनी हुकूमत बनानी है—वाहेगुरु के आसरे पर। हम कोई अनहोनी बात तो करते नही, अपना हक मागते हैं। हमारी धरती म जो कुछ भी पैदा हो, वह हमारा ही रहे, कोई दूसरा लूटकर न ले जाए। हमारे बच्चे रू-रू करते रहे और यह काबुली बाघ सब कुछ चट कर जाए। हमने यह बीडा उठाया है। अब गुरु ही हमे इस खेल मे जिता सकते हैं। मेहताब सिंह के विचार थे।

घोडे अपनी रफ्तार मे जा रहे थे। सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह, दोनो वाणी मे मगन हो गए।

—सुक्खा सिंह ने एक बार विचार किया—हमारा हरिमन्दिर और उसकी यह दुर्दशा। ऐसे जीवन से तो डूब मरना बेहतर है। हमारा हरिमन्दिर,

गुरु नगरी, गुरु धाम, हमारे धर्म केन्द्र । हरिमन्दिर के कलश उसकी आखों के सामने घूमने लगे ।

—क्या सोच रहे हो, सुक्खा सिंह ? मेहताब सिंह ने पूछा ।

· मैं सोच रहा हूं, गुरुओं की कृपा-दृष्टि से हरिमन्दिर प्रकट हुआ और मस्सा रंघड ने अपनी मालगुजारी बना ली । मस्सा रंघड अब जी सकेगा ? उसका कलेजा चीर कर ही अब सास लेनी है । हड्डिया चीरे बिना खाट पर नही सोएगे । गर्दन उतार कर जत्थेदार के सामने पेश करनी है । भले यह काया रहे या न रहे । वचन दिया है, पूरा करना । सुक्खा सिंह ने कहा ।

मेहताब सिंह ने उत्तर दिया—भरे दीवान मे तलवार उठाई है । गुरु के आसरे पर, गुरु का ध्यान करके मस्से की गर्दन मरोड़नी है । अगर कही नजर आ गया, तो मुर्गे की तरह उसका सिर काट कर फेंक देंगे । चले तो हैं, गुरु की माला फेरते । यह लाज गुरु के हाथ ही है । सुक्खा सिंह, मैं तो यह प्रण करके चला हूं : 'मोहे मरन का चाव, मरूं तो हरि के द्वार ।'

—बस यही अरदास है । पूरी हो जाए, तो हमे जिन्दगी मिल गई । इन जानवरों की तरह सब जिन्दगी भोगते है ये भारतवर्ष वाले । यह जीना भी कोई जीना है ? दो पाव कम चल लेंगे, पर चलेंगे मटकते हुए ।

●●

राम रौनी

—मेहताव सिंह, हरिमन्दिर मेरी आखो के सामने घूम रहा है। जब मैं छोटा था, तो अपने बाबा के साथ हरिमन्दिर के दर्शन के लिए आया करता था। बाबा मुझे अगुली से लगाए माथा टेकने के लिए ले जाया करते थे। वह नक्शा अब मेरी आखो के सामने आ रहा है।

—हा-हा, मैं भी बाबा के साथ जाया करता था। गुरु की नगरी, जैसे ताज और हरिमन्दिर उसम जडा हुआ हीरा। मेरे बाबा तो कहा करते थे, अमृतसर एक माला है, सिरमौर है हरिमन्दिर। शरीर गुरु की नगरी है और सीस है हरिमन्दिर। मेहताव सिंह ने कहा।

—मैं तुम्हे वह कथा सुनाता हू जो मेरे बाबा मुझे सुनाया करते थे।

—जरूर सुनाओ, मेरे हमदम। मेरे दोस्त, मेरे भाई, मेरे जोडीदार, मेरे हमसफर, मेरे साथी। हम कौम की इज्जत ले के निकले हैं। कौम ने हमें पगडी बधवाई है। हम अपनी जान की बाजी लगाकर इसकी लाज रखनी है। सुनाओ, सुक्खा सिंह, गुरु महिमा सुनाओ। मेहताव ने कहा।

सुक्खा सिंह ने कहा—चौबुर्जी, दोबुर्जी और राम रौनी। शेरशाह सूरी ने शहरो की हदें बाधी और बुर्जिया बनवाई। सडकें भी उसी की देन हैं। मेरे बाबा भी कहा करते थे कि बुर्जिया इसलिए बनवाई थी कि कोई झगडा न खडा हो। हम सारे आपस मे भाइयो की तरह रहे। पहले दोनो नाम शेरशाह सूरी की देन हैं, जिसने शहरो की सीमाए पक्की की और तीसरा नाम मिसलो के राठ सरदारो की, जिन्होने खूटे गाडे, गढी बनाई और अमृतसर की सीमा पक्की कर दी। अब अमृतसर ये सारी सीमाए पार कर चुका है।

अब सुनो, अपने राठ सरदारो की कथा। जस्सा सिंह रामगढिया जालन्धर के सूबेदार अदीना बेग का नौकर था। अदीना बेग लाहौर के सूबे के अधीन था। लाहौर से सरकारी हुक्म हुआ, अमृतसर की ईंट से ईंट बजा दो। अदीना बेग ने जस्सा सिंह रामगढिये को दरबार म बुला कर शाही खिल्लत पहनाई, उसकी कमर से तलवार खोली और अपनी कमर से अपनी तलवार खोल कर और जस्सा

सिंह की कमर में बांधते हुए कहा—अगर तुम अमृतसर को जीत लाओ, तो दोआबे में जो चार गांव तुम कहोगे, या जिन पर तुम्हारे भाई या रिश्तेदार उंगली रख देंगे, तुम्हें दे दिये जाएंगे। एक अरबी घोड़ा दिया गया, साथ ही प्रोत्साहन के लिए थपकी भी। —अगर सूजियों को मार आए, तो तुम्हारी चौधराहट पक्की। सारे रहना सात पुश्तों तक।

जस्सा सिंह इतनी-सी बात में ही ढेर हो गया। दोआबे की सेना चढ़ी और उसने अमृतसर को जाकर घेर लिया। खालसे का अन्न-पानी बन्द। पर सिंह भी यहां किसी की पीढ़ी के नीचे नहाये हुए थे? उन्होंने भी खुले मैदान में तेग चलाई और खूब खून बहाया। तह बिठा दी। लेकिन दूसरे हमले में उन्होंने देखा कि मुकाबला भारी है। हमारा पलड़ा कमज़ोर है। दुश्मन के पास तोपें भी हैं। सिंह राम रौनी की कच्ची गढ़ी में जा छिपे। जस्सा सिंह ने समझा कि अब शामत आई। खालसा नये हमले की तैयारी कर रहा है। इसका मुंह तोड़ना आसान नहीं है। पर सिंहों ने तो अमृतसर को गुरु के आसरे पर छोड़ दिया था। दोआबे की फौज को अमृतसर से क्या लेना था? वह तो किले के द्वार पर धरना देकर बैठ गई। सिंहों ने चुप्पी साध ली। रात निकल गई। दिन अभी निकला नहीं था। दोआबे की फौज ने दूनी हमला किया। खालसे ने थोड़ा-सा द्वार खोलकर होली खेली। धन्य खालसा। धन्य गुरु। तोप ने भी आग बरसाई। डायन भी मुंह खोले बैठी थी। कलजोभी का पेट ही नहीं भर रहा था। वह कुलच्छिनी सिंहों का आधा जत्था खा गई, लेकिन सिंहों ने दिल नहीं हारा। साहस नहीं छोड़ा। गुरु के चेलों के इरादे बहुत बुलन्द थे। शाम ढली। रात सिर पर आ गई। रात रानी ने सिंहों के परदे ढक दिए। गुरु ने लाज रख ली। सिंहों का जलाल वैसे का वैसा ही बना रहा।

जब लहू के तालाब बने देखे, तो जस्सा सिंह अपना कलेजा पकड़ कर बैठ गया। यह क्या? सिंहों का खून। मेरे भाइयों का रक्त। यह मैंने क्या किया? मेरी अक्ल क्यों मारी गई? मुगलों के अन्न ने मेरी बुद्धि मलिन कर दी है। सारी रात जस्सा सिंह को नींद नहीं आई। आंखों में ही रात कटी। सोच में डूबा रहा *रामगढ़िया सरदार*। बिरादरी ने मुझे गांव से निकाला था। इसमें मेरे गांव का कसूर है, मेरे भाइयों का दोष है, पर इसमें सिंहों का क्या दोष? मैं पापी हूं, गुनाहगार हूं, जालिम हूं, देश द्रोही हूं। मैंने अपने भाइयों के खून से हाथ रंगे हैं। मैंने समझा था कि मेहंदी लगा रहा हूं, फतेह का सेहरा बांधने के लिए। फतेह? गुरु की नगरी को ढहा कर? धिक्कार है तेरे जीने पर। डूब मर, कमीने। कहां जगह मिलेगी तुझे? तुझे तो कुत्ते जितनी लाज भी नहीं है। चंद रोटियों के बदले तूने सिंहों को खून से नहला दिया। जस्सा सिंह को एक कपकपी सी आई। उसका शरीर कांपा। मैं क्या मुंह लेकर जाऊंगा दशमेश पिता के सामने? मरना तो मुझे भी है। मुगलों ने मुझे पट्टा नहीं लिखवा

है। मुझे मगलो की बारादरियो की हवा नही खानी है। मुझे तो वहा काई छीकने भी नही देगा। बहुत बडी गलती हो गई। इतनी बडी भूल। क्या मुझे क्षमा मिल सकेगी? उसकी आत्म सम्मान जागा। उसकी आत्मा बलवान हुई। उसे उसके अतम ने लानतें दी। उसे कपकपी छिड गई। उसने करवट बदली। मैं गुरु का सिक्ख हू। सुबह का भूला अगर रात को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। उसने अपनी कमान निकाली, चिल्ला चढाया और आधी रात के वक्त एक तीर सन्देश बाध कर राम रौनी की ओर मारा। सिह भी कहा सो रहे थे? वह तीर सिहो के हाथ आ गया।

—क्या लिखा हुआ था उसम? महताब सिह ने पूछा।

—कालिख लगी दाढी को धोना चाहता था, और उसम क्या होगा?

—दोस्त, गुरु घर म तो सज्जन जैसे ठग भी तिर गए—इसकी भूल तो खालसा ही बख्श सकता है।

—मुझे एक-एक शब्द याद है, जो मेरे बाबा ने बताया था मुझे। सुन लो। गुरु से विमुख हुआ, अगर फिर भी राह पर आ जाए, तो महा सिह की तरह बेदावा चिदी चिदी किया जा सकता है। गुरु टूटे हुओ को जोडता आया है।

—सुक्खा सिह, तुम्हारे बाबा ने जो बात कही, वह पत्थर पर लकीर है। मेहताब सिह ने कहा।

सुक्खा सिह बोला—रुक्के म लिखा था, मैं आप का भाई हू। मैं बिछुड भाइयो के गल लगना चाहता हू। मैं तनखाहिया हू। मुझे इजाजत दीजिए। मैं जवाब का इन्तजार नही कर सकता। अब वक्त नही है। मैं पौ फटते ही, सूरज की टिकिया निकलते ही एक हमला करूगा। पहले आप मेरे हमले का मुह तोडिए। हमारी तरफ से कोई ज्यादती नही होगी। मैं इन हाकिमो की आखो म धूल झोकना चाहता हू। जब दोआबे की फौज भागने लगे और हम अकाल-अकाल का जयकारा छोडें, तब आप किले का फाटक खोल दें और अपने लडते हुए भाइयो से आ मिलें। खालसा ऐसे निकले जैसे अपनी खोह से शेर निकलता है। लाहौर की तोपें मैं साथ लेता आऊगा। तोपो को सम्भालना आपका काम। लडता हुआ जत्था भाग कर किले म आ जाए। फिर मैं जानू और मेरा काम। मेरे हम निवाले, मेरी बिरादरी के भाई, सब के सब गढी की धूल को माथे से लगाएगे और अपनी भूलें बख्शवाएगे। मुझे माफ कर दें गुरु की लाडली फौजें।

दिन के समय एक तमाशा हुआ। बाजीगर ने बाजी खेली। ढोल बजा। डमरू डम डम बोला। मदारी की बासुरी ने सर्पों को कील डाला। जस्सा सिंह रामगढिया गढी म आ घुसा। सिहो ने एक दूसरे को बाहो म भर लिया। खून का एक छीटा भी न गिरा। कडाह प्रसाद की देग खाली हो गई।

दोआबे की सेना मुँह देखती रह गई और उनके हाथो के तोते उड गए।

नानी याद आ गई। सिंहो के करारे हाथ उन्होंने पल्ले बाध लिए और दोआबे की फौज जूतियों की बगल मे दबाकर भाग उठी। मैदान सिंहा के हाथ रहा।

एक हाकिम कह रहा था—देखा, भाई ऐसे भाइयो से मिलते हैं। लहू इस तरह पिघलता है। इस कौम का मुकाबला करना बहुत मुश्किल है। ये लोहे की जान...इन फरिश्तों को मुगल कभी खत्म नही कर सकते। अदीना बेग का बाप भी इस गढी को फतेह नहीं कर सकता। भागो और जान बचाओ! ये बाघ भेडो को फाड खाएगे। कुत्ते की मौत मरने के बजाय अपने घर जा कर आराम करो। हमें कोई चौधराहट नहीं मिल जाएगी।

दोआबे को लाहौर वाले जूते ही मारेंगे। उनका काम है जूते मारना और हमारा काम है जूते खाना। हमने तो प्रसाद ले लिया। लाहौर वाले आए और वे भी ले जाए।

कहते हैं, सारी फौज भाग गई, कही बिल्ली का बच्चा भी बाकी न बचा। सिंहो ने गुरु के सामने अरदास की। टूटी हुई बाहें गले से आ लगी।

जस्सा सिंह रामगढिया ने अपना कलक इस तरह धोया। दूध ने जम्से को दूध जैसा बना दिया और खालसे ने उसे रामगढिया सरदार बना दिया। कच्ची गढी पक्की बन गई। तभी उसने दम लिया। बुर्ज बने। खाई खोदी गई। इस गढी को राम रौनी कहते हैं। यह अमृतसर की सरहद है।

मेरे बाबा की बात मुझे आज तक याद है। जान को गुरु के लिए लिख दो, आगे गुरु जाने और उसका काम।

घोडे अपनी चाल मे मस्ती से चले जा रहे थे, जैसे, वे भी यह कथा सुन रहे हो।

●●

परिक्रमा

—मुझे अच्छी तरह याद है। बाबा का एक-एक बोल ध्यान मे है। कच्चा-सा चबूतरा, जुडी ईंटो का, ऊपर पोचा किए हुआ और उसके आगे एक चहबच्चा निर्मल जल का। चाहे उसके पास जोगी नाथ और सूफी फकीर बैठे रहते थे, प्रभु-प्रभु करते। हुकूमत उन्हे कभी नही टोकती थी। थोडी दूर पर मकबरा भी बना हुआ था। कच्ची-सी कब्र, उसके ऊपर हरी चादर। पावो की ओर फूलों का ढेर। इसे हुकूमत ने अपने जोर से बनवाया था, ताकि लोग पहले यही जाकर माथा टेकें। हाकिम लोगो को मजबूर करते कि पहले इस मकबरे पर दुआ पढी जाए, यह जाहिरा पीर तुम्हारी रेख में मेख मार सकता है। जब कोई हाकिम सिर पर बैठा होता, तो लोग उसके डर से सीस नवा देते, लेकिन जब आसपास कोई न होता, तो कोई मकबरे की तरफ देखता भी नही। मैंने खुद देखा है कि कोई मुसलमान या हिन्दू यहा अपने आप सिर न झुकाता। पहले यह एक कब्र थी, और जब सिहो के जत्थे इधर आकर गरजते, तो वे कब्र को जमीन से मिला जाते। हुकूमत फिर कब्र बनवाने का यत्न करती। सिहो का फिर दाव लगता, वे फिर ढहा जाते। यह तमाशा वर्ष म कई बार होता। जुम्मे रात को अब भी कोई न कोई आदमी चिराग जला जाता।

मैं बाबा के साथ था। हमने चहबच्चे म पाव धोए, परिक्रमा म आए, तो, गुरु जानता है, मेरा सिर अपने आप झुक गया। भले ही मैं कुछ नही जानता था। हरिमन्दिर की नूरानी किरणो ने हमारे अन्दर आलोक का छीटा मारा। मेरा दिल कह रहा था—धन्य गुरु। मैं हरिमन्दिर की एक-एक ईंट के बारे मे सोच रहा था। यह मामूली ईंट नही है। पता नही, एक-एक ईंट के बदले कितनी-कितनी बार सिर तोलकर कर दिए गए हैं, तब एक ईंट प्राप्त हुई है।

सिहो के गे सिर जोड दिए जाए तो अमृतसर से दिल्ली तक एक लम्बी सडक बन सकती है। इतनी चौडी कि जिस पर से दो बैलगाडियां एक साथ निकल जाए। अगर शेरशाह सूरी वह सडक देख लेता, तो अपना मुंह आस्तीन म छुपा लेता। लोग हरिमन्दिर का इतिहास नही जानते। अभी कल भाई मणि

सिंह ने बन्द-बन्द कटवाए हैं। जो जानते हैं, वे भूल गए हैं या उन्हें भुलवाने की कोशिश की जा रही है। यह हुकूमत तो वे फकीर करते हैं, जो एक तरफ तो इस्लाम फैलाते हैं और दूसरी तरफ हिन्दुओं के साथ गहरे होने की कोशिश करते हैं। ढिंढोरा देते हैं—रूह एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान। खुदा की मखलूक है यह सारी, इसमें हिन्दू या मुसलमान का क्या फर्क? कई भोले बन्दे इनके कहने में आ जाते हैं और कई बिलकुल ही सिर हिला देते हैं। हाकिम इस बात से भी चमक उठता है और सिंहों के साथ दुश्मनी और भी बढ़ जाती है।

सर झुकता है, मन नमन करता है, आत्मा नमस्कार करती है, गुरु की शक्ति का स्रोत सारे पंजाब को रूह की खुराक देता है, और रोशनी देता है सारे विश्व को। जिसने एक बार इसकी धूल सच्चे दिल से माथे पर लगा ली उसकी आत्मा की चौरासी कट गई। यहां कोई गुरु नहीं, कोई चेला नहीं। यहां करनी बलवान् है। धर्म करो। फल गुरु देगा। माला जपो। खुद जीयो और दूसरों को जीने दो। डरो सिर्फ उस सब शक्तिमान से। बन्दा स्वयं खुदा है। बन्दे के अन्दर खुदा है, लेकिन बन्दा खुदा नहीं बन सकता। बन्दा सबसे ऊंची वस्तु है। बन्दा भगवान् को जब चाहे, जिस समय चाहे, अपने पास बुला सकता है। चाहे हल चलवा ले, चाहे गोडाई करवा ले। अशरफुल-मखलूकात है। यह जन्म बार-बार नहीं मिलता। लीन हो जाओ उसकी लय में। यह माकूला सूफी फकीर हज़रत मियां मीर का है। यह बात मुझे आज तक याद है। इसलिए उसकी रूह हरिमन्दिर की नाभि से बोलती है। जयकारों में अज़ान की धुनें। इसकी नीवों में हिन्दुओं, मुसलमानों और सिंहों का मिला-जुला रक्त पड़ा हुआ है। अगर यहां हिन्दू कत्ल होते थे, तो उनके साथ सूफी फकीर भी कत्ल हो जाते थे। सिंहों को तो शहीद होना ही था। साझे खून के गारे से ईंटें जुड़ी हुई हैं। यह गुरु की अटारी पंजाब का दिल है। यहीं आत्मा है पांच नदियों की। यहां का वासी मुसलमान भी सिक्ख है। चाहे जाहिरा वह इस्लाम का पुजारी है, पर उसका दिल गुरु की वाणी में रंगा हुआ है। सारे पंजाब ने गुरुओं का प्रभाव स्वीकार किया, सारे पंजाब का सर झुकता है इसकी सरदल पर। फरिश्ते सजदे करते हैं, नमाज़ी नमाज़ गुज़ारते हैं, चाहे वे लुक छिपकर ही करें। साधी करने की किसी की हिम्मत नहीं होती। मेरे बाबा कहते हैं कि मेरे बुज़ुर्ग बताते थे, यहां आधी रात के वक्त फरिश्ते चोरी-चोरी सजदा करने आया करते थे। इसका जल लेकर मोमिनों ने वुज़ू किया। इसका जल हरिद्वार, काशी और प्रयाग से भी ज्यादा पवित्र है। यह आबेहयात है, आबे-ज़मज़म है। गंगाजल की धाराएं यहां शायद गुप्त रूप से मिलती हैं। इसकी पवित्रता को कोई चुनौती नहीं दे सकता। सर झुकाओ, सारे कष्ट दूर। मेरा सर झुक गया स्वर्ण मन्दिर की छवि देखकर। मेरी आत्मा बलवान् हो गई। मैं परिक्रमा में पहुंचा। कुहनियों तक चूड़े से भरी हुई बाहें, गोरी-गोरी कलाइयां सोने की चूड़ियों से भरी हुईं। सिर की चूनरी के

फर्श साफ कर रही थी। यह श्रद्धा पजाब के पाचो पानियो की तासीर है। यह बाबा नानक की करामात है। यहा अमीर और गरीब का भेद समाप्त हो जाता है। यह सब का साझा है। इसकी परिक्रमा को जीभ से चाटा जा सकता है, जीभ मैली नही होती।

यहा मिट्टी का क्या काम ? यहा तो लोग धूल को तरसते हैं। नमाज पढते पढते जिनके माथे पर मेहराबें पड गईं, उन्हें मौला के दर्शन न हुए, लेकिन यहा जिसने एक बार सीस झुका कर देख लिया, चाहे चोरी से या खुले आम, उस पर चौदह तबक रोशन हो गए। सूफी फकीर यो ही इस पर लहू नही छिडकते रहे हैं। सूफी तो इसे काबा मानते है, मक्का समझ कर, इसकी तरफ मुँह करके नमाज़ गुजारते है। एक प्रकाश स्तम्भ है—यह हरि मन्दिर। सब एक बार सिर झुकाओ और बोलो—धन्य गुरु रामदास।

घोडो ने भी एक बार सिर झुका दिया।

—सुक्खा सिंह, तुम तो सचमुच ही मुझे गुरु की काशी मे ले गए हो। मेहताब सिह ने कहा।

—यह बुजुर्गो का ही प्रताप है और यह उन्ही की देन है, जिसके खिचाव से हम जा रहे है।

रात हो चुकी थी। विश्राम का प्रबन्ध भी बहुत शीघ्र हो गया। गुरु के श्रद्धालुओ ने घोडो को ले जा कर हवेली मे बाध दिया और सिंहो के लिए पलग बिछा कर ऊपर दोहतिया बिछा दी। माला के मनके सिंहो को गुरु की काशी मे ले गए।

●●

बाबा बुड्ढा

—जरा-सा आगे चलें, तो बाबा की बेरी नजर आती है। देखो, सेवा करते बूढ़े, जवान, अल्हड, बूढ़ी और यौवन की देहरी पर पाव धरती लडकिया। गरीब-अमीर। भरे हाथों वाली सुहागिनें। गोरी, काली, सावली, गेहूए रग की, कुरूप, खाज खाए चेहरे वाली और सवह की सुनहरी धूप के रग की कुआरी कन्याए, जिनका रूप हाथ लगाते ही मैला हो जाता है—सब बेरी के तने को प्यार-श्रद्धा से दबा रही हैं। लोगो ने तो इस पेड की छाल तक उतार ली है। गुरु का खौफ खाओ। मेरे बाबा ने कहा। गुरु के प्यारो, बूढे बेर को चार दिन और जीन दो। जो आती है, वही छाल उतार कर ले जाती है। एक बुरके वाली औरत ने तावीज बनवा कर गले मे डाल रखा था। जब मेरे बाबा ने पूछा—यह क्या? तो वह कहने लगी—इससे मेरी कोख हरी हुई है। मैंने फकीरो की खानगाहो की खाक छानी, मुल्ला-मौलवियो से टोने करवाए, तावीज बनवाए, लेकिन मेरी कोख न फूटी। वहा से मुझे खैर न पडी। मेरे पडोस म एक सिक्ख परिवार रहता था। उस घर की औरत ने मुझे बुलाया और बोली, अरी सौदाइन! तूने यो ही मकबरो के दरवाजे उखाड मारे हैं। जिन्होंने अपना कुछ नही सवारा, वे तेरी झोली क्या भरेंगे। निश्चय रख विश्वास को पक्का कर। बाबा बुड्ढे की बेरी पर जाकर मनौती मान, बाबा तेरी गोद भर देगा। कलियुग म उससे बडा पीर और उससे बडा बुजुर्ग और कोई नही है। हम पजाब के वासी हैं, गुरुओं के सिवा हमारा कोई आसरा नही है। बस, मैंने उसकी बात को पल्ले बाध लिया। अपने खाविन्द से चोरी मैंने बाबा की बेरी की मुट्ठिया भरी। माथा टेका और सिर झुका दिया उसके दरबार म। मैंने एक छिलका उतारा और तावीज बनवा कर गले मे डाल लिया। किसी बुजुर्ग की कृपा दृष्टि हो जाए, तो पुश्तें तर जाती हैं। मेरे भाग्य म सन्तान बिल्कुल नही थी। बाबा ने ही मेरी रेख में मेख मारी। बाबा बुड्ढे के एक पत्ते से मेरी जडें निकल आईं। पजाब के धर्म का निश्चय इस तरह डोला हुआ था। हिचकोले ले रहा था पजाब का धर्म, ईमान और निश्चय।

बावा बुड्ढे को कौन नही जानता ? गुरु घर का सबसे बडा और वृद्ध तपस्वी, त्यागी और दयालु बन्दा। गुरु-सिक्ख आदमी है, खुदा नही। मैंने सुना है, यहा एक फरिश्ता रात को सलाम करने आया और एक सिक्ख को नजर आ गया। जब उससे पूछा गया, तो उसने इस बेरी की महिमा बताई। खुद गुरु का मस्तक जब यहा झुक गया, तो हमारी क्या औकात है ? गुरु स्वय सोलह कला सम्पूर्ण हैं। यह बात अलग है कि आदमी कभी-कभी रब की पदवी पा लेता है, लेकिन पहचानने वाली आख पहचान लेती है। ये विचार एक सईद औरत के थे। हमारा तो यह मक्का है। मैं सरहिन्द से आई हू। हर साल आती हू हाजिरी लगाने। भले मैं लाख बार सखी सरवर की चेली हू, लेकिन गुरु-घर मे मेरा यकीन पक्का हो चुका है। हम सईद हिन्दुस्तान की पैदाइश हैं, हमारे पुरखे हिन्दू थे और हमारे रस्मो रिवाज, हमारी जडें हिन्दुस्तान म हैं। हमने धर्म बदला है, विश्वास नही बदला।

मेरे बाबा ने कहा—न मुट्ठिया भरो, मेरे भाइयो, बाबा को दु खी मत करो। लेकिन कौन मानता है ? कौन रोके ? बाबा को समाधि म बैठा रहने दो। उसकी वृत्ति लगी रहे, जग का कल्याण होगा।

मेरे बाबा ने फिर मुझे बताया—एक बार बाबा बुड्ढे को भैंस चराते बाबा नानक मिल गए। उसने भैंस का दूध दुहा और कटोरा भर कर गुरु के पास ले आया। मेरे दूध को अमृत बना दो, गुरु देव। सर्वज्ञ गुरु ने कटोरा मु ह से लगा लिया। दुनिया की हर नियामत बख्श दी। सुदामा द्वारका पहुचा था। मुरली वाले ने उसकी झोली भर दी। पटरानी रुक्मणी ने भगवान् की बाह पकड ली। सब कुछ इसे ही दे देंगे। हमारे लिए और सारी दुनिया के लिए कुछ तो बाकी रहने दीजिए। भगवान् की वृत्ति टूट गई। बस, जो कुछ मिलना था, मिल गया। बाबा बुड्ढा इतनी-सी बात म ही वली बन गया। गुरु का रूप उसके अन्दर प्रवेश कर गया।

गुरु ने कहा—तुम साधारण पुरुष नही हो, बाबा बुड्ढा हो। उस दिन से बिना दाढी का लडका बाबा बुड्ढा बन गया और आज तक लोग बाबा बुड्ढा कह कर सत्कार करते हैं। यह थी बाबा बुड्ढे की कहानी।

—हमारे घोडे भी सुन रहे हैं, इसलिए उन्होंने चारा नही खाया। जितनी देर तुम्हारी कथा मैं सुनता रहा हू, इन्होने मु ह नही चलाया। अब देख लो, वे मु ह मारने लगे हैं। ये जीव परमात्मा के प्यारे हैं। तभी इनका हमारा साथ है। मेहताब सिंह ने कहा।

—यह गुरु की महिमा है। सुक्खा सिंह ने जवाब दिया।

सुक्खा सिंह ने फिर अपनी कथा छेड दी—सन्तान का दु ख ससार का सबसे बडा दु:ख है। इस दु ख को सहना पीरो फकीरो और गुरु के बस का रोग भी नही है। गृहस्थ को सब तरह की नियामतें चाहिए। किसी बात की भी

कमी रह जाए, तो घर वाले सूली पर लटका देते हैं। गुरु अर्जुन देव जी ने हरिमन्दिर का निर्माण अपने हाथों करवाया और करवाने वाला था बाबा बुड्ढा। यहीं चबूतरे पर बैठ कर सारा हरिमन्दिर बनवाया। धूप, अधड़, झक्खड़, बारिश, सब कुछ अपने आप पर बरसवाया। जाड़ों की ठंड नंगे बदन काटी। सावन-भादों की बारिश सही। गर्मियों की तीखी दोपहरें भी यहीं काटीं। जब सूरज सवा नेजे पर आ खड़ा हुआ, तब भी उसका तेज सहा। लेकिन धन्य था बाबा बुड्ढा। उसने जरा उफ़ तक नहीं की। न ही वह डोला-डिगा। जब तक हरिमन्दिर पूरा नहीं बन गया, बाबा वहां से नहीं हिला। हरिमन्दिर की पूजा गुरुओं ने खुद करवाई। सारी साध-संगत इकट्ठी हुई। पंथ के सम्मेलन में पहला ग्रन्थी बाबा बुड्ढा को ही बनाया गया। गुरु ग्रन्थ साहिब की सवारी बाबा बुड्ढे के सिर पर चढ़ कर आई और हरिमन्दिर साहिब में प्रविष्ट हुई।

हरिमन्दिर की स्थापना करने वाला, हरिमन्दिर को देवलोक से लाने वाला गुरु रामदास अपनी बहू की गोद हरी न कर सका और न गुरु अर्जुन देव अपने कुल का पौधा लगा सका। कहते हैं कि संगत में इस बात की बड़ी चर्चा थी। गुरुओं ने फरमाया—यह खुदाई देन है। इसमें कोई दखल नहीं दे सकता। 'राई वधै न तिल घटे जो लिखिया करतार।'

एक दिन माता गंगा जी बहुत परेशान थीं। बोलीं—लोगों की कूखें हरी करने वाले अपनी कुल को पानी नहीं दे सकते।

गुरु महाराज ने फरमाया—यह मेरी हिम्मत से बाहर है।

—क्या मैं निपूती रहूंगी?

—मुख से, यह क्या कहती हो। गुरु-घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है। आराधना करो। संगत की सेवा करो। लंगर में प्रसाद पकाओ, खिलाओ पास-दूर से आई संगतों को। शायद कोई करम वाला मेहरबान हो जाए। यह तो कोई गुरु-सेवक ही बख्शिश करेगा।

—वह कौन है? कहां है?

—इतनी जल्दी उतावले नहीं होते। गरम-गरम सहा नहीं जाता।

—तानों-व्यंग्यों ने मेरा कलेजा छलनी-छलनी कर दिया है। न रात को नींद, न दिन में चैन। देवरानियों जेठानियों की बातें अब मुझसे सुनी नहीं जातीं। दया करने वाले दयालु दाता, मेरी बांह भी थामो। अब तो जिन्दगी सिमटने पर आ गई है। चिन्ता चिता समान है। गंगा माता ने दुःख भरे स्वर में कहा।

—उतावले होना गुरु-घर की मर्यादा नहीं है। अन्तर्यामी को हर एक की पहचान है। तुम्हारी तपस्या में कोई कमी होगी। सेवा, साधु-संगत की सेवा, इससे बड़ा और कोई कुम्भ नहीं है।

मेरे बाबा कहते हैं कि माता गगा खुद लगर म बर्तन माजती रही, कितने दिन सेवा करती रही, यह तो गुरु ही जान। माता गगा ने फिर कभी उलाहना नही दिया, गुरु को और न ही गुरु ने कभी बात को छेड़ा। आषाढी गुजर गई, श्रावणी भी निकल गई, ऋतुए आई और चली गईं। सोनपांखी आए, हसो की डारें उत्तरी और फिर उड गईं।

एक दिन साहब समाधि म थे। जब आख खुली, तो देखा, गगा माता जी भी पालथी लगाए बैठी थी। माता अभी ध्यान म ही थी, वृत्ति लगी हुई थी।

साहिब जी ने फरमाया—बाबा बुड्ढा ही रेख म मेख मार सकता है।

माता की वृत्ति अपने आप खुल गई।

धन्य गुरु गरीब-नवाज।

गुरु जी उठकर लगर की ओर चले गए। देखा माता गगा सगत के बर्तन माज रही है।

सता दे कारण आप खलोइया पैज रखदा आया राम राजे।

बाग-बाग हो गया दिल माता गगा का।

किसी से कुछ नही पूछा। अपने आप ही गडबैलें जोड ली। कहारो से कहकर पालकी निकलवाई। एक जत्था चल पडा अमृतसर से बाबा बुड्ढे के डेरे की ओर। बिल्कुल वैसे ही, जैसे कोई तरुणी ससुराल जा रही हो सखियों-सहेलियो के साथ। छन-छन करती गडबैलो ने सुर बिखेर दिए। गहने-गट्टे पहने, हार-सिंगार किया, रेशमी बाना पहना। माता गगा गडबैल मे बैठ गईं। पालकियो मे दासिया थी। सवारी जा रही थी किसी पटरानी की। काफिला बाबा बुड्ढा के डेरे पर पहुचा। बाबा वृत्ति म थे, तार जुडा हुआ था उस दातार के साथ। गुरु के महला ने घेरा डाल लिया, जैसे गुरु बैठे हो चेलों के बीच, चाद के चहु ओर जैसे तारे। चरखा कात रही हो जैसे झुण्ड म बैठी तरुणी।

बाबा ने आख खोली। बडे हैरान हुए। यह अचम्भा क्या है? सहज स्वभाव से बोले—गुरु के महलो म क्या भगदड मच गई? इतना कह कर बाबा चुप हो गए। तार फिर दातार से जा जुडा।

बात स्वाभाविक ढग से ही कही गई थी। वृत्ति लगी हुई थी, शोर मे जरा सी आख खुली और वृत्ति फिर लग गई। सरसरी निगाह से भी न देखा गुरु के महला की ओर और न ही पूछा, किधर आए हैं गुरु के महल? बडे कठोर थे बाबा।

गुरु के महल निराश होकर वापस चले आए।

बात अमृतसर म फैल गई।

शिकायत साहिबो के पास भी पहुची।

माता गगा ने भी दिल का गुबार निकाला।

साहिब जी ने फरमाया—बुजुर्गों के पास इस तरह जाते हैं ? सिक्ख का तो मन नीचा होता है। 'नानक नीचा जो चलै, लगे न तती वाउ।' जाना मागने और चढकर डोले मे ?

माता गगा का चेहरा उतर गया। ठडे पसीने आने लगे।

—मेरे मन के चाव ने उतावली की है। मैं नही जानती थी कि बात यहाँ तक पहुच जाएगी।

—चलो, गुरु भला करेंगे। बाबा जी के मन मे मैल नही है। भागवान्, कल फिर जाना। अपने हाथो प्रसाद बनाना, सिर पर उठा कर, नगे पाव, वस्त्र सीधे-सादे, दूध-से सफेद, नीलकमल जैसे, हसो की डारें जैसे मान सरोवर से उडती हैं। हल्की-हल्की बारिश होती हो, बीच मे जैसे नाचता हो मोर। प्रभात मे उठना, जैसे रब का प्यारा। स्नान करने जाए जैसे कुआरी कजक गगा मे। दरवाजा खोले, जैसे पुजारी मन्दिर का। जैसे कोई सेवक जाता है गुरु-दर्शन को। यह कर साहिब चले गए।

दिन ऊहापोह मे गुजर गया। रात को नीद किसे आनी थी ? आधी रात को ही माता गगा उठ बैठी।

चक्की पीसने की आवाज़ ने अमृतसर को झकझोरा। मकर चादनी-मरीचिका देख कर भक्त लोग उठ बैठे। भगवान् अभी सो रहे थे। आटा छाना, साना और पराठे बनाए, साथ लिया आम का अचार, दो-चार प्याज भी साथ बाध लिए। अभी रोशनी भी नही हुई थी, पर चैन कहा ? लस्सी की मटकी सिर पर रख ली और पीछे पीछे चार दासिया। राधिका रूठे हुए कान्ह को मनाने जा रही थी।

सूरज की टिकिया बाबा बुड्ढा के डेरे पर पहुचने पर ही चढी। सोते हुए अमृतसर को छोड गई थी, गगा माता, जागने पर लौट कर आई।

—कौन ? बाबा बुड्ढा ने कहा।

—मैं गगा। गुरु के महलो से आई हू।

—प्रसाद लाई हो हमारे लिए ? बडी भूख लगी है।

पराठो वाली थाली सामने रख दी। बाबा ने दो पराठे हाथ पर ही रख लिए, ऊपर आप ही आम का अचार भी रख लिया। जब प्याज देखा, दिल मे एक तरग-सी उठी, एक उम्मीद जागी। प्याज हाथ मे ले लिया। प्याज को दोनो हथेलियो के बीच रखकर, दबाकर तोड़ दिया। मुह मे कौर डाला। बाबा रुक गए।

—पराठे बडे स्वाद हैं। आम का अचार भी अमृत है। धन्य हैं गुरु के महल। बाबा फिर चुप हो गए :

माता गगा संगमरमर की मूर्ति की तरह खामोश थी।

बाबा सोचो मे खो गए।

माता गगा जपुजी साहिब का पाठ कर रही थी।

बाबा की वृत्ति अभी टूटी नही थी।

जब माता गगा ने जपुजी साहिब की पौडियो का भोग डाला, तो आवाज आई—होगा, जरूर होगा। मेरे गुरु मेहर करेंगे। शक्तिशाली, बलवान्, योद्धा, मुगलो का सिर तोडने वाला बेटा इस कुल मे अवतार धारण करेगा।

खुशी मे बावले हुए बाबा नाचने लगे।

आशीर्वाद लेकर गुरु-घर के महल अमृतसर लौट आए। धूम पहले ही मच चुकी थी।

बताशे और गुड की रेवडिया बाटी जा रही थी। बहारें गुरु के आगन में गिद्दा नाच रही थी।

'तुमरे घर प्रगटेगा जोधा
जान बल गुन किन्हू न सोधा।'

जहा गुरु भी आशीर्वाद लेते हैं, उस बाबा को कौन नमस्कार न करें? बाबा बुड्ढे ने पाच पातशाहियो को अपने हाथो से गुरु-गद्दी दी और अपने हाथ से तिलक लगाया। महावाणी, महान् आत्मा, महान् शक्ति, बाबा बुड्ढा. .

मेहताब सिह, रात आधी से ज्यादा खत्म हो रही है। जरा-सी कमर सीधी कर लें, दिन मे सफर करना है। गुरु-महिमा गाते रातें कटे, गुरु-गान करते दिन। सुक्खा सिह ने कहा।

दोनो व्यक्ति सो गए, लेकिन माला किसे सोने देती है?

●●

चौमुखा आंगन

जिस आगन मे सिंह बैठे हुए थे, उस घर से खाली उठना, मुह जूठा किए बगैर राह पर चल देना अचम्भे वाली बात थी। मेहताब सिंह का ख्याल था कि जल्दी चला जाए और दूसरे ठिकाने पर पहुचा जाए, लेकिन सुक्खा सिंह इसके पक्ष म नही था। वह चाहता था कि कोई विधिचदिया मिल जाए और उससे दूसरे अड्डे का पता पूछ लिया जाए। हमे मालूम तो है, फिर भी पक्का कर लेना अच्छी बात होगी। शायद अगला आदमी घर म ही न मिले, या कही गश्ती सेना गई-आई हो, और ऊसल मूसल लिए घोंट रही हो, और उसी गाव म उसने अपना डेरा भी जमा रखा हो। इस तरह की स्थिति मे कन्नी काट जाना और उस गाव को तिलाजलि दे जाना ही अकलमदी है। बस यो ही, इधर उधर कोई नया रास्ता बना कर निकल जाए। कान लपेट कर निकलना और किसी को कानों कान खबर भी न हो, इसलिए हमजोली का इन्तजार कर ही लेना चाहिए। वह जरूर रोटी टुकड के वक्त आ गरजेगा। फिर पसर कर बैठेंगे, सलाह-मशविरा किया जाएगा। हमसे पहले हमारे साथी, हमारे दोस्त गाव के बाहर जरूर धूनी रमाये बैठे होगे। ये नाथो के डेरे, ये जोगियो की टोलिया, ये सूफी फकीरो के तकिये, ये रमतो की टाणिया, हमारी बाई दाई आखें हैं। यही हमारी बाहें हैं। ये मूने जोगी सबके सब विधिचदिये भी हैं। ये सिंहों के खूटे हैं, और ये गाव गाव मे खूटे गाड कर बैठे हुए हैं। इन्होने अपना जाहो जलाल बना रखा है। सारे गांव की औरतें इनकी सेवा करती हैं। औरतो का गुरु कभी भूखा नही रहता। खीर-पुए, दूध मलाइया, कडाह प्रसाद के थाल कतार बाध कर चले आते हैं। कितना खा लेंगे? बचा खुचा माल गाव मे ही बाट कर इन्होने गांव भर को जीत रखा है। ये टोले असल म गुरु के सबसे बडे श्रद्धालुओ के हैं। इन्हीं के सिर सदके हम उडते फिरते हैं। इनकी भुजाओं की शक्ति से ही हम राज छीन लेंगे। ये लोग अपनी मुगल की धूनियो से मुगलों के सिर पर चढे भूत उतार देंगे। इनके गरम चिमटे चुडैलो को निकालना जानते हैं। धीरे-धीरे हम ताकत पकड रहे हैं। इनकी चडाल चौकडी जब दाने फेंकती है, तो कुछ उड जाते हैं, कुछ उडना चाहते हैं और कुछ पत्रा बाच जाते हैं। इनके छाज म पडा

व्यक्ति बिना छटे रह ही नही सकता। इस तरह गावो से इनकी ढाणिया शहरो की तरफ मुह उठा रही हैं। गावो म जब इनका जोर खत्म हो जाएगा, तो इन्हे धक्के मार के बाहर निकाल देना बहुत मामूली बात है। हुकूमत की ताकत गावो म ही होती है। जब पाताल स जडें उखड जाए, तो हुकूमत हवा के एक झोके के साथ उड जाती है।

रात ने अभी तीसरे पहर म पाव रखा ही था। सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह से कहा—ज़रा सा आराम कर लो। स्नान ध्यान करके चलेंगे। घोडे हाफ गए हैं। इन्ह भी जरा सा होश आ जाए। नौ बर नौ हुए तो फिर ये शेर के पूत। रेत म ऊट ही टिक पाता है।

—सत्य वचन। मेहताब सिंह ने कहा।

सोने के लिए बहुत यत्न किए लेकिन माला कहा सोने देती थी? ज़रा सी आख लगी कि माला ने फिर जगा दिया। न मेहताब सिंह सोया और न उसने सुक्खा सिंह को ही सोने दिया।

महताब सिंह बोला—वह कथा अध बीच ही रह गई। हम दूसरे रहट ही चलाने लगे। गुरु महिमा सुनते सुनते हम यहा तक पहुच गए हैं। य सब मेहरें बाबा नानक की हैं। यार, तुम्हारी बोली म बडा रस है। तुम्हे कथा कहनी आती है तुम कथा सुनाना जानते हो।

सुक्खा सिंह के कठ से आवाज निकली—लो सुनो, मैं और मेरे बाबा उस चौमुखे चौक म पहुच गए थे जहा सगतें हरि कीर्तन कर रही थीं। जहा शब्द पढ जा रह थे।

इस चौमुखे आगन का शिगार है अकाल तख्त, थडा साहिब लाची बेर और दर्शनी डयोढी से चमचमाता हरिमंदिर। हम वही बैठ गए और मेरे बाबा बोल—ध य गुरु रामदास।

मैं पैदाइशी शैतान की टूटी था। मेरा चाचा कहा करता था—शूलो के मुह ज म से तीखे। यह ज़रूर सिंहो के जत्थे मे मिलेगा। सो इसकी बात सच्ची हो गई।

—बेटे, यह अकाल तख्त है। इसे हरगोबिंद ने बनवाया था। यह वह तख्त है जहा स कौम के हर फैसले का ऐलान होता है। गुरु म तव्य के बाद सारी कौम को परवाने यहीं स भेजे जाते हैं। इसका हुक्म अटल है। शाही फरमान तो कभी बदल दिया जाता होगा लेकिन अकाल तख्त से परवान हुआ गुरुमत बदल दिया जाए—नामुमकिन। पत्थर की लकीर मिट सकती है अक्षर की कमी बेशी की जाए यह गुरु मर्यादा के विपरीत है। यह सच्चे पातशाह का तख्त है। दिल्ली का तख्त झूठा है। वह फरेब झूठ और लोभ के लहू से लिथडा हुआ है। बेटे तुम पूछोगे, इसकी ज़रूरत ही क्या आई? मैं यो ही इधर उधर ताक झाक कर रहा था। मेरे बाबा ने मेरा कान खीच दिया। एक बार तो तारे नज़र आ गए। शरारती लडके ऐसे ही सीधी राह पर आते है।

जहांगीरी राज था। मुगलों के झण्डे झूलते। थर-थर कांपती जनता। हिन्दुस्तान की जान उन झण्डों की मुट्ठी में थी। जहांगीर की जुबान से निकला हुआ शब्द कानून बन जाता। अफीम और शराब के नशे में झूमता जहांगीर कभी कोई गलत बात भी कह जाता। महीना गुजर जाने पर उसे सिर्फ मलिका नूरजहां ही बदलती। गुरुओं का तेज-तप जहांगीर ने अपनी आंखों देख रखा था। एक बार अपने पिता अकबर के साथ गोइंदवाल आया था, और फिर एक बार जब बादशाहत का ताज पहना। बादशाह बन कर उसने गोइंदवाल की नुहार देखी थी। गुरु-दर उसकी आंख का किरकिरी बन गया था। उसके सीने पर तो तभी सांप लोटने लगे थे, जब उसने सेवकों को डंडवत करते देखा था। यारो, कहां मैं बादशाह और कहां यह मामूली फकीर। असली बादशाह तो ये हैं।

तब अलिफ मुजदद सानी, सरहिन्द वाले ने जहांगीर के कान में फूंक मारी थी—देखा। छोटी सी छछूंदर। जब अभी इनका इतना तेज, शान-शौकत और जलाल है, तो कल को क्या होगा? अगर कहीं इन्होंने अपने चार घर इकट्ठे बना लिए, तो फिर हुकूमत को ताड़ना, आंखें दिखाना और अपनी चौधराहट बना लेना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। क्या है, जो इनके पास नहीं है? क्या बात है, जो यह नहीं कर सकते? हुकूमत तो हाथी, घोड़े, फौज वगैरा दाम देकर खरीदती है, पर इनके पास यह सब चढ़ावे के रूप में आ जाता है। हुकूमत का डंडा कानून है, लेकिन इनका कानून श्रद्धा है। श्रद्धा झुकती नहीं, टूट जाती है। ऋतु बदलने की देर है, ये हुकूमत के लिए किसी दिन मुसीबत बन जाएंगे। इसलिए इस वृक्ष का, जिसे पंजाब वाले गुरुघर कहते हैं, जड़ से ही काट देना चाहिए, ताकि लोग इसकी छाया में न बैठ सकें।

जहांगीर सुरूर में था। बात उसे पसन्द आ गई। पांचवें पातशाह गुरु अर्जुन देव उस समय गुरु गद्दी पर विराजमान थे। बादशाह ने सजा का इंतखाब किया—सड़ी हड्डियां देकर जान को अजाब में डाल दो। जब यह गुरु तौबा-तौबा कर उठें, तो गर्दन उड़ा दो, क्योंकि इनके आश्रमों से मुझे बगावत की बू आ रही है।

इस हुक्म ने शहादत का रूप धारण किया और गुरु अर्जुन देव गर्म तवे पर बैठे। देगों में उन्हें उबाला गया। गर्म रेत ने पूरे शरीर पर छाले डाल दिए। तब भी जब सांस न टूटी, तब आखिरी हुक्म सादर हुआ। गाय की खाल में मढ़वा दो। यह सजा गुरु को कबूल नहीं थी। गुरु महाराज ने स्नान की इच्छा प्रकट की। छालों भरे शरीर के लिए यह भी एक सजा थी। इजाजत मिल गई। रावी नदी में उतराई में, जिसके किनारे लाहौर के ऊंचे बुर्ज हैं, वाहिगुरु का नाम लेकर गुरु ने ऐसी डुबकी ली कि बाद में न गुरु मिले, न गुरु की काया। फिर किसी ने दर्शन तक न किए। कौम निराश हो गई, लेकिन इस निराशा ने

कौम को हिलाया। गैरत के माथे पर ठंडा पसीना उभरा। एक सोई हुई कौम ने करवट ली।

गुरु हरगोबिन्द अभी बालक ही थे। बाबा बुड्ढे को गुरु गद्दी का तिलक दे दिया। कहते हैं कि बाबा बुड्ढे ने पीरी की तलवार गुरु साहिब को पहनाई, बाए हाथ की तरफ। यह तलवार आम तौर पर मीरी की मानी जाती है। मुल्क फतेह करने पर यह पहनाई जाती है। मीरी की तलवार दाईं ओर पहनी जाती है। सिर्फ अपनी हिफाज़त के लिए। लोग हैरान हो गए, बाबा की इस गलती पर। एक बुजुर्ग बोल उठा—बाबा जी, यह क्या? बाबा मुस्कराये। गुरु हरगोबिन्द बोले—बाबा जी, इसे रहने दीजिए। यह मीरी की तलवार है। आपने पहनाई है, इसकी ज़रूरत थी। पीरी की दूसरी पहना दीजिए। दूसरी तलवार भी पहना दी गई। यह एक अचम्भा था, एक चुनौती थी, एक नया कदम था, नई करवट थी, नया हिचकोला था। गुरु जी ने फरमाया—एक तलवार मीरी की है और दूसरी पीरी की है। यह सेहली टोपी उतार लीजिए। आज से यह सेहली तलवार का गातरा होगी।

कौम सहम गई। जज़्बात दब गए। डरी हुई कौम सहारा ढूंढ रही थी। एक बार तो आगन डोल गया, कपकपी-सी हुई, चेहरों पर उदासी नज़र आई। गुरु ने बात ताड़ ली। कौम से यह भरोसा ही न उठ जाए कि सत्य और धर्म की जय होती है। कहीं लोग दुनिया के झमेलों से उदास होकर उदासीन न बन जाए। इसलिए यह हिचकोला प्रकाश स्तम्भ साबित हुआ। यह सृष्टि नेकी और बदी की रणभूमि है। गुरु ने फरमाया—पिता जी को यह भान हो गया था कि कौम को शहादत की ज़रूरत है। 'तेरा भाना मीठा लागे' की धुन को माला के मनको के साथ गाया और शहादत के गले लग गए। अब कौम को शूरवीरो की एक ऐसी सेना तैयार करने की ज़रूरत है, जो किसी से न डरे। ये योद्धा मैदान म उतरें और भय स्वीकार करें सिर्फ अकाल पुरुष का। बाकी इस हुकूमत का डर तो दिल से निकाल दें। तलवारें भींगें सिर्फ अनाथो, गरीबो और धर्म की रक्षा के लिए। श्री साहिब खडके, लेकिन यह भावना रखकर कि हमारी कौम को ढाल का काम करना है। तख्त से फरमान हुआ—आज के बाद हमारी भेंट, हमारी नज़र अच्छा शस्त्र, अच्छी जवानी, बढिया घोडा, फड़कती भुजाए होगी। आप दूर दराज के गावो से आए हैं। गाव-गाव मे अखाडे बनाओ। गतका खेलो, घुडसवारी करो, कुश्ती की आदत डालो और हर घर मे जवान पैदा करो वज्र शरीर वाले। शिकार खेलो, तलवार का वार करना और वार झेलना सीखो। अब हमारी सीधी टक्कर हुकूमत से है। जब तक यह जुल्म-अनाचार बन्द नही हो जाता, तब तक तुम्हारी तलवारें चलती रहेंगी। जग लगे बरछे निकालो और उन्हे सान दिखाओ। प्रण करके उठो और कौम में जागृति पैदा कर दो। आज से हम बाज़ रखेंगे, घुडसवारी करेंगे, पालकियो म आया-

जाया करेंगे, कलगी सीस पर चमकेगी, शस्त्र शरीर का अग होंगे। जवानी वही जो कौम के काम आए। जो मौत का आलिंगन करना जानता है, उसे मौत कभी नही आती। 'पहला मरन कबूल...' की मुहारनी पढो। तुम आटे मे नमक जरूर हो। तुम स्रोत हो और दरिया स्रोतो के गर्भ से ही निकलते हैं। तुम जैसे लाखों स्रोत कौम मे हैं। पत्थर की रगड से आग पैदा होती है। एक चिंगारी सारे जगल को राख बना देती है। वह तो पत्थर है, एक बेजान पत्थर, पर तुम तो इन्सान हो। मामूली इन्सान नही, तुम वह इन्सान हो, जिनका कलेजा अभी-अभी गर्म तवो पर जलाया गया है।

—धन्य थे कौम को नया मोड दिखाने वाले गुरु हरगोविन्द। मेहताब सिंह श्रद्धा से बोला।

—कौमें वही जिन्दा रहती हैं, जो कुर्बानी देना जानती हैं। जो लोग जान को हथेली पर रखना जानते हैं, उनका कोई बाल भी बाका नही कर सकता। सुक्खा सिंह ने कहा।

जब तख्त पर सुनहरी चवर झूलने लगा, तो सचमुच दिल्ली दरबार का भ्रम होने लगा। कवियो और ढाढियो ने वारें गाईं। गुरु महाराज ने फरमाया—कवि कौम का दिल होता है। कुदरत ने तुम पर बख्शिश की है। कविताओ की ईंट बना-बना कर महल खडे कर सकते हो। तुम कवि हो। तुम्हारी कविता मे ज्वाला है। कौम के सीने मे आग की गर्मी पैदा कर दो। लोग अपनी खाल उतारना सीख जाए, बद-बद कटवाते डर न लगे। हसते-हसते फासी की चर्खियों पर चढ जाए। जैसे साप अपनी केंचुल उतार देता है, जैसे आदमी पुराने कपडे उतार फेंकता है। पजाब का लहू ठडा पड चुका है, उसे गरमाना तुम्हारा काम है—वारें गाओ, शूरवीरो, बहादुरो और योद्धाओ की। शमा बुझ जाए, पर परवाने खत्म न हों। जलने वालों की इतनी बडी कतार लग जाए कि लोग दातो तले अगुलिया दबाने लगें। ढड-सारगियो की धुनों मे ललकारें उठें।

गुर ने एक अजीब लहर पैदा की। ढड पर एक थाप पडी और कौम मे हिचकोला आया। घुघरुओं ने कुर्बानी के लिए चाव पैदा किया। गुरमरियो की तरह सोई कौम फनियर सापों की तरह जाग उठी। मुह-माथा निखर आया। एक नया चेहरा सामने आया। अकाल तख्त प्रकाश स्तम्भ बन गया, जिसकी रोशनी में सारी कौम अपना रास्ता खोजती।

मैंने बाबा से पूछा—क्या यहां वारें भी गाई जाती थीं।

मेरे बाबा ने जवाब दिया—हां, अब्दुल्ला और नाथ मल ने यह वार पढ़ी, जो आज भी प्रचलित है :

'दो तलवारा बधिया, इक मीरी दी इक पीरी दी
इक अजमत दी, इक राज दी, इक राखी करे वज़ीरी दी
हिम्मत बाहा कट्ट गढ, दरवाजा बरख बखीरी दी
नाल सिपाही नील-नल, मार दुष्टा करे तगीरी दी
पग तेरी कि जहागीर दी......'

बस, इतनी ही कथा है अकाल तख्त की। मेरे बाबा अब चुप हो गए थे। मैंने उनके चेहरे की तरफ देखा। उनके मस्तक से चिंगारियां फूट रही थी, लहू खौल रहा था।

भुजाए फड़की। ऐसा लगता था जैसे किसी मुगल का सीना चीर कर चुल्लू भर-कर खून पिएगी।

सुक्खा सिंह खामोश हो गया।

●●

रास्ते

रात का तीसरा पहर निकल गया। चौथे पहर में लोग करवटें बदलने लगते हैं। मुर्गे ने बाग दी, समझो दिन चढ़ गया। नाथ ने अपनी धूनी की आग में चिमटा चलाया, आग तेज़ हो गई। तकिये से आवाज़ आई—अल्ला हू—अल्ला हू। किसी ने मद्धिम और मीठी-सी आवाज़ में 'आसा दी वार' छेड़ी। आम मुसलमान इस वार से परिचित नहीं थे। उनका ख्याल था कि किसी ब्राह्मण ने आरती का नया ढंग निकाला है। छोटे-से गांव में, जहां गिनती के घर हों हिन्दुओं के, वहां कोई सिह कुंडी चढ़ाकर, पिछली कोठरी में भले ही पाठ कर ले 'आसा दी वार' का, पर खुले आम कोई जुर्रत न करता। सारे काम हो रहे थे चोरी-छिपे। आदमी अपने आपको सिंह कह कर यों ही तो नहीं रह सकता था। अगर किसी को शक हो भी जाता, तो हिन्दू खुद उठ कर सामने आता और यह कह कर टाल देता कि कोई सांड बौरा गया होगा, आ घुसा हमारे गांव में। सिंहों को रोना थोड़े ही जाता है। आते-जाते किसी न किसी गांव में घुस ही आते हैं। कई बार उनके टखने तोड़े हैं, पर वे डरते ही नहीं। यह बात सुनकर अहलकार को शान्ति मिल जाती। हिन्दू डरपोक थे। डरपोक होना भी बहुत जरूरी था। अपनी और सिंहों की रोटी का प्रबन्ध करना होता था। सिंह अपने ही पूत थे। सीने पर हाथ मार कर कह देते, वह हमारा बेटा नहीं है। हमने उसे निकाल दिया है। सिंह बन गया है। उसके साथ हमारा क्या रिश्ता। जब चौधरी नाक बन्द कर देते, तो कभी तड़ी में आकर कह भी देते—लड़कों और सांड का कौन रोक सकता है? लड़का मुंह जोर हो गया है और सिंह बन गया है घर-बार त्याग कर। घर में बूढ़ी मां है, बूढ़ा बाप खों-खों कर रहा है। अब तो हमारी सेवा की जरूरत थी। अभी से ही धोखा दे गया ठीक है, हमारा क्या जोर है? सिंह घर-बार में तो निकाले ही जाते हैं। यह बात ऊपरी-ऊपरी ही थी। असल में तो बेटे रात को आते और रसद ले जाते। खाना-रोटी भी खा जाते। मां, बहन, भाई से मिलकर अपनी छाती भी ठण्डी करते। हिन्दुओं के अलावा इनका हमदर्द था ही कौन? कोई विरला मुसलमान भले ही हामी भरे, वरना जो सिंह मुसलमान के हाथ पड़ जाता, वह चौधरी की कचहरी तक पहुंचकर ही रहता—फिर इनाम चाहे जूतों का ही मिले। भले ही मुंह काला करवाना पड़ता, *लेकिन हरामखोर हरामखोरी से बाज कहां आता है? गुरु की तेगें मारी हुई थीं।* सारे पंजाब में अंगुलियों पर गिनने लायक ठिकाने थे। वे भी सूफी फकीरों के।

सखी सरवर भी कही-कही मेहरबान हो जाते। मेहताव सिंह, जब हम पंजाव पहुचेंगे, तो हमे फूक-फूक कर पाव रखने पडेंगे। किसकी आस्तीन से साप निकल आए, कोई नही जानता। कौन किस वक्त बेईमान हो जाए, किसे मालूम ? जो ठिकाने विधिचदिये हमारे लिए चुनेंगे, वही होने चाहिए। हम उनके नक्शे-कदम पर ही चलना पडेगा, क्योकि वे इन राहो पर चल चुके हैं। रास्ता उनके पावो के नीचे से गुजर चुका है। वे बुरा-भला पहचानते हैं। अभी तक हमें कोई विधिचदिया मिला नही है। हमारे नाथ का क्या बना ? उसकी भी कोई खोज-खबर नही मिली।

मेहताव सिंह बोला—सिंह साहब, तुम तो यो ही उतावले हो रहे हो। हम से ज्यादा फिक्र उन्हे है। यह ताना-बाना उन्होने ही ताना है। और हम उनकी सलाह के बगैर कही कदम नही उठाएगे। हम कल नही, तो परसो तरसो तक पजाब की हद तक जरूर पहुच जाएगे। इसलिए जो कुछ फैसला करना है, यही करके चलना है। आज उनके आने का दिन तय है। तुम अभी नाश्ता-पानी भी नही कर पाए होगे कि उनमे से कोई आकर फतेह बुला देगा।

—बोले सो निहाल।

—क्यो, सुक्खा सिंह। हमारे अदाजे की दाद दो। अभी मुर्गे ने पहली बाग दी है ना यह सुन लो, मस्जिद म अजान हा रही है। अभी तो मुंह भी दिखाई नही देता। सिंह आ पहुचे हैं। क्यो भाई, इन्हे नींद आती है ? रात को इन बेचारो ने आख लगाकर भी नही देखी। मेहताब सिंह ने कहा।

—हम तो भले ही भुलावे मे सो जाए, लेकिन इन बेचारो की आखो मे नीद किरकिराती रहती है। इनका वक्त से पहुच जाना यह गवाही देता है कि ये बेहद चैतन्य हैं। सुक्खा सिंह ने अपनी बात कही।

—चार दिन जीने भी दो हमे। इतनी फूक मत दो कि पेट फूल जाए हमारा और पटाखा मारकर फट जाए। हमे चरणो मे लगे रहने दो, सिंह जी। विधिचदिये ने कहा।

—गुरु की बडी कृपा है आप पर। मेहताब सिंह ने कहा।

—गुरु की तो सब पर कृपा है। क्या गुरु आप पर भी दयालु नही हैं ? क्या वे आप पर मेहरबान नही है ? अगर आप अपने इरादे मे कामयाब हो गए, तो फिर सेहरे भी आपको ही बधेंगे। कौम आपक पाव धो-धो कर पिएगी। विधिचदिये ने कहा।

—ये सारी मेहरे आपकी ही हैं। आप ही हम ठिकाने तक पहुचाएगे। हमे न तो रास्ता मालूम है, न मजिल। जब माझे मे पहुचेंगे, तब हम कुछ सलाह दे सकेंगे। वह हमारा घर है। हमारे रिश्तेदार, भाई, पडोसी, हमारे गावो के वाली हमारी बाह पकडेंगे। अभी तो लकडी आपके हाथ है। पजाब आने

वाला है। हमें कब चलना है, क्या करना है, हमें क्या हुक्म है? मेहताब सिंह ने निवेदन किया।

—आज का पूरा दिन टांग पर टांग धर कर गुजार दो। हमारे साथी अभी तक पहुंचे नहीं हैं। पहले हम रास्ता उलीकना है, फिर खूंटे गाड़े जाएंगे। ये सब आने वाले जत्थे के हाथ है। इतनी छूट, जो अब तक तुम्हें मिलती रही है, आगे जाकर नहीं मिलेगी। धूप सेंक लो, खुली हवा फांक लो, खुले आसमान में उड़ानें भर लो। यह सब फिर नसीब नहीं होगा। आज के दिन वैसाखी मना लो, सिंह जी। आज के दिन ही खालसे का जन्म हुआ था और आज के दिन ही कौम को सजाया गया था। विधिचंदिया अभी भी बोले जा रहा था।

—सत्य वचन। लो, दातुन और लोटा आ गया है। दातुन-कुल्ला करो। स्नान-ध्यान करो और फिर नाश्ता-पानी किया जाए! सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह से कहा।

—गोली किसकी और गहने किसके? छलांग लगाकर उठ बैठा मेहताब सिंह।

सब लोग जंगल पानी के लिए चले गए। कोई स्नान कर रहा था और कोई स्नान से लौट रहा था। किसी ने वाणी का पाठ छेड़ दिया था और कोई तैयारी कर रहा था। किसी ने अभी सोचा भी नहीं था। सिंह इकट्ठे हो रहे थे। जत्था आने वाला था। प्रतीक्षा हो रही थी। प्रसादे पक रहे थे। लोहे के नीचे आग लप-लप करती जल रही थी। रोटियां पका रही थीं घरों की औरतें। एक-एक औरत आटे की परात पका कर उठेगी। गुरु की लाडली सेनाएं आ रही हैं।

नाथों की टोली, जोगा और चौधरी भी आ पहुंचे। बोले—लो, हम भी आ गए हैं। हमारे साथ कुछ लाडली फौजें और भी हैं।

धन्य भाग्य! पधारो। गुरु का रूप हमारे घर आया है। हमारे घर के भाग्य जाग उठे। घर वालों ने कहा।

—यही फर्ज है। इसे कहते हैं लगन। यही कौम का प्यार है। यही साझा है। सुक्खा सिंह ने कहा।

—सब कुछ यहीं कमा लेंगे। गुरु की असीसों से इनकी झोलियां भर जाएंगी। चलो, हमें बचा-खुचा ही मिल जाए, तब भी हमारे पूर्ण भाग्य। मेहताब सिंह की आवाज थी।

—आ गई संगतें? बाहर से आए सिंहों ने कहा।

—प्यार खींच लाया है। आपके मोह में इतनी कशिश है कि चुम्बक को भी शर्म आती है।

—सब गुरु की कृपा है। कृपा है इन बुजुर्गों की। जिसके सिर पर नाथ का हाथ हो, वह लोहा भी सोना बन जाता है। एक नाथ ने कहा।

—अरदास आपके बगैर और कौन करे।

—सारे काम मैं ही करूंगा। सेली टोपी कल को तुम लोग पहनोग, और सारे काम अभी से ही बाटने शुरू कर दिए।

—अभी बहुत वक्त है। अभी हमें बजुर्गो की बहुत जरूरत है।

अरदास हुई। सबने की। सगत लगर के लिए बैठ गई। जब सब लोग खा-पी चुके, तो खाटें निकाल ली और सगत उन्ही पर आ जुडी।

—हा, अब क्या कार्यक्रम है? मेहताब सिंह ने पूछा।

—रास्ता उलीक दिया गया है। अगर तुम दोनों लोग अलग-अलग चलोगे, तो हम साथ-साथ चलेंगे। थोड़े फासले पर आगे पीछे। बायें-दायें। नायो के घोडे तुम्हारे चौगिर्द होंगे, पर तुमसे दूर। ऐसे किसी को शक नही होगा।

—हमारा रास्ता है : गगा नगर पहली चौकी, दूसरी चौकी सिचनाबाद। वहा से दीपालपुर, चुन्निया, खुडिया, कसूर को अलग छोड देंगे। तीसरी और चौथी चौकी का फैसला बाद म किया जाएगा। खेमकरन, पट्टी, तरननारन और अमृतसर। बस, यही रास्ता है।

चौधरी बोला—आज की चौकी हमारे गाव म होगी। वह गगा नगर से पाच कोस पर है—सूरतगढ। चम्पा बेचारी मुंह उठा-उठाकर देखती होगी।

—तुम्हारे कोस भी पाच-पाच कोस क बराबर हैं। फिर कभी आएग।

नही, सिंह जी, यह नही हो सकता। हमारी तो दिल की दिल में ही रह जाएगी।

—गगानगर पहुचकर सोचेंगे।

—चौधरी जी, क्या हम अभी भूल भुलैयों म ही फसे रहेंगे? जोगा बोला।

—हम उसी रास्ते आए हैं, जिससे गए थे। मैंने ऊंट को सूरतगढ की तरफ मोड दिया था। हमारा निशाना तो कोई नही था ना। हम तो भगवान् के आसरे जा रहे थे। लक्खी जगल, न जाना, न बूझा। मुंह उठाया था—कही जाकर तो पानी मिलगा। गुरु की कृपा हुई, सब काम ठीक हो गए। अब मेरा घर जरूर पवित्र करो।

—खालसा फैसला करेगा। अभी बहुत रास्ता पडा है।

—सवेरे चले और रात को पहुचे गगानगर। गगानगर कोई सामने है। रेत नापकर जाना है। नाथ न कहा।

अच्छा, जैसी सिंहो की इच्छा।

—गुरु से नाराज नही होते। नाथ ने चौधरी को पुचकारते हुए कहा। तुम्हारी आस पूरी होगी।

ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। हल्की-हल्की बदलियो ने आकाश को ढक लिया। सूरमाओं की आख लग गई। सभी लोग अमृतसर के सपने देख रहे थे।

●●

थड़ा साहिब

सूरतगढ़ वाला चौधरी गणा सिंह और जोगा एक ही ऊंट पर सवार थे। छन-छन करती डाची मुकन्दा सिंह और मेहताब सिंह के घोड़ों से आ मिली।

जोगा बोला—जानते हो, सिंह साहब, हम कहां पहुंच गए हैं?

—हमारी समझ में अभी तक कुछ नहीं आ रहा है। अभी तो रेत की ढेरियां ही नजर आती हैं और यों ही धक्के खा रहे हैं। हमें लगता है अभी हम राजस्थान में ही चक्कर काट रहे हैं। पंजाब पहुंचेंगे, तो बताएंगे कि हम कहां हैं। मेहताब सिंह ने कहा।

—मेरा गांव आ रहा है। वह रहा सूरतगढ़। देखने में भले ही नजदीक लगता है, पर अभी पांच कोस की दूरी है। हमारे कोस भी तुम्हारे कोस से बड़े होते हैं, चौधरी ने कहा।

—हां भाई, माल चोरों का और लाठियों के गज। मुकन्दा सिंह ने कहा।

—वह कैसे?

—माले मुफ्त, दिले बेरहम। माल मुगलों का और नापने वाले राजपूत। जगीरें भी अपने घर की बनी हुईं। मुगल भी चुप लगाए रहे, इसलिए कि उनका क्या है। घड़े की मछलियां हैं, जब जी चाहा, पकड़ लेंगे। ऐसी ही आदत पड़ गई है। इसलिए तुम्हारे कोस, तुम्हारे माप और तोल हम से बड़े हैं। लोभी में लालची का वास्ता है। मुगल जब खुद माल लेते हैं, तो उनके बाट दूसरे होते हैं और जब वे माल देते हैं, तो उनके बाट और होते हैं। यही रीत चली आ रही है। मुकन्दा सिंह ने बात का खुलासा किया।

—तुम्हारी बात ठीक है, सिंह जी। समधियाने में यही हिसाब किया जाता है? पंजाब ने कोई रिश्तेदारी की नहीं, इसलिए पंजाब वाले इन रस्मों से अनजान हैं। ये सारी जंजीरें हम तोड़ देंगे। वक्त आ रहा है। अब हमारा भाई-चारा सिंहों के साथ होने वाला है। अब रिश्ते मुगलों की तरफ से आयेंगे। पहले डोलियां यहां से दी जाती थीं, अब डोलियां दिल्ली से लाई जाएंगी। मेरा गांव आ रहा है। चम्पा कितनी खुश होगी। मेरे घर के भाग्य जाग उठेंगे। मेरा

घर पवित्र हो जाएगा। मेरे आगन मे सिंहो के चरण पडने पर आगन को चार चाद लग जाएगे। चम्पा खुशी से लाल हो उठेगी मेहमानो को देखकर। मेरी चम्पा अतिथियो की सेवा करना जानती है। बेचारी की आखें पक गई होंगी, इन्तजार करते-करते। डरती तो नही थी। अजीब ही दिन आ गये हैं। मुंडेर पर बैठी जम्हाइया ले रही होगी कि कब मेरा बापू आएगा। रात की रोटी हम घर जाकर खाएगे। सारे मोहल्ले मे धूम मच गई होगी कि गगा सिंह सिंहो के साथ गया है। लोग तो सिंहो के नाम की माला जपते हैं, लेकिन खुल कर इस डर स सामने नही आते कि टक्कर पहाड से है। कही राजस्थान उठ खडा हो, तो सिंहो को इतने पापड न बेलने पडें। चौधरी कहे जा रहा था।

—जरूरत ईजाद की मा है। जरूरतें अपने आप नए रास्ते ढूढ लेती हैं, सुक्खा सिंह ने जवाब दिया।

छोटा-सा काफिला चल रहा था। नाथो के चिमटे धडक रहे थे। दूर-दूर रहने वाली सगतें इकट्ठा हो रही थी।

—हम पहले पहुचते हैं सूरतगढ और तुम लोग बाद म आना। हम अपनी धूनी की आग रमा लें, तुम्हारा-हमारा साथ ही क्या। हम रसद-पानी गाव से इकट्ठा करेंगे और अपना तवा गर्म करेंगे। तुम्हे तो चौधरी के घर म ठहरना है। दिन म मिलाप होगा। नाथ ने कहा।

—सलाह तो अच्छी है। इससे किसी को शक भी नही होगा। डिबिया बन्द ही रहनी चाहिए। ढक्कन खोलने म अक्लमन्दी नही है, चौधरी ने अपनी बात रखी।

—गुरुमता परवान ? नाथ ने पूछा।

—परवान, सिंह जी।

नाथो ने अपना रास्ता पकड लिया। और चार मूर्तिया अपने मजे-मजे में सूरतगढ की ओर चल रही थी।

मेहताब सिंह बोला—सुक्खा सिंह, हमारी बात बीच मे ही रह गई थी। तुम्हारी कथा की हिलोर ने हमारा रास्ता इस तरह खत्म कर दिया, जैसे हम यहा उड कर आ गए हो। हम रेत का कही पता हो नही चला। गुरु-महिमा मे बडा आनन्द है।

—तो फिर सुनो, तुम्हे थडा (चबूतरा) साहिब की बात सुनाता हू। यह चबूतरा उसी चौमुखी आगन में है, दशनी ड्योढी के एकदम सामने। मेरे बाबा का विचार है कि कुदरत ने सारे रग बना रखे हैं। ऐसा न होता तो थडा साहिब कभी न बनता। अन्धेर साईं का, घर का मालिक घर आए, तो उसे दहलीज न पार करने दी जाए। शरीको का क्या भरोसा।

मैंने बाबा से पूछा—बाबा, यह क्या पहेली है ?

—पहेली नही, यह असलियत है, बेटा। जब तुम बडे होगे, तब तुम्हें

पता चलेगा दुनियादारी का। दराती के दात एक ही तरफ होते हैं, लेकिन दुनिया के दात दोनों तरफ होते हैं। यह किसी तरफ से पूरी नहीं उतरती। अच्छा बच्चू, सुनो, बालगुरु हरिकृष्ण दिल्ली में ज्योति-ज्योत में समा गए और जाते हुए सगत की जिद् पर कहते गए—'बाबा बकाले।' गुरु बनने वालों ने अपनी-अपनी नरद फेंक कर सगत को भरमाना शुरू कर दिया। गुरु गद्दी पर झगडा होना निश्चित था। धीरमल सोढी साहिबों में सबसे ऊपर था। मस्तक पर तेज। जब शरीक के चेहरे पर लाली भडकती देखी, तो उन्होंने अपने मुह थप्पड मार-मार कर लाल कर लिए। जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रग बदलता है, बिल्कुल उसी तरह शरीकों ने भी जिद् में आकर खाटें बिछा लीं। हर एक अपनी डफली बजाने लगा। बीनें बज रही थीं, तूतियां बज रही थीं। हर एक की अलग-अलग आवाज थी। गुरु का भ्रम होने लगा। कौन गुरु है? कौन गुरु बने? किसको गुरु माने सगत? इस बात का फैसला न हो सका। बाबा बकाले के चौराहे में किसी ने सेह का काटा बो दिया था और उसके बाद गायब हो गया था। बावरी हुई सगत बाईस खाटों के चारों ओर चक्कर काट रही थी। माथे टेक टेक कर उन्होंने माथे घिसा लिए थे। न गुरु मिला, न उसकी परछाईं। न गुरु प्रकट हुआ, न ही सगत को धीरज मिला।

इधर हरजी बीनों ने हरिमन्दिर साहिब पर अपना कब्जा पक्का कर लिया। जिसके हाथ जो माल लगा, उसने उसी को हडप करने की कोशिश की। हर सोढी साहबजादा पराये हक को गाजर की तरह चबा रहा था।

आखिर मक्खन शाह लुबाना की हिम्मत से गुरु प्रकट हुआ—गुरु तेग बहादुर। सबके सब बच्चों झाग की तरह बैठ गए। लाठियों वालों ने अपना कमब भी दिखाया। धीरमल की शह पर शीह मसद ने गोली भी चलाई सद्गुरु पर। गुरु बनने वाला गुरु बन गया, लेकिन लोगों ने ऐसे हालात पैदा कर दिए कि गुरु के लिए सास लेना कठिन हो गया। आखिर नूरानी ज्योति ने अन्धेरे को फाड कर एक लौ जगा दी। बादल अपने आप छट गए, चाद निकल आया। सारे पजाब ने जी भर कर चादनी पाई। पजाब ने अपने गुरु तेग बहादुर के आगे सिर झुका दिया और आशीर्वाद पाया।

गुरु गद्दी के बाद अमृतसर की यात्रा जरूरी थी। फैसला हुआ। गुरु नगरी की यात्रा की तैयारियां शुरू हुईं। इधर हरजी को पिस्सू पड गए। उसने धीरमल की हालत खस्ता होते देखी थी। घडी में ही देगें पकाने वालों ने चावलों को सफेद होते हुए देखा था। उसके पावों के नीचे से जमीन निकल गई। उसे दिन में तारे नजर आने लगे। हरिमन्दिर मुझसे तभी छिन जाएगा, जब गुरु के पाव अमृतसर में पडेंगे। बाहर ही रोकना चाहिए। लेकिन यह उसके बस का रोग नहीं था। हरजी ने कौडियां फेंकीं और नरदों को अपने हाथ में रखा। पुजारियों को बुलाया, हर एक को एक सौ एक मोहरें दीं, कई झूठे वादे किए

और कहा—गुरु के घोडे के अमृतसर की हद मे पाव रखते ही तुम लोग हरिमन्दिर से ऐसे निकाल दिए जाओगे जैसे मक्खन मे से बाल। गुरु के सिंह तुम्हारे साथ भी वैसा ही करेंगे, जैसा धीरमल के साथ हुआ। अब तुम्हे खुद सोचना है कि तुम्हें यही रहना है या पत्रा बाचना है। बात सिर्फ आठ पहर की है। अगर तुम एक दिन के लिए हरिमन्दिर के दरवाजे बन्द करके खुद किसी अन्धेरी कोठरी मे छिप जाओ, तो गुरु आएगा और अपने आप लौट जाएगा। गुरु का ठिकाना कीरतपुर है। ताला कोई तोडेगा नही और गुरु यहा पक्की तरह टिकेगा नहीं। घडी भर की शर्मिदगी और सारी जिन्दगी का आराम। हरिमन्दिर साहिब की आमदनी के तुम सब मालिक। अगर गुरु को दरवाजे खुले मिल गए, तो वह अपने किसी सिंह को यहा बिठा देगा और फिर तुम लोग डडे बजाते घूमोगे। लाभ-हानि तुम खुद सोच लो।

—यह बात कह कर हरजी चला गया और पुजारियो के मुह मे सोने का चम्मच देता गया। मुक्खा सिंह ने बात को बल दिया।

मेहताब सिंह बोला—गुरु-घर मे झगडा शोभा नही देता। लेकिन पगडी को छेडने वाले कब खामोश बैठते हैं।

अब अमृतसर की कहानी सुनो। माया के रूप देखो। माया की आख को पहचानो घूघट मे। माया की सुरमे वाली आख को परखो। सुरमा तो सभी लोग डाल लेते है, लेकिन आख को मटकाना बडा मुश्किल है।

मसदो को अपने पिस्सू पड गए। खीर और माल-पुए उन्हे हवा मे उडते नजर आए। एक मसद कह उठा—गुरु के तख्त के हम पाये हैं। हम स्रोत है पूजा की माया के। हम जिसे चाहे गुरु बना दें और जिसे चाहे, फूक मार कर उडा दें। डोरी हमारे हाथ मे है और गोल को हमने जेब मे डाल रखा है। गुरु के आस पास जो पुछल्ले चिपटे हुए हैं, वे हमारा निरादर ही करेंगे। उन्होने भी अपने पाव मजबूत कर लिए। अगर हमे सरोपे मिले, तो दसवध गुरु के आगे ढेर लगा दिए जाएगे, वरना डकार मारना हमे भी आता है।

—एक बात और। अभी बहुत-से लोग असली और नकली गुरु की पहचान नही कर सकते। यह बात भी हम लोगो को बतानी है। यह भी एक बहुत बडा भ्रम है। इस बात के लिए भी गुरु को हमारी जरूरत है।

गुरु का घोडा अमृतसर की मालगुजार मे दाखिल हुआ। शहर का कोई सम्मानित व्यक्ति, कोई पुजारी या मसद अगवानी के लिए नही आया। पता नही गुरु ने अमृतसर का क्या बुरा किया था। हरजी ने मसदो और पुजारियो के हृदय कठोर बना दिए थे। यह बात अभी तक किसी को नही बताई गई थी कि गुरु गद्दी पर गुरु तेग बहादुर विराजमान हैं। शोर तो धीरमल का ही हो रहा था। आवाज लगाने वाले उसी के नाम की आवाजें लगा रहे थे। कुछ सयाने लोग जानते थे, बाकी तो सब मिट्टी के माधो थे। दर्शनी ड्योढी पर ही घोडा

रुक गया। गडरैलो से उतरे गुरु के महल। यात्री की संगत ने भी वहीं अपना माल-असबाब रख दिया। गुरु के प्यारे नंगे पांव पैदल ही चल पड़े।

—हरिमन्दिर में कीर्तन की धुन सुनाई नहीं देती। रबाबी कहीं अफीम खाकर तो नहीं सो गए हैं। एक गुरमुख सिंह ने कहा।

सब कुछ जानने वाले साहिबों ने फरमाया—वाणी मध्यम सुरों में गाई जाती है।

—यहां तो कुछ और ही बात लगती है।

—धीरमल यहां कहीं विघ्नी तो नहीं डाल गया है और यहां भी शोहे घमंड जैसी पंचायत लगे। महाराज, अब के हम माफ नहीं करेंगे। हमारी नरमी ने इन्हें सिर पर चढ़ा लिया है। मक्खन शाह लुबाना ने कहा।

—जैसी करनी, वैसी भरनी। जो बो कर कोई गेहूं नहीं काट सकता। नेकी कर दरिया में डाल। आप अपना काम कीजिए और इन्हें अपना करने दीजिए। साहिब जी ने फरमाया।

मक्खन शाह की बात सच निकली। जब साहिब जी ने परिक्रमा में कदम रखे, तो देखा कि दर्शनी ड्योढ़ी के दरवाजे पर मन भर का ताला लगा हुआ है। सारी संगत के हाथों के तोते उड़ गए यह क्या हुआ ? पुजारी कहां गए।

—पुजारी चले गए ताला मार कर। वे अब कहां आएंगे ? चाबियां हरजी साथ ले गए हैं। एक आदमी ने कहा।

—भला हो उसका। साहिब जी ने कहा। संगतें स्नान-ध्यान करें। आ जाएंगे। तीखी दोपहर है। आंखें खुलती नहीं। जरा-सी ढल जाए दोपहर। पुजारी आ ही जाएंगे। संगत अपने काम-काज करे। दर्शन हम पुजारियों के बगैर भी कर सकते हैं।

सन्देश भेजा गया। पुजारी न आए।

—ताला तोड़ दिया जाए ?

—गुरु-घर का ताला नहीं तोड़ा जाता।

—हम तो माथा टेकने आए हैं। दर्शनी दरवाजा ही बन्द है, तो हम हरिमन्दिर में जाएंगे कैसे ?

—जिस तरह साहिब जाएंगे।

प्रतीक्षा होती रही। पुजारी न आए।

शान्त-स्वभाव सद्गुरु बोले—इसी चौमुखे आंगन में ही बैठ जाएं और यहीं वाणी का कीर्तन किया जाए।

सारी संगत बैठ गई। कीर्तन शुरू हुआ। रसभीनी वाणी मध्यम सुरों में गाई जा रही थी। रबाबी अपनी धुन में गा रहे थे। संगत लीन थी। भोग पड़ा।

पुजारी अब भी नहीं आए थे।

अरदास हुई। संगत उठ खड़ी हुई और उन्होंने परिक्रमा में बैठ कर ही माथा टेका। कुछ मनचले सरोवर में छलांगें लगा कर हरिमन्दिर साहिब के दर्शन करना चाहते थे। लेकिन सद्‌गुरु के कहने पर उन्होंने अपना इरादा बदल लिया। संगत पसर कर बैठ गई। इन्तजार और किया गया। जंगल में गया भी कोई लौट कर आता है? मोहरों की गर्मी ने श्रद्धा की ओर से बिल्कुल मुंह मोड़ दिया था। अफीम चाट कर पुजारी दरवाजे बन्द किए तीसरी कोठरी में सो रहे थे। अमृतसर वालों को तब खबर हुई, जब सद्‌गुरु गुरु नगरी को तिलांजलि देकर चले गए।

यह पुजारियों के दिल की आग है। माया के लोभ में ये सारी उम्र इसी *आग में जलते रहेंगे। 'अमृतसर वासी—अन्दर जलने वाले'—शाप* देकर अमृतसर को प्रणाम कर दिया। अपनी जन्मभूमि के दर्शन भी नहीं किए। ससुर का घर भी न देख सके गुरु के महल।

यह चर्चा घर-घर, आंगन-आंगन, गली-मुहल्लों में हुई। बातूनी लोग इकट्ठे हो गए। पुजारियों की शामत आई कि उनका घर से निकलना मुहाल हो गया।

—तेरे बाप का घर था कि ताला लगा कर चाबी नाड़े से बांध ली। एक पुजारी ने कहा।

—हरजी से मोहरें गिनवा कर तुमने खुद झोली में डाली थीं।

—गिनते वक्त तुम्हारी लम्बी दाढ़ी को लाज न लगी? तब तो होंठों पर जबान फेर रहे थे।

लोभी लालची और ढीठ को भी कभी शर्म आती है।

—कोई तालाब देखें डूब मरने को। नहीं तो अमृतसर वाले जूते मार-मार कर धुआं निकाल देंगे।

—तुम लोग कोढ़ी, लंगड़े, लूले होकर मरोगे। मांगने पर तुम्हें खैर भी नहीं मिलेगी।

—फिर कोई रास्ता ढूंढा जाए। तब तो अक्ल पर पर्दा पड़ गया था। अब तो होश ठिकाने पर हैं।

इतने में ही चूड़ियां भरी परात, पीढ़ियां, चकले और बेलने लेकर नाइन आ गई।

—यह क्या?

—सारे अमृतसर की औरतों ने सौगात भेजी है—पुजारियों और उनके हमदर्दों के लिए। तुम लोग घर चलो, बच्चों को खेलाओ, रोटियां पकाओ और हम सब चली हैं गुरु को मनाने।

महिलाओं ने सिर पर थालियां उठा लीं। गले में दुपट्टे डाल लिए।

दीवान सजा हुआ था। पहुच कर हुजूर के सामने नमस्कार किया। सिर झुकाये वे खड़ी रही।

हुजूर बोले—क्या हमसे कोई भूल हो गई ?

—नहीं हुजूर हमारे मर्द मर्द नही रहे। उनकी भूल बख्श दो, दाता। हमारी लाज रख लो। हमारी फैली हुई झोली भर दो।

दयालु महाराज घड़ी भर में ही पिघल गए।

उन्होंने फरमाया—माइया प्रभु का रूप।

माइयों की लाज रख ली गुरु ने। सबके गुनाह माफ कर दिए। गोपियो ने कान्हा को मना लिया। उस दिन से लोग बड़ा साहिब को प्रणाम करते हैं। यह उस गुरु की याद है, जिसने फिर कभी पंजाब में पाव भी नही रखा।

सुक्खा सिंह ने कथा का भोग यही डाल दिया।

—अच्छा, हम भी चलकर नमस्कार करेंगे बड़ा साहिब को। मेहताब सिंह ने श्रद्धा से भर कर कहा।

अमृत

मेहताब सिंह, मेरे बाबा ने मेरा मुंह दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ कर दिया। मैंने दर्शनी ड्योढ़ी से स्वर्ण मन्दिर की ओर बड़े गौर से देखा। गुरु जानता है, सूरज जैसी चमक, जिसके सामने मेरी आखें चौंधिया गई। जब मैंने दर्शन किए, माथा दहलीज पर झुक गया। मेरी आखो मे ज्योति के तेज का प्रकाश बढा। आत्मा बलवान् हुई, कलेजे मे ठडक पड गई। मेरी पलको ने धूल पोछी सरदल की। मेरे हृदय ने खुशियो की गठरिया बाध ली। मैं अपने दिल की हालत तुम्हे बता नही सकता। मेरी आत्मा तृप्त हो गई, जैसे मा की छाती मे ठडक पड जाती है बच्चे को सीने से लगा कर। मैं अपनी मा की बाहो मे झूल रहा था। ठडी हवा आ रही थी स्वर्ण मन्दिर की तरफ। कितना आनन्द आ रहा था, बयान नही किया जा सकता। सुक्खा सिंह ने फिर बात का सिरा पकडा।

—गुरु रामदास के आगन मे हर आदमी मा के दूध का आनन्द ले सकता है। विशाल आगन हर आदमी को अपने सीने से लगा लेता है। इतना बडा जिगर गुरु के अलावा और किसके पास होगा? जो गुरु की शरण आ गया, वह गुरु के सीने लग गया। गुरु का घर सबके लिए खुला है, जालिम हो या मजलूम। गुरु-घर की बरकतो ने सिंहो के हौसले बुलद किए हैं। वरना इतनी बडी हुकूमत से टक्कर लेना माथा तुड़वाने वाली बात है। सिंह अब राज छीन कर रहेंगे। गुरुओ ने हमे बख्शा है राज। मेहताब अपने जज़्बे की हिलोर मे कहे जा रहा था।

—हा, तो मै बता रहा था, स्वर्ण मन्दिर के बनने की जो कथा मेरे बाबा ने सुनाई, वह बडी रोचक है। मेरे बाबा मुझे सुना रहे थे और मैं हैरान-परेशान हो रहा था। इतने युगो का छुपा हुआ तीर्थ गुरु के प्रताप से प्रकट हुआ। मेरे बाबा ने इतनी पुरानी कथा सुनाई। मैंने तो कभी सोचा भी नही था कि यहा भगवान् राम भी आए होगे। राम आधी उम्र तो जगल मे घूमते रहे। कहा विन्ध्याचल और कहा सोने की लका। लेकिन मेरे बाबा ने यह बात पक्की करके दिखा दी कि भगवान् राम मजबूरन यहा आए थे। सुक्खा सिंह ने कहा।

—वह कैसे ?

—यहां महात्मा बुद्ध भी आए और गुरु नानक भी यहां तपस्या करते रहे। कहने वाले यह भी कहते हैं कि यहां वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था और उनकी कुटिया रामतीर्थ में थी। वाल्मीकि के शिष्य यहीं निवास करते थे। शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था यह। गाएं चराते हुए विद्यार्थी यहां तक आ जाते थे। ये बातें मुझे हमारे गांव के ग्रन्थी ने बताई थीं।

सुक्खा सिंह आगे बोला—यह बात तब की है, जब लंकेश की चिता की राख भी अभी ठंडी नहीं हुई थी। भगवान् राम ने विभीषण को राजतिलक देकर लंकाधिपति बना दिया और खुद अयोध्या लौट आए। यह बात आज की नहीं है। युग बीत गए। सदियां गुज़र गईं। सतयुग गया, द्वापर आया। अयोध्यावासियों ने उस दिन दीपमाला की, जिसे आज तक दीवाली के नाम से पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्र जी को राजतिलक दिए अभी गुरु वशिष्ठ के हाथ भी मैले नहीं हुए थे। भले उस दिन अयोध्या नगरी में जगह-जगह, गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले, खुशियां नाच उठी थीं, लेकिन ज्योतियों के धुएं की कालिख की तरह खुसपुस भी होने लगी सुक्खा सिंह रुक गया।

—रामराज्य में भी ऐसा हुआ करता था? मेहताब सिंह ने घोड़े को पुचकारते हुए कहा।

—रामराज्य ही था, लेकिन लोग तो दूध के धुले नहीं थे। जहां देवता बसते हैं, वहां पड़ोस में राक्षस भी ज़रूर होते हैं। राम अभी कल ही लंका से आए थे। उनके साथ कई राक्षस भी आए होंगे। जहां किसी ने कुछ दिन काटे हों, वहां के लोग दुश्मन बन जाएं, तो कोई सज्जन भी बन जाता है। राम के प्यारे ज़रूर साथ आए होंगे। अयोध्या नगरी में राम की पूजा होती, लेकिन जिसकी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाए, उसका कोई क्या करे?

सुक्खा सिंह ने भी अपने घोड़े की लगाम को ज़रा-सा झटका दिया।

—कोई अनहोनी बात हुई होगी? मेहताब सिंह ने पूछा।

—उससे भी बढ़ कर। कोई महारानी सीता को अपराधी ठहरा रहा था और किसी ने रावण का स्यापा किया। किसी ने कहा कि राम बेबस थे। कोई कहता, महारानी सीता सती-सावित्री है, मुफ्त यों ही उनके आंचल पर दाग लगा रहे हैं। असल में कोई भी आदमी अपने सीने पर हाथ रख कर मर्दों की तरह मैदान में नहीं कह सकता था। बात अन्दर ही अन्दर सुलगती रही। जितने मुंह, उतनी बातें। बात दरबारियों के कानों में पड़ी। छोटी सी बात का बतंगड़ बन गया। पंखों की डारें बन गईं। रामराज्य में भी रावण राज्य का भूत नाच उठा। उसके पैरों में घुंघरू थे। हाथ में ढोलक और पीछे ढोलक वाला। लोगों ने इस आदमी को मसखरा समझा। किसी ने उसे बहुरूपिया कहा, किसी ने सौदाई। होनी रामराज्य में भी होकर रही। मुंह तोड़ कर बात करने वालों के

अखाड़े दिन के समय कम लगते, लेकिन रात को छिनालें घघरी पहन कर नाचती। बात अभी निखर कर सामने नहीं आई थी। एक दिन वह एक चिंगारी बन गई तथा उसके पड़ोस का तिनका का ढेर। हवा का एक झोंका आया, चिंगारी उड़ी और तिनका म आग लग गई। आग का बगूला उठा, जिस सारी अयोध्या न देखा। यह बात रात क पहले पहर की है। महाराज राम को अपनी प्रजा से बड़ा प्यार था। रात बिरात भेस बदल कर जाते और अपनी प्रजा की बातें सुनते। दूसरा पहर निकल गया रात का। चौकीदार आवाज दे रहा था— जागते रहना। तीसरे पहर अपना घाघरा छनकाती आ गई होनी, जब सारी दुनिया अंधेरे की गोद म खर्राटे ले रही थी। रात का रामधारिया काला जामा पहन कर भगड़ा करना चाहता था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। सारी अयोध्या साग साय के घेरे म घिरी हुई थी। सरयू नदी अपनी मध्यम और मस्त रफ्तार से बह रही थी। होनी ने अपनी सुरमेदानी निकाली सुरमा डाला और आखें मटकाने लगी। शामत की बात कि वह धोबियों का मुहल्ला था। शोर मच रहा था। कुछ आदमी इकट्ठा थे। घर के एक कोने म मिट्टी का दीया जल रहा था। हल्की हल्की रोशनी कभी उनके चेहरों पर पड़ती और वे एक-दूसरे को पहचान लेते। एक बड़े मुह फट धोबी न सारे मुहल्ले को सिर पर उठा रखा था। शराब म धुत हुआ वह अपनी बीबी को पीटे जा रहा था, जैसे जमीन पीटी जाती है रामदूत भी शोर सुनकर उधर की तरफ आ निकले। एक ने आगे बढ़कर कहा—क्या बात है? क्या अपनी स्त्री को मारे जा रहे हो? रामराज्य म किसी पर जुल्म नहीं हो सकता।

—चलो चलो, तुम कौन हो हमारे मामले म दखल देने वाले? यह मेरी स्त्री है। मेरे जो जी म आएगा, मैं करूगा। तुम कौन हो?

—इसका कोई दोष भी है या यों ही खाल उतारे जा रहे हो? तुम्हारी पत्नी है तो?

—मेरा सिर घूम गया है या मैं पागल लगता हू? धोबी ने गुस्से मे कहा।

—तो बात क्या है? दूसरे दूत ने पूछा।

धोबी का पारा और भी गर्म हो गया और वह गज भर लम्बी जबान निकालते हुए बोला—बात। अभी बताता हू। और इसके साथ ही धोबिन की कमर म लात जमा दी।

एक दूत ने आगे बढ़ कर उसकी बाह पकड़ ली। धोबी के दोनों हाथ जकड़े गए।

हाथ ही पकड़े गए थे। जबान तो अभी आजाद थी। बोला—सुनो इस कमजात की करतूत। यह गश्ती धोबिन ने धोबी के मुह पर हाथ रख दिया।

—चल, कमजात कहीं की। तू क्या समझती है, मैं राजा रामचन्द्र हूं, जिसने सीता को रावण के घर में रहने के बाद भी अपने घर में रख लिया। मैं राम नहीं, मैं धोबी हूं। मेरा खानदान, मेरी जाति, यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि मेरी औरत मुझसे चोरी दीवार फांद कर किसी दूसरे के घर में रात गुजार आए। शरीफ आदमी इस तरह की कुलच्छनियों को घर में नहीं रखते। मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं छिनाल को अपने घर में नहीं बसा सकता। निकल जा मेरे घर से। तेरे जैसी चंडालन का मुंह देखना महापाप है। छिनाल, रात भर किसी दूसरे के साथ रंगरलियां मनाती है और मुझसे कहती है, मैं गंगा नहा कर आई हूं। तू सीधे से नहीं जाएगी, तो तेरी चुटिया उखाड़ कर हवेली पर रख दूंगा। रात के अन्धेरे में ही तू मेरे घर से निकल जा। दिन में कोई तेरा मुंह न देखे। कुलच्छिनी का मुंह देखने से मुहल्ले पर परछाईं पड़ जाएगी। अपने कलंक को अपने साथ ही ले जा। हमारी औलाद पर बुरा असर न पड़े। गन्दा फोड़ा, गन्दा खून, शरीर के लिए कोढ़ बन जाता है। इसे निकाल देना ही इलाज है। धोबी के मुंह में जो आ रहा था, वह बके जा रहा था।

—मैं निर्दोष हूं। मैंने किसी के साथ आंख मैली नहीं की है। मैं अपनी मौसी के घर गई थी।

—झूठ, बिल्कुल झूठ। चोर भी, चतुर भी। वे लाल पगड़ियों वाले तुम्हारे भाई होते हैं। धोबी ने कहा।

—सौत यों ही झूठ बोलती है। पतिदेव, वह मुझसे जलती है। सौत है, तो कुछ न कुछ तमाशा करेगी ही।

—बहुत हो चुका। युद्ध-भूमि का अन्त हो गया। चलो, हमारे साथ दरबार में चलो। वहां तुम्हारा सब फैसला हो जाएगा। दुनिया को आंख भर कर सोने दो।

रामदूत दोनों को पकड़ कर ले गए।

रात अभी बाकी थी। बाकी रात आंखों में बीत गई। मुर्गे ने बांग दी। पंछियों ने दिन चढ़ने का भेद खोल दिया। मन्दिरों में घड़ियाल बजे। पुजारी ने आरती की ज्योति जलाई। सरयू नदी के कन्धे भिड़ने लगे। अयोध्या नगरी के नर-नारी स्नान के लिए जा रहे थे। उधर रामदूत धोबी की पसलियां सेंक रहे थे। अरे कम्बख्त! क्या सब की जबान पर आना चाहते हो। जबान दबा जाओ। मर्द-औरत का झगड़ा बताओ और अपनी जान बचाओ। अपने घर जाओ और मंगलाचार करो। भिड़ के छत्ते को छेड़ कर तुम्हें क्या मिलेगा? साए हुए नागों को जगाना अच्छा नहीं होता। शेर की खोह में हाथ डालना गलती है। दूत धोबी को समझा रहा था।

—झूठ बोलना महापाप है और वह भी रामराज्य में। मैंने अपने अन्दर की आग बाहर निकाल दी है। अब मैं इसे फांक नहीं सकता। आग खाने वाले

लोग कोई और ही होते हैं। मैं प्राण दे सकता हू, झूठ नही बोल सकता। धोबी ने जवाब दिया।

—अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी। दरबार म पगडी बाध कर आना। राजा की अगाडी और घोडे की पिछाडी से बचना चाहिए। बुद्धिमान् लोग यही कहते हैं।

—रामराज्य का यह ऐलान है कि रामराज्य मे कोई झूठ न बोले। मैं राजा स विमुख हो जाऊ? धोबी ने कहा।

—राम को चार दिन सुख तो लेने दो। चौदह साल तक वनो की खाक छान कर आए हैं। जरा पाव तो सीधे करने दो। कमर की नसें तो सीधी हो जाए। राम तुम्हारे ही सुपुत्र हैं, तुम्हारे ही भाई हैं। कुछ रहम करो उन पर। रामदूत ने मिन्नत की।

—मैं झूठ नही बोल सकता। अपनी जान जरूर न्योछावर कर सकता हू। मैं देखना चाहता हू कि यह सत्यवादी राजा अपने बारे म क्या फैसला करता है? रामराज्य रहती दुनिया तक अमर रहेगा। मेहदी पीसने के बाद ही रग देती है। धोबी ने कहा।

रामराज्य क दरबार म उस धोबी को पेश किया गया। उसे वही शब्द दोहराने को कहा गया, जो आधी रात के समय अपने घर म मुह स निकाले थे। पण्डित, ब्रह्मज्ञानी, ऋषि सन्न रह गए। क्षत्रियो न तलवारो को मुह म दबा लिया। दरबारियो ने दाता तले अगुली दी। शूरवीरो ने अपने सिर झुका लिए।

धोबी कहने को तो कह गया, पर अब शहतूत की टहनी की तरह काप रहा था। मैं गुनाहगार हू, दोषी हू, मुझसे भूल हुई। मैं माफी चाहता हू।

—सच को दबाना झूठ को जन्म देना है। झूठा आदमी रामराज्य म नही रह सकता। धोबी ने सच बोला है। इसे छोड दिया जाए। बल्कि पुरस्कार दिया जाए। जाओ भाई, तुम्हारा कल्याण हो। राम किसी को दण्ड नही देंगे। राम अपराधी है। उसे दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। जाओ, सब अपना-अपना काम करो। राम भगवान् ने फरमाया।

धोबी का तो कुछ नही बिगडा, पर सारे राज्य का ताना-बाना घडी भर म बिगड गया।

दूसरे दिन ही आज्ञा पाकर लक्ष्मण राजमाता सीता को सरयू नदी के पास छोडने चले गये। घर म किसी को खबर तक नही थी। सिर्फ हुक्म था राम का, जिसका पालन हो रहा था। गगा आई, पार हुए और लक्ष्मण ने सीता के पावो पर सिर रखकर प्रणाम किया।

—मुझे इजाजत दीजिए। लक्ष्मण ने कहा।

—क्यो?

—मुझे इतना ही आदेश दिया है कि माता को गगा पार छोड आऊ।

कलहट सब के मन में उठ गया हुआ। बोला—किस-का घोड़ा है? आर्यपुत्र राम का। जिन्होंने सीता महारानी को बिना किसी दोष के वनवास दिया था। हम उस अपराधी को जरूर देखना चाहते हैं। चलो, इसी बहाने उस निर्दयी के दर्शन हो जायेंगे। जाओ, अपने राजा से कह दो, लव-कुश ने घोड़ा रोक लिया है। जिसका भुजाओं में बल है, छुड़ा कर ले जाये। हम क्षत्रिय हैं, धनुर्धारी हैं। हम घोड़ा नहीं छोड़ेंगे।

मेरे भाई ठीक कहते हैं। हमारे गुरु ने सीता माता की कथा हमें सुनाई है। आज हम लक्ष्मण को भी देखेंगे, जो अपनी भावज को अकेली गंगा-पार छोड़ गया था।

—बालको, यह तुम्हारी भूल है। ये दो छोटी-छोटी जानें इतनी बड़ी फौज का सामना कर सकेंगी? लक्ष्मण ने कहा।

—यह तो समय ही बतायेगा।

घोर संग्राम हुआ। लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत को पहले ही हल्ले में बेहोश कर दिया लव-कुश ने। सेना के पांव उखड़ गये। घोड़ा पेड़ से बंधा हुआ था। हाहाकार मच गया। खबर अयोध्या पहुंची। राम आये, धनुर्धारी सेनाएं लेकर—बालको, घोड़ा छोड़ दो।

—क्या एक बार ही कहना काफी नहीं है कि जिसकी भुजाओं में बल है, घोड़ा उसी का है? लव ने कहा।

—मैं राम हूं—अयोध्या का राजा।

—पहले मुकाबला, बाद में दूसरी बात। कुश ने कहा।

कहते हैं, लव-कुश के बाणों ने राम के होश भी गुम कर दिये। इतनी देर में सीता को खबर मिली। वह दौड़ी-दौड़ी आई और बेटों के सामने खड़ी हो गई। बोली—बस बेटो, अब तीर मत चलाना।

—नहीं मां, आज हम राम से पूछना चाहते हैं कि उन्होंने सीता को वनवास क्यों दिया।

—नहीं, बेटा, अब उसकी जरूरत नहीं है। वह कथा गुरु ने तुम्हें यों ही पढ़ा दी थी।

—यह नहीं हो सकता, मां। हमारे गुरु झूठ नहीं बोल सकते।

—यह तुम्हारी मां का आदेश है। तुम जानते हो, जो तुम्हारे मुकाबले पर खड़ा है, वह कौन है?

—कौन है, मां?

—तुम्हारे पिता आर्यपुत्र राम। सीता ने कहा।

—इसका मतलब है, हमारी मां महारानी सीता हैं।

—हां, बेटा—यह सच है।

बाणों के वार से राम घायल हो चुके थे। सीता और लव कुश ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। लोग कहते हैं कि तब इंद्रपुरी से अमृत मंगवाया गया और वह अमृत सारी सेना और मृत योद्धाओं पर छिड़का गया। योद्धा सजीव हो उठे। बाकी बचा हुआ अमृत यहां दबा दिया गया। गुरुओं के प्रताप से अमृत वाली जगह पर अमृत का सरोवर है।

इतनी बात बता कर मुखा सिंह खामोश हो गया।

घोड़े चल रहे थे। रास्ते की कमर टूटती जा रही थी। बागी और कथा दोनों को अमृतसर के निकट लिये जा रही थी।

●●

'हम घर साजन आये

जब बापू नजर आये तो चम्पा मुडेर पर बैठी थी। बापू के साथ महमान थे। वह झट से छलाग लगा कर दौडी-दौडी गई और भूरी से जा कर बोली—बापू आ गये। साथ मे महमान हैं। उठ, और दूध इकट्ठा कर। चाची की मटकी म से दूध डाल ला, ताई क' घर भी देख लेना। भाभी से कहना, जितना दूध है, दे दे। हमारे यहा मेहमान आये हैं। मैं खटिया बिछा कर दुतहिया बिछाती हू। पजाब से दुतहिया लेकर आये थ जीजा। चार खाटें तो बिछी हो। महमान क्या कहेंगे ? चौधरी की लडकी को कोई अक्ल ही नहीं है। महमान भगवान् की न्याई होता है। महमान घर आये, तो भगवान् घर आ गये। एक ही बात है। ले, जल्दी कर और घडा ले जा। और किसी को पता न चले। बापू के आने से पहले सारा काम हो जाना चाहिए।

चम्पा का रग निखरा देख कर भूरी बोली—अरी, तेरा वह भी आ रहा है ?

—वह कौन ?

—तुम्हारा कोई मेर जीजा बापू का जवाई।

—आखें तो तू सेक रही थी, बात मेरे गले मढ रही है। अरी, यह सिक्ख बडे अच्छे हैं। देख ले, निश्चय के कितने पक्के हैं। जान हथेली पर लिये घूमते हैं। हल्के-से सदेश पर चल दिये है सूरमा, मौत का मजाक उडाने। इनके चेहरों पर झलकता तेज देखा है तूने ? गभरू जवान, दृढ, वज्र शरीर। आखो मे इलाही नूर। किसी दिन पजाब के राजा बनेंगे य। चम्पा ने कहा।

—फिर कुहनियो तक चूडा और कगन भी तू ही पहनेगी। हम तो कोई अगूठी भी लेकर नही देगा। जीजा भले ही छल्ला द जाये। भूरी ने कहा।

—तू तो अभी से ब्याह रचा बैठी है। रोटी-टुक्कड तो खिला ले बारातियो को। जब डोली चलेगी, तो सारा गाव इकट्ठा होगा। घबरा मत। तू दूध इकट्ठा कर ला, तेरी सारी चाहत पूरी करूगी। परीबद और डडिया पहनाऊगी। —तू चूल्हा सुलगा। मै आई कि आई। भूरी घडा लेकर चली गई।

—चम्पा। अरी चम्पा। दरवाजा खोल। हमारे घर नारायण आये हैं! बापू की आवाज थी।

घोड़े बांधे गये। ऊंट को उसके ठिकाने खड़ा कर दिया गया। मेहमान हवेली में दाखिल हुए। पगड़ी विछी देख कर चौधरी बड़ा प्रसन्न हुआ। कहने लगा—बड़ी सयानी है मेरी बेटी। छोटी थी कि मां मर गई। ठोकरें खा-खा कर समझदार हो गई है। पधारो, गुरु के प्यारो। हमारे घर को भाग्यशाली बनाओ।

—बापू, हम जरा मुंह-हाथ धो लें। बड़ी धूल चढ़ गई है। हमारे मुंह पर पॅनेयन लगा दिया है धूल ने। दुलहिया मैली हो जायेगी। मेहताब सिंह बोला।

—दुलहिया तुमसे अच्छी है? बापू ने कहा।

चम्पा ने गागर भर कर आंगन में रख दी। सिंह हाथ-मुंह धोने लगे। सारा गांव अपने आप इकट्ठा हो गया।

सिंह आये हैं। धन्य भाग्य। मगा सिंह, हम तुम्हारे बहुत ऋणी हैं। तुमने हमारे गांव को पवित्र कर दिया। कौन? ठकुराइन। क्या लाई हो? ठाकुर कह रहा था।

ठकुराइन बोली—लड्डुओं का थाल है मेहमानों के लिए।

—वह पीछे कौन है?

—देवरानी।

—मेरे घर में पिन्नियों की टोकरी भरी थी अभी बोल उनके मुंह में ही थे कि जोधाबाई चौधराइन ने खिचौरी की परात सामने ला कर रख दी।

—चौधरी, यह क्या? सुक्खा सिंह ने कहा।

—मैं क्या जानूं? मैं तो तुम लोगों के साथ ही आया हूं। गांव वालों का चाव जाग उठा जब उन्होंने सुना कि सिंह आये हैं। ठकुराइन ने लम्बा सा घूंघट निकाल रखा था। बोली—चम्पा बेटी, तुम रोटी-भाजी के चक्कर में न पड़ना। रोटी हम लेकर आयेंगी।

—जेठ जी, मैं खीर बना आई हूं। मैं भी जेठानी जी के साथ आऊंगी।

—बापू, यहां मैंने जो कुछ बना रखा है, उसका क्या होगा?

—अरी, जब हम बैठी हैं, तो तुम्हारा क्या काम? अभी तुम बच्ची हो। गुड़ियों से खेलने की उम्र है। ये मेहमान कौन रोज-रोज आयेंगे।

भूरी ने दूध के गिलास दिये। चम्पा ने लड्डुओं का थाल भी साथ रख दिया। पास ही पिन्नियों की टोकरी भी रख दी।

—भोग लगाओ, सिंह जी। ठकुराइन बोली।

माता जी, इतना कष्ट करने की क्या जरूरत थी? सुक्खा सिंह ने कहा।

—नदी नाम सजोगी मेले, बेटा। देवर जी की कृपा से तुम्हारे दर्शन हो गये। क्या हमारा इतना भी हक नही ?

भूरी और चम्पा फूली नही समा रही थी।

—जोगा भाई, पहले तुम मुह मीठा करा लड्डुओ से। सुक्खा सिह ने लड्डुओ से उसका मुह भर दिया।

भूरी ने चम्पा के कान मे कहा—लो, अब तो चखनी शुरु हो गई। बधाई लो। अब तो महदी लगा लू ?

—बहुत ढीठ हो। समय-असमय तो देख लिया करो। चम्पा ने कहा।

—तुम न कर दो। मैं जयमाला डाल देती हू। भूरी ने जवाब दिया।

—ना-ना, ना री ना। चम्पा ने चूनर म चेहरा छिपाते हुए कहा।

●●

संतोखसर

—सुक्खा सिंह, बीबी चम्पा ने इतनी सेवा की है कि जब तक जीता रहूंगा, हमेशा याद रहेगी। यह गाव कभी सिक्खों की काशी बन जायेगा।

महताब सिंह बोला—अभी रात काफी है और सोना भी जरूरी है, पर गुरु-महिमा गाते नींद आ जाये, तो आदमी के भाग्य पूर्ण हो जायें।

—हां, सिंह जी, हम भी सुनेंगे। कृपा करो। ऐसे मौके किस्मत से ही मिलते हैं, चौधरी ने कहा।

—बाबा जी, अमृतसर की कथा सुनने का तो मेरा भी मन है। चम्पा बोली।

—मैं दूध ले आई हूं एक-एक कटोरा, सिर्फ एक-एक कटोरा। भूरी की आवाज उभरी।

—दूध पिलाना था, हमारे पेट में कुछ जगह खाली रहने देती। पहले चाची आई, फिर ताई और बची-खुची कसर भाभी ने पूरी कर दी। पेट है या चूल्हा।

—मेरी बच्ची के प्यार को ठेस न लग जाये। बस चाहे भोग ही लगा लो। बड़ी रीझ से दूध गरम करके लाई है।

चौधरी ने मिन्नत की। सब ने बच्ची का दिल रख लिया और फिर कथा का आरम्भ हुआ:

जब मनुष्य के मन में सरोवर की कल्पना आती है, तो उसके पांच रूप नजर आते हैं स से सच और स से सेवा, म का सम्बन्ध सुमिरन से भी है, स का मतलब साधन भी है, म संयम को भी कहा जाता है। पांच तत्व का पुतला जब यह ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वह मरण-जीवन से मुक्त हो जाता है। यह बात तो हुई गुरमुख सिंहों के लिए तथा साधारण आदमी के लिए सतगुरुओं ने पांच सरोवरों के स्नान बताये हैं। इन स्नानों से आदमी यदि निर्वाण हासिल नहीं कर सकता, तो कम-से-कम मुक्ति का मार्ग जरूर पा जाता है। उसके भीतर से डर-भय इस तरह निकल जाता है, जैसे

चदे के शरीर में से ओर। आप पूछेंगे, वे सरोवर कौन-कौन-से हैं और कहां-कहां हैं। हरिद्वार और काशी नहीं जाना पड़ेगा। हम अमृतसर पहुंच रहे हैं। सब कुछ यहीं है। इसीलिए अमृतसर का अपमान पंजाबी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

सुक्खा सिंह की कथा चल पड़ी थी।

—नई बात ही बना रहे हो, सुक्खा सिंह। तुम गुणों की गुत्थी हो। गुदड़ी के लाल हो। कमल कीचड़ में ही पैदा होता है। घड़े को ज्यों-ज्यों बजायें, त्यों-त्यों उसमें से आवाज निकलती है। बस, छेड़ने का तरीका आना चाहिए, फिर क्या है आदमी चौरासी के चक्कर से निकल जाये। उसका भय उसके पास तक न फटके। मेहताब सिंह ने कहा।

—तो लो, पांचों सरोवरों के नाम सुनो रामसर, बबेकसर, कौलसर, संतोखसर और अमृतसर। राम का जाप करते रहना। विवेक-बुद्धि का मालिक बन कर माया से ऊंचा उठना, बिल्कुल कमल के फूल की तरह। सन्तोष सब का धारक है। मौत को हमेशा गले लगाने वाला है। जिसने अमृत के सरोवर में डुबकी लगा ली, उसकी चाल में से मौत का भय उड़ान भर कर भाग गया।

अब बात अमृतसर की की जाय। गुरु रामदास ने अमृतसर की नींव तो रख दी, कुछ लोग भी बसा दिए, पर सरोवरों का जो सपना देखा था, वह पूरा नहीं हुआ। गुरुओं ने सरोवरों के जितने गुण और जितनी निशानियां बताई थीं, उन्हें ढूंढना खाला जी का घर नहीं था। इतने बड़े जंगल में सरोवर का कुंड ढूंढना किसी अंतर्ध्यान हुए बुजुर्ग का ही काम हो सकता था। पहला अटकल पच्चू संतोखसर का ही लगाया गया, और यह अनुमान सही निकला। संगत में बड़ा उत्साह था। लोग जी जान से सरोवर की सेवा कर रहे थे। तालाब खोदते-खोदते एक समाधि मिल गई। संगत रुक गई। गुरु को जा कर बताया। सद्गुरु स्वयं आये। जब उन्होंने समाधि देखी, तो वहीं बैठ गये। उन्होंने फरमाया कि अब असली सरोवर मिल जायगा। कुंड का रक्षक समाधि लगा कर बैठा है। गुरु रामदास ने जिस तीर्थ का जिक्र किया था, वह शायद यही है। बौद्ध मत वालों का जो सरोवर लुप्त हो गया था, उसे ढूंढने के लिए बौद्ध लोग आते हैं, पर खाली हाथ लौट जाते हैं। महात्मा बुद्ध यहां तपस्या करते रहे हैं। निर्वाण-प्राप्ति का यह भी एक द्वार है। कभी यह भी बौद्धों का तीर्थ रहा होगा। तीर्थ हम प्रकट कर रहे हैं, यह आज का नहीं, युगों पुराना है। पता नहीं, यहां कितने तपस्वी तप करते रहे हैं। ब्यास और रावी का दोआब तीर्थों के लिए महान् माना जाता रहा है। गुरु रामदास गोइंदवाल से नाक की सीध में चल पड़े, वाणी पढ़ते जाते। कहते हैं, गुरु की सुरति लगी हुई थी। वृत्ति ...कार हो चुकी थी। मस्ती में पैदल ही चलते गये। न कहीं ठोकर लगी,

न पाव अटका । जहां समाधि टूटी, वह स्थान वही था, जहां सतोखसर की खुदाई हो रही है। पालथी लगा कर बैठे गुरु देव ने अन्तर्दृष्टि से देखा, कोई प्रभु का प्यारा युगेश्वर युगों से समाधि में लीन बैठा है। युगेश्वर को समाधि से जगाना भी एक तपस्या है। बड़े यत्न किए जितने उपाय हो सकते थे, किए गये। अंत में सद्गुरु ने पानी का छींटा दिया। युगेश्वर की समाधि खुली, नेत्र खुले। युगेश्वर ने कहा—यह कौन-सा युग है ?

गुरु महाराज ने फरमाया—कलियुग।

—गुरु अमरदास हुआ ?

रामदास गुरु ने कहा—हुआ।

—मैं कैसे विश्वास कर लूं ?

—मैं गुरु अमरदास का सेवक हूं।

—जो कुछ मैं सुन रहा हूं, अगर वह ठीक है, तो गुरु-वाणी सुनाओ। विश्वास हो जायेगा।

रबाबियों ने गुरुवाणी गाई। युगेश्वर ने कहा—मेरी योनि कट गई। जल छिड़को, मेरी आत्मा अपने स्थान पर आ जाय।

—अमृत का कुंड कहां है ?

—थोड़ी ही दूर है। मेरे पास समय कम है। मैं उठ भी नहीं सकता। आप इरावती नदी की ओर मुंह कर लें। दो एक शख के करीब एक तालाब मिलेगा।

—शख से आपकी मुराद ?

—अच्छा ! *युग बदल गया है। पैमाइश भी बदल गई है।* धनुषबाण से नाप लो। एक शख एक धनुष की पैमाइश का है।

—और इसके गुण

—अमृत स्वयं अपने गुण बता देगा। जल्दी-जल्दी। मुझे देर हो रही है। इन्तजार नहीं कर सकता।

सद्गुरु ने पानी का छींटा दिया। आंख झपकने में तो देर लगी होगी, किन्तु युगेश्वर को शरीर त्यागने में क्षण भर भी नहीं लगा। युगेश्वर का सतोख मिल गया और इसीलिए इस सरोवर का नाम सतोखसर रख दिया गया।

मुक्खा सिंह की आंखों में नींद अठखेलियां कर रही थी।

—सो जाओ, सिंह जी, अभी बहुत रास्ता तय करना है। बहुत दूर है गुरु की नगरी।

—'पूरन ताल खटाया : अमृतसर विच जोत जगावे' मुक्खा सिंह ने वाणी की तुक पढ़ी।

दुख भंजन बेरी

मुक्खा सिंह ने दूसरी कथा शुरू की :

—वह दुख भजन बेरी दिखाई देती है न ? नजर आती है न ? नही, तो मरी तरफ देखो, बिलकुल हरिमदिर के पूर्व की तरफ। क्यो, ख्याल में आई बेरी ?

—हा-हा, मेरी मा ने मनौती मानी थी मेरे चाचा के बेटे की। मेरी चाची के बच्चे बचते नही थे। उसने कहा, बहन जी, अगर दुख भजन बेरी के आशीर्वाद से मेरा बच्चा बच गया, तो मैं सिंहो के डेरे पर छोड आऊगी। मेहताब सिंह ने कहा।

—सिंहो को क्या पडी है कि अनाथ बच्चे पालें। जोगा बोल उठा।

—नही, मेरी चाची ने सकल्प लिया था कि मेरा बेटा जब जवान होगा तो मैं उसे सिक्ख बनाऊगी। सारा पजाब सकल्प लेता रहता है। सारे पजाब का चढावा भी सिक्ख हैं। हर हिन्दू अपने बडे बेटे को सिक्ख बनाता है। ये सब जत्थे इसी तरह बने है। कुछ जोश म आ कर, कुछ वलवलो के उछाल से और कुछ सरदार बनना चाहते हैं। कुछ गुरुओ की बनाई कल्पनाओ को साकार करना चाहते हैं। हर कोई कोई न-कोई आशा लेकर सिक्ख बना। मेहताब सिंह ने अपनी बात को पूरी तरह खोल कर कहा।

मुक्खा सिंह ने कहा—लो भाई, अब जमकर बैठ जाओ सारा दिन हमें यही गुजारना है। नाथो के डेरे अपने ठिकाने पहुच जायें, तो फिर घोडो पर काठिया कसनी हैं। अब हमे फूक-फूक कर कदम रखना पडेगा। गश्ती फौज जगह-जगह कुलबुला रही है। उनकी आखो म मिर्चें झोकनी हैं। आज तुम भेस बदल कर दिखाओ। चौधरी, जरा सूफी फकीरों के चोले इकट्ठे करो। तसबीह भी ढूढो। सब अपना रूप बदलें और फिर हम एक-दूसरे को पहचान कर देखें कि कौन इस इम्तहान मे पास होता है।

—हम तो अब कथा सुनेंगे, हमारा तार इसके साथ जुडा हुआ है। रात को अपने करतब दिखायेंगे। अब कुछ समय के लिए गुरु गाथा सुनी जाए। मेहताब सिंह ने कहा।

—मैं शाम को यह तमाशा दिखाऊंगा। जो पहचान ले, सब के सामने उसकी टांग के नीचे से निकल जाऊंगा। अब सुक्खा सिंह जो लोरियां दे रहा है, उसका आनन्द उठाओ। हर आदमी को घडी-आध घडी से ज्यादा समय नहीं मिलना चाहिए। यह तो तडक-फडक का काम है। इधर नजर फिरी, उधर कानों में मुद्राएं। इधर सहती को भरमाया, उधर खेडे को रस्सी का सांप बना के दिखा दिया। रांझा हीर को मिल गया सहती ने मुराद को देख कर आंखों की प्यास बुझाई। राम लीला की तरह आदमी अपनी शक्ल बदले कि पहचानने वाले पहचान न सकें।

मेंहताब सिंह ने कहा—हमें एक बार हरिमंदिर के दर्शन तो करवा दो। फिर अपना जो डमरू बजाना हो, बजाते रहना।

—अच्छा सुनो, मैं तुम्हें दुख भंजन बेरी की बात सुनाता हूं। पहला कटाव इस बेरी के तने पर लगाया गया। उसे मुहूर्त कह लो, या शगुन। यह बात अच्छी तरह विश्वास के साथ कही जा सकती है कि कटाव लगाने वाले गुरु राम दास थे या बाबा बुड्ढा। बाकी तालाब की खुदाई सेवकों, श्रद्धालुओं, गुरु के प्यारों और मजदूरों का काम है। श्रद्धालु तो यहां तक कहते हैं कि गुरु स्वयं तालाब से टोकरी सिर पर रख कर लाते थे। चाहे शरीर ढीला था, लेकिन जवानों के सामने कंधा नहीं लगने देते थे। इस उद्यम को देख कर सारा पंजाब इकट्ठा हो गया। प्रेम-प्यार, श्रद्धा, लगन, भावना और उत्साह ने सरोवर की रूपरेखा बनाई। अगर दमड़े खर्च किये जाते, तो शायद हरिमंदिर का बनना कुछ और ही होता।

सुखा सिंह ने जरा-सा रुक कर सांस ली।

बीच में मेंहताब सिंह बोल उठा—इसे दुख भंजन बेरी क्यों कहते हैं?

—दुनी चंद खत्री, माझे का वासी, आस-पास के इलाके का माना हुआ शाह था। अकबर की तख्तनशीनी के समय दुनी चंद खत्री से कर्ज लिया गया था। कलानौर के दरबार की पूरी रकम एक एक पाई गिन कर शाह ने अपने पल्ले से चुकाई थी। मुगल हुकूमत में उसके नाम की हुंडी चलती थी। अकबर उसे अपने पिता की तरह मानता था। कई बार वह अकबर के साथ आगरा गया। अकबर ने एक बार उसे सारे पंजाब का ठेका दे दिया। सारा सरकारी मामला उसी के पास इकट्ठा होता था। वह चुकाये, न चुकाये, उसे पूछने वाला कोई नहीं था। जब हुकूमत को जरूरत होती, वही दमड़े गिन कर देता। जब भी वह किसी को मोहरें देता, तोल कर देता। गिनने की फुर्सत किसे थी? एक बार उसकी बीवी जिद करने लगी। बोली, मोहरें गिन कर दिया करो। शाह बोला—यह काम तुम ही कर के देख लो। बीवी ने हिम्मत की, लेकिन आधा दिन मोहरें गिनने के बाद ही दिल छोड़ बैठी। जब सांस लेने के लिए उठी, तो मुंह पर हाथ फिराया। शाह बीवी को देख कर हंस दिया। बीवी रूठ गई।

मुह सूज गया। रूठी हुई औरतो को मनाना आदमियो को आता है। सेठानी बोली—मेरे मुह पर क्या कोई हसी की चीज लगी है ? शाह फिर हस पडा। बीबी का गुस्सा सीमा पार करने लगा।

—भगवान, गलती हो गई। शाह के दिमाग शीघ्र ही एक बात आई। वह आईना उठा लाया और बीबी के सामने रख दिया। जब बीबी ने अपना चेहरा देखा, तो वह काला-स्याह था।

—हैं। यह क्या हुआ ? कोयलो की दलाली म मुह काला।

—तुमसे किसने कहा था मोहरें गिनने के लिए ?

—मेरे हाथो को कालिख लग गई है। मुखड़ा मैला हो गया है।

उस दिन के बाद किसी ने मोहरें नही गिनी। शाह का डका दिल्ली तक बजता था। कौन था, जो शाह के नाम से परिचित नही था ?

सुख से, उसकी पाच बेटिया थी, बेटा एक भी नही था। अकबर का बेटा बनाया, पर वह तो शहशाह था। इतनी दौलत को क्या आग लगानी है, जब उसका कोई मालिक ही न हो। लेकिन शाह को दौलत पर बडा गर्व था। भगवान् बना बैठा था। दौलत भगवान् का दूसरा नाम है। साप और शाह म कोई फर्क नही था।

जब शाह रसोई मे बैठता, तो पाच थालिया लेकर बेटिया भी बैठ जाती। जिसकी पाच बेटिया हो, दीवारें नही डोलती ? पर शाह का रत्ती भर फिकर नही थी। मजे मारे जवाई रजवाडो म ढूढने हैं, भूखो का मेरे आगन मे क्या काम। बेटिया दिनो दिन बडी होती जा रहा थी। एक-एक करके वे दरवाजे की चौखट छूने लगी। बाप की पगडी का शमला डोलने लगा। बडी बेटी के लिए वर ढूढने निकला। जयपुर पहुचा। दीवान का बेटा था। बात तय हो गई। बारात आई। शाह ने दहेज म इतना कुछ दिया कि लोग देखते रह गये। जब बेटी डोली म बैठी, तो बोली—बापू, तुम्हारा दिया बहुत कुछ है। मेरी ससुराल वालो का घर भर दिया है तुमने। भगवान् तुम्हारे भाग्य जगाये रखे। तुम ही हमारे अन्नदाता हो।

शाह के पैर जमीन मे बालिश्त भर ऊचे रहने लगे। बेटी ने तारीफ की शाह की। भगवान् बन बैठा। दौलत के अलावा उसे कोई चीज ही नजर नही आती थी। वह चाहता था कि वह जब तक जिंदा रहे, लोग उसका चबूतरा पूजते रहे। दूसरी बेटी का ब्याह हुआ। पहली की ही तरह। तीसरी ने भी यही कुछ किया। चौथी का ब्याह हुआ, तो उसने भी बाप का यश गया। लेकिन पाचवी बेटी चापलूस नही थी। खुशामद उससे होती नही थी। समझदार थी। वह जब भी बोलती, यही कहती—भगवान् की दया है। भगवान ने दिया है। भगवान ने दिया है, तो मेरे पिता दे रहे हैं। यह सब प्रभु की माया है। शाह

इस बात से बिगड जाता। वह कहता—देने वाला मैं हू। भगवान् कौन है? लडकी सब जानती थी। वह कहती—यह सब वाहेगुरु की कृपा है। शाह घडी भर मे लाल-पीला हो उठता। मा बीच मे आ खडी होती। बाप का गुस्सा कुछ मद्धिम पडता। सेठानी कहती—लडकी बच्ची ही है। इसकी बातो से खफा मत होवो। लेकिन शाह को कौन समझाये?

एक दिन लडकी बोली—भगवान् के सौ हाथ हैं। जब वह देता है, तो सौ हाथो मे देता है। आदमी दो हाथो से कितना खर्च कर सकता है? लेकिन जब वह छीनता है, तब भी उसके सौ ही हाथ होते हैं। बस दो हाथो से कितना कुछ सभाल लेगा? यह माया उसी भगवान् की है।

शाह की समझ मे यह बात नही आती थी। समझ म आ भी नही सकती थी। लडकी से वह बहुत दुखी था। एक दिन झगडा हो गया। लडकी बोली—भगवान् ने मेरी किस्मत लिख दी है—इसम कमी-बेशी नही हो सकती। आदमी कौन है, किसी की किस्मत बिगाडने वाला। न कोई बना सकता है तय, न कोई उसे बदल ही सकता है।

—यह बात बिल्कुल गलत है। मैं चाहू तो एक दिन म किसी को धनवान बना सकता हू।

—झूठ बापू, बिल्कुल झूठ। तुम किसी को दौलत दे भी दो और रात को चोर ले जायें, तब तुम क्या कर लोगे? नही, कोई किसी की तक्दीर नही पलट सकता। यह सब कुछ उस परमात्मा के हाथ मे है।

लडकी अपनी जिद पर अड गई थी और शाह अपनी जिद का पक्का था। वह बोला—मैं देखूगा, एक दिन तुम यह स्वीकार करोगी कि बापू की बात सही थी। लडकी ने सिर हिला दिया। जले-भुने बाप ने उसका विवाह एक भिखारी से कर दिया। लडकी ने खिले हुए माथे से शादी को कबूल किया। विवाह हो गया। डोली भिखारी के साथ चलती की गई। शाह के सिर पर राख डाली सारे इलाके ने, लेकिन शाह ने भी पगडी झाड दी। भिखारी का घर और लडकी लेकिन लड्की ने बाप के घर से एक फूटी कौडी तक न ली। चारो कनियां झाड कर घर से निकली। भिखारी को अपने सिर का स्वामी मान लिया। भिखारी कोढी भी था। लडकी उसे गाडी म डाल कर गाव-गाव ले जाती, उसे धोवती। घर-घर मागती। पहले उसे खिलाती, बाद मे स्वय खाती। लेकिन पिता के लिए उसके मुह से शुभकामनाए ही निकलतीं—बापू, तुम्हारे चौबारे बसते रहे। भगवान् तुम्हे इतना दे कि तुम सभाल न सको।

लोग कहते हैं कि लडकी सारे इलाके मे मागती रहती और अपने पति का पेट भरती। इस तरह एक साल निकल गया। किसी दिन खाने का न मिला, तो भी जिद्दी लडकी बाप के घर मागने नही गई। वह पिता की दहलीज को

ही भूल गई। जिसने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा। उसका निश्चय पक्का था।

सुक्खा सिंह फिर रुक गया।

—वह बाप था या कसाई। मेहताब सिंह ने कहा।

—धन्य थी वह लडकी। उसने एक आसू तक नही बहाया। किस्मत पर शाकिर रही, जोगे ने कहा।

—अकबर के समय जब वलीअहद जहांगीर किसी बात से तंग आ गया, तो उसने शाह की सारी जायदाद जब्त कर ली। सरकारी अहलकार उसकी सारी दौलत समेट कर ले गये। पर शाह भी पत्थर-दिल इन्सान था, उसके चेहरे पर रत्ती भर शिकन नही आई। अन्दर से चाहे वह खोखला हो चुका था। रस्सी जल गई थी, पर बल नही गया था।

एक दिन लडकी कोढी पति के साथ अमृतसर आ पहुची। बेचारी की गाडी टूट गई थी। उसने अपने पति को टोकरी म डाल कर सिर पर उठा लिया और वहा ला कर रख दिया, जहा दुख भजन बेरी है। टोकरी वहा रख वह खुद लगर से रोटी लेने चली गई। भगवान् की माया। लडकी का वहा देर लग गई। कोढी बेरी के नीचे बैठा माला जप रहा था। सामने देखा, एक जोहड म काले कौवे नहा रहे थे। जब वे उडते, तो उनकी शक्ल हसों जैसी हो जाती। कोढी को ज्ञान हो गया। उसने सोचा, अगर काले कौवे गोरे हो सकते हैं तो हिम्मत करके मै भी एक डुबकी लगा लू, शायद इसी से मेरा कोढ जाता रहे। कोढी कितनी देर मे पहुचा होगा, उस जोहड के पास। टोकरी टूट गई। लेकिन किसी तरह लुढकते-गिरते वह जोहड तक पहुच ही गया। उसने गोता लगाया। चाहे वह मुह के बल गिरा था, पर परमात्मा जानता है, उसके मुह का कोढ जाता रहा। उसे महसूस हुआ कि यह अमृतकुड है। अब उसने अच्छी तरह डुबकी लगाई। एक ही डुबकी ने उसका सारा कलक धो दिया। सारा कोढ झडकर जोहड म ही गिर गया। बिल्कुल निरोग हो गया कोढी। उसके जुडे हुए हाथ-पांव भी खुल गये।

इतनी देर म ही लडकी आ गई। ढूढने लगी कि मेरा कोढी कहा है। कोई शेर-बाघ तो नही खा गया। टूटी हुई टोकरी भाय-भाय कर रही थी। लेकिन भिखारी जोहड के किनारे बैठा मुस्करा रहा था।

—आओ रजनी, मेरे पास आओ। मैं ही तुम्हारा कोढी हू।

—झूठ, बिल्कुल झूठ। रजनी के चेहरे पर आसू ही आसू थे।

—डरने की जरूरत नही है। यह करिश्मा कुदरत का है। मेरी देह कुंदन बन गई है।

वह खडा हो गया। खूबसूरत जवान।—अब मै रोगी नही हू। लाओ,

लगर का प्रसाद खायें। कल मे मैं जो कमाऊंगा, वह गुरु के लगर मे दे दिया जायेगा। यह कष्ट गुरु ने काटा है।

रजनी की तपस्या, साधना और त्याग ने कोढी का कोढ दूर कर दिया। चंदन जैसा शरीर भिखारी का और सोनेरगी देह रजनी की—खूबसूरत जोडी।

इस घटना का सारा वृत्तात गुरु-घर मे पहुचा और गुरु-सेवको को अमृत-कुड का पता चल गया।

—यह अमृत की महिमा है। सरोवर सही जगह पर बना है। गुरु रामदास ने आशीर्वाद दिया दोनों गुरु-घर के सेवक बन गये। जितने दिन जीवित रहे, अमृतसर की सेवा करते रहे। इस जगह को इसीलिए दुख भजन बेरी कहा जाता है। सुक्खा सिंह ने कहा—अच्छा भाई, बाकी कल।

घड़ी भर मे सारी ढाणी बिखर गई।

●●

रख कर सोया जाता है। देखा, चौधरी ने झोली भर मोहरें ली हैं और पकडवा दिए सिह।

झूठ बिल्कुल झूठ। मैं मोहरो पर थूकता भी नही। चौधरी ने तलवार निकाल ली।

—बस, एक ही तलवार। मेरे पूरे दस्ते ने तेरी हवेली को घेर रखा है। अगर हम तेरी रगें न पी गए, तो हमे मुगल कौन कहेगा ? फिर आवाज का सुर बदला—तलवारें ढूढ रहे हैं सिह ? कष्ट मत उठाओ, सिह जी। मैं तुम्ह देता हू कृपाण। पर हाथ धोकर कृपाण को हाथ लगाना। यह श्री साहिब है।

—कौन, जोगा ?

—सत् श्री अकाल। जोगा ही हू।

—खूब, बहुत खूब। जवाब नही तुम्हारा।

—ये घोड ?

—आपके ही है।

—और यह दस्ते वाले ?

—सब नाथ हैं।

—और यह बाना ?

—गाव के चौधरी का चुराया है। चौधरी शराब के नशे म मस्त खर्राटे भर रहा है।

—तुम्हारे घाटे पड कभी हरे नही हो सकते।

●●

सियां मीर

शहरयार—मालिका नूरजहां का सबसे बड़ा बेटा, दूसरी तरफ दामाद और सोने पर सुहागा, जबरदस्ती का बादशाह। दूसरा बेटा भी उसी की कोख से पैदा हुआ, शाहजहां, जिसे उसने अंगूठा दिखा दिया, मां होते हुए भी। ये तीनों लोग हजरत मियां मीर के चेले थे। तख्त का हकदार शाहजहां भी बना घूमता था, पर मां ने उसके सारे दरवाजे बंद कर दिए थे, सिर्फ एक ही खिड़की खुली थी—खुदा पर भरोसा। मियां मीर के दरवाजे से किसे खैर मिलती है? बादशाह भले ही जोर में था, लेकिन शाहजहां की बांहों में भी काफी जोर था। एक दिन शहजादियों ने दो थाल सिर पर उठाए और नंगे पांव मटक-मटक चलती हुई वे मियां मीर के तकिये पर पहुंचीं। एक थाल दरबार की तरफ से आया था और दूसरा थाल मुमताज महल ने दिया था। रेशमी रूमाल से ढके हुए थाल मियां मीर की दहलीज पर रख दिए गए। हुजरे में कोई औरत तो जा नहीं सकती थी। हजरत ने दोनों थालों से रूमाल उठाए, एक सरसरी नजर डाली और सिर हिला दिया। शहजादियों का रंग उतर गया। एक भी कबूल नहीं हुआ। अल्हड़ लड़कियां जिद करने लगीं। एक थाल में मोतियों की माला थी और दूसरे में खजूरों की। हुजूर ने दूसरे पर हाथ रख दिया। यह बात बादशाह को नागवार गुजरी, लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। उसने एक बार फिर परखा साईं बाबा को। शाही परवाना लेकर आया अहलकार—हुजूर से पगड़ी मांगी है शाह ने। मियां मीर की भेजी पगड़ी का मतलब था कि दिल्ली और दूसरे सूबों ने बादशाह को कबूल कर लिया है। शहरयार से लोग बेजार आ चुके थे। फकीर लोगों की मर्जी के खिलाफ कैसे जा सकता था? वह तो लोगों का ही बंदा था—मेरे पास कौन-सी ढाका की मलमल आई है, जिसकी पगड़ी फाड़कर भेज दूं? बात नहीं बनी। अहलकार जिद कर रहा था। दरबार का हुक्म था। उधर फकीर भी अड़ा हुआ था। जब मामला तल्खी तक पहुंच गया, तो फकीर चिढ़ गया। उसने सिर से पगड़ी उतार कर फेंक दी और कहा—ले जाओ उठा कर। पगड़ी ही चाहिए न। मेरा चोगा तो नहीं चाहिए।

यह तमाशा शहजादियो ने भी देखा। कलेजा पकड़ कर बैठ गई—हजरत, इतना कहर। यह सहा नही जाएगा। रहम करो, अल्लाह के नाम पर। जुने-भुने मिया मीर ने कहा—इन्होने मेरी पगडी उतारी है। खुदा इनकी उतारेगा।

—तख्त का क्या होगा ?

—होना क्या है। वारिस आ रहा है।

अगूठी बनी पड़ी थी। नगीना हजरत ने जड़ दिया। एक दिन भी नही बीता, मोतियो की माला वाला शहरयार गिरफ्तार हो गया और खजूरो की माला वाला दिल्ली के तख्त पर आ बैठा।

शाहजहा कहा करता था— मुझे तख्त दूर दरगाह से मिला है।

शहरयार के शब्द जिन्होने सुने थे, वे कहते थे, वह बोला था—मैंने फकीर की गैरत को ललकारा था। मुझे उसका फल मिल गया।

मिया मीर खुदा की जबान जानता था। वली था मिया मीर। पजाब मे कौन ऐसा आदमी है, जो मिया मीर के नाम से परिचित नही है। दिल्ली वाले भी पानी भरते हैं हजरत का। मैंने सुना है, कई शहजादे उसके वुजू के लिए लोटो मे पानी भरा करते थे। यह बात सुक्खा सिंह ने महताब सिंह को बताई।

मिया मीर के बारे मे एक बात और भी मशहूर है। एक बार बलख का बादशाह दर्शन करने आया। फकीर अपनी मौज मे बैठा हुआ था। हाथी, घोडो, रथो, शामियानो ने मिया मीर की कुटिया के सामने डेरे डाल दिए। पैगाम भेजा गया। हुजूर ने मिलने से इन्कार कर दिया। आम की गुठली जैसी शक्ल रह गई बादशाह की। सारी शान शौकत धूल मे मिल गई। इज्जत उतर गई। दूसरे दिन बादशाह ने हौसला नही छोडा। नया प्रभात अभी आया ही था कि कमर मे चादर बाध कर हाजिर हो गया। हजरत ने फिर भी ध्यान नही दिया। तीसरा दिन क्या आया, अब तो धूल ही बची थी सिर मे डालने को। और कोई राह नही थी। उसने चादर खोल कर चौरास्ते पर दे मारी और लगोट बाधे-बाधे ही हजरत के दरबार मे जा हाजिर हुआ। इतनी बात देख कर हजरत मेहरबान हो गए। फरमाया—यह लो, बेटे, झोला। आटा माग कर लाओ हिन्दुओ और मुसलमानो के घर से। शाह के लिए जन्नत के दरवाजे खुल गए। शाह ने शर्म उतार कर एक तरफ फेंक दी और झोला उठा लिया। मागना किसे आता था ? फिर भी वह सारी दिल्ली से माग लाया। डेरे पर हाजिर हुआ। बोला— हजूर, यह झोला हिन्दू घरो के दान का है और दूसरा मुसलमान घरो की खैरात का है। फकीर फिर मुस्कराया। फिर शामत आ गई शाह की।

—नही, इसी तरह आज फिर जाओ और अब अल्लाह के नाम पर माग कर लाओ।

शाह फिर उसी रास्ते पर चल दिया। जब अल्लाह के नाम की हाक लगाई, तो आटा मागते-मागते बेसुध हो गया। अपना होश न रहा बादशाह को। इतना बेखबर था कि वह बता नही सका कि कौन-सा झोला हिन्दुओ का है, कौन-सा मुसलमानों का। दोनों झोलों की गठरी इकट्ठी लाकर रख दी। हज़रत ने पूछा—हिन्दुओ का झोला कौन सा है और मुसलमानों का कौन-सा?

शाह बोला—मुझे कोई खबर नही। मुझे तो अल्लाह ही अल्लाह नजर आता है। मैं बता नही सकता कि कौन-से झोले मे हिन्दुओ का आटा है और किसमे मुसलमानों का। मैं तो अब पहचान भी नही सकता।

हज़रत ने फरमाया—अब तुम खुदा को पा सकते हो। पहले तुम्हारे अन्दर बादशाहत की बू थी, अहकार था, तकब्बुर था। दूसरी बार तुम 'मैं' की चादर लपेट के आए थे। तीसरी बार तुमने 'मैं' की चादर उतार दी, लेकिन हिन्दू और मसलमान का फर्क न मिटा सके। पर आज तुमने उस फर्क को भी भुला दिया है। इसी बात से तुम परवान हुए हो। पहले तुम नकली शाह थे, कागजों के तुम्हारे किले थे, आज असली बादशाह बन गए।

इस शाह को लोग बुल्लेशाह के नाम से याद करते हैं।

—कमाल है भाई। तुम तो पूरे ग्रन्थी हो। मेहताब सिंह ने सुक्खा सिंह से कहा।

—सब बुजुर्गों की कृपा है। सुक्खा सिंह ने जवाब दिया।

मिया मीर की बात यहीं खत्म नही होती। साझा फकीर था। नफरत से बेनियाज। उसकी किताब म हिन्दू-मुसलमान का पाठ ही नही था। उसने तो बस एक ही बात पढ रखी थी कि सभी ईश्वर के जीव हैं। मिया मीर के हुजर मे बोरिया बिछी रहती थी। इन बोरियों पर शहजादे, शहजादियां, बादशाह, वजीर बैठना अपना कर्त्तव्य समझते थे। किस्मत वालो को ही ये बोरिया नसीब होती थी। हज़रत फरमाया करते थे कि बाहर कोई वस्तु निजात नही दिला सकती। दिल की हुजूरी के बगैर नमाज अदा करना फिजूल है। कीर्तन के बड़े आशिक थे। कितनी-कितनी देर रबाबियो से कीर्तन सुनते। अगर कोई नाक-भौं सिकोड़ता या कोई मुंह बिगाडता, तो वह बाह पकड कर बाहर निकाल देते, चाहे वह कोई बादशाह ही क्यो न हो। कहते—आदमी तीन चीजो का समूह है: नफस, दिल और रूह। नफस रखता है शरीअत से, दिल तरीकत से और रूह हकीकत से। रूह की भाषा कीर्तन है। तस्बीर तो यो ही दिखावा है। माला तो मन की है। जुबान पर अल्लाह का नाम होना ही असली तस्बीर है। इस बात ने कई हिन्दू तपस्वियो को भी भरमा लिया था।

जब तालाब खोदा गया, तो मन्दिर बनवाने की कल्पना की गई। जगह निश्चित हो गई। अब सवाल उठा कि इसकी नीव का पत्थर किससे रखवाया जाए? किसी ने बाबा बुड्ढे का नाम लिया, तो किसी ने [illegible] ।

लेकिन गुरु अर्जुन देव बड़े बेनियाज़ थे। उनके मन मे भेद-भाव नही था। वे एक अलग किस्म का मन्दिर बनाना चाहते थे—जो एकदम न्यारा हो। प्रचलित रस्मो को तोड कर उन्होने हज़रत मिया मीर को बुलाया और अर्ज किया—सरकार, आप इस मन्दिर की नीव रख दीजिए। मिया मीर को लालिया चढ़ गई। खुशियो से भर कर फकीर ने कहा—असली धर्म की नीव आज रखी जाएगी। स्वर्ग मन्दिर की पहली ईंट दूसरे धर्म के अगुवा ने रखी। एक धर्म दूसरे धर्म के कितना निकट आ गया। गुरु अर्जुन देव ने इस अनोम और चारो वर्णों के लिए खुले तथा भेद-भाव मिटाने वाले मन्दिर को कीर्तन गढ़ बना दिया। हरकी पौडी भी खुद सजाई। जब हरिमन्दिर बन गया, तो उस पर पुल बनाया जाना था। दर्शनी ड्योढी का दरवाज़ा कई बार बना और कई बार नापसन्द किया गया। जब कारीगरो ने पूछा, तो सद् गुरु ने फरमाया—इसका दरवाज़ा किसी धर्म स्थान का ही लगना चाहिए, तभी शोभा होगी।

—बनारस का कोई मन्दिर दरवाज़ा दे दे। झट मेहताब सिंह बोल उठा।

—नही। मेरे बाबा ने बताया था कि गुर महाराज की नज़र सोमनाथ के उस दरवाज़े पर थी, जिसे महमूद गज़नवी लूट कर गजनी ले गया था। चलो, अब जो मिलता है, लगा दो। जब तक वह दरवाज़ा नही लगता, तब तक इसका रूप नही निखरता। दरवाज़ा वही लगेगा, चाहे जब भी लगे। अब बात आई पुल की। उसकी लम्बाई चौरासी कदम रखी गई। आदमी एक-एक कदम पर अपनी एक एक मंजिल तय कर सकता है। चौरासी काटी जा सकती है। हर चीज़ धर्म की मर्यादा को सामने रख कर बनाई गई। गुरु अर्जुन देव इलायची बेरी के नीचे बैठकर फरमाया करते थे—मन्दिर के चार दरवाज़े होगे। चारो दिशाओ की ओर। लेकिन उनका मुंह किसी कूट की तरफ नही होना चाहिए। बल्कि दो कूनो के बीच दरवाजा रखा जाए। यह एक नई योजना थी। इससे हर मौसम, हर ऋतु म मौसम सुहाना रहेगा। चार वेद, चार आश्रम, चार मुक्तिया, चारो युगो म चारो वर्ण एक ही समय दाखिल हो सके। किसी को अनुमति लेने की ज़रूरत नही है। मन्दिर, मस्जिद का जब भी दरवाजा रखा गया, वह एक ही होता। हरिमन्दिर को बिल्कुल पानी की सतह पर रखा गया, इसलिए कि जैसे कमल पानी के सीने पर तैरता है, उसी तरह हरिमन्दिर भी सरोवर म रहेगा और हृदय कमल की तरह खिल जाएगा, दर्शनार्थी का। हरिमन्दिर को जान-बूझ कर नई जगह पर बनाया गया था। नम्रता के बिना हरि को पाया नही जा सकता। इसके गुंबद बैठे हुए से और ठोस हैं, जिसका मतलब यही है कि नम्रता मे ही सब कुछ है। अकाल तख्त के गुंबद देखकर आदमी आपे से बाहर हो जाता है और खुशी से छलागें लगाने लगता है। गुंबद खडा है, [illegible]

और आसन जमाती है। उल्टे कमल से अमृत झर-झर गिरता है और वही हरि का वास है। माया अपने-आप पीछे-पीछे घूमेगी। कमल को उलटाना ही हरि को पाना है।

हरिमन्दिर म जितने भी फूल-बूटे बनाए गए हैं, उनमे से जिन्दगी बोलती है। जीवन की चित्रकारी-हरियाली दिल म छिपी बैठी है और शीतलता मिलती है इस मीनाकारी को देखकर। इसी को देखकर और प्रभावित होकर ईरानी मुसव्वरों ने ताज महल बनाया। उसम कहीं किसी जानवर की शक्ल जैसी कोई चीज़ नहीं मिलती। सिर्फ ऐसी चीज़ें ही नक्काशी गई हैं, जिनम अध्यात्म है। ज़िन्दगी से दूर होने के कारण ही ताज महल को मृत्यु समान माना जाता है, जबकि हरिमन्दिर को जीवन-समान। ज़िन्दगी यहा खेलती और कलोल करती नज़र आती है।

इसकी खिडकिया इस ढग से बनाई गई हैं कि ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंके आते रहें। वर्षा ऋतु म जब मेघना घुंघरू पहनकर नाचे, तब भी ऋतु सुहानी लगे। चौमासे म पसीना न आए और सर्दी म जाडा न लगे।

अमृतसर मानसरोवर है, हरिमन्दिर जहाज़ है, बादबान वाह गुरु और मल्लाह है शब्द-गुरु।

इतना कह कर सुक्खा सिंह ने नमस्कार कर दिया। मेहताब सिंह और दूसरों ने भी दूर बैठे ही सीस झुका दिए।

—चलो, तैयार हो जाओ। अब हम पजाब की सीमाओं को छूना है। वक्त बहुत कम है। कहीं आराम नहीं मिलेगा। घुटना झुकाकर बैठना या सास लेना बहुत मुश्किल है। तरनतारन जाकर डेरे लगेंगे, तब कहीं सुख की सास मिलेगी।

एक नाथ ने कहा—हमारे जत्थे आगे-आगे जाएगे। तुम दोनो लोग इकट्ठे रहोगे। हम तुम्हारे लिए हर जगह कुछ निशान छोडते जाएगे, जिनका मतलब होगा कि रास्ता साफ है। जहा हम कोई बाधा नज़र आएगी, वहा खतरे के निशान होंगे और तुम्हारे पीछे हमारा दूसरा जत्था होगा। तुम्हें इस तरह लेकर जाएगा, जैसे हथेली पर छाला। हमारी सारी योजना तरनतारन जाकर बनेगी। हमारे साथी अमृतसर पहुचने ही वाले हैं। यह सारा काम हमने तुमसे चोरी-छिपे किया है।

नाथों ने अपनी बात रख दी।

आवाज़ आ रही थी—अलख निरंजन। जय गुरु गोरख नाथ।

सुरमा डालना जितना आसान है, उतना ही उसे मटकाना मुश्किल है। सुक्खा सिंह ने कहा।

—'गुरु जिन्हा दे उडणे, चले जाण छड्ड।' चौधरी ने कहा।

—कब चलना है फिर ?

—अभी। चल री लड़की, लगा ताला और चाबियां दे आ ताई को। और कहना, हम कुम्भ नहाने जा रहे हैं। साथ मिल गया है यात्रियों का। तुम्हारे लिए गंगाजल लेकर आएंगे। चौधरी चम्पा से बोला।

—अभी आई चाबी देकर। चम्पा खुश हो गई।

—पिन्नियां चाची ने दी हैं और लड्डू ताई ने, चूरमा मेरी मां ने पोटली में बांध कर दिया है। भूरी ने कहा, सिंह भूखे न जाएं बसते घर से। फिर वह जरा-सी नजर घुमा कर बोली—गोटे वाली चूनर बता रही है कि चम्पा भी आपके साथ जा रही है।

पत्तन मिचनाबाद का

मेले और मुकलावे का चाव युवतियो को साम नही लेने देता। भोली
चम्पा क्या जाने मेला-अमावस। बैसाखी का नाम ही झाझरो म जीवन भर देता
है। जवानी उमड-उमड पडती है। लेकिन जहा सिर कटवाने वालो की मण्डी
हो, वहा मेला किस भाव लगेगा? यह कचन देवी क्या जाने। चलो, ले चलो,
इसकी रगो मे भी राजपूती खून है। बेटी किसकी है? डोलेगी नही। अगर डोल
गई, तो राजपूत नही। राजपूतनिया क्या जग म नही जाती थी? यह धर्मयुद्ध है,
सग्राम है। कोई बात नही, सारा अमृतसर बसता है, यह भी किसी गुरुमुख सिह
के घर मे रात काट लेगी। गुरु का दरबार देख आएगी। भाई घोडी पर चढने
वाले हैं—एक बहन तो साथ होनी ही चाहिए। चम्पा का दिल मोह लिया है
इन गुरु के प्यारो ने। इनके भाई-बहन के अटूट रिश्ते को मैं कैसे तोडू? चम्पा
अपनी भाभी का घूघट उठा कर पनेठी की मुहदिखाई देना चाहती है। अबोध
बच्ची नही जानती कि इस बारात की क्या कीमत अदा करनी पडेगी। 'मिलनी'
में रेजा मिलेगा या पगडी। चलो, भाइयो की 'घोडिया' गा लेने दो। भाई की
शादी देखने का बडा चाव है मेरी बेटी को। चौधरी गगा सिह सोच रहा था।

—बापू, सिह तो अपनी राह पर चल दिए, हम किसके साथ जाएगे?
चम्पा बोली।

—सिह बैठे तो रहगे नही। उनकी मजिल बहुत दूर है। हम भी हल्ला
मारें, तो हम भी जा मिलेंगे। हम तो सभी रास्ते मालूम ही हैं। देखा भाला
रास्ता है। चल दिए, तो उनसे पहले हम उस पडाव पर जा पहुचेंगे। एक
पडाव छूट गया, तो दूसरे पर जा पकडेगे। हम एक बार अपने ऊट को उकसा
दें, तो हमारी जवान डाची साम ही वहा जा कर लेगी, जहा हमारा ठिकाना
होगा। हम अलग जाना चाहिए। चौधरी ने कहा।

—बापू, सिह बडे स्वार्थी निकले। हम बताए बगैर ही घोडो पर सवार
हुए और अपनी राह पर चल दिए। हम मुंह उठाए देखते ही रह गए। हमारी
आखें प्यासी हैं। बापू, क्या इनकी प्यास कभी बुझ पाएगी? चम्पा बोली।

—भोली बच्ची, हम तो बैसाखी देखने जा रहे हैं और ये मौत से दस्त-

कमर बाधे खड़ीं पत्तन पर

नायों का डेरा। धूनी सुलग रही थी। लपटें उठ रही थीं। धूनी की आग पुकार-पुकार कर कह रही थी—पंजाब तुम्हारा है, राज के वारिस तुम हो। नायों की टोली पालथी लगाए बैठी थी। ऊंट भले ही दूसरी जगह पर आवाज लगा रहा था, लेकिन चौधरी धूनी की आग सेंकने में मग्न था।

मिचनावाद का पत्तन भी पार कर आए थे, लेकिन सिंहों का कोई पता-ठिकाना नहीं था। झट-से छू मन्त्र हो जाते हैं, मदारी के डंडे की तरह।

—हिरन हुए सिंहों का कभी पता चला है जोकि तुम्हें चलता। एक जोगी ने कहा, आप लोगों को अमृतसर जाना है ?

—घर से तो यही सलाह करके आए थे। स्नान-ध्यान हो जाएगा, साथ ही गुरु के प्यारों के दर्शन हो जाएंगे, मगर दम रास्ते में ही टूटता नजर आता है। कमर की हड्डी जवाब देती जा रही है। गुरु ही अपने पास बुला ले, तो शायद दम बच जाए। चौधरी ने कहा।

एक नाथ ने बीच में ही टोक दिया और बोला—अमृतसर पर तो पहरा बैठा हुआ है। किसी आदमी की हिम्मत नहीं हो सकती कि स्नान कर सके। तुम लोगों ने यह इरादा कैसे कर लिया ? वहां तो मस्सा रंघड़ के बगैर कोई चिड़िया तक चोंच नहीं भर सकती। कभी भूल-चूक से कोई सिंह चला जाता है, कोई भूल से भी सरोवर में हाथ सुच्चे कर ले, तो या तो उसे उसी वक्त कत्ल कर दिया जाता है, या बन्दीखाने में उसे डालकर उसकी जान अज़ाब में डाल दी जाती है। सब कुछ जानते-बूझते भी क्यों मौत के कुएं में छलांग लगाने जा रहे हो ? लौट जाओ।

—बाबा अगर तुम्हें अपने आप पर तरस नहीं आता, तो इस भुजंगी पर ही तरस खाओ। तुम तो खा-पी जी चुके। इसे तो चार दिन जीने दो। इस समय अमृतसर में साधारण आदमी का कोई काम नहीं है। सिरकटा भले ही आ घुसे घोड़े समेत सरोवर में ! वैसे, लोग अमन-अमान से रहते हैं। चौधरी मस्सा अमृतसर की जनता को नहीं छेड़ता। उसे तो सिर्फ सिक्खों से चिढ़ है और वह

सिक्खों का ही वैरी है। जिन्दा साप को तो मार कर कोई गल से उतार लेगा, लेकिन मरे हुए साप को कोई क्यों गले म डालेगा ? एक नाथ ने कहा।

चौधरी को ताव आ गया। रोष से भर कर बोला—उम्र भर का पटटा लिखवा रखा है उसने। कभी तो चौराहे पर भाडा फूटेगा ही। सारी उम्र उनकी तूती थोडे ही बोलती रहेगी ? मारी उम्र किसी का जलाल नही रहता। सिंहो का दाव लगने की देर है, वे उसकी वह हालत बनाएगे कि मस्से का कोई नामलेवा नही बचेगा। कोई ठौर-ठिकाना नहीं बचेगा उसक लिए। खोज-खबर तो बडी दूर की बात है, पौदा उखडा तो जड तक नही मिलगी। हुकूमत की बात ढीली पडती जा रही है। अहमदशाह अब्दाली हमले की तैयारियां म लगा हुआ है, और खैबर के दर म बहक रहा है। लाहौर वाले उससे गठजोड कर रहे हैं। अमृतसर की तरफ उनका ध्यान कम ही जाएगा। पजाब म अगर टक्कर लेनी पडी, तो फिर सिक्खों के साथ गठजोड करके मुकाबला किया जाएगा। यह तो हुई न कोई बात। अकेली हुकूमत कुछ नही कर सकती। इसलिए लाहौर वाले सिंहो पर भी डोरे डालेंगे और वैर-विरोध को छोड देंगे। अकेला मस्सा रघड टागें नही पसार सकता और न ही उसकी अकड कोई सहेगा। मैंने सुना है कि आजकल हरिमन्दिर म रंडियां नाचती हैं। छुटटड औरतों की डार छन-छन करती फिरती है। मटको पर मटके शराब रोज उडती है। कौन-सा दुराचार है, जो वहा नही होता। सिंह कितने दिन कानों म तेल डाल कर पड रहेंगे ? उन्होंने बहुत दिनों तक अपने सीने पर दीया जलवा कर देख लिया है। कोई तो फूक मार कर बुझाएगा। हम तो गुरु के आसरे जा रहे हैं। देखेंगे, वहा किस भाव बिकती है। लोग स्नान करेंगे, तो हम भी कर लेंगे। नही तो दूर से ही प्रणाम करके मन की प्यास बुझा लेंगे। लौट कर तो अब हम जाएगे नहीं। हम साप निकाल निकाल कर मत दिखाओ। हम घर जाकर कौन-सी मूग दलनी है। चरी बोनी है, कोई वो देगा। घर से निश्चय स्नान का बना कर आए हैं। स्नान करके जाएगे। चाहे आषाढ़ी आ जाए और चाहे श्रावणी गुजर जाए। चौधरी न पूरी बात एक ही सास में कह डाली।

नाथ बोल उठा—चौधरी, लगता है, तुम्हारा सिंहो से प्यार अभी नया-नया ही है। यह राह बडी कठिन है। काटों की बाड है। विरले ही लोग इस राह पर चलते हैं। मैं हैरान हू, तुमने तो एक ही रट लगा रखी है। सिंहों का ही पाठ दोहराए जा रहे हो। पजाब मे सिंहो का नाम तक लेना अपराध है। सिंहो के साथ बैठन भर से ही उलटी खाल उतरवानी पडती है।

—नाथ जी, मैंने भले सारी उम्र भेडें चराई हैं, फिर भी मैं आदमी को पहचानता हू। आदमी की परख मैं कर सकता हू। विधिचन्दियों मे बात करना और कुरता उठा कर पेट दिखा देना कोई हर्ज वाली बात नही है। मेरा साथ बिछुड गया है। मैं तो सग की तलाश म हू। मैंने अपने भाइयों के सामने अपना

कुरता उठाया है। मैं पहचानता हू। चौधरी ने कहा। क्यो नाथ जी, मैंने पहचान लिया है न? मैं अन्धेरे मे ही तो हाथ नही मार रहा हू? सूरज के आगे ही सीस झुकाया है?

—पहचान तो लिया है, लेकिन इतनी जल्दी खुलना भी मुसीबत बन सकता है। अच्छा, तो आप ये जोगे को लक्खी जगल ले जाने वाले। अब आई न बात समझ मे। भला किया। यह पुण्य सारे पजाब के लिए हुआ। सज्जनो, सिहो के खुले दर्शन आपको पट्टी पहुचने पर होगे। अभी हम बिखरे-बिखरे हैं। हम डर है, और सूचना भी मिली है कि गश्ती फौज का दस्ता शिकार करते-करते कही इधर ही न आ निकले। इसीलिए आप से मेल नही हुआ। मेला लगाने की जरूरत नही है। आप सिहो की रखवाली म हैं। सिह दूर नहीं हैं, आपके आस-पास ही मडरा रहे हैं। वे आपको देख रहे हैं, लेकिन आप उन्ह दख भी लें, तो पहचान नहीं सकेंगे। चले चलो मित्रो, आप ठीक राह पर चल रहे हैं। दीपालपुर आने वाला है। रात शायद वही काटनी पडे। उससे आगे चुनिया, उसको पार किया, तो खुड्डिया और फिर सामने खेमकरण। डेरे वहीं लगेंगे। पट्टी का रास्ता साफ और सुरक्षित लगा, तो पट्टी म ही विश्राम किया जाएगा। अगली बात पट्टी म जाकर खुलेगी। इन पहेलियो को खोलना बडा कठिन है। वहा अलम्बरदारो के घर म शादी का ढोल-ढमाका है। ढोलकी बज रही है। मुजरे हो रहे हैं। नियाजें बाटी जा रही हैं। अखाडे लगे हुए हैं। मछिन्दर डेरे लगा कर बैठे हुए हैं। ब्याह ने सभी गावो म ढोल बजा दिया है। बडी धूम-धाम से कारज रचाया है अलम्बरदारो ने। हम भी उनम जा मिलेंगे। वैसे पट्टी सिक्खो के लिए मौत के दहाने पर खडी है। पट्टी के बगैर हमारा रास्ता साफ नही होगा। वहा काफी लोग हैं, हमारे सहायक। वहा जितने हमारे सखा हैं, उतने ही शत्रु भी हैं। पट्टी पर हम अपना पडाव डाल लें, तो फिर अमृतसर पहुचने म कोई कठिनाई नही होगी। पट्टी मे हम अमृतसर की सारी ऊच-नीच का अन्दाज मिल जाएगा। सारी कहानी की शुरूआत वही से होगी। ये ककडा से भरे रास्ते और चलना नगे पाव, पाव भले ही बिंध जाए, छिल जाए, सिह तो इन्ही कठिन राहो पर चलते रहेंगे। इसके बगैर हम चक्रव्यूह म दाखिल नही हो सकते। जयद्रथ किले क मुह पर बैठा, आखे दिखा रहा है। अभिमन्यु चाहे किला तोड भी द, लेकिन उसे किले से सही-सलामत निकाल लाना बडा कठिन है। द्रोणाचार्य अमृतसर की नाभि पर बैठा हुआ है। हमारे महारथी कही द्वार पर ही हाक लगाते न रह जाए। इसलिए जयद्रथ के गल म रस्सी डालना और उसकी टागो को बाधना और उसे घोडे से नीचे गिराना—इन्ही के ख्याल म मग्न हैं सिह। इसीलिए सिहो का अमृतसर पहुचना और पहल से ही अपने मोर्चे पर बैठ जाना जरूरी है। हमारे गड बन गए हैं। जब हमारी बाह आपस म भिडने लगी, तो फिर मूजियो को मारना मुश्किल नहीं

होगा। शिकार चाहे हिरन का ही करना हो, मचान शेर का ही बाधना चाहिए। ला भाई, हमे जो कुछ कहना था, कह चुके। अब तुम जानो और तुम्हारा काम। वैसे डरने की कोई बात नही है। तुम्हारे इर्द-गिर्द नाथो ने बाड़ बना रखी है। सारी सगत को तुम्हारा ख्याल है। मेले मे बेधड़क होकर घूमो। कोई तुम्हारा बाल भी बाका नही कर सकता। खुशिया मनाओ। भुजगी सिह को कौन भूल सकता है? पराठे अभी भी स्वाद दे रहे हैं। ज़बान अभी भी पिन्नियो और चरमे का चटखारा ले रही है। चम्पा ने दूध के कटोरो मे सिहो को निहाल कर दिया था।

—बोलो, चम्पा बेटी, ठीक से हो? कहकर नाथ अपने रास्ते पर चल दिया।

चम्पा शरमा गई। नाथो की आख बडी तेज है। दिल के विराग का सुरमा डालते हैं। नाथो की आख दिये की तरह चमकती है।

●●

अलम्बरदारों की हवेली

अलम्बरदारो की हवेली म मशाल जल रही थी। सारा गाव एकत्र था। आदमी पर आदमी सवार था। कसूर की डेरेदारनिया उतरी हुई थी। मुजरा जवानी पर था। झाझरें छनक रही थी। घु घरू निलज्जता स बोल रहे थ। तबला बहक रहा था। सारगी पर गज घम रहा था—उसकी आवाज दिल खीच लेती थी। झाझर वाली दिल को चीरती निकल जाती। जन्मजात छडो की टोली आखे सेक रही थी। जोगा जन्मजात छडा था। 'छडे दी अख एया मचदी, जिवें मचे रडी दे घर दीवा'। झाझर वाली आग लने तो क्या आती, आई और लूट कर ले गई। छडो का सीना फूक गई। एक ने जरा सी आख दबा दी। बाबा-पोते हरा दिए। पर छडो को कौन रोकता। बोले—'काहनू कढदी ए कुपत्तिए गाला, छडे दा विहडा पुन मर जाऊ।' जुम्मा और फत्ता पहले ही रडी के डेरे का चक्कर लगा आए थे। दोनो रडी की आख म खटकते थ। रडी ने जहाँ दिखाई, तो भाग खडे हुए, नगे पाव ही।

प्रभु की इच्छा। मुजरे के अखाडे मे सबसे आगे खानदानी छडा की पक्ति बैठी थी। जब छोटा-सा घू घट काढ कर रडी ने चक्कर लगाया, तो जवानों की ढाणी लोट-पोट हो गई। चौधरी नशे म धुत थे। कमर को हिचकोला दकर जब गोरी ने गीत शुरू किया, तो सारी महफिल झूम उठी। लोटन कबूतर बन गया सारा अखाडा।

लाखो के बोल सहे सावरिया तेरे लिए।'

बिल्लौर जैसी गोरी नार ने महफिल को अगुलियो पर नचा लिया। जियो। नशे मे गुम अखाडे म से आवाजें आ रही थी।

एक जवान ने आह भरते हुए कहा—'तेरी सजरी पैड दा रेता, चुक चुक लावा हिक नू।'

नशे म धुत एक दूसरा जवान बोल उठा—'नाले चूस ला पठोरिये तैनू, नाले तेरा लौंग चूम ला।'

उसी कोने से एक आवाज़ और उभरी—'अख पटवारन दी, जिवें इल दे आल्हणे विच आंडा।'

दूसरे ने कलेजे पर हाथ धर लिया और गला फाड़ कर कह उठा—'अक्खी वेख के सबर न आवे, यारा तेरा घुट भर ला।'

—ससुराल से आई हुई का गाना भी सुन लो, अपनी कव्वाली न छेड़ो। पास बैठे जवान ने कहा।

फतह खां ने बात मुंह पर दे मारी और बोला—तुम क्या जानो जाड़ों की रातें कैसे गुज़रती हैं! तुम तो रजाई की गर्मी में जा घुसोगे। हमारा भी खुदा मालिक है, जिन्हें तन्दूर पर रात काटनी है।

'. . बोल सहे सांवरिया तेरे लिए' इतनी-सी बात ने ही महफिल को करारा कर दिया। गाने वाली ने गले की गरारी को ऐसे चक्कर दिए, कि घनन चक्कर में पड़ गई।

महफिल के पिछवाड़े से एक आदमी बोल उठा—नकलों का क्या हुआ?

—भांड कसूर से आने वाले थे।

—जूती पूरी नहीं आई होगी, इसलिए वक्त पर नहीं पहुंचे।

—जूतियों की वहां कमी थी।

तीन भांड, एक का कुर्ता फटा हुआ, दूसरे के हाथ में चमोटा, तीसरा पांव से नंगा। तीनों की पगड़ियां गले में पड़ी हुईं।

—यजमानों की, खैर नवाबी बनी रहे। जोड़ियों के भाग्य जगे रहें। बेल बढ़े। महफिलें लगी रहें। भांड आते रहें और गठरियां बांध कर हवेलियों से ले जाते रहें। भांडों ने अपना पक्का राग छेड़ दिया। लड़की के गुरु ने झट से मुंह फेर लिया। आधी महफिल का ध्यान भांडों ने अपनी ओर खींच लिया। नंगे बदन पर चमोटा बजा और उसकी धमक गांव की तीसरी कोठरी में जा पहुंची।

—यजमानों की खैर। नवाबी बनी रहे। जोड़ियों के भाग्य जगे रहें। बेल बढ़े। अल्लाह की बरकत। डोलियां नित-नित आएं। महफिलें जुड़ी रहें। भांडों के हाथ नित्य दाल-चावल में रहें।

रंडी के आखिरी बोल ने महफिल को गुम कर दिया। महफिल में आवाज़ आई—तुम कहां मर गए थे?

—कब्रों से उठ कर आए हैं। लम्बर के घर डोली आई, हमारी नींद भी खुल गई।

—आगे आ जाओ।

भांड आगे आए और तबले वाले अपना सामान उठा कर एक ओर हो गए।

भांड ने नंगे बदन वाले को चमोटा दे मारा। शोर जैसा धमाका हुआ।

अभी से मारने लगे बाप को। बाप के गौने के लिए लम्बरो को भेजोगे ? सारा अखाडा हस पडा।

—सुनाओ भाई, क्या हाल-चाल है ?

—बहुत बढिया, ऐश हो रही है।

—क्या काम करते हो इतनी ऐश हो रही है ?

—सिक्खडो के सिर काट-काट कर थोक म भेजते हैं लाहौर।

हमी जरा-सी फूटी।—तब तो बहुत बडे कसाई हुए तुम। काम बढिया चुना है। जवाब नही हैं तुम्हारे चुनाव का।

—काम करें हमारे दुश्मन। हम इतने बडे जमीदार हैं। हम क्या जरूरत पडी है काम करने की।

—बहुत बडे जमीदार हो गए हो।

—और क्या। कोई छोटे मोटे जमीदार थोडे है। पैंतीस घुमाव जमीन पर बाड लगा रखी है।

—वाह रे जवान। पैंतीस घुमाव जमीन। तब तो काफी फसल होनी होगी। मटके भर जाते होंगे अनाज से।

—दस घुमाव मे चावल लगाया है। काली घटा की तरह उठ रहा है। कही तिल धरने तक को जगह नही है।

चमोटा एक बार फिर बज उठा।

—क्या कहने तुम्हारी जमीदारी क।

—पाच घुमाव म कपास का खेत। आम जैसे बडे बूटे। रात दिखाई देती है।

—कमाल है भाई। मुकाबला नही है चुनाव का, चाहे सूखी ही बहे।

—दस घुमाव म मक्का। बालिश्त-बालिश्त भर के भुट्टे।

—ठीक है, भाई, ठीक है। इसीलिए कुरता फटा हुआ है।

—सिक्ख फाड कर हिरन हो गए। चमोटा मार कर भाड ने उसके बदन पर नील डाल दिया।

—पाच घुमाव मे तिल बोए। अल्लाह की महरबानी, जैसे अनार के बूटे होते हैं। देखकर बोतल का नशा आ जाता है।

—पर इतनी फसल वाली तुम्हारी जमीन है कहा ?

—पास ही है।

—फिर भी, पता तो बताओ।

—हमारी लगडी भैंस की कनपटी पर।

हसते-हसते सारी महफिल का पेट दुखने लगा। मोहरो की बारिश होने लगी। भाड बटोरने लगे।

दूसरे ने महफिल का रङ्ग बदला। चमोटा एक बार फिर बज उठा, तोप के गोले की तरह।

—सुनाओ भाई, सुनाओ, ब्याह करके आए हो।

—ब्याह ही करके आया हूं। बहुत बढ़िया ब्याह हुआ। सारी सीमाएं समाप्त हो गईं। एक बार तो वाह-वा-वाह-वा करवा दी सारी पट्टी की।

—ब्याह पट्टी में किया था?

—नहीं जी, गांव में।

—लेकिन ब्याह की धमक पट्टी तक पहुंची।

—नादिरशाह की तोप होगी।

—क्या कुछ खिलाया?

—बहुत कुछ। दस तो देगें ही उतार दी हमने।

—दस देगें तो जरदे की उतारीं होंगी।

—जरदा। जरदा भी कोई खाता है आजकल।

—फिर क्या तुमने पुलाव की उतारी होंगी।

—पुलाव भी कोई खाने वाली चीज है। नमकीन चावल, कौन खाए?

—तो हलवा बना होगा।

—हलवा क्या होता है। गुड़ की सानी। हमें सिक्खड़ों को देना था?

—तो फिर जरूर गोश्त बना होगा।

—गोश्त जानवरों का खाना है।

—तो मुर्ग बने होंगे।

—मुर्गों को तो अब गीदड़ भी नहीं खाते।

—तो और किसकी इतनी देगें उतरीं?

—हल्की-सी आवाज आई—गर्म पानी की।

चमोटा एक बार फिर बजा। भांड जूते-खाए आदमी की तरह मुंह बनाते हुए बोला—सिहों के गुसल का ठेका तो नहीं ले लिया।

—लानत है। अरे कम्बख्त, मुंह अच्छा न हो, तो बात तो अच्छी करो।

—बुरा-सा मुंह बना कर बोला भांड—बारातियों को डुबो-डुबो कर, एक-एक का बिज्ज बना कर निकाला देग से।

बस। सारी महफिल हंसते-हंसते दुहरी हो गई। मोहरों के ढेर लग गए। भांडों ने महफिल को अपनी तरफ खींच लिया। आधी रात गुजार दी। हमें तड़के उठना है। मामला तारना है अमृतसर में। एक लम्बर ने कहा।

—ठहरो, ठहरो। हमें जाने दो। आधी रात गुजार दी। हमें तड़के उठना

भांडों ने फिर शोर मचा दिया। लेकिन चौधरी उठ गए। महफिल बिखरने लगी।

एक भांड ने आंख मारी—सिंह जी, कुछ हमें भी देते जाओ।

—सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह भी वहीं अखाड़े में खड़े थे। ताड़ गए।' उन्होंने किसी को भनक न पड़ने दी और खिसक गए।

महफिल फिर जुड़ बैठी। चौधरी भले ही उठ गए थे, लेकिन अखाड़े वालों ने रंडी को उकसा कर मुजरे के लिए फिर तैयार कर लिया।

भांड अपना काम कर गए। मोहरें उठाईं और लोगों में ही घुल-मिल गए। कोई नहीं पहचान सकता था कि भांड कौन हैं?

रंडी ने एक बार फिर रंग बांध दिया। वह गा रही थी :

'पल्ला मार के बुझा गई दीवा,
ते अक्ख नाल गल कर गई।'

यह सब कुछ पट्टी में हुआ। मुजरा सारी रात होता रहा। छड़े पालथी मार कर बैठे रहे। पट्टी सारी रात जुड़ी रही। रंडी रात भर नाच-नाच कर चूर हो गई। जेबें झाड़ कर ले गई शरबती आंखों वाली। किरमिची दुपट्टा मशाल की रोशनी में उड़ रहा था। पट्टी के जवान लट्टू हुए घूमते थे कमूर की मुजरे वाली पर। छड़े तो उसे जेब में ही डाल लेना चाहते थे। परवाने शमा की लौ को अपने में समेट रहे थे।

CC

कुत्ता राज बहालिए

अभी भोर का तारा नही निकला था। मेहताव सिंह और सुक्खा सिंह दोनो
सो रहे थे। चौधरी सारी रात हवेली मे जागते रहे। न खुद सोए, न घर के
लोगो को आख मीचने दी। घोडिया निकालीं। सामने वाली थैलिया को दिए की
रोशनी मे देखा। तसल्ली की कि हाकिम की मुहरें लगी हुई हैं। कसूर वाले
मामला अपने पास इसलिए नही रखते थे, क्योकि मस्सा रघड बडा अडियल,
बददिमाग, गुस्ताख और शेखीखोर था। आदमी की इज्जत खडे-खडे ही उतार
देता। अमृतसर के आसपास रघडो के घर भी बहुत अधिक थे। बडे जोश मे
थे रघड। अपनी बादशाहत अपनी हुकूमत। मस्सा रघड, अपना पूत, अपना खून।
ये बातें हर बात का फैसला अमृतसर मे ही करवा लेती। किसी को लाहौर या
कसूर जाने की तकलीफ न उठानी पडती। स्याह को सफेद कर लेना, जब जी मे
आए रात का दिन और दिन को रात मे बदल लेना, किसी की गर्दन काट लेना,
और उसे कुएं मे फेंक देना—ये सब बडी मामूली बातें थीं। हर तरफ अपनी
चौधराहट थी। जी चाहता तो मुर्गे को बाग देने देते, न चाहता तो उसकी
गर्दन मरोड देते। मस्सा दोनो हाथो से लूट रहा था। रघड अपने सन्दूक भर
रहे थे, पठानो मे ईंट-कुत्ते का वैर था। लेकिन हुकूमत ने कसूर वालो को
अमृतसर पर अपने छत्र झुलाने की इजाजत दे रखी थी। अमृतसर वाले चाहे
कसूर की छत्रछाया के नीचे थे, लेकिन मस्सा जूते से सेवा कर रहा था। मस्से ने
उनकी इज्जत उतार कर उनकी झोली मे डाल दी थी। कसूर वाले दुखी थे।
लाहौर वालो को इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे उनकी आख मिचौनी मे सीटी
बजाए। मस्सा जो कुछ कर रहा था, वह लाहौर वालो के लिए ठीक था।
अहमदशाह अब्दाली के हौवे और सिर पर लटकती उस की तलवार ने लाहौर
वालो को बुजदिल बना दिया था। दिल्ली की हुकूमत लाहौर की तरफ कोई ध्यान
नहीं देती थी। दिल्ली वाले अपनी मुसीबतो मे मुब्तिला थे। प्रतिदिन जूतो मे दाल
बाटी जाती। घर के रिश्ते खुद ही कोनो मे जा लगे थे। खान भाइयो ने अच्छी
नकेल डाल रखी थी। बादशाह, वजीर, अहलकार नाक में नकेल डाले घूमते।

लाहौर का तो वही हाल था कि हाथी के सिर पर महावत न हो, तो वह लावारिस घूमता फिरता है। अब्दाली के चमचे लाहौर म नाच रहे थे। हर चौधरी आका हुआ बैठा था।

मस्सा रंघड ने भी चमडे का सिक्का चलाया लेकिन उसने किसी सिंह को अमृतसर म नही घुसने दिया। उसने हरेक की कमर म तडागी बाध रखी थी और घुंघरू अपने नाम के बाध दिए थे। सिर्फ सिंह ही थे, जिन्होंने न तडागी कबूल की, न हाथ लगाने दिया। उसका जितना जो चाहता, वह हरिमन्दिर का अपमान करता। हर रोज़ गाय क लहू से फर्श धोया जाता। हड्डियों से सरोवर भर गया। लेकिन क्या जिगर था सिंहो का कि उनकी श्रद्धा म रत्ती भर अन्तर न आया। बल्कि उनकी श्रद्धा म वृद्धि ही होती रही और उनके इरादे भी बलवान् होते गए।

एक दिन मस्सा शराब के नशे मे धुत था। फिरकनी की तरह घूमता और पागलो की तरह हमता हुआ बोला—सिंह काफिर अमृतसर की दीवारो की तरफ नही झाक सकते। मस्से का जलाल उनकी मौत है। कोई नही आ सकता। सिंह छोड गए अमृतसर को। जगलो, पहाडो और मरुस्थलो म मर-खप जाएगे। डरन की जरूरत नही है। खाओ, पियो, ऐश करो। यह जिन्दगी चन्द रोज की है। मौत क्या है? राज क्या है? मैं अमृतसर का नवाब हू। मैं खुद मुख्तार बादशाह हू। मुझे किसी की परवाह नही है। मुझे किसी का डर नही है। उसने उसी समय सुराही से दो प्याले भरे और गटागट चढा गया। —अब अमृतसर म मेरी हुकूमत है और कल बहिश्त मे भी मैं ही शासन करूगा। जी भर के नचनियो को नचाओ। शराब पियो और काफिरो की गर्दनें काटो। तुम्हारा मजहब यही है। इस्लाम ने तुम्हे इतना ही सबक दिया है।

य खबरें लाहौर पहुची। कसूर वालो ने कानो म रूई ठूंस ली। वे सुनते कि मस्से ने गावो क गाव उजाड दिए हैं और जवान जहान लडकियो की इज्जत जी भर कर लूटी है। उसने माझे की इस धरती पर हाहाकार मचा दिया है। मुर्गे को मार डालना और आदमी को मार देना एक ही बात है। वैसे सारा इलाका मस्से से दु खी था। हर रोज, हर रात कोई न कोई कुआरी लडकी, चाहे हिन्दू मिले, चाहे मुसलमान, एक ही रात म औरत बना दी जाती। किसी की इज्जत सुरक्षित नही थी। 'कुत्ता राज वहालिए, चक्की चटण जाए।'

भोर का तारा मकबरे की दीवार पर चमक रहा था। सारी पट्टी सो रही थी। सिर्फ चौधरियो क घर म ही दीया जल रहा था। घोडिया तैयार थी। चौधरी के घोडी चढने से पहले उसकी बहन ने उस की बाह पर इमाम-जामन बाधा। दो चौधरी गाव से पूरे जलाल म निकले। और कोई साथ नही था। दो सूरज एक साथ निकल आए थे।

मुक्खा सिंह और मेहताब सिंह भी तैयारी मे थे। उन्होने भी घोडियो को

थपकिया दीं । गुरु का नाम लेकर छलाग लगाई । गाव से काफी दूर सुक्खा सिह और मेहताब सिह ने दोनो चौधरियो को जा कर घेर लिया, और वेखबरी म ही भरपूर वार किया । पहले तो चौधरी डरे, फिर सामने डट गए । सुक्खा सिह क पहले वार ने ही एक चौधरी का राम नाम सत्य कर दिया । मेहताब सिह ने दूसरे चौधरी पर घातक वार किया । वार भाले का था । भाला सीना पार कर गया । छाती खरबूजे की तरह फट गई । सीना चाक हो चुका था । जरा सी लडाई हुई । चौधरी दुनिया जहान स जाते रहे । पहले एक गिरा, फिर दूसरा भी गिर गया । लहू गम था, स्रोत फूट रहे थे, जख्म घातक थ । चौधरी मुकाबला कर ही नही सके । जरा सी आवाज भी न निकली । एक ही वार म मेहताब सिह ने एक की गर्दन झटका दी । उजाड म कौन किसकी सुनता है ? घोडिया भाग-दौड गईं ।

सुक्खा सिह बोला—मेहताब सिह, इन दोनो की वर्दिया उतार लें । थैलिया कब्जे म करें और इन्हें ठिकाने लगा दें, ताकि दो चार दिन शोर न मचे ।

उन्होने दोनो की वर्दिया उतार ली, आलिफ नगा करके घसीट कर उन्हे कुए म फैंक दिया । दोनो सिहो ने वर्दिया और थैलिया बगल म दबाईं और तरनतारन पहुच कर दम लिया । पीछे वाले भी आ मिले । आगे वाले पहले ही इतजार कर रहे थे । सब कुछ समेट लिया और सिहों को फिर मुक्त कर दिया ।

मेहताब सिह और सुक्खा सिह ने वर्दिया को अच्छी तरह धोया और पिछली कोठरी म बैठ कर उन्हे सुखाया ।

घोडिया जब वापस पहुचीं, तो पट्टी के लोगो के होश उड गए ।

—यह काम जरूर सिहो का है । किसी ने कहा ।

—सिह कहा हैं ?

—हिरन हो गए ।

अलम्बरदारो की बेगम घोडियो के गले लग कर रो रही थी । सफ बिछ गई सारी पट्टी म । मुजरे का नशा उतर गया । पर लाशें किसी को न मिलीं ।

शक कसूर वालो पर भी गया ।

इसी हलचल मे सिंह अपने ठिकानो पर डट गए ।

—साप निकल गया । सारे पट्टी वाले अब लकीर पीटो ।

बादलो को चीरता हुआ चाद मुस्करा रहा था ।

तरनतारन के कोठी घर म उसी दिन दोहरा कड़ाह प्रसाद बाटा गया ।

खड़खड़िया सांप

जोगियो, नाथो, विधिचदियो और अमृतसर म बचे-खुचे सिहो ने मिलकर अमृतसर के चारो कोने सम्भाल लिए। नाथो ने ब्रह्म बूटियो के अखाडो के स्थान पर अपनी धूनिया रमा ली। चिमटे पर चिमटा बजने लगा। कुछ साधु, जो सखी सरवरो के वेश म थे, शहर क बीच की कब्र पर रोट पकाने लगे। कोई किसी को नही जानता था और न ही पहचानने की कोशिश करता था। रात को किसी गोष्ठी म भले ही किसी का किसी से मिलाप हो जाए। इस तरह एक-दूसरे का हाल जान लेते। वैसे सखी सरवरो का बडा जोर था। मुसलमान पीरो, नाथो और जोगियो म कोई फर्क नही था। शक्ल-सूरत सब की एक-सी थी। लम्बे-लम्बे चोगे, खुल। पीछे फैके हुए बाल। माथे पर भभूत। मस्सा अपने मन्दर म मस्त था। उस क्या मालूम था कि हाथी कहा झूमता है।

एक दिन मुजरा हो रहा था। नाचन वालिया नाच-नाच कर बेहाल हो रही थी। उनक पावो ने हरिमन्दिर क चिकने फर्श को छील डाला। मेहदी उतर गई बेचारियो की। लेकिन मस्सा रखड ने उसका मूल्य भी न चुकाया। नाचने वालिया अन्दर ही अन्दर खीज रही थी। जल भुन कर कोयला हो रही थी गुल्लू बाई। मन मे खूब भुन रही थी, लेकिन हाथ मल कर रह जाती।

हरामजादी, नाचते वक्त भी शरमाती है। इतना ही परदा था, तो किसी हरम मे बैठ जाती।

—हरम म हम कौन जाने देता है?

—पखनुची कबूतरी को कौन दडबे मे घुसने देगा।

—पख भी तो आप ही ने नोचे ह। नोचने वाला और तो कोई नही था। घर मे ता हम पकीजा आई थी।

—मुझे क्या बाडा बनाना है, आम खाने वाले को पेड गिनने से क्या मतलब?

—हम किसकी झाड झोकें?

—इस कुटनी गुल्लू बाई का, जो टके गिन लेती है। बुढ़िया रंडी और तेल का उजाड़।

छिपकली की तरह उसने बल खाया, सर्पिनी की तरह तड़पी। गुल्लू बाई के तन-बदन में आग लग गई—खाने पीने के लिए बिलाव, डंडे खाने के लिए रीछ। वह बोली।

—बड़ी बदजबान हो गई है, री गश्ती। अरी कमजात। लाहौर में अपने सिर में राख डलवा आई है और अब यहां क्या करने आई है। मरते का गुस्सा आ गया।

—हुजूर, मैं तो खिदमतगार हूं।

—जिस आदमी के तेरे जैसे चार खिदमतगार हों, उसे दुश्मनों की क्या जरूरत है।

—वह कैसे ?

—मेरे सामने कव्वाली वालों की मुट्ठियां भरती है। प्यारों का कलेजा जलाने के लिए।

—वो तो सखी सरवर के चेले हैं। मैं सलाम करने गई थी।

—लोग तो पीठ-पीछे यार पीटते हैं। तू तो सामने चरखा डाल बैठी है।

—मेरी रहमतों ने चौधरी की पगड़ी बंधवाई चौधराहट की। और आज मेरी ही भरी महफिल में चोटी उखाड़ी जा रही है। हमारी बिल्ली और हमसे ही म्याऊं।

—मैंने मुहरों से तेरे घर भर दिए हैं। फिर भी अहसान बाकी रह गया है ?

—मैं मुहरों को आग लगाऊं ?

—जिस पहिलन झोटी दुहने को मिल जाए, वह खांड का सिर चाटेगा ?

—हुजूर, कस्तूरी जितनी पुरानी हो, उतनी ही अच्छी होती है।

—मुश्क काफूर को पोटली में बांधे फिर। ला, शराब की सुराही। तूने तो नशा ही उतार दिया।

—नई शराब कौन पीता है ? पुरानी और दबा कर रखी गई शराब में ही नशा होता है। आज पुरानी शराब को ही होंठों से लगाओ।

—जबान बन्द कर, गश्ती। तेरी जबान काटनी पड़ेगी। मस्सा रपड़ नशे में था।

—यही इनाम मिलना था न। गुल्लू बाई की आंखें आंसुओं से भर आईं।

—रोने लगी, कुलच्छिनी। इस कुटिया कमजात का सिर मूंड दो। यह ऐसे पीछा नहीं छोड़ेगी।

—हुजूर।

—हुक्म की तामील की जाए।

जी हुजूरियों, खुशामदियों और चमचों ने बात को बीच में ही लपक लिया।

और नाई को बुलवा लिया । खुदा के सामने, हरिमन्दिर के गर्भ मे ही गुल्लू बाई का सिर मूंड दिया गया। बाकी सब लोग बटेरो की तरह खिसक गए। शराब मे अन्धा हुआ मस्सा रघड बेसुध हो गया। गुल्लू बाई रोते-चिल्लाते हरिमन्दिर से बाहर आ गई।

रहमत कव्वाल, जिनका डेरा लाची बेर के पास था, कानो को हाथ लगाने लगे। अच्छा नही किया चौधरी ने। यह ज़ुल्म। अति का खुदा से वैर होता है। मस्सा रघड को खुदा की खुदाई याद नही रही।

गुल्लू बाई पागलो की तरह रोती-चिल्लाती दर्शनी ड्योढ़ी का दरवाज़ा पार कर गई। बाकी नाचने वालिया भी एक-एक करके झरने लगी। तबले उलटे हो गए। सारगी का तार टूट गया। अकेला मस्सा रघड नशे मे बेहोश हुआ बडबडा रहा था—सिंह काफिर हैं। मैं इन्हे कच्चा चबा जाऊगा। मेरे जीते-जी सिंह अमृतसर मे पाव नही रख सकता। इन काफिरो ने अति कर रखी है। मैं इनका बीज नष्ट कर दूँगा।

—सिक्ख आ गए। सिक्ख आ गए। एक नचनी गश खाकर गिरी और उसके गले से यह आवाज निकली।

—कहा हैं सिक्ख ?

—हिरन हो गए।

सिंह नही होगे, सिंहा का भूत होगा।

—सिंह काफिर। उन्होने मेरी नींद हराम कर दी है। मस्सा रघड बडबडा रहा था।

गुल्लू बाई की चीखो ने अमृतसर की गलियो की आखो मे आसू ला दिए। उसका मुंडा हुआ सिर देख कर गलियो के तिनके भी रो दिए।

लेकिन सर्पिनी बल खा रही थी। उसके माथे से पसीना चू रहा था।

●●

नकली चेहरे

गुप्त गोष्ठियो मे विजला सिह, मनसा सिह, धारा सिह, पारा सिह दिखाई
देने लगे, सुक्खा सिह और मेहताव सिह के साथ । उनके साथ नाथो के अगुआ
भी बैठे रहते ।

विजला सिह बोला—लो भाइयो, जरा गौर से सुन लो । फिर मत कहना
कि मैंने किसी को धोखे न रखा है । पहले पहल जव मेरी मुलाकात सुक्खा सिह
और मेहताव सिह से हुई, तव मैं यो ही, यतीम किस्म का आदमी था और
मेरा नाम था योगराज । क्यो भाई, ठीक है न ? मेरे साथ एक चौधरी था गगा
सिह । हम दोनो ने लक्खी जगल मे तुम्हारे दर्शन किए और तव तुम मुझे जोगा-
जोगा कहने लगे । मैं जोगा के नाम से ही मशहूर हो गया । पूछने वालो ने मेरी
जाति पूछी, तो एक दिन वतानी ही पडी । कव तक छुपाए रख सकता था ?
आखिर हार कर मैंने भी कह दिया कि मैं भी विधिचदिया हू । वस फिर क्या
था ? मेरे सारे साथी भाइयो की तरह मुझे पास विठाने लगे और मैं विधि
चदिये का एक अग वन गया । सारा जत्था चैतन्य था । फिर एक होनी हो गई ।
यह गुरु की कृपा थी और मेरे जत्थे वालो ने उस रात मुझे गश्ती फौज के अफसर
के रूप मे देखा । मेरे जत्थे वालो ने भले नाक मुंह सिकोडा, अपने हमजोलियो
का सूजा हुआ मुंह भी मैंने देखा, पर यह वक्त की वात थी । ऐसा करना मेरे
लिए भी जरूरी था, क्योकि दो जरनैल इतनी वडी कसम खाकर चले हो और
रास्ते में ही वाह पर सिर रख कर सो जाए । इन्हे चैतन्य करना वहुत जरूरी
था । सिर पर मौत नाचती हो और वे तलवारो की कोठरी मे अमानत रख दें ।
इतनी वडी भूल को झटका देकर न जगाता, तो कैसे चैतन्य होते ये सूरमा ?
इसलिए मैंने यह कसव किया । मुंडे हुए जोगी और पीठो दारु की कोई पहचान
नही होती । इच्छा-धारी सर्प की तरह जव जी किया, अपनी देह वदल ली ।
हम तो वक्त की नब्ज पहचानते हैं, और उसी वक्त ढल जाते हैं । फिर एक
तमाशा और हो गया । माडो वाला तमाशा तो तुम सवने देखा । गुरु की सौगन्ध
खाकर कहे मेरे भाई, अगर किसी ने मुझे पहचाना हो । क्यो सिह जी, तुमने या

तुम्हारे साथियों म से किसी ने या सारी पट्टी के वासियों में से किसी ने मुझे पहचाना हो, तो निचाई वाली जमीन पर बैठा कर मुझे सौ जूते मारो। हमने कसब सीखा है। अब मेरा नाम रहमत कव्वाल है और आज से मुझे इसी नाम से बलाना। धारा सिंह, तुम क्यों हैरान हो रहे हो? मैं वही हू, तुम्हारा लगोटिया विजला सिंह। मैं ही बागराज था और मैं ही जोगा। फौजी अफसर भी मैं ही था और भाड भी मैं। आज कव्वाल भी मैं ही हू। अब कव्वालिया भी हम ही गायेंगे और तुम सुनना। सज्जनो! हम तो चले गए, पीछे तुमने क्या काम किया?

धारा सिंह बोला—कमाल किया। कुर्बान तुम्हारे हुनर पर। तुम्हारे उस्ताद को सौ बार प्रणाम। सारा पथ तुम्हारे सदके। गुरु की लाज रख ली तुमने। विजला सिंह रोज-रोज नही जन्मते। अच्छा, अगर हम भी कभी सरदार बनेंगे, तो तुम्हे मुहरो से तोल देगे। तुम्हारे घर की चौगाठें चांदी से मढवा दगे। अगर मेरा दाव लग गया, तो चन्दन की चौकी पर सोने का पत्रा लगवा के बिठाऊगा। एक बार फिर तुला-दान करवाऊगा। फिर देखना संगतों को, कैसी बारिश करती हैं।

—जब सरदार बनेंगे, तब सरदारो वाली बातें करेंगे। अभी तो जो कुछ है, वही है। धारा सिंह ने अपनी कहानी शुरू की .

सरकार जब हम अकेला छोडकर नौ दो ग्यारह हो गए, तो अमृतसर म हमारी दाल गलना मुश्किल हो गई। पर मैंने आपकी मार खा रखी थी। झट से सखी सरवरी का चेला बन गया। सिर पर बालो का पहले ही अकाल था। जब पगडी उतारी, तो सिर तरबूज की तरह चमक उठा। ठोडी पर दो-ढाई ही बाल थे। सखी सरवरो ने मुझे बहुत जल्दी कबूल कर लिया और मैं उनके बीच नहला-दहला बनकर रहने लगा। रोज रोट खाने को मिल जाते, और सुक्खा बाबियो के डेरो से। बाकी सारे पापड बेलने आते थे। रोज चकमा देकर शाम को हर की पौडी पर ज्योत जला आया करता था। कभी सरोवर में उल्टी डुबकी लगाकर और कभी सीधी। हर रोज लोग हैरान होते, लेकिन मैं सबकी आखो म मिर्चें झोक कर अपना धर्म पूरा करता हू। आज भी ज्योत जगा के आया हू। जब तक सिंहो म से एक भी जीव बाकी है, हरिमन्दिर मे ज्योत जरूर जगेगी। कई बार झाडू देने के बहाने गया और ज्योत जला आया। कई बार गुल्लू बाई की पिटारी उठाकर अन्दर गया। जब तक बाई नाचती रही, तब तक उसके साथ रहा और फिर जब रात उतरने पर आई, तो दाव लगाया और चकमा देकर ज्योत जगा दी। यह एक अचम्भा-सा बन गया था। कभी मैंने खुद यह काम किया और कभी मनसा सिंह ने। कभी हम दोनो उखड गए, तो धारा सिंह हमारा गुरु निकला और ज्योत जगा आया। मुसलमानो मे यह बात आम मशहूर है कि हरिमन्दिर म जिन्न बसते हैं, भूतो का धाम है। समझदार और सुलझे हुए आम सिपाही रात को दाव लगते ही खिसक जाते हैं। कई एक लोगो का ख्याल है कि इस हिन्दू

मस्जिद में रात को भूतनियों के सम्राट् का सिंहासन लगता है। ये सब कमब हमारे हैं। लेकिन जो बात मवसे बढ़िया है, वह यह है कि हम सखी सरवरों के चेलों में बहुत मशहूर हैं। जितनी मान्यता यहां हमारी है, उतनी और किसी की नहीं है। हम चाहे रोज़ गुसल नहीं करते, पर फिर भी हर रोज़ चार बार सरोवर के जल से वुज़ू जरूर करते है। मैं तो नित्य नियम से स्नान जरूर करता हूं। इसलिए मैं तुम सबसे ज्यादा खुशकिस्मत हूं। आज भी जब जिसका जी चाहे, मेरे साथ स्नान कर ले। हमें किसी का डर नहीं है। हम कभी कोई नहीं टोकता।

अब बारी आई सुक्खा सिंह की। बोला—हमारे सभी साथी चाहे अमृतसर पहुंच गए हैं, लेकिन हम सबमें मिल नहीं पाए हैं। बिजला सिंह का कहना ठीक है। ना-ना, भूल हो गई। बिजला सिंह नहीं, रहमत कव्वाल। सब अपनी-अपनी ठौर बनाकर बैठे हैं और उन सबकी नजरें हरिमन्दिर साहब पर हैं।

मेहताब सिंह ने पूछा—अब क्या हुक्म है ?

जोगा बोला—सिंह साहिब, इसके बारे में कल तुम्हें बतायेंगे कव्वालियां सुनो, मजा लूटो और अपनी धूनियों में मस्त रहो। मैंने नकली चेहरे का खोल पहन लिया है। मैं जा रहा हूं गुल्लू बाई के डेरे पर, अफसोस जाहिर करने। बेचारी के साथ बहुत बुरा हुआ है। सिर मुंडवा दिया। कोई बात नहीं, चोट खाई सर्पिनी अगर डसेगी, तो यही कहेगी, परे होकर गिर। उसके डसे हुए कभी पानी भी नहीं मांग सकेंगे। अच्छा भाई, गुरु राखा।

कुत्ता मुंह उठाकर रो रहा था। सारी रात रोता रहा।

हरिमन्दिर के दरवाजे के पास टंगी हुई मशाल की लौ मद्धिम न हुई। कुत्ते ने अपना मुंह हरिमन्दिर की तरफ कर रखा था। एक तारा टूटा और उसकी चमक सारे आसमान में फैल गई।

○○

चरखा कौन चलाए ?

रहमत कव्वाल, बिजला सिंह के मुंह पर चढ़ा हुआ मपोटा, काला स्याह बाना, खुली दाढ़ी, गले में मोटे-मोटे मनकों की माला, हाथ में कमडल और मेहराब के निशान, जैसे कोई पीर अभी-अभी सरहद से आया हो। रहमत कव्वाल ने सवख्रा सिंह को भी अपने रूप में ढाल लिया। रहमत कव्वाल का हाथ लगा हो और सुक्खा सिंह पहचाना जाए ? नामुमकिन। हाथ न कट जाए।

रहमत बोला—बाई के घर जा रहे हैं। जली भुनी बैठी होगी। जरा-सा तेल डालकर देखो, कैसे लपटें उठती हैं। बात करके देखेंगे, शायद अपना अतस् उगल दे और हमारे सारे रास्ते साफ हो जाए।

—बात तो बढ़िया है। हमदर्दी जताओ और उसके दुःख में साझेदारी बनाओ। गुल्लू बाई हमारे बड़े काम आ सकती है।

रहमत ने जाकर गुल्लू बाई की दहलीज़ पार की। सुक्खा सिंह भी साथ था। वह भी बिना झिझक अन्दर जा घुसा। जाते ही सिर पकड़ कर बैठ गए, जैसे अभी-अभी बाप मरा हो।

—बहुत बुरा हुआ, बाई जी। इतनी अति। मस्सा रंघड़ ने तो कमाल ही कर दी। शैतान का भी गुरु निकला। खुदा की खुदाई भूल गया चौधरी। रहमत ने कहा।

—मुझे तो फाक डाला उसने। उसका कुछ न बचे। जवानी से जाए। खुदा उसे पहले हल्ले में ही उठाए। किसी और की मौत उसे लग जाए। मैं जली-भुनी बैठी हूं। बद्दुआ ही दे सकती हूं। बाई के आंसू ही नहीं थम रहे थे।

—अल्लाह के हुजूर में देर है, अन्धेर नहीं है, रहमत ने कहा।

रहमत, हमारा अल्लाह पता नहीं कहां जा छुपा है। मुझे तो लगता है, अल्लाह नादिरशाह बन गया है। चुटिया कटी होती, तो मैं छुपा लेती। नाक कटी होती, तो मुंह पर कपड़ा दे लेती। लेकिन मुंडे हुए सिर का किससे छुपाऊं ? बुरी शामत से अमृतसर में बैठी हूं। अगर लाहौर में होती, तो खून पी जाती। दिन न चढ़ने देती और इसका बदला ले लेती।

रहमत कव्वाल ने उसे जरा-सा और टटोला—चौधरी ने तुम्हारी जरा भी दाद-फरियाद न सुनी। तुम्हारे तो कौर साँझे थे। चावल-शक्कर तो तुम दोनों एक ही परात में खाते थे।

—नशे में धुत्त हाकिम और माथे पर सवार हराम। बस, उसने बात को ज़मीन पर भी नहीं गिरने दिया। मेरी उसने एक न सुनी। सांस ही तब ली, जब उसने मेरा झाटा मूँड कर मेरे हाथ में थमा दिए। मैं दोहत्थड़ पीटती, उसका स्यापा करती घर लौट आई। कच्ची उम्र की लड़कियों को वह पक्के आम की तरह चूस जाता है। गोरे रंग पर तो मतवाला हुआ घूमता है। मेरा खाना खराब हो गया है, रहमत। मुझे तो दोनों जहान में अब जगह नहीं मिलेगी। ज़मीन अब मेरे पैरों को झेलती नहीं। कौन-सा मुँह लेकर घर से बाहर निकलूँ ? किसी को क्या बताऊँ कि मेरे साथ क्या हुआ है ? मैंने इज्जत बेची, मान बेचा, रूप को सूप में डाल कर उड़ाया। घर की लाज सरे-बाज़ार नीलाम की। मैंने सिंह-धड़ की बाज़ी लगाई और उस कुत्ते को चौधरी की पगड़ी दिलवाई। मैंने जकरिया खां के जाने कितने अहसान सहे, कितने उलाहने उतारे। जाने कितनी अनहोनियां उसके साथ मिल कर कीं, और इस कमबख्त को अमृतसर का चौधरी बनवाया। लेकिन इस बेईमान ने काला नाग बन कर मुझे डसा है। डायन भी चार घर छोड़ देती है। लेकिन इसने एक घर भी नहीं छोड़ा। अल्लाह करे, इसका कुछ न बचे। इस दोजखी ने बदीद से चार हाथ लंबी छलांग लगाई है। बिजली गिरे और इसका खाना खराब हो जाये। गुल्लू बाई के आंसुओं से उसके हाथ धुल रहे थे।

—कहते हैं, पाप का घड़ा भर कर फूटता है।

यह कोई पहले की बात होगी। जब लोग फरिश्ते होते होंगे आज तो ज़ालिम को कहीं ताप भी नहीं चढ़ता।

—ठीक है, खुदा तो देखता है।

—खुदा आजकल कहां है ? वह तो आजकल सिंहों के डेरे में बैठा हुआ है।

—सिंह तो पहाड़ों पर चढ़े हुए हैं। सिंह यहां कहां ? अमृतसर में आ कर वे अपनी गरदन कटवायेंगे ? रहमत ने कहा।

—जाने सिंहों को कौन सा दौरा पड़ गया है। कोई नजर ही नहीं आता।

—बेचारे सिंहों का क्या है। वे तो जान बचाते घूमते हैं।

—यह तो झूठ बात है, रहमत। जो डर जाये, वह सिंह नहीं। कोई आसपास रहता हो, तो बताओ, ताकि मैं उनके सामने जाकर अपना दुखड़ा रोऊं। लेकिन आजकल सिंह सौंठ की गांठ हो गये हैं।

—सिंह खुदा तरस बन्दे हैं। वे इस जुल्मी की गर्दन जरूर उतारेंगे। मुगलों को तो यह बगल में दबाये घूमता है।

—रहमत, मेरी फरियाद सिंहों तक पहुंचा दो।

—अमृतसर में मस्सा रघड के आदमी कुलबुलाते घूमते हैं। सिंह आटे में नमक के बराबर हैं। वे पहाड से कैसे टकरायें ?

—जैसे लाहौर लूटा था, वैसे ही अमृतसर को लूटें। नादिर की फौज का लूटना सिर्फ सिक्खो के ही बस की बात थी। इस मरदूद पर खुदाई कहर नहीं टूटेगा।

—जब तक मस्सा रघड अमृतसर मे है, सिंह अमृतसर मे पैर तक नही रखेंगे।

—रहमत, अगर सिंहो तक तुम्हारी कोई पहुच नही है, तो अपने पीर के ही पाव पकडो, वही इसे उठायें।

—बाई जी, कौवो के कहने से ढोर नही मरते। अगर सिंह आ भी जायें, तो मस्सा रघड तक कैसे पहुचें ?

—लगता है, कलदर सुल्फ का दम मार कर आये हैं। इन मूजियों का क्या है ? कल सब को ईरान की सूखी माजून-शराब बाटी जायेगी। हर आदमी नशे मे होगा। तीखी दोपहर म घोडे बेच कर सोये होते हैं सिपाही। मस्सा रघड कोई हौवा है ? उसे अपना होश नही है। उस वक्त अन्दर चले जाना कोई मुश्किल काम नही है। साथ ही हरिमन्दिर के चारो ओर कोई गढी तो है नहीं। जुमेरात का ये लोग दीन-दुनिया से बेखबर होते हैं। रहमत, मैं तुम्हारी उस्तादिन हू। मेरे अपमान का बदला लो, तब मेरे कलेजे म ठण्डक पहुचेगी।

—बाई जी, मैं अपनी जान पर खेल सकता हू, लेकिन सिंहो के पास जाते हुए मेरी अपनी जान हवा होती है। आदमी शेरो के पास कैसे जाये ?

—मेरे लिए, मेरे वास्ते, खुदा के वास्ते। यह लो मुहरो की पोटली ले जाओ और कडाह प्रसाद करवा दो। शायद किसी के मन मे मेहर पड जाय। गुल्लू बाई के आसू थम ही नही रहे थे।—तुम ही समझाओ, पीर जी, रहमत को। इसके दिमाग मे भी कोई बात बैठे। सिंह बडे भले लोग हैं। यह या ही डरता है।

—बाई जी, मैं आपका बदला जरूर लू गा। मैं पीर की दरगाह पर दुआ मागने जाता हू।

—खुदा तुम्हारी दुआ कबूल करे। गुल्लू बाई ने कहा।

सुक्खा सिंह और रहमत गुल्लू बाई को धीरज की थपकिया देकर उसके घर से निकल आय।

चरखा बिछा कर बैठी गुल्लू बाई का चरखा कौन काते।

❁❁

जुमे रात

--पीरो के पीर, जाहिरा पीर रहमत। रहमतुल्ला साईं रहमत, तेरी तसबीह को नौ सलाम। तेरे कसब को सात सलाम। जुमे रात से बेहतर दिन और कौन-सा हो सकता है? सुक्खा सिंह ने कहा।

—गुरु की लाडली फौजें ऐसा नहीं कहेंगी, तो और कौन कहेगा? फाल तो खूब निकली है, खालसा जी। गुल्लू बाई के आंसू देखे नहीं जाते। बेचारी के साथ बहुत बुरा हुआ है। ये हाकिम किसी के मीत नहीं। भंवरा और हाकिम भी कभी किसी का मित्र बना है?

रहमत ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि मेहताब आ गया और उसने आ कर फतेह बुलाई।

—हम नाथों के डेरे पर बैठे-बैठे सूख गये। मैंने समझा कि तुम लोग रफा हो गये। नाथों ने भी सारे अमृतसर का पत्ता पत्ता छान मारा। न तुम मिले न तुम्हारी परछाईं। मेहताब सिंह बोला।

—हम लोग अभी-अभी गुल्लू बाई के डेरे से आये हैं।

—कौन गुल्लू बाई?

—नवाब जकरिया खां की रखैल।

—ढोलक लेने गये थे या घुंघरू?

—कव्वाली के बोल सीखने गया था रहमत। लेकिन इसका जी मेंहदी लेने को भी चाहता था। मुझ से झिझक गया।

—यह भांड से कव्वाल कब बन गया?

—नाथों के चिमटे और मदारी के डंडे से किसने पार पाया है?

—खालसा जी, मुझे तो छुट्टी दो।

—मुझे तो साथियों को जगाना है। सवेरे से मुखड़ा भी कर नहीं हुए हैं। कल हमारा सारा दिन कव्वालियों में ही जायेगा। लाची बेर के मेले के पास हमारा डेरा लगेगा, वहीं मेल होगा। अपनी बात कह कर रहमत अपनी राह चलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

मेहताब सिंह ने उसे बाह से पकड कर बैठा लिया—हमें किसके सहारे छोड चले हो ?

—एक दाना निकाल कर लोग पूरी देगची का अंदाज लगा लेते हैं। मैंने तो सुक्खा सिंह को देगची की खरचन तक उतार कर दिखा दी है। अब यह जाने और इसका काम।

—दबी राख म यो ही चिंगारी चमकी है। हवा देना तो तुम्हारा काम है। बस अरदास हो जाये। सुक्खा सिंह ने कहा।

—मैं कुछ इशारे बताता हू। सिंह तैयार रहें। सखी सरवरो की टोली जब हरिमन्दिर के सरोवर की प्रदक्षिणा कर रही हो, तब यह समझा जाये कि हरिमन्दिर में प्रवेश करने मे कोई खतरा नही है। दूसरे, जब नाथो के चिमटे बजें और धूनी में से लपटें उठें, तो समझा जाए कि सभी साथी चैतन्य हैं। तीसरे, जब सूरज सवा नेजे पर हो, आग बरसती नजर आए, कब्रा-आख निकलती हो, जमीन तावे की तरह तपती हो, हाल खेलने वाला आदमी जब अल्लाह ही अल्लाह की आह भरे, तो समझो, सिपाही नीद की घोडी पर सवार हैं। हाल खेलने वाला आदमी धारा सिंह होगा। इसे बहुत कम लोग देख रहे होगे। यह सब को देखेगा। हरिमन्दिर के पडो के नीचे सोए सिपाहियो के बारे मे यह पूरी इत्तिला देगा। गूगें के इशारो की तरह। जब हमारी कव्वाली यौवन पर हो, जब हम वज्द मे हो और वाहे उठा-उठाकर तान छेड रहे हो, तो समझ लिया जाए कि मस्सा रघड नशे मे धुत है। झूम रहा है मस्त हाथी की तरह। हमे अब आज्ञा दो।

धारा सिंह और रहमत कन्नी काट गए। विचारो का रहट चलने लगा, अखाडा ब्रह्म बूटी पर बैठी मण्डली धूनी सेंक रही थी, भले ही तीखी दोपहर थी। गर्मी से पसीना तो चू ही रहा था, खून भी टपक रहा था। लेकिन इसके बगैर वे बैठ नही सकते थे। बहुत जरूरी था यह उनके लिए।

सरोवर के जल से भरा हुआ बिजला सिंह का लोटा सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने लिया और पच-स्नान किया। दूर मे ही सिर झुका कर हरिमन्दिर को प्रणाम किया। फिर सखी सरवर के टोले से आख बचाकर खिसक आए। खिचडी पकी हुई थी। घी, दाल और चावल इस तरह मिले हुए थे, जैसे सखी सरवर, सिंह और नाथ। दाव लगा लेना कोई मुश्किल नही था। अमृतसर की धरती को नापाक करने वाले मलेच्छ सिंहो को सूघते फिरते थे। कस्तूरी तो हिरन की नाभि म थी। अमृतसर के हर सहजधारी के घर मे एक न एक सिंह का डेरा था—चाहे वह नाथ हो या साधु, सखी सरवरो का चेला या उदासी सन्त। पूरा अमृतसर महमानो से भरा हुआ था। गुरु की नगरी मे दुतहिया बिछी हुई थी।

दिन निकला। धूप कडकने लगी। सूरज ने चिंगारियां छोडी। आसमान

आग बरसाने लगा। जमीन ने रग बदला। एक नाथ ने धूनी मे चिमटा मारा। एक चिगारी उडी, और आधे आसमान तक गई।

एक त्रिधिचदिया बोला—आज फजल की नमाज के साथ ही सिपाहियो को ईरानी माजून की शराब बाटी गई है। सिपाहियों के हाथो मे प्याले हैं। मस्मा का हर सिपाही चुस्किया ले ले कर पी रहा है। आज का दिन ईद से कम नही है। कुछ सिपाही पहरे पर हैं। बाकी टोलिया बनाकर जश्न मना रहे हैं। गोश्त की देगचिया चढ गई हैं। गाय को जिबह करके लटका दिया गया है और नीचे आग जल रही है। गोश्त भुन रहा है। परिक्रमा मे रासधारी नाच रहा है। जगह-जगह पर बैठी टोलिया रगरलिया मना रही हैं। मस्त सिपाही कह रहे हैं—खुदा खैर करे। आज की रात कितनी कुआरी लडकियो का सतीत्व भग होगा।

रहमत कव्वाल ने अपने वाद्य सीधे किए। सारगी पर गज फिराया। हाथ मे बधे घुंघरुओ ने जब तबले पर थाप दी, तो समा बध गया। सारगी की लय कलेजा चीर गई। रहमत न जब नाचना शुरू किया, हाथ जोडकर ताली बजाई, तो एक नए साज ने जन्म लिया। कव्वाली आरम्भ हुई। कव्वाली नही, मरसिया था। बोल थे :

'जब कर्बला में खाक को नूरे खुदा मिला,
यानी हुसैन मजिले-मकसद से आ मिला।
रगे रवा को रुतबा खाके सफा मिला,
जर्रा हरेक मेहरे दरख्शा से जा मिला।
चेहरो की जू से चारो तरफ नूर हो गया,
वीराना-ए-गज हमन से महमूर हो गया।'

यह एक इशारा था, जिसे मुक्खा सिह और मेहताब सिह ने सुना। इसे सदा-ए-जर्रा समझ लो या मन्दिर का घडियाल। शेरो की तरह आगे बढे चेहरो पर तेज उभरा, बदन म फुर्ती आई, हौसले बुलन्द हुए, तियारे कसे और घोडियो पर सवार हो गए। घोडियो के पाव परिक्रमा म पडे। घोडे के नाखून जब पत्थरों पर बजे, तो वहा बिजली चमकी। पहले गुरु के हुजूर मे सिर झुकाया। कव्वाल ने अपने बोल फिर दोहराए :

'चेहरों की जू से चारों तरफ नूर हो गया,
वीराना-ए-गज हमन से महमूर हो गया'

अब कैसे चलते हैं सिर-कटे जवान, जैसे ब्याह के लिए जाते दूल्हे। कैसे गुरु धाम का आगन चौडा करते हैं।

उन्होने एक बार घोडियो को रोका, जरा सा सोचा अभी नाथों की इजाजत तो मिली नहीं। जोगियो ने अपनी आवाज नही दी। सखी सरवर अभी क्रमा करके नही लौटे। हाल खेलने वाला अभी अपने जलाल

नहो आया। पर उन्होंने घोडिया निकाल ली थी। उन्होने एक वार उन्हे जरा-सा फिर रोका। चाल देखने के लिए। हरिमन्दिर मे मुजरा जोवन पर आ चुका था। सुरूर को गज-गज भर की लाली चढ रही थी। जवानी अठखेलिया कर रही था। पाव की पायल सौ-सौ नखरे कर रही थी :

'वाजूबन्द खुल-खुल जाए,
सावरिया ने कैसा जादू डारा रे।'

इन बोलो ने मुजरे पर निखार तो ला दिया, लेकिन नशे मे धुत लोग राग क्या जानें। जमीन-आसमान के कुलावे मिलाए जा रहे थे। रडी के घुघरुओ ने एक बार सवको झूमने पर मजबूर कर दिया। शराव के प्याले अदल-वदल कर पिए जा रहे थे।

रडी ने जब देखा कि मुहरो की वारिश वन्द होने लगी है, तो उसने झट से मद्धिम और सुरीली लय छेडी। बोली :

कोयलिया मत कर पुकार
करेजवा लागे कटार'

इधर रहमत कव्वाल के बोल भी उभरे। ऊची-ऊची वाह ललकार रही थी :

'आओ, आओ, मुहम्मद आओ।'

ये बोल जव रहमत कव्वाल ने अपने कण्ठ से निकाले, तो वह वज्द मे आ गया और हाथ उठा-उठा कर तानें छेडने लगा। सुक्खा सिंह और मेहताव सिंह अब चैतन्य थे। तानें छिडती रही और बोल उभरते रहे।

हरिमन्दिर के गर्भ म वहार गाई जा रही थी। मौसम पले ही नही था। सुरीली, मधुर और सोज भरी आवाज बाहर तक सुनाई देती .

'कोयलिया मत कर पुकार,
करेजवा लागे कटार'

मोहे मरने का चाव

बेरियों के झुरमुट में से पट्टी के दो सवार निकले। सजी-सवरी घोडिया,
शाही वर्दिया, हरे रंग की पगडिया, हाथो मे मामले की थैलिया। कमर मे लहू
की प्यासी तलवारें। चेहरे पर जलाल। लाल-लाल, जलती हुई आखें। शरीर म
वन। शेरो जैसे जवान। देखते ही भूख मिट जाए। ऐसा लगे जैसे लाहौर दरबार
के वली अहद आ रहे हों। पगडियो पर पटके शाही निशान वाले। तलवारो की
पट्टिया जरी से कढी हुई। मछेर घोडिया बदन पर मक्खी तक न बैठने देती।
किसी राजा के पूत बडे जलाल और रौब मे चले आ रहे थे। हरिमन्दिर
की परिक्रमा को सजदा करते। इशारो से आखें बचाकर नमस्कार किया। ये
जवान कौन थे? कहा से आए? क्या करने के लिए आए? क्यो आए? इनके
पैतरे तो देखिए। बाजीगर हैं बीकानेर के। मजा आएगा। ये जवान देखने म
पट्टी के अलमबरदार हैं, लेकिन सच बात यह है कि इनमे से एक का नाम
सुक्खा सिंह है और दूसरे का मेहताब सिंह। मुसलमानी लिबास। शक्ल-सूरत भी
इस्लामी। मौत की बारात चढने जा रहे हैं। सूरमा मौत को ब्याहने जा रहे हैं।
चमडी मे रत्ती भर भय नही। जरा, देखिए तो किस अन्दाज से चले जा रहे हैं।
मुह जोर घोडिया। तनी हुई लगाम। काबू मे नही आ रही हैं। लेकिन
शेरो के बेटो ने उन्हें अपने हाथ मे कर रखा है।

—कौन हैं ये?

—चौधरी लगते हैं।

—जाने पहचाने तो लगते नही।

—लाहौर से आए होंगे या कसूर से। चौधरियो मे तो चौधरी ही मिलने
आ सकते हैं।

—क्या बाके जवान हैं लाठियो जैसे कद वाले।

—घोडियां बिल्कुल एक ही मां से निकली मालूम पडती हैं।

—जवान भी किसी एक ही हाथ के बनाए लगते हैं। खैर, कुछ भी हो,
अल्लाह बचाए बुरी नजरो से।

घोडिया ठुमक-ठुमक चलती जा रही थी। शराब मे मस्त हुए सिपाही चौधरियो को झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे। अनेक ने कदम बोसी की। सवार अपने गरूर मे जवाब देते। घोडिया जैसे-जैसे आगे बढती, सिपाही रास्ता छोड देते और नशे में झूमते हुए कहते—बामुला-हिजा होशियार।

नायो ने चिमटे बजाए। धूनी की आग को टटोला। लपटें उठी। सवार हरिमन्दिर की ओर बढ रहे थे। सखी सरवरो की टोली प्रदक्षिणा कर चुकी थी। हाल खेलने वाले ने 'अल्लाह ही अल्लाह' की आवाज लगाई।

बाबे बुड्ढे की बेरी पार करने पर सामने अकाल तख्त नजर आया। सवारो ने आख झपकने से भी कम समय म सिर झुकाया और सीधा कर लिया। कोई देख नही सका। घोडिया भी सुरूर म आ रही थी। जवान बडा साहिब क आगन मे आ पहुचे। कव्वालिया गाने वाला रहमत कह रहा था :

'कर्बला म जब हुसैन आए थे
जमी ने सजदे किए झुका आसमा आगे'

चौधरियो की शक्ल देखते ही सिपाहियो के पसीने छूट गए। नशा नही टूटा था, लेकिन फौरन उठ खडे हुए।

—पहरे पर कौन है? चौधरी ने पूछा।

—हम है, सरकार।

—पहरा ऐसे दिया जाता है?

—नही सरकार, तीखी दोपहर मे तो आदमी वैसे ही बौरा जाता है। यो ही, जरा-सा छाह मे बैठे थे।

नमकहराम! सवारो ने छलागें लगाईं और घोडियो से उतर आए। घोडियो को उन्होने आगे बढ कर पकडा।

—सामने, पेड के साथ बाध दो। जरा होशियार रहना, य पेड उखाड कर भाग न जाए।

—नही, सरकार।

चौधरियो के तेज और जलाल ने सिपाहियो के रग उडा दिए। दोनो जवानो ने दर्शनी ड्योढी का दरवाजा पार किया। गर्दन अकडा कर, जैसे कोई मगरूर महल के दरवाजे से निकला हो। पर नही, उन्होने एक बार गुरु का ध्यान किया। सिर झुका कर नमस्कार किया। यह कसब उनका अपना था। न किसी ने देखा और न ही किसी ने आख मिलाने की जुर्रत की। सिपाही थर-थर काप रहे थे।

रहमत कव्वाल तान छेडे जा रहा था :

'कर्बला म जब मुहम्मद आए थे,
जमी ने सजदे किए झुका आसमा आगे'

चौधरियो ने मोहरों वाली थैलिया खनकाई और एक मुट्ठी मोहरें सिपाहियो की तरफ उछाल दी। कव्वाली को रोक कर रहमत बोला—कौन है ये ?

—कोई चौधरी लगते हैं। या मामला देने आए हैं। या कोई शाही पैगाम लेकर आए हैं।

—रोका नही ?

—रोक कर मरना है ? हमारी तो हिम्मत ही पस्त हो गई। हमारी आखें चुंधिया गई। उनके जलाल के आगे हमारी आख नही टिक सकती। खैर आदमी बहुत दिलेर हैं। बडे सखी और दयालु लगते हैं।

चौधरी सीधे हरिमन्दिर की ओर गए। कभी पुल पर पाव रखते। कभी धरती से ऊचा, कभी धरती पर। मतलब यह कि धरती पर उनके पाव नही पड रहे थे।

घुंघरू खनक रहे थे। तबला बहक रहा था। रडी नाच रही थी। आवाज सुरीली, मौज भरी, लचीली और कशिश भरी थी। एक बार तो पाव रुक गए। फिर बडी जवामर्दी से वे आगे बढे। फिर और आगे। जब उन्होंने देखा कि मुजरा हो रहा है, उनकी आखों से चिंगारिया फूट निकली। चेहरा लाल सुर्ख हो गया, लेकिन उन्होंने अपने आप पर काबू रखा और ओछे हथियारो पर नही आए।

दरवाजे पर एक पहरेदार बैठा था। बोला—कहा स आए हो ? कौन हो ?

—चौधरी हैं पट्टी के। मामला चुकाने आए हैं।

—आने दो। मामला लेकर आने वाले भले लोग हैं। मस्सा रघड ने कहा।

चौधरी भीतर चले गए। दो-चार शराबी मस्सा रघड के सामने बैठे हुए थे। सद्गुरु के दरबार म हुक्का रखा हुआ था। शराब और सुराही नजर आई। मस्सा पलग बिछा कर बैठा हुआ था। बस, फिर क्या था। सिंह गुस्से म आ गए। खून खौल उठा। होंठ फडके। नाडी-नाडी फूल गई। हाथ तलवार की मूठ की तरफ बढ ही रहा था कि वे रुक गए।

—आओ, आगे आओ। झिझको नही। डरने की कोई बात नही है। इस जन्नत पर अब मेरा कब्जा है। सिंह तो मर-खप गए। यहा अब मस्सा रघड का राज है। मामला लाओ। बहुत अच्छा किया तुम लोगो ने। मामला खुद दाखिल कराने वालों को हुकूमत बहुत मरतबे बख्शती है।

सुक्खा सिंह ने झुक कर सलाम किया और तलवार उतार कर जमीन पर रख दी। जरा-सा डरा, कुछ सहमा, फिर बोला—हुजूर, मेरी तो टागें कापती हैं। इस मस्जिद मे पाव धरते मुझे तो डर लगता है। मौत दिखाई देती है। सिंहो की परछाइया नजर आती हैं। हम तो आगे नहीं बढेंगे। यह सिंहों के पीरों का स्थान है। वे बडे करामती हैं।

—अरे मूर्खो! करामतें सब दूर हो गई। हुक्का, शराब और नाच मुझे

फकीरो को नष्ट कर देता है तुम तो प्याले भर-भर के पियो । प्याऊ लगा हुआ है ।

—नही, सरकार, हमे तो डर लगता है ।

—बडे टरपोक हो । अच्छा फेंक दो थैलिया ।

सुक्खा सिह ज़रा-सा पीछे हट गया ।

उसने थैली फेंक दी ।

अब बारी आई मेहताब सिह की । उसने भी तलवार को कमर से खोलकर नीचे रख दिया ।

—ठीक है । तुम भी फेंक दो । अरे मूर्खो, चौधरी बडी दूर से आए है, शराब के प्याले भर क दो ।

—हुज़ूर, इतनी गुस्ताखी । हुज़ूर के सामने हम शराब पिए ।

नचनी ने एक चक्कर लगाया और अपनी कमर को बल-सा दिया । मस्सा उसी मे झम उठा । शराब उस पर सवार थी ।

—लाओ, थैली मैं खोलू और आज इसी मे से इसकी झोली भर दूं । यह क्या याद करेगी कि किसी रईस से पाला पडा था ।

असल मे दोनो थैलिया इस तरह फेंकी गई थी कि वे पलग के नीचे जाकर गिरी थी ।

—घुंघरू बज रहे थे । सारगी कूक रही थी । तबला बहक रहा था ।

मस्सा रघड थैलिया उठाने के लिए खुद ही झुका ।

जोश जागा । खून खौला । मेहताब सिह आगे था और सुक्खा सिह उसके पीछे । उसने आख भी नही झपकने दी, अपनी तलवार फर्श स उठा ली और खीचकर भरपूर वार किया—गुरु का नाम लेकर । सूअर जैसी गर्दन तलवार का एक वार भी न झेल सकी । सूरमाओ ने सिर काट दिया । इतनी देर मे मेहताब सिह भी तलवार सम्भाल चुका था ।

लहू का फौवारा छूटा । पलग लहू से नहा गया । फर्श भी लहू-लुहान हो गया ।

नचनी नाच भूल गई । तबला थम गया । सारगी गूगी हो गई ।

सुक्खा सिह ने आगे बढकर मस्सा रंघड की गर्दन को बालो से पकड लिया । मेहताब सिह ने पहरेदार के दो टुकड़े कर दिए । साजिदे या तो भाग गए, या तालाब मे डूब गए ।

मेहताब सिह बोला—यही खडे रहो अगर जान की अमान चाहते हो तो । आगे बढो रे । थैलिया निकालो पलग के नीचे से ।

लम्बे बालो वाले एक आदमी ने पलग के नीचे से थैलिया निकाली और सामने रख दी । उसका सारा शरीर पत्ते की तरह डोल रहा था । मेहताब सिह ने जोश मे आकर तलवार का एक हाथ मारा, तबलची तो बच गया, लेकिन रंडी की शामत आ गई । घुंघरूओ वाली टाग के दो टुकडे हो गए ।

दहशत छा गई। भय ने सारे अखाड़े को दुर्बल बना दिया।

सुक्खा सिंह बोला—चलो, हरकी पौड़ी से चरणामृत तो ले लें। फिर चलें गुरु की नगरी। अब अगर शहर भी जाएंगे तो कोई परवाह नहीं है।

चरणामृत लिया और बालों से पकड़ा मस्से का सिर। लहू भीगी तलवार हाथ में। डरे हुए लोग मिट्टी की मूरतों की तरह सुन्न थे। कहीं एक कतरा रक्त बा नहीं था, जो हरकत कर रहा हो।

रक्त के कतरे फर्श पर गिर रहे थे, पर जवान वीर-बहादुर पूरे जोश में बाहर आए। आते ही मेहताब ने थैलियों का मुँह खोला और मुट्ठियाँ भर भर कर सिपाहियों की तरफ फेंकने लगा। लेकिन सिपाहियों ने जब मस्से रघड़ का सिर देखा, तो गश खाकर गिर पड़े।

रहमत कव्वाल ने घोड़िया खोलकर हाजिर की। असल में उसने घोड़िया पहले से ही खोल रखी थी, जब उसने देखा था कि जवान मर्द मस्सा रघड़ का सिर लेकर आ रहे हैं।

—गुरु राखा। रहमत कव्वाल ने कहा।

सिपाहियों के दबे गलों से आवाज निकली—सिंह।

जब तक दूसरों ने यह आवाज सुनी, तब तक सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह घोड़ियों पर सवार हो चुके थे। जब तक वे तैयार हुए, तब तक सूरमा और उनकी घोड़ियां अमृतसर से निकल कर बहुत दूर जा चुकी थीं।

नायों ने धूनियों में से अपनी तलवारें खींचीं। सखी सरवरों की टोलियों में भी तलवारें चमकीं और उन्होंने खूब खराबा मचा दिया।

—सिंह। सिंह आ गए। आवाजें तो बहुत थीं, लेकिन दबी दबी।

—मस्सा रघड़ का सिर लेकर सिंह गायब हो गए।

—खुदा सिंहों को मेरी उम्र दे। जुग जुग जिएं सिंह। गुल्लू बाई ने चौबारे से देखा और दुआ दी।

रामदास सरोवर नहाते

उधार की फौज फूक मारते उड गई। जिसके सीग जिधर समाए, उसने उधर ही मुँह उठा लिया। कई तलवार की भेंट चढ़ गए और कई नंगे पाव ही भाग खड़े हुए। कई सिपाहियों को सिंहों ने मुर्गियो के दड़बो से निकाला—वे वहा जा छुपे थे—और उन्हे तलवार की धार पर उतार दिया। मस्सा रघड के खूनी दरिंदे, जालिम, बहादुर अमान-अमान पुकार रहे थे। मीरे-कारवा का सिर कटा और पूरा कारवा चिंदी-चिंदी हो गया। किसी ऊट ने पहाड की तरफ थूथन उठा लिया और किसी ने दक्खन की तरफ। जिसके हाथ मे जो ऊट आया, वह उसी का मालिक बन बैठा। भगोडो का कुल्ला भी किसी के हाथ आ गया, तो उसने उसे भी नही छोड़ा। भागते भूत की लगोटी ही सही। मतलब यह कि हरिमन्दिर मे तो झाड़ू ही फिर गया। कोई पठान, कोई रघड, मुगल या सरकारी कर्मचारी नजर नही आता था। सिर्फ चौकियो पर पहरेदार बैठे हुए थे। सिंहों ने उन्हें बिल्कुल नही छेड़ा। उससे सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह बहुत दूर निकल गए। रात का फासला पड गया बीच मे। सूरमा पट्टी तक जा पहुचे थे। हाहाकार मच गया था—सिंह आ गए। सिंह आ गए। बस, इसी दौड-भाग मे सिंह ठिकाने तक जा पहुचे थे। जब खबरो का गोला फटा, तब हाकिमो के दिल मे धकधुकी मची और उन्होने घोडे कसे। तलवारो को सूरज की धूप दिखाई। पर अब क्या होना था। अन्धे कुत्ते हिरनो के शिकारी। सिर मे धूल डलवा के लौट आए। न सिंह मिले, न उनकी परछाई।

रहमत कव्वाल ने अपना चोगा उतार कर फेंका और उसके भीतर से बिजला सिंह निकल आया।

धारा सिंह बोला—बेचारे पारा सिंह की भी खबर ली? कही पेड पर टगे-टगे अकड ही न जाए।

मनसा सिंह और धारा सिंह जब पेड के पास पहुचे, तो पारा सिंह बेहोश था—रस्सी से बधा हुआ, टागें सूजी हुई, खून सिर को चढा हुआ। बडी मुश्किल से सिंह को उतारा और बडी मुश्किल से उसे होश म लाया गया।

—क्या हाल है ? धारा सिंह ने पूछा ।

—अब तो गुरु की कृपा है ।

मरी मरी आवाज म बोला—क्या बना सिंहो का ?

—सिंह अपना काम कर गए । मस्सा रंघड का सिर काट कर ले गए गुरु लाडले । सिंह पहाडा पर चढ गए ।

—तब तो गुरु की कृपा हो गई ।

सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह के साथ नायों का जत्था था । यह मालूम नही कि वे किधर गए, किधर से गए । पर उनकी मंजिल लक्खी जंगल जरूर थी । वही गुरु धाम था उनक लिए ।

हरिमन्दिर मे सिंहो की हुकूमत चाहे चार पहर ही रही, पर उतने अरसे में ही कई सिंहा ने दु ख भजनी बेरी पर स्नान किया और अपने हृदयों को पवित्र किया ।

बिजला सिंह बोला—वह देखो, युग पलटता ।

—क्या सत् युग आ गया है ?

—सत् युग व दर्शन कर लो । वह देखो । कुछ नजर आया ? उसने हाथ से इशारा किया ।

—हम तो चौधरी गगा सिंह और चम्पा ही नजर आते है । स्नान कर रहे हैं ।

—और उनके ग्राम ?

—गुल्लू बाई ने भी अपना मजहब बदल लिया है । वह भी नहा रही है सरोवर म डुबकिया लगा लगा कर । बेचारी की सारी मैल उतर गई । आत्मा अपना चोला बदल रही है ।

एक सिंह पढ रहा था ·

'रामदास सरोवर नहाते सब उतरे पाप कमाते ।'

धुंध मिट रही थी और इन्सान जन्म ले रहा था ।

●●

जो ले हैं निज बल से ले हैं

एक अठवारे के पश्चात् पता चला कि सिह लक्खी जगल मे पहुच गए, खबर देने वाले ने बताया कि जवानो ने चौथे ही दिन अपना सफर पूरा कर लिया था।

हरिमन्दिर बिल्कुल खाली था। कही कोई चिड़िया तक पर नहीं मारती थी। भाय-भाय कर रही थी गुरु की नगरी। मस्सा रघड की बेगमें दोहत्थड मारकर स्यापा कर रही थी। अपने बाल नोच नोच कर उन्होंने बालो का ढेर लगा दिया था। कोई सिह अमृतसर मे ढूढे से नहीं मिलता था। जब फौज आई, तो हरिमन्दिर बिल्कुल शान्त था। न कोई इन्सान था, न परिंदा।

—सिह कहा गए ?

—सिह तो यहा आए ही नही। किसने देखा है उन्हे ? कोई बता सकता है ?

—फिर यह काम कैसे हो गया ? पट्टी का एक अहलकार कह रहा था।

—यह एक सपना था। सिह तो नही थे, पर सिहो के भूत गर्दन काट कर ले गए। करामती गुरुओं ने कोई चुटकी फेंकी। सिपाही सो गए। मौत के फरिश्ते आए और मस्से की रूह को पकड कर ले गए। यह कोई इलाही कहर था। इसमे किसी का कोई कसूर नही है। यह विचार अमृतसर के एक वासी का था, जो सखी सरवरो का पीर था।

—मुझे सिर्फ कातिल का नाम बताओ। और मैं कुछ नही जानता। अफसर कह रहा था।

—कोई जानता हो, तो बताए। किसी ने देखा हो, तो पहचाने। लेकिन गुल्लू बाई बडबडा रही थी, जिन्होने सुना है, वे बताते है कि लक्खी जगल से सुक्खा सिह, माडी कबो के का जात कलसी, एक सिक्ख था और दूसरा मेहताब सिह मीर कोट वाला...वही सिर को बगल मे दबाकर ले गए हैं।

—इन दोनो के गावो की ईंट से ईंट बजा दो। अमृतसर मे किसी सिह का घर नजर आए, तो उसे फूक डालो और राख लाहौर भेज दो। इन काफिरो ने हमारी नाक म दम कर दिया है। उधर काबुली बिलाव अहमदशाह अब्दाली

चढ़ता आ रहा है। पहले उसे सम्भाला जाए, फिर इनसे निपटेंगे। सांप के मुंह में छिपकली वाली हालत है। पहले इस बिलाव से निपट लें, फिर इनको देखेंगे। अफसर उछल कर घोडे पर सवार हो गया और लाहौर की तरफ चल दिया।

लक्खी जंगल के निकट सक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने भूरे में से मस्सा रघड़ का सिर निकाला और फिर धरती पर रखकर दोनों ने बारी-बारी पांच-पांच जूते उसे लगाए। यह शगुन था गुरु के लाडलों का। फिर सुक्खा सिंह ने उसके सिर को भाले पर टांग लिया। सिंहों के पूत खुशी से इतना फूल उठे कि उनके पांव धरती से बालिश्त-बालिश्त भर ऊंचे उठ रहे थे।

खबरें लक्खी जंगल में पहुंच चुकी थीं। खालसा खुशी से उठा नाच।

दरबारा सिंह, बुड्ढा सिंह, नवाब कपूर सिंह आगे बढ़कर लेने आए।

गुरु ने हमारी लाज रख ली। सुक्खा सिंह ने एक बार भाले को हवा में लहराया।

—धन्य गुरु और धन्य गुरु के लाडले। नवाब कपूर सिंह ने कहा।

जत्थे ने जयकारा बोला—बोले सो निहाल।

सुक्खा सिंह ने मस्सा रघड़ का सिर जत्थेदार के कदमों में रख दिया।

दरबारा सिंह ने सुक्खा सिंह को गले से लगा लिया। नवाब कपूर सिंह मेहताब सिंह को सीने से लगा रहा था।

नवाब कपूर सिंह ने बांह उठा कर कहा :

> 'कोई किसी को राज न दे है,
> जो ले है निज बल से ले है।'

सारे जत्थे के चेहरे शिंगरफ की तरह दहक रहे थे।

संगतें पढ़ रही थीं :

> 'संता दे कारज आप खलोया।
> पैज रखदा आया राम राजे ॥

—समाप्त—